श्रीः ।

श्रीपण्डितश्यामलालदैवज्ञसंगृहीत-

ज्योतिषश्यामसंग्रह ।

(जातकभाग)

वंशबरेलिकस्थ पण्डित श्यामलालकृतक-

'श्यामसुंदरी' भाषाटीका सहित ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

श्रीः ।

भूमिका ।

ज्योतिर्विनोदरसिकान् विज्ञापयामि ।

देखना चाहिये इस संसारमें परब्रह्म परमेश्वरने ज्योतिषशास्त्ररूपी एक कैसा रत्न पैदा किया है कि जिसके द्वारा सम्पूर्ण प्राणिमात्रोंके पूर्वजन्म इस जन्म परजन्मका हाल और उनका प्राप्त होनेका समय अच्छी तरह जान सकते हैं। मनुष्योंके जन्ममरणका समय कोई शास्त्र नहीं जान सकता है परंतु इस शास्त्र के द्वारा भलीभांतिसे उक्त बातें सूचित होती हैं। जिस मनुष्यने होराशास्त्ररूपी अंजनको नेत्रोंमें दिया है वह त्रिकालदर्शी देवताओंके समान संसारमें पूजनीय होता है । सृष्टिकर्ताने जिस वक्त वेदके चार भाग किये उसी समय छः अंग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष बनाये हैं। व्याकरणको वेदका मुख, ज्योतिषको नेत्र, निरुक्तको कर्ण, कल्पको हस्त, शिक्षाको नासिका, छंदको दोनों पैर बनाये हैं, क्योंकि सिद्धांतशिरोमणिमें ऐसा लिखा है—"शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोतमुक्तं निरुक्तं च कल्पं करौ ॥ या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छंद आद्यैर्बुधैः॥" परंतु इन अंगोंमें मुख्यता नेत्रों को ही दी है, क्योंकि कर्ण नासिकादि सब अंगोंसहित मनुष्य नेत्रोंके हीन होनेसे कुछ नहीं कर सकता है—"संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादिभिश्चक्षुषांगेन हीनो न किंचित्करः" सो ऐसा अद्वितीय रत्न इस संसारमें लोप हुआ जाता है इसका कारण यह है कि जो ज्योतिषी लोग इस विद्याको जानते हैं वे दूसरेको नहीं बतलाते हैं केवल श्लोकका अर्थमात्र पढा देतेहैं इस शास्त्रका गूढ लक्ष्य नहीं समझाते हैं, यह शास्त्र गुरुलक्ष्य कहाता है जब उन विद्यार्थियोंको इसका लक्ष्य नहीं मालूम हुआ तो उनका फलादेश कब ठीक मिलेगा इसी सबबसे इस शास्त्रकी और पण्डितलोगोंकी निंदा होने लगी; ऐसी व्यवस्था देखकर मुझको सोच पैदा हुआ कि हमारे ब्राह्मणभाइयोंका अपमान न हो और इस शास्त्रका प्रकाश पहलेकी तरह किस तरह

होना चाहिये इसलिये मैंने ज्योतिषश्यामसंग्रह नामक ग्रंथ ज्योतिष-की बहुत २ पुस्तकोंसे चार बरसमें बहुत परिश्रम करके एकत्रित किया। इसमें संस्कृत मूल और भाषाटीका चक्र उदाहरणसहित है और जिस जगह गुरुलक्ष्य थे उनको भी खुलासा कर दिया कि जिससे जो लोग थोडी विद्या भी जानते हैं अथवा इस शास्त्रका गूढ लक्ष्य नहीं जानते हैं उनके लिये अच्छीतरहसे सुगमतापूर्वक फलादेश जन्मपत्रिका भूत भविष्यत् वर्तमान कहनेके लिये इस ग्रंथके पढनेसे मनुष्यको प्राप्त होगा सो केवल इस एक ही ग्रंथके द्वारा जातकका सम्पूर्ण फलादेश कह सकेंगे। जो कुछ फल कहेंगे सो ठीक ठीक समयानुसार मिलेगा और विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूं जो विद्वज्जन पुरुष इस ग्रंथको पढेंगे वा पढावेंगे सो दया करके जिस जगह अशुद्ध हो उसको शुद्ध कर लेंगे। इस ग्रंथकी श्यामसुंदरी नामक भाषाटीका सचक्र उदाहरण सहित सरल वाणीमें कर दी है। इस पुस्तकको छब्बीस अध्याय कर सुशोभित किया है तिसमें जपदानविधि पहिला अध्याय है। इसमें मंगलाचरण, शुक्र भृगुजीका प्रश्नोत्तर, जप करनेवालेको क्या विधि करनी चाहिये, यजमान कौन विधिसे कैसे ब्राह्मणसे जप करवावे, दान किस प्रकारके ब्राह्मणको दे। अध्याय दूसरा— इसमें चालीस योग हैं इन योगोंमें पूर्वजन्मका भी कुछ संक्षेप हाल कहा है उन पूर्वजन्मार्जित कर्मोंका फल वर्णन किया है और निःसंतानादि दुर्योगोंके दूर करनेके लिये तंत्रोक्त मंत्र और दान भलीभांतिसे निर्णय किया है, उन यत्नोंके करनेसे मनुष्यका दुष्ट फल दूर हो जाता है, शुभ फलकी प्राप्ति होती है। अध्याय तीसरा—इसमें राजयोगसहित उदाहरणको कुंडलियोंसहित बनाया है। इन योगोंमें उत्पन्न हुए मनुष्य अवश्य ही राजसिंहासनको प्राप्त होते हैं. चौथा स्त्रीजातकाध्याय है—इसमें स्त्रियोंके सुलक्षण और कुलक्षण कहे हैं और स्त्रियोंके राजयोग भी बताये है ऐसे योगोंमें पैदा हुई स्त्रियां अवश्य ही महारानी होती हैं. पांचवां सूर्यचंद्रयोगाध्याय है, इसमें सूर्यसे उत्पन्न हुए वेशी,

वोशी, उभयचरी, कर्तरी योग उनका फल कहा है. चंद्रमासे सुनफा, अनफा, दुरुधरा, केमद्रुम, अधियोगसहित केमद्रुम भंग कहा है. छठा मिश्रकाध्याय है, इसमें मिले हुए योग जल, दरिद्र, नीचवृत्ति, चांडाल, म्लेच्छ, सहस्राधिपति, द्वयसहस्राधिपति, त्रयसहस्राधिपति, अष्टसहस्राधिपति, अयुताधिपति, लक्षाधिपति, द्विलक्षाधिपति इसी तरह कोट्यधिपतितक, ज्योतिष, न्याय, शब्द, वेदांत, वैद्य, तंत्र, काव्य, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, शिल्प, जैन, अनेक विद्याओंके योग, ऋणदाता, ऋणग्रस्त, धर्माध्यक्ष, दानाध्यक्ष, दास, गुरुभक्ति, गुरुदारगामीभी ऐसे अनेक योगोंका वर्णन किया है. सातवां शरीरदोषाध्याय है, इसमें अंध, काण, बधिर, कुष्ठ, दद्रु, खांस, क्षयी, गुल्म, हृदोदर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेद, वातपित्तकफादिजनित बहुतसे रोगोंके योग अलग अलग बनाये हैं. आठवां प्रव्रज्यायोगाध्याय है, इसमें संन्यासयोगसहित भेदोंका वर्णन किया है. नौवां नाभसयोगाध्याय है, नाभसयोग, रज्जु, मुशल, नल, दल, अहि, माला, गदा, पाश, शकट, विहंग, शृंगाटक, हल, वज्र, कमल, वापी, कूप, शर, शक्ति, दंड, नौका, कूट, छत्र, चाप, अर्द्धशशी, चक्रदामिनी, समुद्र, वल्लकी, दामिनी, केदार, शूलयुग, गोलादियोग उनका फलभी कहा है. दशवां पंचमहापुरुषाध्याय है, इसमें रुचक, भद्र, हंस, मालव्य, शशक ये महाराजयोग हैं इनमें पैदा हुए मनुष्य महाराजा होते हैं. एकादशवां लग्नप्रभेदाध्याय है, इसमें कालपुरुषको अंग, राशियोंकी संज्ञा, स्वरूप, रंग, पुरुष, स्त्री, क्रूराक्रूर, चर, स्थिर, द्विस्वभाव, केंद्रबल, शीर्षोदय, पृष्ठोदय, षड्वर्ग, द्वादशवर्ग, द्वादशभावसंज्ञा, सम्पूर्ण उदाहरणसहित चक्र बनाये हैं. द्वादशवां ग्रहप्रभेदाध्याय है, इसमें ग्रहोंका स्वरूप संज्ञा, पाप, शुभ, पुरुष, स्त्री, नपुंसक, रस, लोक, सार, स्थान, वस्त्र, धातु, ऋतु, दृष्टि, ऊर्ध्व, सम, अधोदृष्टि सहित राहुकेतुके, उच्च, नीच, स्वक्षेत्र, मूलत्रिकोण, बलसहित उदाहरणके सचक्र, तात्कालिक, पंचधा, नैसर्गिक मैत्री, स्थानबल, दिग्बल, रात्रिदिनबल, चेष्टाबल बनाये हैं. बारहवां नष्टजातकाध्याय है, इसमें नष्टजन्मपत्र बनानेकी रीति उदाहरणके सहित बनाई है जो मनुष्य

केवल गुण भाग देना जानता होगा निःसंदेह इस ग्रंथके द्वारा नष्ट जन्मपत्र बना लेगा. चौदहवां गर्भाधानाध्याय है—इसमें स्त्रियोंको ऋतु होनेका कारण वा गर्भका धारण, कन्या वा पुत्रोत्पत्ति, दिव्यादि उत्पत्ति, प्रभूतसंततियोग, गर्भलग्नसे वा प्रश्नलग्नसे प्रश्नकुंडलीका बनाना याने अमुकदिन बालक पैदा होगा उसको उदाहरणसहित बताया है । जो इस उदाहरणकी रीतिसे बनावेंगे निश्चय गर्भकुंडलीसे प्रसवकुंडली बना लेंगे. पंद्रहवां प्रसवाध्याय है इसमें बालकके पैदा होनेका हाल, सूतिकागृहनिर्णय आदि बहुत हाल वर्णन किया है. सोलहवां अष्टवर्गाध्याय है—इसमें सूर्यादि सब ग्रहोंकी रेखासहित राहुकेतुकी दशा भी बनायी है. सत्रहवां द्विग्रहयोगाध्याय है—इसमें सूर्यादि दो दो ग्रहोंके योग हैं. अठारहवां त्रिग्रहयोगाध्याय है—इसमें सूर्यादि तीन तीन ग्रहोंके योग हैं. उन्नीसवां चतुर्ग्रहयोगाध्याय है—इसमें चार २ ग्रहोंके योग हैं. बीसवां पंचग्रहयोगाध्याय है—इसमें पांच ग्रहोंके योग हैं. इक्कीसवां षड्ग्रहयोगाध्याय है—इसमें छः वा सात ग्रहोंके योग है. बाईसवां पाकाध्याय है—इसमें विंशोत्तरी अष्टोत्तरी योगिनी दशा बनानेकी रीति सचक्र उदाहरणसाहित बतायी है. तेईसवां अंतरदशाध्याय है—इसमें तीनों प्रकारकी दशाओंके अन्तर स्पष्ट करके सबके चक्र बनाये हैं. चौवीसवां प्रत्यंतरदशाध्याय है—इसमें इक्यासी चक्र स्पष्ट करके विंशोत्तरी दशाके प्रत्यंतर बनाये हैं. पच्चीसवें अध्यायमें भावफल आयुर्दायसहित बताया है और छब्बीसवें अध्यायमें ग्रंथकर्त्ताके वंशका वर्णन किया है । जो महाशय इस ग्रंथका पठन पाठन करेंगे वे बहुतलाभ उठावेंगे व संसारमें यशको प्राप्त होंगे, अतःसदैव मुझ चरणसेवकको आशीर्वाद दिया करेंगे । इस ग्रंथका सर्व हक्क सेठ श्रीखेमराज श्रीकृष्णदासको दे दिया है । विना सेठ श्रीखेमराज श्रीकृष्णदासकी आज्ञाके कोई न छापे यह निवेदन है.

द्विजचरणारविंदानुरागी—राजज्योतिषी पंडित श्यामलाल,
बरेलीवासी, पश्चिमोत्तर.

॥ श्रीः ॥

अथ ज्योतिषश्यामसंग्रहविषयानुक्रमणिका।

विषयः	पृष्ठम्.

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीगोवर्द्धनधारिणे नमः ।

ज्योतिषश्यामसंग्रहः ।

भाषाटीकासहितः ।

वासुदेवं नमस्कृत्य श्रीगुरुं दिननायकम् । क्रियते श्यामलालेन ज्योतिषश्यामसंग्रहः ॥ १ ॥ ब्रह्माणं विष्णुरुद्रौ च उमासूनुं च खेचरान् । पूर्वकर्मोद्भवान् कांश्चिज्जातयोगान् वदाम्यहम् ॥ २ ॥

श्रीकृष्णचंद्रको, अपने गुरु और सूर्यको नमस्कार करके मैं जो श्यामलाल हूँ सो ज्योतिषश्यामसंग्रह नाम ग्रंथको करता हूँ ॥ १ ॥ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, सूर्यादि नवग्रहोंको नमस्कार करके पूर्व कर्मोंके अनुसार पैदा हुए मनुष्योंके योगोंको मैं कहता हूँ ॥ २ ॥

त्रिंशद्वर्षसहस्राणि लक्षाण्यश्वाः शतत्रयम् । त्रेतायुगगताब्देषु भृगुणा वै प्रकाशितान् ॥ ३ ॥ निरपत्यादिदुर्योगबाधकान्विविधान् विधीन् । आदौ लोकोपकारार्थं समासाद्दर्शयाम्यहम् ॥४॥

सात लाख तीस हजार तीन सौ वर्ष त्रेतायुगके व्यतीत होनेपर तिन योगोंको भृगुजीने प्रकाशित किया ॥ ३ ॥ तिन निःसन्तानादि बुरे योगोंकी नाश करनेवाली अनेक विधियोंको पहिले संसारके उपकारके लिये संक्षेप रीतिसे मैं दिखाता हूँ ॥ ४ ॥

अथ जापकविधिः ।

शुक्र उवाच--आदौ च जापकं सम्यग्विधानं कथय प्रभो ।
किं क्रिया वा सुमुद्रा च यस्य कृत्वा भवेत्सुखम् ॥५॥

शुक्रजी बोले, हे प्रभो ! पहिले जप करनेवालेका विधान अच्छी तरह कहिये । कौन क्रिया अथवा मुद्रा करे जिसके करनेसे सुख होय॥५॥

भृगुरुवाच–महीज्योतीति षट्कोणं यंत्रं मंत्रेण कारयेत् ।
खेटमंडलमीशाने कृत्वा वै तद्गतं प्रति ॥ ६ ॥

तब भृगुजी बोले महीज्योति इस मंत्र करके षट्कोण यंत्र बनावे ईशान दिशाको ग्रहोंका मंडल निश्चय करके बनावे, तिस यंत्रके प्रति ग्रहोंका स्थान करे ॥ ६ ॥

आकारं वेदमंत्रेण स्थाप्या ग्रहक्रमात्ततः । गोमये भूमिलिप्तायां तन्मध्ये स्थापयेद्घटम् ॥ ७ ॥ चंदनैर्धूपपुष्पैश्च दीपनैवेद्यमेव च । द्रव्यतो भावतः सम्यक्कर्तव्यं ग्रहपूजनम् ॥ ८ ॥

उस यंत्रका वेदके मंत्रों करके स्वरूप बनावे और ग्रहोंको क्रमसे स्थापन करे, गौके गोबरसे धरती लीपकर तिसके बीचमें घट स्थापन करे ॥ ७ ॥ चंदन अक्षत फल चढाय आरती कर मिठाई भोग धर पान सुपारी चढाय यथाशक्ति द्रव्य भेंट कर भले प्रकारसे ग्रहोंका पूजन करे ॥ ८ ॥

शंखधेन्वाभिधां मुद्रां कृत्वांगन्यासमेव च । प्राणायामे कृते पश्चाज्जपकर्म समाचरेत् ॥ ९ ॥ यथाशक्ति कृतं जाप्यं ततो ग्रह-विसर्जनम् । अक्षतान् यजमानस्य दद्यादाशीर्विशेषतः ॥ १० ॥

शंख धेनुमुद्रा कर अंगन्यास कर प्राणायाम करे, पीछे जप करना आरंभ करे ॥ ९ ॥ यथाशक्ति जप करके ग्रहोंका विसर्जन कर यजमानको अक्षतसे विशेष कर आशीर्वाद देना चाहिये ॥ १० ॥

जापकेन च कर्त्तव्यं भोजनं लवणं विना । भूशायी ब्रह्मचर्यं च कर्त्तव्यं जापकैः सदा ॥ ११ ॥ एवं विधिं नैव कृत्वा ब्रह्मघ्नमघ-माप्नुयात् । न भवेद्ध्वसः सिद्धिर्न पुण्यं कार्यसाधनम् ॥ ॥ १२ ॥ जाप्यप्रारंभतः कार्यं यावत्कारोपकाङ्क्षया । कविना चं कृतं प्रश्नं भृगुणा वै प्रभाषितम् ॥ १३ ॥

जप करनेवाला भोजन नोनके विना करे, धरतीपर सोवे, ब्रह्मचर्यसे शुद्ध रहे॥११॥ जो कही हुई विधिके माफिक नहीं करे तो उस जप करनेवालेको ब्रह्महत्याका पाप होता है और न तो उसकी वाणी सिद्ध होती, न कार्यसिद्धि होती न पुण्य होता है ॥१२॥ आदिसे जप करे जबतक यजमानकी आज्ञा हो। यह शुकजी करके पूछा गया भृगुजी करके कहा गया है॥१३॥

अथ दानविधिः ।

शुक उवाच–जापकेन विना दानं दद्यान्नान्यद्विजाय वै ।
खेट एकं च विविधं विप्रेभ्यो दानमाचरेत् ॥ १४ ॥
भृगुरुवाच–अन्येनापि कृतं जाप्यं दानमन्याय दीयते ।
अन्यस्य मंत्रिणं दत्तं यथान्ये दत्तभोजनम् ॥ १५ ॥

जप करनेवालेके विना दान दूसरे ब्राह्मणको न दे, एक ग्रहका दान बहुत ब्राह्मणोंको न दे ॥ १४ ॥ भृगुजी बोले–जप अन्य मनुष्यने किया हो और दान दूसरे ब्राह्मणको दे तो दोष है, जैसे अन्य पुरुषको निउता देकर दूसरेको भोजन कराना ऐसा जानना ॥ १५ ॥

खेटैकस्य यदा दानं भिन्नं भिन्नं प्रदापयेत् । शस्त्रघातं तिरस्कारं कृतं तेन ग्रहान्प्रति ॥ १६ ॥ गते मृते जापकर्त्ता तस्य कोऽपि न विद्यते । स्वगुरवे प्रदातव्यमलाभे अन्यदीयतः॥ १७ ॥

एक ग्रहका दान अलग अलग ब्राह्मणोंको दे तो ग्रहोंको हथियार॰ मारा जानो ॥ १६ ॥ जप करनेवाला मरजाय तो उसका और कोई भी नहीं होय तो जपकी दक्षिणा और दान अपने गुरु वा पुरोहितको दे इनके न मिलनेपर अन्य ब्राह्मणको दे ॥ १७ ॥

ग्रहार्थेन कृतं दानं दैवज्ञं विना दीयते । ततो रोषातुरं दुःखं खेटाः कुर्वंति नान्यथा ॥ १८ ॥ ग्रहस्थापनमाह्वानन्यासमुद्राविसर्जनम् । जपसंस्कारयोर्ज्ञातुस्तस्य विप्राय दीयते ॥ १९ ॥

ग्रहोंके अर्थ करा जो दान है सो ज्योतिषीके विना और किसीको दे तो ग्रह क्रोध करके बडा दुःख करते हैं ॥ १८ ॥ ग्रहोंका स्थापन, आह्वान, न्यास, मुद्रा, विसर्जन, जप, संस्कारको जो ब्राह्मण जानता हो तिस ब्राह्मणको दान देना चाहिये ॥ १९ ॥

कृते द्वापरत्रेतायां वेदमंत्राः सुसिद्धिदाः । कलौ सिद्धिकराः खेटाबीजमंत्रयजां ततः ॥ २० ॥ जपस्यारंभणे कुर्य्याद्वरणी दक्षिणायुता । जापको दिनतो नित्यं आमान्नं द्रव्यसंयुतम् ॥ २१ ॥ भृगुणोक्तान् कुयोगागपवीन् नानाविधान् विधीन् । बलदेवात्मजो गौडः श्यामलालद्विजोऽलिखत् ॥ २२ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सतयुग द्वापर त्रेतामें वेदके मंत्र सिद्ध होते थे, कलियुगमें सिद्ध किये बीजमंत्रोंका जप करनेसे ग्रह शांत होते हैं ॥ २० ॥ जपके पहिले दिन वरनी दक्षिणासहित करे जप करनेवालेको दिन दिन भोजन द्रव्य सहित दे ॥ २१ ॥ भृगुप्रोक्त कुयोग पर्वतके समान तिनके नाश करनेको वज्रसमान अनेक विधि बलदेवप्रसादके पुत्र गौड ब्राह्मण श्यामलाल करके लिखी ॥ २२ ॥

इति श्रीराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां जपदानविधिर्नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

---

१ इसमें कहीं कहीं श्लोकमें विभक्तिका दोष पाया जाता है परंतु आर्ष होनेसे निर्दोष है

अथ योगाध्याये निरपत्ययोगानाह।

पंचमेशे त्रिकस्थाने अस्ते वा रविसंयुते। निरपत्याभिधो योगो भाषितो मुनिसत्तमैः॥ १॥ पंचमे भवने पापा अथवा सौम्यसूर्यजौ। रोहिणीरमणो वापि तमसा सह वै भवेत्॥ २॥

पहिले निरपत्ययोग कहते हैंः—पंचम घरका स्वामी ६।८।१२ इन घरोंमें हो। एको योगः। अथवा पंचम घरका स्वामी किसी स्थानमें अस्त हो, सूर्य करके सहित बैठा हो। द्वितीययोगः। इन योगों करके मनुष्य पुत्रहीन होता है, यह उत्तम मुनियोंने कहा है॥ १॥ पंचम घरमें पापग्रह सू. मं. रा. श. इनमेंसे एक वा दो वा तीन वा चारों हों। एको योगः। वा पंचम घरमें बुध शनि हों। द्वितीययोगः। अथवा चंद्रमा राहुयुक्त पंचम घरमें हो। तृतीययोगः। ऐसे योग होनेसे भी मनुष्य पुत्रहीन होता है॥२॥

सुते च दशमे कोशे भूमिनंदनसंस्थितिः। अष्टमे च तृतीये च संस्थितो भास्करात्मजः॥ ३॥ सहजे सहजाधीशे लग्ने वित्ते सुतेऽपि वा। चन्द्रेंदुजौ पंचमस्थौ द्विजदोषः कृतः पुरा॥ ४॥

पांचवें, दशवें दूसरे मंगल हो तो। एको योगः। आठवें, तीसरे शनि बैठा हो तो। द्वितीययोगः॥ ३॥ तीसरे घरका मालिक तीसरे, लग्न धन, पंचम इन घरोंमें हो तो। तृतीययोगः। ऐसे योग होनेसे मनुष्य पुत्रहीन होता है वा पंचम घरमें चंद्र वृद्ध हो तो भी पुत्रहीन हो और जानना चाहिये इन योगोंमें उत्पन्न हुए मनुष्यने पूर्वजन्ममें ब्राह्मणका दोष किया है॥ ४॥

सुतेशे स्त्रीग्रहे केन्द्रे प्रमदाग्रहसंयुते। निरपत्याभिधो योगो भवेत्पुत्रविनाशकृत्॥ ५॥ धनधान्ययुतो नित्यं पुत्रहीनो भवेन्नरः। शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि तस्य यत्नं लभेन्नरः॥ ६॥

पंचम घरका स्वामी स्त्रीग्रह हो केंद्र १।४।७।१० इन घरोंमें चं. बु. श. रा. युक्त होकर बैठा हो तो पुत्रहीन जानना, कदाचित् पैदा

हो तो मर जाय ॥ ५ ॥ ऐसे योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य धनधान्य करके सुखी और पुत्रकरके हीन होता है भृगुजी कहते हैं । हे पुत्र ! सुन, इन यत्नोंके करनेसे उसको पुत्रका लाभ होता है ॥ ६ ॥

अथ मंत्रः ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ॐ क्षौं क्षां क्षीं क्षं क्षः इति मंत्रः ॥ सुवर्णमाषपंचाशद्रौप्यं तद्द्विगुणं ददेत् ॥ विष्णुमूर्तिः प्रदातव्या अरुंधत्या सह प्रभून् ॥ ७ ॥ घृतकुम्भः प्रदातव्यो दैवज्ञाय विशेषतः ॥ अमायां चैव संक्रांतौ व्यतीपाते च पूर्णिमा ॥ ८ ॥ विशेषतः प्रदातव्यो मंत्रजाप्यमथो भवेत् । एवंकृते मनुष्याणां पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति ॥ पंचलक्षं द्विलक्षं वा लक्षमेकं मनोत्सवात् । जाप्यमेवं निगदितं कुर्वन्वै फलभाक् भवेत् ॥ ९ ॥

मूलमें कहे हुए मंत्रोंका जप करवावे पीछे दान पचास मासेकी सुवर्णमय विष्णुकी मूर्ति, सौ मासेकी चांदीकी वसिष्ठ अरुन्धतीका मूर्तिका दान करे ॥ ७ ॥ घी भरके कलश दान करके ज्योतिषीको अमा वा पूर्णिमा वा संक्रांति व्यतीपातमें दे ॥ ८ ॥ विशेष करके मंत्रका जप हो जो इस विधिके माफिक मनुष्य करेंगे तो उनको पुत्रकी प्राप्ति होगी । मंत्रका जप पांच लाख वा दो लाख वा एक लाख मनके उत्साहसे करे तौ फलकी प्राप्ति हो इसमें संशय नहीं है ॥ ९ ॥

अथ मृत्युप्रजायोगा लिख्यंते ।

पंचमस्थो यदा सूर्यस्तमोमंदध्वजैर्युतः । स्वर्भानुभूमितनयौ भवेतां तनुजेऽथ वा ॥ १० ॥ मृत्युयोगं विजानीयाद् बालकानां न संशयः । अंते सुतीर्थमरणं विष्णुभक्तिपरायणः ॥ ११ ॥ इह जन्मनि संतानं भवेद्वा न तु जीवति । एको वा जीवति यदा अंते दुःखमवाप्नुयात् ॥ १२ ॥ दानभावाद्विलीयंते मंदराहुकुजारुणाः। पंचत्रिनवबीजानि चैतेषां जपमाचरेत् ॥ १३ ॥

अब मृत्युप्रजायोग कहते हैं—पांचवें घरमें सूर्य, राहु, शनि वा केतु-युक्त बैठा हो । एको योगः । अथवा राहु मंगलसहित पंचम बैठा हो । द्वितीयो योगः ॥१०॥ तो मृत्युप्रजायोग जानना चाहिये । संतान होकर मर जावे, ऐसे योगमें उत्पन्न हुए मनुष्यकी मृत्यु अच्छे तीर्थपर होती है; विष्णुका भक्त होता है ॥११॥ कदाचित् एक पुत्र भी जीये तो अन्तमें उससे दुःख होता है ॥ १२ ॥ दान करनेसे इस योगका दोष दूर हो जाता है, शनि, राहु, सूर्य, मंगलका पांच तीन नौ बीजाक्षरोंसे जप करवावे ॥ १३ ॥

अथ मंत्रः ।

ॐ क्लीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः शन्नो देवी० ॥ ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं कयानश्चि-त्रा० ॥ ॐ आं ग्रीं ग्यूं ह्रां ह्रीं ह्रः अग्निर्मूर्द्धा०॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लौं क्लुः क्षां क्षीं क्षं क्षः आकृष्णेति० ॥

शतपंचकजाप्यः स्यात्पश्चात्कृत्वा शिवार्चनम् । ततो दानं सुवर्णस्य चतुर्विंशतिमाषकान् ॥ १४ ॥ दद्यात्तद्द्विगुणं रौप्यं वस्त्रं त्रिंशत्करैर्मितम् ॥ ताम्रपात्रं सप्तपलं घृतेन परिपूरितम् ॥१५॥

मूलम कहे हुए मंत्रोंका जप पांच पांच सौ करावे उसके बाद शिवार्चन करवावे अनंतर २४ मासे सुवर्णका दान करे ॥१४॥४८ मासे चांदी, ३० हाथ कपडा, तांबेका पात्र सात पाव घीसे भरके दान करे ॥ १५ ॥

धेनुदानं च कर्तव्यं तद्दोषः प्रशमं व्रजेत् ॥ न करोति यदा दानं पंचजन्मनि यावतः ॥ १६ ॥ अपुत्रत्वमवाप्नोति मृते पश्चादपत्यवान् । अंते च सूकरी योनिर्मृत्युयोगफलं ततः ॥ १७ ॥

गौका दान तिस योगके दूर होनेके लिये करे तौ सम्पूर्ण दोष दूर हो जाता है जो दान नहीं करे तो पांच जन्मपर्यंत ॥ १६ ॥ निपुत्र हो मरनेके बाद भी निःसंतान होता हैं, अन्तमें सूकरकी योनि प्राप्त होती है। यह मृत्युप्रजायोगका फल है ॥ १७ ॥

अथ महासागरयोगो लिख्यते ।

चतुष्केन्द्रेषु सौम्याश्च बंधुषष्ठ तमःकुजौ । एकादशे शनिस्तिष्ठेन्महासागरयोगतः ॥ १८ ॥ महाराजोऽथवा मंत्री राजरोगी कलेवरः । द्विजदेवार्चने प्रीतिः सर्पदोषकृतः पुरा ॥ १९ ॥ कृतं दानं महत्पुण्यादस्मिन्योगे समुद्भवः । सुवर्णमाषपञ्चाशद्देयं दानं सुखी भवेत् ॥ २० ॥

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम इनमें शुभग्रह बु. बृ. शु. व चंद्रमा बैठे हों तीसरे राहु, छठे मंगल ग्यारहवें शनि हों तो महासागर नाम योग होता है ॥ १८ ॥ इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य महाराजा अथवा मंत्री होता है राजरोगकरके शरीर दुःखी रहता है, देवता ब्राह्मणोंसे प्रीति करनेवाला है, इसने पूर्वजन्ममें सर्पका दोष किया था ॥ १९ ॥ बहुतसे दान किये अधिक पुण्यसे इस योगमें यह मनुष्य उत्पन्न हुआ. पचास मासे सोना और सब विधि पहले योगके समान दान करे तो देहसे सुखी होता है ॥ २० ॥

अथ यमाकृतियोगः ।

मूर्तौ तमः कुजक्षेत्रे सहजे च रविर्भवेत् ॥ बुधशुक्रेण संयुक्तो अष्टमे रविजाकुजौ ॥ २१ ॥ तदा यमाकृतिर्योगो ब्रह्महत्या कृता पुरा । तस्मान्महादरिद्रत्वं अनपत्यो भवेत्तदा ॥ २२ ॥ राजरोगी तथा राहोः शनिभौमजपाच्छुभम् । अनेन दानं कर्तव्यं पुत्रदेहः सुखी भवेत् ॥ २३ ॥

जन्मलग्नमें राहु मेष वृश्चिक राशिका होकर बैठा हो और तीसरे घरमें सूर्य हो बुध शुक्रसहित अष्टम घरमें शनि मंगल बैठे हों ॥ २१ ॥ तौ यमाकृति नाम योग होता है ऐसे योगमें उत्पन्न हुए मनुष्यने पूर्वजन्ममे ब्रह्महत्या करी थी तिस कारणसे यह मनुष्य बहुत दारिद्री, संतान करके हीन होय ॥ २२ ॥ इसका शरीर राजरोगकरके दुःखी संतानहीन होता है । राहु, शनि, मंगल इनका जप करवानेसे शुभ होता है और इस दानके करनेसे पुत्रकी देहको भी सुख वा पुत्रप्राप्ति होती है ॥ २३ ॥

अथ जपमन्त्रः ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं स्वाहा कयानश्चित्रा०।ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः शन्नो देवी०। ॐ क्षां क्षीं क्षः स्वहा अग्निर्मूर्द्धा०। जपं पंचशतं कुर्यात्ततो दानं प्रदापयेत् । पंचमाषसुवर्णस्य दद्याद्रौप्यं गुणाष्टकम् ॥ ॥ २४ ॥ महिषीं तिलतैलं च दद्याद्दोषप्रशांतये। रक्तवस्त्रं नीलशुभ्रमष्टाविंशत्करैर्मितम् ॥ २५ ॥ जपकर्त्रे प्रदातव्यं सर्वविघ्नप्रशांतये । इति यमाकृतिर्योगो भाषितः पूर्वसूरिभिः ॥ २६ ॥

मूलमें कहे हुए मंत्रोंका जप पांचसौ कर तदनंतर दान करे। पांच मासे सोना; चालीस मासे चांदी ॥ २४ ॥ भैंस, तिलतेल दान करे। सब दोषकी शांतिके लिये लाल कपड़ा नीला सफेद अट्ठाईस हाथ दान करे ॥ २५ ॥ जप करनेवाले ब्राह्मणको सम्पूर्ण विघ्नशांतिके अर्थ दे। यह यमाकृति नाम योग पूर्व विद्वानोंने कहा है ॥ २६ ॥

अथ महिषाकृतियोगमाह ।

शनिराहू चतुर्थस्थौ दशमे केतुभूसुतौ । षष्ठेंदुः शुक्ररविणा युतः स्यान्महिषाकृतिः ॥ २७ ॥ आद्यभ्रातुर्न संतानं भवेद्रोगः पुनः पुनः । तथा मातुर्महाकष्टं जायते नात्र संशयः ॥ २८ ॥ शनिराहुभूसुतेंदुजपं कृत्वा प्रयत्नतः । सार्द्धशतद्वयमिति तद्दोषः शांतिमाप्नुयात् ॥ २९ ॥

शनि राहु चौथे बैठे हों, दशममें केतु मंगल हों, छठे चन्द्रमा शुक्र सूर्य हों तो महिषाकृति नाम योग होता है ॥ २७ ॥ बडे भाईके संतान न हों, बारंबार देहको रोग हो, तैसे ही माताको भी बड़ा कष्ट हो इसमें संशय नहीं है ॥ २८ ॥ शनैश्वर, राहु, मंगल, चन्द्रमाका जप यत्न करके ढाई ढाई सौ करे तो वह दोष शांतिको प्राप्त होता है ॥ २९ ॥

अथ जपमन्त्रः ।

ॐ हूं हुं सः शन्नो देवी० । ॐ क्रीं क्रीं ह्रां ह्रूं ह्रः कयानश्चित्रा० ।

ॐ क्लीं श्रीं ह्रः अग्निर्मूर्द्धा० । ॐ क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं इमं देवाभि-
मंत्रः जपं कृत्वा–
पाटली गौश्च दातव्या सुवर्ण माषविंशतिः । रजतं माषपंचा-
शद्वस्त्रमष्टादशैः करम् ॥ ३० ॥ कांस्यपात्रं मसूरान्नं गोधूमं
च मणद्वयम् । एतद्दानात् प्रशमनं महिष्याकृतियोगतः ॥३१॥

लाल रङ्गकी गौ, सोना बीस मासे, चांदी पचास मासे, अठारह हाथ कपडा ॥ ३० ॥ कांसीका पात्र, मसूर, गेहूं दो मन इस दानके करनेसे महिषाकृति योगका दोष दूर होजाता है ॥ ३१ ॥ मंत्र जो मूलमें कह आये हैं उनका जप कराना चाहिये ।

अथ मातृकघातकयोगाः ।

लग्नस्थिते यदा जीवे धने सौरिर्यदा भवेत् । सहजे च यदा राहु-
र्माता तस्य न जीवति ॥३२॥ अष्टमस्थो यदा जीवः कर्मस्थाने
महीसुतः । सिंहे शौरिर्भवेद्यस्य तस्य माता न जीवति ॥३३॥

जन्मलग्नमें बृहस्पति, धनस्थानमें शनैश्वर और तीसरे घरमें राहु बैठा हो ऐसे योगवाले मनुष्यकी माता नहीं जीती है ॥३२॥ जिसके आठवें घरमें बृहस्पति, दशवें घरमें मङ्गल हो और सिंहराशिमें शनि हो तिसकी माता नहीं जीती है ॥ ३३ ॥

महार्णवे भृगुमते योगोऽयं मातृघातकः । दैत्याचार्यकृतः प्रश्नो
भृगुणा वै प्रकाशितः ॥ ३४ ॥ गुरुशौरितमो भौमस्त्रिभिर्बी-
जाक्षरं जपेत् । द्विसहस्रजपं कुर्यात्पश्चाद्दानं प्रदापयेत् ॥ ३५ ॥

अथ जपमन्त्रः ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः बृहस्पते० । ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः शन्नो देवी० ।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कयानश्चित्रा० । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अग्निर्मूर्द्धा इति भौमः ।

महाणर्व नाम करके भृगुजीका बनाया ग्रन्थ है तिसके मतसे यह मातृघातक योग हुआ, शुक्रजीने प्रश्न किया श्रीभृगुजीने निश्चय करके इन

योगोंको प्रकाश किया ॥ ३४ ॥ बृहस्पति, शनि, राहु, मंगल इन ग्रहोंका तीन बीजाक्षरोंसे दो दो हजार जप करे पीछेसे दान देवे ॥ ३५ ॥

एभिर्मंत्रैर्जपं कृत्वा सुवर्णं माषविंशतिः । द्वात्रिंशन्माषरजतमश्वं वाप्यथ सौरिभिः ॥३६॥ कपिला गाश्च दातव्या वस्त्रं त्रिंशत्करैर्मितम् । सार्द्धद्विशेर्ताम्रपात्रं घृतपूर्णं प्रदापयेत् ॥ ३७ ॥ जापकाय प्रदातव्यं यदि शक्तिर्न जायते । पूर्वपापविनाशाय चतुर्थांशेन कारयेत् ॥ ३८ ॥

मूलमें कहे हुए मंत्रोंका जप कराना । बीस मासे सोना, बत्तीस मासे चांदी, घोड़ा या गैया ॥ ३६ ॥ कपिला गौ, तीस हाथ कपड़ा ढाई सेर तामेका पात्र घीसे भरके दान करे ॥ ३७ ॥ जप करनेवालेको दे जो इतना करनेकी सामर्थ्य नहीं हो तौ पहिले किये हुए पाप दूर करनेके लिये चौथाई दान करे ॥ ३८ ॥

मातृपित्रोर्हतः पूर्वं यज्जाते मातृघातके ।
एतद्दानात्प्रशमनं मातृदोषः कृतः पुरा ॥ ३९ ॥

इस मनुष्यने पहिले जन्ममें मातापिताका वध किया था इस दानके करनेसे पहले किया हुआ माताका दोष नाशको प्राप्त होता है ॥ ३९ ॥

अथ दरिद्रयोगः ।

क्रूरश्चतुर्थकेंद्रस्थो धने क्रूरोऽथवा गतः । दरिद्रयोगं जानीयाद्राजपुत्रोऽपि यो नरः ॥ ४० ॥ पंचत्रिनवबीजानि ग्रहाणां जपमाचरेत् । सुवर्णं माषद्वाविंशद्दद्याद्धेनुं सुतैर्युताम् ॥ ४१ ॥ रौप्यं तद्द्विगुणं दद्याद्वस्त्रं त्रिंशत्करैर्मितम् । माषसप्तमणं दद्यात् जापकाय विशेषतः ॥ ४२ ॥

पापग्रह चारों केंद्रमें बैठे हों । एको योगः । अथवा धनस्थानमें सब पापग्रह बैठे हों तो दरिद्रयोग जानना । जो राजाका पुत्र हो तो भी दरिद्री हो ॥ ४० ॥ पांच तीन बीजाक्षरोंसे ग्रहोंका जप करवावे । बाईस मासे

सोना तथा बछड़ासहित गौ दान करे ॥ ४१ ॥ चांदी सोनेसे दूनी चवालीस मासे दान करे । तीस हाथ कपड़ा सात मन उरद दान करके विशेषतासे जप करनेवालेको दे ॥ ४२ ॥

कुर्याद्दोषविनाशाय यदि शक्तिर्न जायते । चतुर्थांशेन कर्तव्यं जाह्नवीस्नानमाचरेत् ॥ ४३ ॥ तस्मादस्मिन्योगजातं बालकस्य न संशयः । न करोति यदा दानं दुःखदारिद्रभाग्भवेत् ॥ ४४ ॥

दोषके विनाशके अर्थ दान करे । जो इतना दान करनेकी ताकत न हो तो चौथा हिस्सा दान करे और गंगास्नान करे ॥ ४३ ॥ इस कारणसे इस योगमें पैदा हुए बालकको संदेह नहीं है । जो दान नहीं करे तो मनुष्य दुःखी दरिद्री हो ॥ ४४ ॥

अथ विघातयोगमाह ।

लग्ने चैकादशे शौरी रिपुस्थाने निशापतिः । भूमिपुत्रो सप्तमस्थो मातृपित्रो न जीवति ॥४५॥ लग्ने तिष्ठति चेत् क्रूराः पापाः सप्तमगा यदि । मातापित्रोऽतिदुःखार्तः दारा तस्य न जीवति ॥४६॥ लग्ने त्रिकस्थिते क्रूरास्तदा पुत्रो न जीवति । अस्मिन् योगे नरो जातो राजमान्योऽतिदुर्बलः ॥ ४७ ॥

जन्मलग्न वा ग्यारहवें शनैश्चर हो, छठे घरमें चन्द्रमा हो, मंगल सातवें घरमें हो तो उसके माता पिता नहीं जीते हैं॥४५॥जन्मलग्नमें जो पापग्रह हो और सातवें भी पापग्रह हो तो उसके माता पिता बड़े दुःखीहों और उसकी स्त्री नहीं जीती है॥४६॥जन्मलग्न,छठे,आठवें,बारहवें जो सब पापग्रह बैठे हो तो उसकी सन्तान नहीं जीती है । इसयोगमें जो मनुष्य पैदा हो तो राजमान्य और अतिदुर्बल शरीरवाला होता है ॥ ४७ ॥

राहुकेंदुकुजार्कीणां पंचबीजाक्षरं जपेत् । पश्चाद्दानं प्रदातव्यं जापकाय न संशयः ॥ ४८ ॥ मुक्ताविद्रुमदानेन सर्वदोषो विनश्यति । त्रिंशन्माषसुवर्णस्य पुष्परागसमन्वितम् ॥ ४९ ॥

आज्यं मधु सलवणं दानं दत्त्वा सुखी भवेत् । दुग्धकर्पूरपुष्पैश्च ताम्रपात्रं प्रपूरयेत् ॥ ५० ॥ तस्य दोषस्य शांत्यर्थं कुर्यान्नात्र विचारणा । न करोति यदा दानं वैरं वै भवति ध्रुवम् ॥ ५१ ॥

राहु,सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, शनैश्चर इन ग्रहोंका पञ्च बीजाक्षरों करके जप करवावे पीछेसे निःसंशय जप करनेवाले ब्राह्मणको दान करे ॥४८॥ मोती मूंगाके दानकरनेसे सम्पूर्ण दोषोंका नाश होता है । तीस मासे सोना पुष्पराज मणि कर सहित ॥ ४९ ॥ घीसहित नोनका दान देनेसे सुखी होता है। दूध कपूर पुष्पकरके तांबेका बर्तन भरे ॥५०॥ तिस दोषकी शांतिके अर्थ दे कुछ विचार नहीं करना चाहिये । अगर दान नहीं करे तो निश्चय करके वैर होता है ॥ ५१ ॥

अथ त्रिषुघातीयोगः ।

रविराहू कुजः शौरिर्लग्ने वा पंचमे स्थितः । आत्मानं हंति पितरं मातरं च न संशयः ॥ ५२ ॥ योगोऽयं त्रिषुघातारो जन्मकाले भवेन्नृणाम् । पितृदोषः कृतः पूर्वं पुत्रहीनो नरो भवेत् ॥५३॥

सूर्य, राहु, मङ्गल, शनैश्चर ये जिस मनुष्यके लग्नमें अथवा पञ्चम घरमें हों तो वह पुरुष अपना और मातापिताका नाश करता है ॥५२॥ यह त्रिषुघातीयोग मनुष्योंके जन्मकालमें हो तो उस मनुष्यने पूर्वजन्ममें पितरोंका दोष किया है इससे सन्तानहीन भी होता है ॥ ५३ ॥

अथ अन्यप्रकारः ।

सूर्यक्षेत्रे गतः शौरिर्भौमक्षेत्रे यदा अगुः । राहुक्षेत्रे दिवानाथो मंदक्षेत्रे धरासुतः ॥ ५४ ॥ सुते लग्नचतुर्थस्थौ पंचमे संस्थितेऽपि वा । शनिराहू धरासूनुः पुत्रनाशं करोति वै ॥ ५५ ॥ अस्मिन् योगे नरो जातः त्रिषुघाती भवेद् ध्रुवम् । राजपुत्रोऽथवा मंत्री पापकर्मान्वितः सदा ॥ ५६ ॥ षष्टिमाषसुवर्णस्य रौप्यं षष्टिचतुर्गुणम् । शकटो वृषसंयुक्तो दद्याद्दोषस्य

शांतये ॥ ५७ ॥ गोधूमशर्कराक्षीरं वस्त्रं विंशत्करैर्मितम् । दैवज्ञाय प्रदातव्यं भृगुणा वै प्रभाषितः ॥ ५८ ॥

अब अन्य प्रकारसे योग कहते हैं । सूर्यकी सिंहराशिमें शनैश्वर बैठा हो और मंगलके स्थान मेष या वृश्चिकराशिमें राहु हो राहुका क्षेत्र कन्या राशिमें सूर्य बैठा हो,शनैश्वरके स्थान मकर वा कुंभमें मंगल बैठा हो । एको योगः॥५४॥पञ्चम, लग्न, चौथे शनि, राहु,मंगल बैठे हों । द्वितीयो योगः । वा तीसरे,छठे,दशवें, ग्यारहवें बैठे हों । तृतीयो योगः। इन योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य पुत्रनाशको प्राप्त होता है ॥५५॥ इस योगमें पैदा हुए मनुष्य निश्चय करके त्रिषुघाती होते हैं, राजाका पुत्र हो चाहे मन्त्री हो पापकर्मोंमें सदा रहता है ॥ ५६ ॥ साठ मासे सोना और दोसौ चालीस मासे चांदी, बैलों करके सहित गाडी दोषकी शांतिके अर्थ दे ॥ ५७ ॥ गेहूं, खांड,दूध,वीस हाथ कपड़ा ज्योतिषीके अर्थ दान करके दे। यह भृगुजीने कहा है॥५८॥

अथ शक्रयोगः ।

मेषे मार्त्तण्डलाभस्थो कर्के जीवधनस्थितः । कर्मस्थितो दत्यपूज्यः शक्रयोगो भृगूदितः ॥ ५९ ॥ इंद्रयोगे नरोत्पन्नः सुललाटः सुविक्रमः । द्विजदेवार्चने प्रीतिर्द्युतिमान्कीर्तिमान् वशी ॥ ६० ॥ द्रव्यं न स्थीयते गेहे सदा चितासमाकुलः । साधुसेवीति विख्यातो नराणां च नराधिपः ॥ ६१ ॥

मेषराशिका सूर्य ग्यारहवें घरमें बैठा हो और कर्कराशिका बृहस्पति दूसरे घरमें हो, दशवें घरमें शुक्र बैठा हो तो भृगुप्रोक्त शक्र नाम योग होता है ॥ ५९ ॥ इस योगमें उत्पन्न हुए मनुष्यका ललाट अच्छा होता है और उत्तम पराक्रम होता है । ब्राह्मण देवताओंके पूजनमें प्रीति होती है, कांतिमान् बडा यशस्वी तथा नेमी होता है ॥ ६० ॥ उसके घरमें द्रव्य नहीं ठहरता है, हमेशा फिकरसे व्याकुल रहता है, साधुओंकी सेवा करनेवाला विख्यात मनुष्योंमें राजा होता है ॥ ६१ ॥

अथ विलासहानियोगः ।

जायेशः पापसंयुक्तः शीर्षोदयगतोऽपि वा । कुजो राहुः सप्तमस्थो पापग्रहनिरीक्षितः ॥ ६२ ॥ सप्तमे भवने भौमः अथवा राहुसूर्यजौ । दारानाथः त्रिकस्थाने पापग्रहयुतो भवेत् ॥६३॥ योगो विलासहानिः स्याद्भार्यादुःखी भवेन्नरः । तमसः शशिकेतूनां त्रिभिर्बीजाक्षरं जपेत् ॥ ६४ ॥

सातवें घरका स्वामी पापग्रहोंसे युत हो, शीर्षोदय राशिमें स्थित हो तहां शीर्षोदय मि. सिं. क. वृ. तु. कुम्भ इनको कहते हैं । एको योगः । मंगल, राहु सातवें बैठे हों, शनि सूर्यकरके देखे गये हों। द्वितीयो योगः ॥ ॥६२॥ सातवें घरमें मंगल हो । तृतीयो योगः । वा सातवें घरमें राहु शनैश्चर हों । चतुर्थो योगः। वा सातवें घरका स्वामी पापग्रहोंसहित छठे, आठवें, बारहवें हो । पंचमो योगः ॥६३॥ इस योगका नाम विलासहानि है । स्त्रीसे दुःख होता है राहु, चंद्रमा, केतु इनका तीन बीजाक्षरोंसे जप करवावे ॥ ६४ ॥

जपं क्षिप्रं ततः कुर्याद्दद्याद्दानं सुखाय वै । सुवर्णं रजतं दत्त्वा ताम्रपात्रे घृतान्वितम् ॥ ६५ ॥ न करोति यदा दानं भार्यादुःखी नरो भवेत् । क्रोधपाशेन संयुक्तो दारहत्या कृता पुरा ॥ ६६ ॥ यावन्न दीयते दानं तावद्भार्या न जीवति । वियोगं प्राप्यते पुंसां भृगुणा वचनोदितः ॥ ६७ ॥

जप जल्दीसे करे तिसके बाद दान दे सुखके अर्थ सोना, चांदी, तांबेका बर्त्तन घी सहित दान करे ॥६५॥ जो दान नहीं करे तो स्त्रीकरके मनुष्य दुःखी हो, क्रोधकी फांसी करके सहित पूर्वजन्ममें स्त्रीकी हत्या करता हुआ ॥६६॥ जबतक दान नहीं दे तबतक स्त्री नहीं जिये अगर जिये तो रोगी रहे, मनुष्यको स्त्रीसे वियोग प्राप्त रहे । यह भृगुने कहा है ॥ ६७ ॥

अथ शून्ययोगमाह ।

देहाधीशे पापयुक्ते षष्ठाष्टमव्ययस्थितः । कुजतो राहुदुश्चिक्ये

योगोऽयं शून्यनामकः ॥ ६८ ॥ शून्या मतिर्भ्रमश्चिंता तथा रोगान्वितः सदा । निशीथे शोकसंतप्तो उदासीनो भवेन्नरः ॥ ॥ ६९ ॥ विंशत्रिंशद्वर्षमध्ये बहुरोगान्वितो नरः । सुदानाद्विलयं याति अदाने शून्यवर्द्धते ॥ ७० ॥ शनिराहुकुजसौम्यास्त्रिभिर्बीजाक्षरं जपेत । सतनंदशतं कुर्यात्सहस्रमयुतं जपेत् ॥ ७१ ॥ हविः पंचामृते कुर्यादश्वं च विधिना सह ॥ दातव्यं वृषभं शुभ्रं गोधूमं च मणद्वयम् ॥ ७२ ॥

लग्नका स्वामी पापग्रहयुत होकर छठे, आठवें बारहवें बैठा हो मंगलसे राहु तीसरे घरमें हो तो शून्य नामक योग होता है ॥६८॥ बुद्धि शून्य हो भ्रम चिंता तैसे ही हमेशा रोगकरके सहित रहे । उस मनुष्यको रातके समय शोकसे संताप हो उदासी हो॥६९॥बीससे लेकर तीस बरसके बीचमें बहुत रोग हों अच्छे दान करनेसे इस योगका दोष दूर होता है । दानके न करनेसे इस योगकी वृद्धि होती है ॥ ७० ॥ शनि,राहु,मंगल,बुध इनका तीन बीजाक्षरोंसे सात,नौ,हजार,दश हजार जप करे ॥ ७१ ॥ पंचामृतसे हवन करे,विधिसहित घोडेका दान,सफेद बैल,और गेहूं दो मन दान करे॥७२॥

जापकाय प्रदातव्यो माषतंदुलसंयुतः । सुवर्णमाषपंचाशद्रौप्यं तत्रिगुणं कृतम् ॥ ७३ ॥ कांस्यपात्रे मसूरान्नं भोजनं दक्षिणायुतः । राहुभौमार्किशांत्यर्थं दद्यादानं सुखी भवेत ॥ ७४ ॥ एतद्दानप्रभावेण शून्ययोगो विलीयते । यदा न कुरुते दानमाधिव्याधियुतो नरः ॥ ७५ ॥ वृद्धकाले च संप्राप्ते सन्निपातान्मृतिर्भवेत । अन्ते कैवल्यमाप्नोति एतद्दानप्रभावतः ॥७६॥ पुरा जन्म नरः कृत्वा तनुजाक्रयविक्रयः । तस्मादेतेषु योगेषु जन्म जातं न संशयः ॥ ७७ ॥

जप करनेवालेको चावलसहित उर्द,सोना पचास मासे, चांदी एक सौ पचास मासे दे ॥७३॥ कांसीका पात्र,मसूर भोजन दक्षिणासहित, राहु,

मंगल, शनिकी शांतिके अर्थ दान दे तो सुखी हो ॥ ७४ ॥ इस दानके प्रभावसे शून्ययोग नाश होता है जो दान नहीं करे तो बहुतसी बाधाआसे दुःखी होता है ॥ ७५ ॥ वृद्धावस्थामें सन्निपातसे मृत्यु हो किंतु इस दानके प्रभावसे अंतमें मुक्तिको प्राप्त हो ॥ ७६ ॥ पहिले जन्ममें इस योगमें जन्मे मनुष्यने अपनी कन्याका क्रयविक्रय किया था इस कारणसे इस योगमें जन्म हुआ इसमें संशय नहीं ॥ ७७ ॥

अथ इलाख्यसर्पयोगमाह।

त्रिषु केंद्रेषु पापस्थ इलाख्यः सर्पयोग-तत् । तदा च नवबीजानि जपेद्ध्रीं ह्रौं शतत्रयम् ॥ ७८ ॥ ततः पुत्रसुखो भूत्वा वस्त्रं द्वादशभिः करैः । सवत्सां च सुवर्णस्य माषा एकोनविंशतिः ॥ ७९ ॥ तंदुलस्य कृतः सर्पो जापकाय प्रदापयेत् । एतद्दानप्रभावेन ह्ययं योगो विलीयते ॥८०॥ अस्मिन् योगे नरो जातः परदाराररतिर्भवेत् । दुष्टात्मा छिन्नपापश्च द्विजदेवविनिंदकः ॥ ८१ ॥

तीन केन्द्रोंमें पाप ग्रह बैठे हों तो इलाख्य सर्प नाम योग होता है तो नौ बीजाक्षरोंसे ह्रीं ह्रौं तीन सौ जपे ॥ ७८ ॥ तो पुत्रका सुख हो, कपडा बारह हाथ, बछडा सहित गौ, उन्नीस मासे सोना ॥ ७९ ॥ तथा चावलका सप बनाय जप करनेवालेको दे इस दानके प्रभावसे यह योग दूर होता है ॥ ८० ॥ इस योगमें पैदा हुए मनुष्यकी पराई स्त्रीमें प्रीति होती है तथा यह दुष्टात्मा, पापी तथा ब्राह्मण और देवताओंका निंदक होता है ॥ ८१ ॥

अथ विफलनामयोगः।

चतुष्केंद्रेषु क्रूरस्थो रिपुरंध्रनिशापतिः । विफलाभिधो भवेद्योगः फलं तस्य तथा शृणु ॥ ८२ ॥ विफले यो नरो जातस्तस्य यत्नं वदाम्यहम् । ततः क्रूरग्रहाणां च जपं कृत्वा प्रयत्नतः ॥८३॥ रजतं माषषड्विंशद्द्याद्धेनुं सवत्सकाम् । सुवर्णमाष

द्वात्रिंशद्वस्त्रं विंशत्करैर्मितम् ॥८४॥ नवबीजाक्षरं जप्त्वा रविभौमशनिस्तमः । मंत्रैरेभिः प्रजाप्यश्च दत्वा दानं विशेषतः ॥८५॥

चारों केंद्रोंमें पाप ग्रह बैठे हों, छठे या आठवें चन्द्रमा हो तो विफल नाम योग होता है इसका फल सुन ॥ ८२ ॥ विफलयोगमें जो मनुष्य पैदा हो इसका मैं यत्न कहता हूं,इसके बाद पापग्रहोंके मंत्रका जप यत्नसे करे ॥ ८३ ॥ छत्तीस मासे चांदी,बछडे सहित गौ,बत्तीस मासे सोना,बीस हाथ कपडा इनका दान करे ॥ ८४ ॥ नौ बीजाक्षरोंका जप करे, सूर्य मंगल शनि तथा राहुके मन्त्रोंसे जप करे और विशेष करके दान दे॥८५॥

विफलाख्यफलं चैव तत्काले तद्विलीयते । कदाचिन्न ददेद्दानं द्वात्रिंशद्वर्षतो सुखम् ॥ ८६ ॥ अस्मिन् योगे नरो जातः पश्चान्निर्धनतां व्रजेत् । बहुदुःखान्वितश्चैव भृगुणा वै प्रकाशितः ॥ ८७ ॥

विफलयोगका फल उसी समय नाश हो जाता है, कदाचित् दान नहीं करे तो बत्तीस वर्षतक सुखी रहे ॥ ८६ ॥ इस योगमें जो मनुष्य उत्पन्न हो वह पीछे निर्धनी होय, अनेक दुःखोंसे युक्त हो यह भृगुजीने प्रकाश किया है ॥ ८७ ॥

अथ आमयोगः ।

लग्ने मन्दोऽष्टमे राहू रविभौमौ सुखे स्थितौ । आमयोगे भवेत्कुष्ठी धनहीनो महादुखी ॥८८॥ षट्त्रिंशन्मिते वर्षे नरो वै निर्धनो भवेत् । अस्मिन् योगे भवेद्रोगी दानाद्दोषो विलीयते ॥ ८९ ॥ शनी राहुश्च पापानां चतुस्त्रीणि दशस्त्रिषु । जपं कृत्वा ततो दानं शकटं वृषसंयुतम् ॥ ९० ॥

लग्नमें शनि, आठवें राहु और चौथे सूर्य, मंगल बैठे हों तो आम नाम योग होता है, इसमें पदा हुआ कोढी, धनहीन तथा अधिक दुःखी हो ॥ ८८ ॥ इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य छत्तीसवें वर्षमें निर्धन

होता है तथा रोगी होता है,दान करनेसे दोष दूर होता है॥८९॥ शनिका ४००, राहुका ३००, सूर्यका १०००, मंगलका ३००, क्रमसे जप करवावे, दान करे, बैलोंकरके सहित गाडीका दान करे ॥ ९० ॥

सप्तधान्ययुतं तैलं सुवर्णं दशमाषकम् । द्वात्रिंशत्करं वस्त्रं दानं दद्यात्सुखी भवेत् ॥ ९१ ॥ अस्मिन् योगे नरो जातस्तदा वै पूर्वजन्मनि । बालस्त्रीघातकः सोऽपि तेन पापेन कुष्ठभाक् ॥ ९२ ॥ यदा न कुरुते दानं तदा वै सप्तजन्मनि । बहुरोगयुतो नित्यं भृगुणा वै प्रकाशितः ॥ ९३ ॥

सात नाज तैलातेल, दस मासे सोना, बत्तीस हाथ कपडा दान करनेसे सुखी हो ॥९१॥ इस योगमें जो मनुष्य पैदा हो तो पहिले जन्मोंमें वह पुरुष बालस्त्रीका घाती होता है, और उस पापसे कोढी होता है ॥ ९२ ॥ जो दान नहीं करे तो सात जन्मोंतक बहुतसे रोगोंकरके सहित सदैव रहे यह भृगुजी महाराजने प्रकाश किया है ॥ ९३ ॥

अथ दारुणयोगः ।

मूर्तिरंध्रस्थिते भानुर्व्यये षष्ठे खलग्रहः । सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्था योगोऽयं दारुणाभिधः ॥९४॥ धर्मकर्मरतो नित्यं शास्त्रज्ञो बहुसेवकः । धनधान्ययुतः सोऽपि सभावक्ता गुणान्वितः ॥ ९५ ॥ आदौ च षोडशे वर्षे पीडा भवति निश्चितम् । षट्त्रिंशन्मिते वर्षे महद्दुःखं भविष्यति ॥ ९६ ॥

लग्न वा आठवें घरमें सूर्य हो, छठे बारहवें पापग्रह हों, शुभ ग्रह केंद्र त्रिकोणमें बैठे हों तो दारुणनाम योग होता है ॥९४॥ धर्मकर्ममें हमेशा तत्पर, शास्त्रका जाननेवाला, बहुत नौकरोंवाला, धन अन्नकरके सहित, सभामें बोलनेवाला, गुणी ॥ ९५ ॥ पहिले सोलह वर्षमें निश्चयकरके पीडा होती है, छत्तीसवें वर्षमें बहुत दुःख होता है ॥ ९६ ॥

उत्कृष्टषड्वर्षाणि शत्रुपक्षान्नृपाद्भयम् ॥

किं जपं कस्य पूजा च किं दानं च किमौषधम् ॥ ९७ ॥

भृगुरुवाच ।

सप्तविंशतिसूर्यस्य जपं कुर्यात्प्रयत्नतः । ततो दान प्रकर्त्तव्यं रौप्यं द्वादशमाषकम् ॥ ९८ ॥ द्विगुणं हाटकं दद्यात् घृततंदुलसंयुतम् । द्वादशकरैर्मितं वस्त्रं माषान्नं प्रस्थपञ्चभिः ॥ ९९ ॥

छः वर्षतक बहुत रोग शत्रु और राजासे भय रहता है. किसका जप, किसकी पूजा, क्या दान और क्या दवा करे ॥ ९७ ॥ तब भृगुजी बोले–सत्ताईस सौ सूर्यका यत्नकरके जप करे इसके बाद दान करे, बारह मासे चांदी ॥ ९८ ॥ चावीस मासे सोना दे, घी चावलसहित, बारह हाथ कपड़ा, तथा दो सेर उर्द दान करे ॥ ९९ ॥

यद्दिने पूजनं कृत्वा दानं दद्यात्प्रयत्नतः । जापकाय प्रदातव्यं सर्वविघ्नस्य शांतये ॥ १०० ॥ चतुःषष्टिमिदं यंत्रं प्रक्षाल्यं दिवसोदये । एतद्दानोपचारे च कष्टशांतिर्भविष्यति ॥ १ ॥ न करोति यदा दानमंते दुःखमवाप्नुयात् । अस्मिन् योगे नरो जातो ब्रह्महत्या कृता पुरा ॥ २ ॥

जिस दिन पूजन करे उसी दिन सब विघ्नोंकी शांतिके अर्थ यत्नकरके जप करनेवालेको दान दे ॥१००॥ चौसठके यंत्रको सूर्यके उदयके समय जलमें स्नान करावे, इस दानके करनेसे कष्ट शांत हो जाता है ॥ १ ॥ जो दान नहीं करे तो अंतमें तकलीफ होती है । इस योगमें पैदा हुए मनुष्यने पहिले ब्रह्महत्या की थी ॥ २ ॥

अथ चन्द्रयोगमाह ।

लग्नाद्वै पञ्चमे यावत् क्रूराः सौम्यास्तु खेचराः । चंद्रयोगे भवेद्रोगी अश्ववांश्च धनान्वितः ॥ ३ ॥ पुत्रपक्षे भवेच्चिंता वातरोगकफान्वितः । सवत्सा धेनुर्दातव्या गुरवे च भृगूदितः ॥ ४ ॥

लग्नसे पाँचवें घरतक सब पापी तथा शुभ ग्रह बैठे हो तो चन्द्रयोग होता है, इसमें पैदा हुआ मनुष्य भोगी, घोडा सवारीमें रहे, धनवाला होता है ॥ ३ ॥ पुत्रकी चिंता रहती है, वातकफका रोग हो, बछडासहित गौका दान करके गुरुके अर्थ दे यह भृगुजीने कहा है ॥ ४ ॥

अथ अद्भुतसागरयोगः ।

चतुष्केंद्रेषु सौम्याश्च पापास्तु त्रिषडायगाः । धनधान्यधरा-युक्तो जातो अद्भुतसागरः ॥ ५ ॥ दशवर्षाणि पर्यंतं महद्दुःखं भविष्यति । ग्रहार्चनेन दानेन यदि जीवति मानवः ॥ ६ ॥ विख्यातो धुरि शूराणां स जातः कुलदीपकः । सुशीलो सुक-लाविज्ञो नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ ७ ॥

चारों केंद्रोंमें शुभ ग्रह हों और तीसरे, छठे, बारहवें पाप ग्रह हों तो अद्भुतसागर योग होता है,इसमें पैदा हुआ धन अन्न पृथ्वीकरके युक्त होता है ॥ ५ ॥ दश वर्षकी उमरतक बहुत दुःख होता है. ग्रहोंके पूजन दान करनेसे जो यह मनुष्य जीता रहे तो ॥ ६ ॥ संसारमें धीर पुरुषोंका अग्रणी होता है, कुलमें दीपकके समान उत्तम शीलवाला,अच्छी कलाओंका जाननेवाला तथा राजाओंक सदृश होता है ॥ ७ ॥

अथ अर्धाद्भुतयोगः ।

मूर्तिस्थितो निशानाथः अन्ये सौम्यास्तु केंद्रगाः ।
अर्द्धाद्भुतस्तदा योगो बलमर्दो भवेन्नरः ॥ ८ ॥

जन्मलग्नमें चन्द्रमा हो और बाकीके शुभग्रह केंद्रमें हों तो अर्द्धाद्भुत नामक योग होता है, इसमें पैदा हुआ मनुष्य फौजका मर्दन करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ सागरनामयोगः ।

यदा एकोऽपि केन्द्रस्थो भौमाद्याः पंच खेचराः। स्वोच्चे स्वक्षे त्रगाश्चापि योगोऽयं सागराभिधः ॥ ९ ॥ चतुश्चत्वारि वर्षाणि

पर्यंतं सुखमुच्यते । ततो गोदानं कर्त्तव्यं ताम्रपात्रे घृतान्वितम् ॥ १० ॥ धनधान्ययुतो नित्यं धराधीशो प्रतापवान् । अंते दुःखमवाप्नोति देवदोषः कृतः पुरा ॥ ११ ॥

मंगलको आदि लेकर शनिपर्यंत इनमेंसे एक भी केंद्रमें बैठा हो तो सागरनाम योग होता है । जो अपने उच्चमें वा क्षेत्रके होकर बैठे तब ॥ ९ ॥ चवालीस वर्षकी उमरतक सुखी रहे, तिसके बाद गोदान करे, तांबेका बर्तन घीसे भरके दान करे ॥ १० ॥ तो धन अन्नकरके सहित, हमेशा पृथ्वीका मालिक तथा बड़ा प्रतापी हो, अंतमें दुःखको प्राप्त हो इसने पहिले देवताका दोष किया है ॥ ११ ॥

अथ विपाकयोगः ।

चतुष्केंद्रेषु शून्याश्च त्रिकोण अष्टमे स्थितः । क्रूरा विपाकयोगोऽयं वेदनिंदा कृता पुरा ॥ १२ ॥ तस्माद्विपाकयोगेषु जन्म जातं न संशयः । राजर ति विख्यातो म्लेच्छबुद्धिर्भवेदिति ॥ १३ ॥ जपं पंचशतं कुर्याद्द्यात् हेमवृषोऽरुणः । पंचाशन्माषरजतं वस्त्रं त्रिंशत्करैर्मितम् ॥ १४ ॥

चारों केन्द्र शून्य हों, नौवें, पांचवें, आठवें सब पापग्रह बैठे हों तो विपाकनामक योग होता है, इस योगमें पैदा हुए मनुष्यने पहिले जन्ममें वेदकी निंदा की थी ॥ १२ ॥ तिस कारणसे विपाकयोगके विषे जन्म मनुष्यका हुआ इस योगमें उत्पन्न हुआ, मनुष्य महाराजाकरके विख्यात म्लेच्छ बुद्धि होता है ॥ १३ ॥ पांच सौ मंत्रका जप करे, सोना, लाल बैल, पचास मासे चांदी तथा तीस हाथ कपडा दान करे ॥ १४ ॥

सप्तधान्यं तिलं तैलं लोहपात्रं घृतान्वितम् । एलालवंगकस्तूरी दीयते श्रद्धयान्वितः ॥ १५ ॥ पश्चादात्मजबन्धुभ्यो महत्सौख्यं भविष्यति । अन्तकाले निशायां वै धनचिंता प्रजायते ॥ ॥ १६ ॥ शत्रुपक्षान्नृपाच्चिंता संततो मनुजः सदा । प्रभावात्पूर्वदानस्य चिंताकष्टो विनश्यति ॥ १७ ॥

सात नाज, तिलतेल,लोहेका बर्त्तन घीकरके सहित, इलायची, लौंग, कस्तूरी श्रद्धासहित दे ॥ १५ ॥ पीछे पुत्र भ्राताओंका बहुत सुख होता है। अन्तरमें निश्चयकरके धनकी चिंता पैदा होती है॥ १६ ॥ शत्रुओंसे राजासे चिंताकरके संतापको प्राप्त होता है, पहिले कहे हुए दानके प्रभावसे चिंताकष्ट दूर होता है ॥ १७ ॥

अथ पातयोगः ।

मूर्तौ चैवाष्टमे षष्ठे शनिराहुकुजा यदा । पाताभिधस्तदा योगो धनधान्यविनाशकः ॥ १८ ॥ पंचत्रिनवबीजानि जपं कुर्याद्विशेषतः । तुरंगः कांचनं रौप्यं दानं देयं भृगूदितम् ॥ १९ ॥

लग्नमें वा आठवें वा छठे शनि, राहु, मंगल हों तो पातनाम योग होता है धन अन्नका विनाश करता है ॥ १८ ॥ पांच तीन नौ बीजाक्षरोंसे जप करे, विशेषकरके घोडा, सोना,चांदीका दान करे यह भृगुजीकरके कहा गया है ॥ १९ ॥

अथ नंदयोगः ।

युग्मं युग्मं भवेत्त्रीणि चैकत्र त्रिग्रही भवेत्
नंदयोगः स विख्यातश्चिरायू राजपूजितः ॥ १२० ॥

दो दो ग्रह तीन जगह हों और तीन ग्रह एक जगह हों तो नंदयोग होता है। इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य बडी उमरवाला राजोंकरके पूजनीय होता है ॥ १२० ॥

अथ ऐंद्रबाहुयोगः ।

लग्नाच्च हिबुके यावत् क्रूराः सौम्यास्तु खेचराः ।
ऐंद्रबाहुस्ततो योगो धनी मानी सुविक्रमः ॥ २१ ॥

जन्मलग्नसे चौथे घरतक जो सब ग्रह हों तो ऐन्द्रबाहु योग होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य धनी, मानी, उत्तम पराक्रमी होता है ॥२१॥

अथ श्रीनन्दयोगः ।

मीने शशिस्थिते शुक्रः कर्कस्थे त्रिदशार्चितः । तृतीयकादशे पापः श्रीनंदाख्यो यशःप्रदः ॥ २२ ॥ धनी मानी सुखी भोगी मंत्रोपासनतत्परः । श्रीनंदे तु नरो जातः शांतोऽत्यंतगुणी भवेत् ॥ २३ ॥

मीनराशिम चन्द्रमा तथा शुक्र हों, कर्कराशिमें बृहस्पति हो, तीसरे ग्यारहवें पापग्रह हों तो श्रीनंद नाम योग यशका देनवाला होता है ॥ २२ ॥ जो श्रीनन्दयोगमें पैदा हो वह धनी, मानी, सुखी, भोगी मंत्रोपासनामें तत्पर, शांत स्वभाव तथा अधिकगुणी होता है ॥ २३ ॥

अथ विपत्तियोगः ।

लाभे राहुः सुते शौरः कर्मस्थाने महीसुतः । विलोकिते रविः शुक्रो योगो विपत्तिनामकः ॥ २४ ॥ अस्मिन् योगे नरो जातो बालहत्या कृता पुरा।मंदराह्वर्कभौमानां नवबीजाक्षरो जपः ॥२५॥

ग्यारहवें राहु, पांचवें शनि दशममें मंगल बठा हो, सूर्य शुक्र देखते हों तो विपत्तिनामक योग होता है ॥२४॥ इस योगमें जो मनुष्य पैदा हो उसने पहिले बालककी हत्या की है। शनि राहु मंगलका नौ बीजाक्षरोंसे जप करवावे ॥ २५ ॥

द्विसहस्रजपं कुर्य्यात्पश्चाद्दानं प्रदापयेत् । दानाद्विलीयते पीडा पुत्रसौख्यं भविष्यति ॥ २६ ॥ सर्वविघ्नविनिर्मुक्तो धनपुत्रान्वितो भवेत् । सुवर्णं रजतं चाज्यं दद्याद्दानं प्रयत्नतः ॥ २७ ॥

दो हजार जप करवाके पीछेसे दान दे दान करनेसे पीडा दूर होती है और पुत्रका सुख होता है ॥२६॥ सम्पूर्ण विघ्नोंकी शान्ति अर्थ दान करे तो धन पुत्रकरके सहित हो, सोना,चांदी, घीका यत्नकरके दान करे ॥२७॥

अथ चक्रदामिनीयोगः ।

बुधक्षेत्र यदा जीवो जीवक्षेत्र यदा भृगुः । शुक्रक्षेत्रे निशानाथो

योगोऽयं चक्रदामिनी ॥ २८ ॥ चातुर्यगुणसंपन्नः कामाल्पो पद्म-लोचनः । स च वै दीर्घजीवी स्याद्धरानाथः प्रतापवान् ॥ २९ ॥

बुधके घरमें बृहस्पति बैठा हो बृहस्पतिके घरमें शुक्र हो और शुक्रके घरमें चंद्रमा बैठा हो तो चक्रदामिनी नामक योग होता है ॥२८॥ इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य चतुरतामें निपुण होता है थोड़ा कामी, कमलसे नेत्र, निश्च-यकरके बडी उमरवाला, धरतीका मालिक और प्रतापी होता है ॥ २९ ॥

अथ संताननाशयोगः ।

सुखस्थितो यदा राहुः पंचमेशः शनियुतः । आदौ पुत्रीद्वयं त्रीणि पश्चात्पुत्रं प्रसूयते ॥ १३० ॥ यशस्वी क्षीणकांतिः स्यात्कुटिलो बहुभृत्यवान् । प्रपंचरचने दक्षो बालहत्या कृता पुरा ॥ ३१ ॥ अपुत्रत्वमवाप्नोति मंत्रराहुकुजोऽर्कजः । जपं क्षिप्रं ततः कुर्यात्पश्चाद्दानं प्रदापयेत् ॥ ३२ ॥

चौथे घरमें राहु हो पंचम घरका स्वामी शनिसहित हो तो पहिले दो तीन कन्या हों पीछेसे पुत्र पैदा होय ॥ १३० ॥ यशस्वी, क्षीणकांति हो, कुटिल, बहुत नौकरोंसहित, प्रपंच रचनेमें चतुर, तथा पहिले जन्मका बालघाती होता है ॥३१॥ पुत्रहीन होता है, राहु, मंगल, शनिका मंत्रजप जल्दीसे करावे पीछेसे दान दे ॥ ३२ ॥

परदाररतो नित्यं पुत्र एको न जीवति । स्थूलदेहो धनी दानी लज्जासंयुक्तमानुषः ॥ ३३ ॥ सप्तत्रिनवबीजानि जपं कुर्या-त्सुखी भवेत् । कृष्णां गां महिषीं दद्यात्स्वर्णनीलसितां-बरम् ॥ ३४ ॥

पराई स्त्रियोसे रमण करनेवाला, एक पुत्र भी नहीं जाता है मोटा शरीर,धनवान्,दान करनेवाला,लज्जाकरके सहित मनुष्य होता है ॥३३॥

सात, नौ, तीन बीजाक्षरोंसे जप करे तो सुखी हो काली गौ और भैंस, सोना, नीला और सफेद कपड़ा, दान करे तो पुत्र जिये ॥ ३४ ॥

अथ विपरीतयोगः ।

जीवक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा भृगुः । मंदारचंद्रा मेषस्था रिःफे वा अष्टमे गताः ॥ ३५ ॥ तदा विपरीतयोगोऽयमुत्पन्नो दुःखभाग् भवेत् । अस्मिन् योगे नरो जातो ब्रह्मघाती भवेद् ध्रुवम् ॥ ३६ ॥

बृहस्पतिका घर ९ । १२ में सूर्य हो; सूर्यके ५ घरमें शुक्र हो, शनि, मंगल, चंद्रमा मेषराशिके होकर छठे वा आठवें हों ॥ ३५ ॥ तो विपरीत नामक योग होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य दुःखको प्राप्त हो पहिले जन्ममें निश्चय करके ब्रह्मघाती हो संतानहीन होता है ॥ ३६ ॥

अन्यप्रकारमाह ।

लग्नेशो व्ययलाभस्थः क्रूरसंयुतवादृशः । मद्यमांसरतो नित्यं पूर्वजन्मद्विजोऽभवत् ॥३७॥ तातस्य दुःखितं कृत्वा त्रयो पुत्रा विनश्यति । इयं उभौ च योगेऽस्मिन् जातः पुत्रदुखी नरः ॥ ३८ ॥ किं जपं कस्य पूजां च किं विधानं किमौषधम् । भृगुरुवाच । मंदार्ककुजजीवस्य सप्तबीजाक्षरं जपः ॥ ३९ ॥

जन्मलग्नका स्वामी बारहवें या ग्यारहवें घरमें हो पापग्रहों करके सहित हो वा देखा गया हो तो मनुष्य मद्य,मांसको खानेवाला पूर्वजन्ममें ब्राह्मण था ॥ ३७ ॥ पिताको बहुत दुःख देता था, इससे तीन पुत्र उसके नाश हों । इन दोनों योगोंमें पैदा हुए मनुष्य पुत्रसे दुःखी होते हैं॥ ३८॥ यह क्या जप किसकी पूजा, क्या दान, कौन विधान और क्या औषध करे । तब भृगुजी बोले—शनि, सूर्य, मंगल, बृहस्पतिका सात बीजाक्षरोंसे जप करे ॥ ३९ ॥

सहस्रमेकं कर्तव्यं ततो दानं प्रदापयेत् । प्रवालहेमगोधूमान् रौप्यं द्वादशमाषकम् ॥ १४० ॥ पंचत्रिंशत्करैर्वस्त्रं सप्तान्नं च मणद्वयम् । पंचभिस्ताम्रपात्रेषु घृतेन परिपूरितम् ॥ ४१ ॥ विपरीतनरो जातो दद्याद्धेनुं सवत्सकाम् । जापकाय प्रदातव्य-मन्यैरपि न दीयते ॥ ४२ ॥ कर्पूरं महिषीं दद्यात् कांस्यपीताम्बरोऽम्बुजम् । चतुःषष्टिमिदं यंत्रं विधिवद्धार्यते कटौ ॥ ४३ ॥ दानाद्विलीयते पीडा भृगुणा वै प्रकाशितः । पूर्वकर्मार्जितं पापं क्षिप्रं शांतिर्भविष्यति ॥ ४४ ॥

एक हजार जप करे, इसके पीछे मूंगा, सोना, गहू, बारह मासे चांदी ॥१४०॥ पैंतीस हाथ कपडा, साता अन्न दो मन, तांबेके पांच पात्रोंमें घी भर दान दे ॥४१॥ विपरीत योगमें पैदा हुआ मनुष्य बछडस-हित गौ दान करे। दान जप करनेवालेको दे दूसरेको नहीं दे ॥ ४२॥ कपूर, भैंस, कांसा, पीला कपडा, कमल दान करे, चौसठका यंत्र विधिपू-र्वक कमरमें बांधे ॥४३॥ दान करनेसे पाप जल्दीसे दूर हो जाता है, दूसरे जन्मका भी पाप दूर होता है यह भृगुजीने प्रकाश करा है ॥ ४४ ॥

अथ कूटयोगः ।

संतानेशो महीपुत्रो रिपुरंध्रव्ययस्थितः । शनिक्षेत्रे गते चंद्रे योगोऽयं कूटनामकः ॥४५॥ अस्मिन् योगे नरो जातस्तदा वै पूर्वजन्मनि । स्वकुलस्य हृतं वित्तं कुलघाती भवेन्नरः ॥ ४६ ॥

पंचम घरका स्वामी और मंगल छठे, आठव बारहवें बैठा हो शन-श्चरके घरमें चन्द्रमा हो तो कूटनामक योग होता है ॥४५॥ इस योगमें पैदा हुए मनुष्यने पूर्वजन्ममें अपने कुलके भाइयोंका धन हरण करा था और अपने कुलका घात किया था ॥ ४६ ॥

चंद्रभौमजपं कुर्यात्र सप्तबीजनवत्रयम् । सपादलक्षकर्तव्यं पश्चा-

दानं प्रदापयेत ॥ ४७ ॥ गोधूमा वृषभः शुभ्रो हेम माषचतु-र्दश । रौप्यं तद्विगुणं दद्याद्वस्त्रं विंशत्करैर्मितम् ॥ ४८ ॥

चन्द्रमा और मंगलका सात नौ तथा तीन बीजाक्षरोंसे सवा लाख जप करे पीछे दान दे ॥ ४७ ॥ गेहूँ, सफेद बैल, चौदह मासे सोना, अट्ठाईस मासे रौप्य तथा बीस हाथ कपडा दे ॥ ४८ ॥

दंताम्बुजं ताम्रपात्रं घृतेन परिपूरितम् । जापकाय प्रदातव्यं तडागे वा सरित्तटे ॥४९॥ डामरोक्तं तथा यंत्रं विधिवद्धारयेत कटौ । दानाद्विलीयते पापं पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति ॥ ५० ॥

हाथीदंत, कमल तथा तांबेका पात्र घीसे भरके जप करनेवालेको दे । तालावके पास वा नदीके किनारे॥४९॥डामरतंत्रोक्त मंत्रको कमरमें धारण करे,दान करनेसे पाप दूर हो जाते हैं और पुत्रकी प्राप्ति होती है ॥५०॥

अथ राजयोगः ।

कर्कस्थितः सुराचार्यो धर्मस्थो भृगुनंदनः । सप्तमे भूमिजः शौरी राजराजो भवेन्नरः ॥ ५१ ॥

कर्कराशिमें बृहस्पति,नववें घरमें शुक्र बैठा हो और सातवें घरमें मंगल और शनि हो तो मनुष्य राजाओंका राजा महाराजा होता है ॥ ५१ ॥

अथ अनुभावयोगः ।

लाभे राहुः सुते शौरिः कर्मस्थः क्षितिनंदनः । रंध्रस्थितो नि-शानाथः षष्ठस्थौ रविचंद्रजौ ॥ ५२ ॥ अनुभावस्तदा योगो भाषितो मुनिपुंगवैः । पुत्रास्तस्य न जीवंति गर्भस्रावो भवेत्सदा ॥ ५३ ॥

ग्यारहवें राहु, पांचवें शनि, दशवें मंगल, आठवें चन्द्रमा और छठे सूर्य बुध हों ॥५२॥ तो अनुभाव नामक योग होता है । यह श्रेष्ठ मुनी-श्वरोंकरके कहा गया है,इसमें पैदा हुए मनुष्यके पुत्र नहीं जीते हैं हमेशा गर्भ भी गिर जाता है ॥ ५३ ॥

दुष्टस्वप्नवती भार्या कुजराहुशनैश्चराः । त्रिबीजाक्षरमंत्रेण पंचपंचाशतं जपः ॥ ५४ ॥ ततस्तु दानं दातव्यं पंचाशन्माषहाटकम् । रौप्यं तद्विगुणं दद्याद्वस्त्रं च करविंशतिः ॥ ५५ ॥ रक्तांबरं कांस्यपात्रं तैलेन परिपूरितम् । एतद्दानोपचारेण शिशुर्जीवति निश्चितम् ॥ ५६ ॥

उसकी स्त्रीको बुरे सुपने होते हैं । मंगल, राहु, शनि इनके तीन बीजाक्षरोंकरके पचपन सौ जप करे ॥५४॥ फिर पचास मासे सोना, सौ मासे चांदी, बीस हाथ कपडा ॥५५॥ लाल वस्त्र तथा कासीका पात्र तेल भरके दान करे इस दानके करनेसे निश्चय पुत्र जीते हैं ॥ ५६ ॥

अथ श्रीमुखयोगः ।

लग्नस्थितः सुराचार्यो धर्मस्थो भृगुनंदनः । कर्मस्थितो दिवानाथो योगोऽयं श्रीमुखो भवेत ॥५७॥ विंशतिवर्षपर्यन्तं राजमान्यो भवेन्नरः । गजाश्वधनसंयुक्तः शक्रतुल्यपराक्रमः ॥५८॥

जन्म लग्नमें बृहस्पति, नवम शुक्र, दशवें सूर्य हो तो श्रीमुख नामक योग होता है ॥५७॥ वीस वर्षकी उमरतक राजाकरके मान पाता है,हाथी घोडा, धनसहित इन्द्रके समान पराक्रमी होता है ॥ ५८ ॥

अथ कपालयोगः ।

पंचमेशः सुखस्थाने षष्ठलग्नपयोत्रिकः । विलोकिते पुत्रभावे भास्करिर्भूसुतो रविः ॥५९ ॥ जातकं च यदा जातं सर्वे पुत्रा विनश्यति । ग्रहार्चनेन दानेन पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति ॥ १६० ॥

पंचम घरका स्वामी चौथे हो, छठे घरका स्वामी लग्नेशसहित छठे, आठवें या बारहवें हो, पांचवें घरको शनि, मंगल और सूर्य देखते हों ॥ ५९ ॥ ऐसे योगमें पैदा हुए मनुष्यके सब पुत्र नष्ट हो जांय और ग्रहोंके पूजन दानसे पुत्रकी प्राप्ति हो ॥ १६० ॥

त्रिमासे अष्टमासेऽपि गर्भस्रावो भविष्यति ॥ तस्मात्कपालयोगेषु जन्म जातं न संशयः ॥ ६१ ॥ पुत्रपक्षाद्भवेत्कष्टं दुष्टकर्मान्वितः सदा । शनिराहू कुजो भानुः पंचबीजाक्षरं जपेत् ।॥ ६२ ॥ पश्चाद्दानं प्रकर्तव्यं माषविंशतिकांचनम् । रौप्यं तत्त्रिगुणं दद्याद्वस्त्रं त्रिंशत्करैर्मितम् ॥ ६३ ॥

कपालयोगमें जन्म होनेसे निःसंदेह तीसरे आठवें मासमें गर्भ पतित हो जाय ॥ ६१ ॥ पुत्रपक्षसे कष्ट हो, बुरे कर्मोंका करनेवाला पुत्र हो । शनि; राहु मंगल सूर्यका पंच बीजाक्षरोंसे जप करे ॥ ६२ ॥ पीछे बीस मासे सोना, साठ मासे चांदी, बीस हाथ कपडा दान करे ॥ ६३ ॥

सप्तान्नं च तिलं तैलं दद्याद्धेनुं प्रयत्नतः । जापकाय प्रदातव्यं ताम्रपात्रं घृतान्वितम् ॥ ६४ ॥ न करोति यदा दानं तदा वै पंचजन्मनि । अपुत्रत्वं भवेच्चांते शृगालीं योनिमाप्नुयात् ॥६५॥

सातों अन्न तिलतेल तथा गौ यत्नकरके जप करनेवालेको दे, घीसहित तांबेका पात्र ॥ ६४ ॥ दान नहीं करे तो निश्चय करके पांच जन्म तक संतानहीन हो और अंतमें स्यारकी योनिको प्राप्त होता है ॥ ६५ ॥

अथ पिशाचयोगः ।

रविक्षेत्रे गतो जीवो जीवक्षेत्रे रविर्बुधः । पंचमस्थः कुजो राहुर्भृगुणा सह वै भवेत् ॥ ६६ ॥ तदा पैशाचिको योगो भविष्यति न संशयः । धनलोभवशात्सोऽपि भगिनीपुत्रहा पुरा ॥ ६७ ॥ पूर्वपापप्रभावेन संततिर्न भविष्यति ।

सूर्यके घरमें बृहस्पति और बृहस्पतिके घरमें सूर्य बुध हों पांचवें घरमें शुक्रसहित मंगल राहु हो ॥ ६६ ॥ तो पिशाच नामक योग होता है इस योगमें पैदा हुए मनुष्यने धनके लोभसे पहिले जन्ममें अपनी बहिनके पुत्र मारे थे ॥ ६७ ॥ पहिले जन्मके पापके प्रवाहसे संतान न होय,

शुक्र उवाच।

किं जपं किं विधानं च किं दानं च किमौषधम् ॥ ६८ ॥
श्रोतुमिच्छामि तत् सर्वं यस्य कृत्वा भवेत्सुखम्।
महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवं विधिं शुभम् ॥ ६९ ॥

तब श्रीशुक्रजी बोले कौन जप कौन विधि तथा कौन औषधी करे ॥ ६८ ॥ जिसके करनेसे सुख हो सो सम्पूर्ण मेरे सुननेकी इच्छा है। हे ऋषे! आप समर्थ हो, इस प्रकार शुभ विधिको आप जानते हैं ॥ ६९ ॥

भृगुरुवाच।

रव्यार्किराहुजीवस्य सप्तपंचाशतं जपः। ततो दानं प्रदातव्यं सुवर्णं षष्टिमाषकम् ॥ १७० ॥ रजतं द्विगुणं दद्याद्वस्त्रं षष्टि-करैर्मितम्। गोयुगं महिषीं दद्यात् जापकाय विशेषतः ॥७१॥ विधिवत्पूजनं कुर्यात् भगिनीपुत्रयुतस्य वै। वस्त्राभरणपक्वान्नं भगिन्यर्थं प्रदापयेत् ॥ ७२ ॥

श्रीभृगुजी बोले–सूर्य, मंगल, राहु तथा बृहस्पतीका सत्तावन सौ मंत्र जपे इसके बाद सोना साठ मासे ॥१७०॥ एक सौ वीस मासे चांदी, साठ हाथ कपड़ा, गौ, बछिया और भैंस इनका दान जप करनेवालेको विशेष करके दे ॥ ७१ ॥ विधिसहित पुत्रकरके सहित बहिनका पूजन करे और उसको कपड़े गहना, पक्वान्न दे ॥ ७२ ॥

गंधपुष्पार्चितो नित्यं मासमेकं स भक्तितः। ऋतौ शुद्धचतुर्थे-ऽह्नि धेनुदुग्धस्य पायसम् ॥ ७३ ॥ उपभुंक्ते यदा नारी तदा पुत्रवती भवेत्। भगिनीकृपया सापि पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति ॥ ७४ ॥ यदुक्तं पूर्वकैः सर्वं न करोति महर्षये। अपुत्रत्वम-वाप्नोति भृगुणा वै प्रकाशितः ॥ ७५ ॥

बहिनका एक महिना भक्तिसहित गंधपुष्पकरके पूजन करे जिस दिन स्त्री ऋतुमती हो उस दिनसे चार दिन पीछे गौके दूधकी खीर मंत्रोंसे सिद्ध करी हुई ॥ ७३ ॥ जो स्त्री भोजन करे तो पुत्रवती हो बहिनकी

कृपासे पुत्रकी प्राप्ति हो ॥ ७४ ॥ हे महर्षे ! जो पहिले कहा हुआ सम्पूर्ण नहीं करे तो अपुत्रताको प्राप्त हो यह भृगुजीने प्रकाश करा है ॥ ७५ ॥

अथ विनाशयोगः ।

सहजे सहजाधीशे क्रूरग्रहयुतो दृशः । मंदक्षेत्रे यदा जीवे विनाशो योग उच्यते ॥ ७६ ॥ तस्य योगस्य शांत्यर्थमुपायं कथयाम्यहम् । करवीरगुडकर्पूरं ताम्रं वा सारुणं वृषम् ॥ ७७ ॥ शुक्रारशनिजीवस्य त्रिभिर्बीजाक्षरैर्जपेत् । वस्त्राभरणसंयुक्तां शय्यां दद्याद्विशेषतः ॥ ७८ ॥

तीसरे घरका स्वामी तीसरे घरमें पापग्रहोंसे युत वा देखा गया हो, शनिकी राशिमें बृहस्पति हो तो विनाश नामक योग कहाता है ॥७६॥ तिस योगकी शांतिके अर्थ मैं उपाय कहता हूं। कनेरके फूल, गुड, कपूर, लाल कपड़ा तथा बैल दान दे ॥७७॥ शुक्र, मंगल, शनि तथा बृहस्पतिका तीन बीजमंत्रोंसे जप करवावे विशेषकरके कपड़े गहनासहित शय्यादान दे॥७८।

सवत्सां महिषीं दद्यात्सुवर्णं माषद्वादशम् । रौप्यमेकादश माषा वस्त्रं करचतुर्दशम् ॥ ७९ ॥ एलाषष्टीमधूशीरं ताम्रपात्रं घृतान्वितम् । मोदकं च तथापूपं पायसं शर्करान्वितम् ॥ १८० ॥ शिवार्चनं ततः कुर्यात्पश्चाद्ब्राह्मणभोजनम् । शिशुहस्तात्प्रदातव्यं ब्राह्मणाय विशेषतः ॥ ८१ ॥

बछडा सहित गौ, भैंस, बारह मासे सोना, ग्यारह मासे चांदी चौदह हाथ कपड़ा ॥ ७९ ॥ इलायची, सहत, साँठीके चावल, खसखस तांबेका पात्र घृतसहित, लड्डू, मालपुए, खीर, मिष्टान्न सहित दान दे॥ १८०। शिवार्चन करवावे पीछे ब्राह्मणोंको भोजन करावे, बालकके हाथसे विशेष करके ब्राह्मणके अर्थ दे ॥ ८१ ॥

ब्राह्मणं सर्वशास्त्रार्थकुशलं धर्मवेदिनम् । विद्याविनयसंपन्नं शांतं चैव जितेंद्रियम् ॥ ८२ ॥ अलोलुपं सर्वजनप्रियं कल्मषवर्जितम् । आहूय भक्त्या संपूज्य दद्याद्दानं प्रयत्नतः ॥८३॥

सब शास्त्रोंमें कुशल, धर्मका जाननेवाला, विद्या, नम्रताकरके सहित, शांत, जितेन्द्रिय ॥ ८२ ॥ व्यभिचारी न हो, सब मनुष्योंको प्यारा पापरहित, ऐसे ब्राह्मणको बुलाकर पूजन कर यत्नकरके दान दे ॥८३॥

अथ वाग्भवयोगः ।

तुर्ये सुते व्यये लाभे पुण्ये सर्वखगा यदि ।
राजमान्यो धनाढ्यः स्याद्वाग्भवे पंडितः सुखी ॥ ८४ ॥

चौथे, पांचवें बारहवें, ग्यारहवें, नौवें जो सब ग्रह हों तो वाग्भव-योग, होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य राजा करके माननीय, धनवान् तथा पंडित होता है ॥ ८४ ॥

अथ आनन्दयोगः ।

मंदक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे गतः शनिः । अन्ये सर्वे खगाः क्रूराः सौम्या लाभस्थिता यदि ॥ ८५ ॥ तदा आनंदको योगो बाल्ये दुःखी युवा सुखी । वेदचत्वारि वर्षाणि पर्यंतं सुखमुच्यते ॥ ८६ ॥

शनिके घरमें बृहस्पति और बृहस्पतिके घरमें शनि हो, बाकीके शुभ पापग्रह ग्यारहवें घरमें बैठे हों ॥ ८५ ॥ तो आनंद नाम योग होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य बालपनमें दुःखी और जवानीमें सुखी तथा चौवालीस वर्षकी उमरतक आनंद भोगता है ॥ ८६ ॥

विष्णुनिंदा कृता पूर्वं पश्चाद्भक्तिपरायणः । सवत्सां महिषीं दद्यात्कांस्यपात्रं घृतान्वितम् ॥ ८७॥ सुवर्णवस्त्ररजतं दद्याद्दो-षप्रशांतये । एवं सकृन्मनुष्यो वै सौख्यं प्राप्नोति निश्चितम्॥८८॥

पहिले यह विष्णुकी निंदा करता हुआ पीछेसे भक्तिमें तत्पर होता हुआ दोषकी शांतिके लिये बछडे सहित भैंस, कांसीका पात्र घृतसहित ॥ ८७ ॥ सोना, कपडे, चांदी इनको दे इस तरह करे तो मनुष्य निश्चय करके जरूर सुख प्राप्त हो ॥ ८८ ॥

कृपासे पुत्रकी प्राप्ति हो ॥ ७४ ॥ हे महर्षे ! जो पहिले कहा हुआ सम्पूर्ण नहीं करे तो अपुत्रताको प्राप्त हो यह भृगुजीने प्रकाश करा है ॥ ७५ ॥

अथ विनाशयोगः ।

सहजे सहजाधीशे क्रूरग्रहयुतो दृशः । मंदक्षेत्रे यदा जीवे विनाशो योग उच्यते ॥ ७६ ॥ तस्य योगस्य शांत्यर्थमुपायं कथयाम्यहम् । करवीरगुडकर्पूरं ताम्रं वा सारुणं वृषम् ॥ ७७ ॥ शुक्रारशनिजीवस्य त्रिभिर्बीजाक्षरैर्जपेत् । वस्त्राभरणसंयुक्तां शय्यां दद्याद्विशेषतः ॥ ७८ ॥

तीसरे घरका स्वामी तीसरे घरमें पापग्रहोंसे युत वा देखा गया हो, शनिकी राशिमें बृहस्पति हो तो विनाश नामक योग कहाता है ॥७६॥ तिस योगकी शांतिके अर्थ मैं उपाय कहता हूं। कनेरके फूल, गुड, कपूर, लाल कपड़ा तथा बैल दान दे ॥७७॥ शुक्र, मंगल, शनि तथा बृहस्पतिका तीन बीजमंत्रोंसे जप करवावाविशेषकरके कपड़े गहनासहित शय्यादान दे॥७८॥

सवत्सां महिषीं दद्यात्सुवर्णं माषद्वादशम् । रौप्यमेकादश माषा वस्त्रं करचतुर्दशम् ॥ ७९ ॥ एलाषष्टीमधूशीरं ताम्रपात्रं घृतान्वितम् । मोदकं च तथापूपं पायसं शर्करान्वितम् ॥ १८० ॥ शिवार्चनं ततः कुर्यात्पश्चाद्ब्राह्मणभोजनम् । शिशुहस्तात्प्रदातव्यं ब्राह्मणाय विशेषतः ॥ ८१ ॥

बछडा सहित गौ, भैंस, बारह मासे सोना, ग्यारह मासे चांदी, चौदह हाथ कपड़ा ॥ ७९ ॥ इलायची, सहत, साँठीके चावल, खसखस, तांबेका पात्र घृतसहित, लड्डू, मालपुए, खीर, मिष्टान्न सहित दान दे॥ १८०॥ शिवार्चन करवावे पीछे ब्राह्मणोंको भोजन करावे, बालकके हाथसे विशेष करके ब्राह्मणके अर्थ दे ॥ ८१ ॥

ब्राह्मणं सर्वशास्त्रार्थकुशलं धर्मवेदिनम् । विद्याविनयसंपन्नं शांतं चैव जितेंद्रियम् ॥ ८२ ॥ अलोलुपं सर्वजनप्रियं कल्मषवर्जितम् । आहूय भक्त्या संपूज्य दद्याद्दानं प्रयत्नतः ॥८३॥

सब शास्त्रोंमें कुशल, धर्मका जाननेवाला, विद्या, नम्रताकरके सहित, शांत, जितेन्द्रिय ॥ ८२ ॥ व्यभिचारी न हो, सब मनुष्योंको प्यारा पापरहित, ऐसे ब्राह्मणको बुलाकर पूजन कर यत्नकरके दान दे ॥८३॥

अथ वाग्भवयोगः ।

तुर्ये सुते व्यये लाभे पुण्ये सर्वखगा यदि ।
राजमान्यो धनाढ्यः स्याद्वाग्भवे पंडितः सुखी ॥ ८४ ॥

चौथे, पांचवें बारहवें, ग्यारहवें, नौवें जो सब ग्रह हों तो वाग्भव-योग, होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य राजों करके माननीय, धनवान् तथा पंडित होता है ॥ ८४ ॥

अथ आनन्दयोगः ।

मंदक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे गतः शनिः । अन्ये सर्वे खगाः क्रूराः सौम्या लाभस्थिता यदि ॥ ८५ ॥ तदा आनंदको योगो बाल्ये दुःखी युवा सुखी । वेदचत्वारि वर्षाणि पर्यंतं सुखमुच्यते ॥ ८६ ॥

शनिके घरमें बृहस्पति और बृहस्पतिके घरमें शनि हो, बाकीके शुभ पापग्रह ग्यारहवें घरमें बैठे हों ॥ ८५ ॥ तो आनंद नाम योग होता है इसमें पैदा हुआ मनुष्य बालपनमें दुःखी और जवानीमें सुखी तथा चौवालीस वर्षकी उमरतक आनंद भोगता है ॥ ८६ ॥

विष्णुनिंदा कृता पूर्वं पश्चाद्भक्तिपरायणः । सवत्सां महिषीं दद्यात्कांस्यपात्रं घृतान्वितम् ॥ ८७॥ सुवर्णं वस्त्रं रजतं दद्याद्दोषप्रशांतये। एवं सकृन्मनुष्यो वै सौख्यं प्राप्नोति निश्चितम्॥८८॥

पहिले यह विष्णुकी निंदा करता हुआ पीछेसे भक्तिमें तत्पर होता हुआ दोषकी शांतिके लिये बछडे सहित भैंस, कांसीका पात्र घृतसहित ॥ ८७ ॥ सोना, कपडे, चांदी इनको दे इस तरह करे तो मनुष्य निश्चय करके जरूर सुख प्राप्त हो ॥ ८८ ॥

अथ अनुज्ञातयोगः ।

भौमक्षेत्रे यदा शुक्रः शुक्रक्षेत्रे गतः कुजः । शशी तुर्ये अजे सौम्या अनुज्ञातस्तदुच्यते ॥ ८९ ॥ वर्षषोडशपर्यंतं धनधान्यसमन्वितः । त्रिंशद्वर्षगते पश्चात्पृथ्वीपतिसमो भवेत् ॥ ॥ १९० ॥ कंदर्परूपो मतिमान् द्विजदेवपरायणः । पूर्वपुण्यप्रभावेन पुत्रपौत्रयुतो नरः ॥ ९१ ॥

मंगलके घरमें शुक्र, शुक्रकी राशिमें मंगल, चौथे चन्द्रमा और मेषमें बुध बृहस्पति होनेसे अनुज्ञात योग होता है ॥ ८९ ॥ इसमें पैदा हुआ मनुष्य सोलह वर्षकी उमरतक धन अन्नकरके सहित तथा तीस वर्षकी उमरके बाद राजाके समान हो ॥ १९० ॥ कामदेवके समान रूपवान् बुद्धिमान्, ब्राह्मण देवताओंका भक्त, पहिले जन्मके पुण्यके प्रभावसे पुत्रपौत्र सहित होता है ॥ ९१ ॥

अथ वंध्यात्वहर उपायो लिख्यते ।

तत्र वंध्या चतुर्विधा प्रोक्ता ॥ वध्या च काकवंध्या च स्त्रीप्रसूता मृतप्रजा ॥ ९२ ॥ इति पुराणांतरात् ॥ सूर्यारुणसंवादे तु पंचविधा उक्ताः ॥ एकापत्यमृतापत्यकन्यापत्यानपत्यता । मृतपुत्रत्वमित्येवं पंचधापत्यजातयः ॥ ९३ ॥

तहाँ वंध्या चार तरहकी कही हैं । एक तो वंध्या, दूसरी काकवंध्या तीसरी स्त्रीनाम कन्या पैदा करनेवाली वंध्या, चौथी जिसके संतान होकर मर जावे सो भी वंध्या कहाती है ॥ ९२ ॥ यह पुराणांतरमें कहा है । सूर्यारुणसंवाद कर्मविपाकमें पांच प्रकारकी वंध्या कही हैं । एक पुत्रवती दूसरी जिसके कन्या पुत्र होकर मर जावे, तीसरी जिसके कन्या ही पैदा हो, चौथी जिसके संतान ही न हो, पांचवीं जिसके पुत्र मर जायँ और कन्या जिये ॥ ९३ ॥

चतुर्विधवंध्यात्वस्यैकादश निदानानि कर्मविपाकसुधानिधौ । एकादश निदानानि वंध्यात्वं च चतुर्विधम् ॥ गुरुद्वेषो बालघाती

परहिंसा तथैव च॥प्राणिभक्षणमन्येषां प्राण्यंतरमुखेषु च॥९४॥

चार प्रकारकी वंध्याओंके ग्यारह तरहके निदान कर्मविपाकसुधानिधिमें कहे हैं। ग्यारह तरहके निदान चार तरहकी वंध्या होती हैं। गुरुसे वैर करे वा बालकोंको मारे वा पराई हिंसा करे अथवा अन्य प्राणियोंका भक्षण करे वा गर्भगत प्राणियोंका नाश करे ॥ ९४ ॥

द्वेषः प्राण्यंडजाभिश्च मृगशावहतिस्तथा। अष्टकादिषु कालेषु पितृकर्मांविधापि तु ॥ ९५ ॥ मातुर्वियोजनं वत्सैस्तेषां निष्कृतिरुच्यते। पादोनद्वादशाब्दार्धं प्रत्येकं त्वाद्ययोः स्मृतम् ॥ ९६ ॥

पक्षियोंको मारनेवाला, मृगके बच्चोंको मारनेवाला, अष्टकादि कालोंमें पितृकर्मको न करे ॥९५॥ मातासे बालकको वियोग करानेवाले मनुष्योंका प्रायश्चित्त कहते हैं। साढे चार वर्ष हरएक पहिले कही हुई हिंसाओंका यत्न करे ॥ ९६ ॥

कृच्छ्रातिकृच्छ्रं चांद्राणि शेषाणां निष्कृतिः पृथक्। आद्ययोर्गुरुद्वेषबालघातयोः। शेषाणां हिंसादिवत्सवियोजनानां कृऽच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रायणानां लक्षणानि परिभाषायां द्रष्टव्यानि॥ माधवीये व्यासः ॥ ९७ ॥

कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र चांद्रायण साढे चार वर्ष गुरुसे वैर करनेवाले वा बालघातियोंको करना चाहिये, शेष दोषोंका प्रायश्चित्त अलग कहते हैं हिंसा करनेवाले वा बालक वियोग करनेवालोंको कृच्छ्र,अतिकृच्छ्र,चांद्रायण एक ही वर्ष करना चाहिये।इसका लक्षण माधवीमें व्यासजीने कहा है॥९७॥

प्राण्यंगं मृगशावं बालं हत्वा वंध्या मृतप्रजा इति हेमाद्रौ महार्णवे च॥वायुपुराणे तु वत्सवियोजनमात्रनिदानं प्रतीकारश्चोक्तः॥ ९८ ॥ चतुर्विधा तु या वंध्या भवेद्वत्सवियोजनात्। वक्ष्ये तस्याः प्रतीकारं तत्स्वरूपं निबोध मे ॥ ९९ ॥

प्राणीको वा मृगके बच्चोंके या बालकोंके मारनेसे मृतप्रजा वंध्या होती हैं । हेमाद्रि महार्णव वायुपुराणमें वत्सवियोगमात्र वंध्याका निदान प्रायश्चित्त कहा है॥१८॥वत्सवियोगसे चार तरहकी वंध्या होती हैं तिसका प्रायश्चित्त स्वरूप समझाकर कहता हूं ॥ १९ ॥

हिरण्येन यथाशक्त्या सवत्सां कारयेद्दृढाम् । धेनुं पलेन वत्सं च पादेन गुरुरब्रवीत् ॥ २०० ॥ धेनुं रौप्यखुरां रत्नं तस्याः पुच्छे नियोजयेत् । घंटां गले च बध्नीयात्सवत्सां प्राङ्मुखः शुचिः ॥ १ ॥ चंदनागरुकर्पूरगंधमाल्यैः सुशोभनैः । उपचारैः षोडशभिर्नैवेद्यं पायसं भवेत् ॥ २ ॥ मोदकं च तथापूपं गुडं लवणमेव हि । षडष्टौ दश वा दद्यात्तदनंतरमेव च ॥३॥

यथाशक्ति बछडे करके सहित मजबूत गौ एक पल सोनेकी बनावे, बछडा सात मासे सोनेका बनावे ऐसा बृहस्पतिजी कहते हैं॥२००॥गौके खुर चाँदीके बनावे और मोती उसकी पूछमें बाँधे, गलेमें घंटा बाधे, बछडे-करके सहित ऐसी गौका पूर्वको मुख करके पवित्र हो ॥१॥ चंदन, अगर, कपूर, शोभायमान फूलोंकी मालाकरके षोडशोपचार पूजन करे, खीरका नैवेद्य हो ॥ २ ॥ लड्डू, मालपुआ, गुड, नोन, छः वा आठ वा दश दे, तिसके बाद इस प्रकार करके ॥ ३ ॥

ब्राह्मणं सर्वशास्त्रार्थकुशलं धर्मवेदिनम् । विद्याविनयसंपन्नं शांतं चैव जितेंद्रियम् ॥४॥ अलोलुपं सर्वजनप्रियं कल्मषवर्जितम् । आहूय भक्त्या संपूज्य वस्त्रैर्गंधैश्च पुष्पकैः ॥ ५ ॥ तेनैव कारयेत्पूजामादृतो धेनुवत्सयोः । होमं च कारयेत्तत्र समिदाज्यः चरूत्कटम् ॥६॥ सोमो धेनुरिति मंत्रं समुच्चार्य ततः पुनः । प्राङ्मुखायोपविष्टाय प्रदद्यात्तमुदङ्मुखः ॥ ७ ॥

सब शास्त्रोंमें अर्थकुशल, धर्मका जाननेवाला, विद्या नम्रतासहित, शांत, जितेंद्रिय ॥ ४ ॥ ब्रह्मचारी, सबको प्यारा,पापरहित ऐसे ब्राह्मणको

बुलाकर कपडे, गन्ध,पुष्पसे ॥ ५ ॥ पूजा करे,गौ बछडेकी भी पूजा करे होम करे समिधा घी उत्तम शाकल्यसे ॥ ६ ॥ " सोमो धेनुः " इस मन्त्र करके हवन करे । पूर्व मुख बैठकर धेनुका उत्तरमुख करके दान करे ॥७॥

मंत्रेणानेन विधिवत्पुच्छे हस्तं सकांचनम् । नीरकं च सुविस्तीर्णे शूर्पे वेणुमये दृढे ॥ ८ ॥ धेनुरेका प्रदातव्या ब्राह्मणाय विशेषतः । षडष्टौ दश वा निधाय च ॥ पश्चात् स्तुतिः ॥ धेनुर्यांगिरसः सत्रे प्रतिष्ठां सुरभेश्च या ॥ ९ ॥ दुहिता या तथा भानोर्यमस्य वरुणस्य च । याश्च गावः प्रवर्तंते यमस्य वरुणस्य च ॥ २१० ॥ याश्च गावः प्रवर्तंते वनेषूपवनेषु च । प्रीणंतु ता मम सदा पुत्रपौत्रप्रदाः सुखम् ॥ ११ ॥ प्रयच्छंतु दिवारात्रमविच्छेदं च संततेः । एवं दत्त्वा तु तद्दानं प्रणिपत्य विसर्जयेत् ॥ १२ ॥ इति वंध्यात्वहरं दानम् ॥

इस मन्त्रकरके विधिपूर्वक हाथमें सोना, जल, गौकी पूँछ पकडकर गौके आगे बाँसके मजबूत चौडे सूपमें मोदक, मालपुआ, गुड, लवण, छः वा आठ वा दश धरकर एक गौ दान करके ब्राह्मणके अर्थ दे, पीछेसे मूलमें कहे हुए श्लोकसे स्तुति कर इस तरह दान कर दण्डवत् करके छोड दे ॥ ८ ॥ ९ ॥ २१० ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथ गर्भस्रावहरं यज्ञोपवीतदानम् ।

स्रवद्गर्भा भवेत्सा तु बालकं हंति या विषैः॥वायुपुराणे ॥ यज्ञोपवीतं कुर्वीत कांचनं च स्वशक्तितः ॥ १३ ॥ अत्यंतवर्णयुक्तेन कांचनं चोत्तरीयकम् । पलार्द्धेन तदर्द्धेन तदर्द्धार्द्धेन वा पुनः ॥ १४ ॥ ग्रंथिप्रदेशे देयं तु मौक्तिकं वज्रमेव च । प्रक्षाल्य पंचगव्येन गायत्र्या ताम्रभाजने ॥ १५ ॥ द्रोणप्रमाणं तस्मिंस्तु निक्षिपेद्दधिमध्यतः । आज्यस्योपरि संस्थाप्य उपवीतं सुपूजितम् ॥ १६ ॥

जो स्त्री जहर खवायकर बालकोंको मारती है, सो स्त्री गर्भके गिरानेवाली होती है । वायुपुराणमें कहा है यथाशक्ति सोनेका जनेऊ बनावे ॥ १३ ॥ सोना बहुत अच्छा हो पलभरकी वा आधे पल वा उससे आधे चौथाई पलका अथवा उससे आधे पलका आठवां हिस्सा सोनेका यज्ञोपवीत बनावे ॥ १४ ॥ ग्रन्थिकी जगह हीरा मोती लगावे पञ्चगव्यमें तांबेके पात्रमें गायत्रीमन्त्र करके स्नान करावे ॥१५॥ सोलह टके भर दहीमें धरके घीके ऊपर स्थापित करे,पूजन करा हुआ यज्ञोपवीत १६॥

गंधपुष्पाक्षतैर्धूपैर्नैवेद्यैरपि भक्तितः ।
पूजितं हुतवते देयं भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ १७ ॥

गन्ध पुष्प अक्षतसे तथा नैवेद्यपूर्वक पूजन करके भक्ति श्रद्धासहित हवन करनेवाले ब्राह्मणको दे ॥ १७ ॥

अथ पूजोत्तरकृत्यमाह ।

ततो ब्राह्मणमाहूय होमं तेनैव कारयेत् । होममंत्रस्तु समस्ता व्याहृतिः ॥ तिलैराज्येन मधुना मिश्रैरष्टोत्तरं शतम् ॥ १८ ॥ तस्मै हुतवते देयं वस्त्राद्यैः पूजिताय तु । मंत्रेणानेन विधिवत्प्राङ्मुखाय प्रदापयेत् ॥ १९ ॥ भवतोऽस्य प्रदानेन गर्भं संधारये ह्यहम् । अनुव्रज्य तथाचार्यं प्रणिपत्य क्षमापयेत् । गर्भस्रावकराद्दोषादेवं कृत्वा विमुच्यते ॥ २२० ॥ इति गर्भस्रावहरं यज्ञोपवीतदानम् ॥

पूजन करनेके बाद ब्राह्मणको बुलायकर अन्तमें इस प्रकार होम करे, होमके मन्त्र सम्पूर्ण व्याहृति हैं । "ॐ भूर्भुवःस्वः" तिल,घी,सहित मिलाकर एक सौ आठ आहुति दे ॥१८॥ तिस होम करनेवाले ब्राह्मणका इस मंत्रकरके विधिपूर्वक पूर्वको मुख करके पूजन करके वस्त्रादिक सब चीजें उसको दान दे ॥ १९ ॥ आप दान करके मेरे यहां गर्भ धारण होवे,

उस आचार्यके पीछे थोडे दूरतक जाय दंडवत् करके क्षमापन करावे इस प्रकार करनेसे गर्भस्रावदोष दूर होता है ॥ २२० ॥

अथ मृतपुत्रत्वहरम् ।

बालघाती च पुरुषो मृतवत्सः प्रजायते । ब्राह्मणोद्वाहनं चैव कर्तव्यं तेन शुध्यति ॥२१॥ श्रवणं हरिवंशस्य कर्तव्यं च यथाविधि । महारुद्रजपं चैव कारयेच्च विशेषतः ॥ २२ ॥ जुहुयात्तद्दशांशेन दूर्वामाज्यपरिप्लुताम् । एकादश स्वर्णनिष्काः प्रदातव्याश्च दक्षिणाः ॥ २३ ॥ एकादश पशूंश्चैव दद्याद्वित्तानुसारतः । अन्येभ्योऽपि यथाशक्त्या द्विजेभ्यो दक्षिणां दिशेत् ॥ २४ ॥ स्नापयेद्दंपती पश्चान्मंत्रैर्वरुणदैवतैः। आचार्याय प्रदेयानि वस्त्रालंकारणानि च ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यने बालकोंका घात किया है सो पुत्रहीन होता है उनके पुत्र मर जाते हैं । ब्राह्मणोंके बालकोंका जनेऊ करानेसे शुद्धि होती है ॥२१॥ यथाविधि हरिवंशपुराण श्रवण करे । विशेषकरके महारुद्रका जप करवावे ॥२२॥ दूब घीमें मिलाकर जपका दशांश हवन करे, ग्यारह निष्क सुवर्ण दक्षिणा दे ॥ २३ ॥ ग्यारह बैल वा गैया अपने वित्तमाफिक दे और ब्राह्मणोंको यथाशक्ति दक्षिणा दे ॥ २४ ॥ पछि स्त्रीपुरुष वरुणके मंत्रकरके स्नान करें, आचार्यको वस्त्र गहने दें ॥ २५ ॥

अथ निरपत्यत्वहरम् ।

विप्ररत्नापहारी यः सोऽनपत्यः प्रजायते । तेन कार्यं विशुद्ध्यर्थं महारुद्रजपादिकम् ॥ २६ ॥ मृतवत्सोदितः सर्वो विधिस्तत्र विधीयते । दशांशहोमः कर्तव्यः पालाशेन यथाविधि ॥२७॥

ब्राह्मणके रत्नोंका हरण करनेवाला पुरुष निःसन्तान होता है, तिसकी शुद्धिके लिये महारुद्र जप करवावे ॥ २६ ॥ इसकी विधि जो

पहिले मृतवत्सादोषमें कह आये हैं सो विधि सम्पूर्ण करे । पलाशक-
रके यथाविधि दशांश होम करे ॥ २७ ॥

अथ मृतपुत्रत्वकर्मकीलत्वएकापत्यत्वकाकवन्ध्या-त्वकन्याप्रजात्ववंध्यात्वहरं कर्मविपाकसंग्रहे ।

अष्टकादिपितृश्राद्धे हीनो निःशंकघातकः । प्राणिनां सततं द्वेषी
गुरुद्वेषी तथापरः ॥ २८ ॥ भक्षको मृगशावस्य नरकांतेऽन्यज-
न्मनि । मृतपुत्रो कर्मकीलो व्याधियुक्तो भवेच्च सः॥ २९ ॥ दुम-
नाश्चैव जायेत तस्येयं निष्कृतिः पुरा । कृच्छ्रचांद्रायणे कुर्या-
द्धोमः कूष्मांडकस्तथा ॥ २३० ॥ गुडहोमं स्वर्णदानं भूमिदानं
तथापरम् । कन्यादानं पञ्चमं च श्राद्धं कुर्वीत यत्नतः॥ ३१ ॥

अष्टकालोंमें जो पितृश्राद्ध करे तो निःशंक जीवोंको मारनेवाला हो ।
सब प्राणियोंका वैरी और गुरुका वैरी हो ॥२८॥ हिरनके बच्चेको खाने-
वाला ऐसा पुरुष और जन्मोंमें नरकभोग करके मृतपुत्र होता है । उसकी
संतान पैदा होते ही मर जाती है, सो इस व्याधिसे युक्त होता है ॥ २९ ॥
उसका मन खोटा होता है । उसका प्रायश्चित्त कृच्छ्र वा अतिकृच्छ्र चांद्रायण
करे पेठेका होम कर ॥२३०॥ गुड मिलायकर होम करे। सोनेका दान करे
तैसे ही पृथिवीका दान करे कन्यादान दे और पांचवां श्राद्ध यत्नसे करे ३१

सहस्रनामजापी च भवेदेवं विमुच्यते ।
इति मृतपुत्रत्वविशिष्टचर्मकीलत्वहरम् ।
सहस्रनामका पाठ करे तो इस दोषसे छूट जाय ।

अथ मृतपुत्रत्वकन्याप्रजात्वहरम् ।

तस्य शांतिर्हेमाद्रौ भविष्योत्तरपुराणे ॥ मृतवत्सा तु या नारी
दुर्भगा ऋतुवर्जिता । या सूते कन्यका वंध्या तासां स्नानं
विधीयते ॥ ३२ ॥ अष्टम्यां वा चतुर्दश्यामुपवासपरायणा ।

ऋतौ शुद्धे चतुर्थेऽह्नि प्राप्ते सूर्यदिनेऽथवा ॥ ३३ ॥ नद्योस्तु संगमे कुर्यान्महानद्योर्विशेषतः । शिवालये तथा गोष्ठे विविक्ते वा गृहांगणे ॥ ३४ ॥

जो स्त्री मृतपुत्रा या दुर्भगा, जिसको ऋतु न होता हो या जो स्त्री कन्या ही पैदा करती हो तिसकी स्नानविधि विधान करते हैं ॥ ३२ ॥ अष्टमी वा चतुर्दशीको उपवास करे । ऋतु शुद्ध होनेके बाद चौथे दिन अथवा ऋतुके चौथे दिन रविवारके दिन ॥ ३३ ॥ नदियोंके संगममें स्नान करे वा गंगादि महानदियोंके संगममें वा शिवालयमें वा गोशालामें या एकांत वा घरके आंगनमें स्नान करे ॥ ३४ ॥

आहिताग्निं द्विजं शांतं धर्मज्ञं सत्यवादिनम् । स्नानार्थं प्रार्थयेदेवं निपुणं रुद्रकर्मणि ॥ ३५ ॥ ततस्तु मंडपं कुर्याच्चतुरस्रमुदक्प्लवम् । शुक्लचंदनेनालं च गोमयेनानुलेपनम् ॥ ३६ ॥

अग्निहोत्री शान्त, धर्मका जाननेवाला, सच बोलनेवाला, रुद्रकर्ममें कुशल हो ऐसे ब्राह्मणसे स्नानके वास्ते प्रार्थना करे ॥ ३५ ॥ चौकोर मण्डप बनवावे । सफेद चन्दनकी लकडीसे मण्डप बनावे ॥ ३६ ॥

तन्मध्ये श्वेतरजसा संपूर्णं पद्ममालिखेत् । मध्ये तस्य महादेवं स्थापयेत्कर्णिकोपरि ॥ ३७ ॥ दद्याद्दलेषु नंदादीन् चतुर्षु विधिपूर्वकम् । इंद्रादिलोकपालांश्च दलेष्वष्टसु विन्यसेत् ॥ ३८ ॥ देवीं विनायकं चैव स्थापयेत्तत्र पार्थिवः । दत्त्वार्घ्यं गंधपुष्पं च धूपं दीपं गुडौदनम् ॥ ३९ ॥

तिसके बीचमें सफेद रजकरके सम्पूण कमल लिखे, तिसके बीचमें कर्णिकाके ऊपर महादेवको स्थापित करे ॥ ३७ ॥ कमलके दलोंपर नन्दादि चारों कानोंपर विधिपूर्वक स्थापित करे। नन्द्यादीत्यादि भृंगिमहाकालगणेशनंद्यादिगृह इत्यर्थः । आठों दलोंपर इन्द्रादि लोकपाल बनावे ॥ ३८ ॥ देवी, गणेश, महादेवके पास स्थापित करे इनके अर्घ गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, गुड और भात दे ॥ ३९ ॥

भक्ष्यान्नानाविधान् दाद्यात्फलानि विविधानि च । चतुष्कोणेषु शृंगारमश्वत्थदलपूरितम् ॥२४०॥ एकैकं विन्यसेद्ब्रह्मन् सर्वौषधिसमन्वितम् । मंडपस्य चतुर्दिक्षु दद्याद्भूतबलिं तथा ॥ ४१ ॥ आग्नेय्यां दिशि कर्तव्यं मंडपस्य समीपतः । मंडपस्य समीपस्थो जपेद्रुद्रान्विमत्सरः ॥ ४२ ॥

नाना प्रकारके भोजन और फल दे, चारों काणोंमें शृंगार करे पीपलके पत्तोंसे चारों तरफ पूरित करे ॥ २४० ॥ एक एक पत्तेपर ब्रह्माको स्थापित करे, सम्पूर्ण औषधसहित मण्डप बनाय चारों तरफ भूतोंकी बलि दे ॥ ४१ ॥ मण्डपके समीप आग्नेयदिशामें महादेवका जप अभिमान त्यागकर करे ॥ ४२ ॥

यावदेकादश गुणास्तावत्कुर्याद्विशेषतः । द्वितीयस्याग्निकार्यस्य कर्ता च ब्राह्मणो भवेत् ॥ ४३ ॥ अग्निकार्यं शुभे कुंडे पत्रपुष्पैरलंकृते । लवणं पयसा युक्तं घृतेन मधुना सह ॥ ४४ ॥

जबतक ग्यारह गुण मन्त्र होवे तबतक विशेषकरके मन्त्र जप करे दूसरा होमका करनेवाला ब्राह्मण हो ॥ ४३ ॥ उत्तम पत्रपुष्पसे शोभित कुण्डमें नोन, दूध, घी सहतसे हवन करे ॥ ४४ ॥

मानस्तोकेन यजुषा कृते होमे नवग्रहे । रुद्रजाप्यकृताचार्यं सितचंदनचर्चितम् ॥ ४५ ॥ सितवस्त्रपरीधानं सितमाल्यविभूषितम् । शोभयेत्कंकणं रुक्मं स्वर्णं चेष्टांगुलीयकैः ॥ ४६ ॥ सर्वमंडलवत्कार्यं द्वितीयं मंडलं शुभम् । विष्णुनामसहस्रस्य जपादेवं विमुच्यते ॥ ४७ ॥ इति मृतप्रजात्वकन्याप्रजात्वहरम् ॥

ग्रहोंका हवन करे,रुद्रका जप करे,सफेद चंदनसे पूजन करे ॥ ४५ ॥ सफेद वस्त्र पहिरे,सफेद माला धारण करे,शोभायमान चांदीके कडे हाथोंमें सोनेकी अंगूठी उंगलीमें धारण करे ॥ ४६ ॥ पहिले मंडलकी तरह दूसरी

मंडल करे, विष्णुके हजारनामको जपे यों करनेसे पापसे छूट जाता है ॥ ४७ ॥ इति मृतप्रजात्वकन्याप्रजात्वहरम् ॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु पूर्वकर्म शुभाशुभम् । चत्वारिंशन्मिते योगे तत्सर्वं कथयामि ते ॥४८॥ भृगुणोक्तान् कुयोगागपवीन् नानाविधीन्सह । कृता वै श्यामलालेन श्रीबलदेवसूनुना॥४९॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इस अध्यायके बीचमें मनुष्योंके पहिले जन्मका अच्छा बुरा फल चालीस योगोंकरके सम्पूर्ण मैंने कहे ॥४८॥ श्रीभृगुजी करके कहे गये, पर्वतसमान कुयोग तिनको वज्रसमान अनेक विधियोंसहित श्रीबलदेवप्रसादके पुत्र श्यामलालने निश्चयकरके प्रकाश किया ॥ २४९ ॥

इति श्रीराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-भाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ राजमान्ययोगमाह ।

लग्ने वृषे तत्र युते शशांके षड्भिर्ग्रहैरुच्चगतैर्नृपः स्यात् ।
कस्मिन् गृहे स्वोच्चयुते तु सर्वैः स्वक्षेत्रगैर्भूपतितुल्यजातः॥१॥
मूलत्रिकोणांकितराशियुक्तैर्मित्रर्क्षगैर्वा यदि वक्रयुक्तैः ।
कस्मिन् गृहे स्वोच्चयुते तु शेषैर्नीचांशहीनैर्नृपतुल्यजातः॥२॥

जन्मलग्न वृष हो, तिसमें चंद्रमा स्थित हो, छः उच्चके ग्रह किसी घरमें हों तो राजा हो और वृष लग्नमें चंद्रमा और सब ग्रह अपने घरमें हों तो राजाके तुल्य हो ॥१॥ सब ग्रह मूलत्रिकोण राशिमें बैठे हों या मंगल करके सहित मित्रोंकी राशिमें हों वा किसी घरमें उच्चके हों परंतु नवांशमें नीचगत न हों तो राजोंके समान होता है ॥२॥

लग्ने चंद्रे गुरौ सौख्ये कर्मस्थे भृगुनंदने । स्वोच्चस्वर्क्षस्थिते

मंदे नृपतुल्यो भवेन्नरः॥ ३ ॥ दशमैकादशे रिःफे लग्नवित्तसहो त्थभे । ग्रहास्तिष्ठंति चेत्सौम्या नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ ४ ॥

लग्नमें चंद्रमा, बृहस्पति, दशवें शुक्र, तुला, मकर, कुंभमें शनि हो तो मनुष्य राजोंके समान होता है ॥३॥ दशवें, ग्यारहवें, लग्न, दूसरे, तीसरे जो सम्पूर्ण शुभ ग्रह बैठे हों तो मनुष्य राजाओंके समान होताहै॥४॥

केंद्रत्रिकोणगाः सौम्याः पापाः षड्लाभसोदराः । लग्नाधिपे बलवति नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥५॥ दृश्यते युज्यते वापि चंद्रजेन बृहस्पतिः । शिरसा शासनं तस्य धारयंति नृपास्तथा॥६॥

केंद्र वा त्रिकोणमें शुभ ग्रह हो, तीसरे, छठे, ग्यारहवें पापग्रह हो, लग्नका स्वामी बलवान् हो तो मनुष्य राजाके सदृश होता है ॥५॥ बृहस्पति बुधसहित हो या बुधसे देखा गया हो परंतु बृहस्पति मीन वा धनराशिका होकर केंद्रमें हो तो उस मनुष्यकी आज्ञाको राजे अपने शिर-पर धारण करते हैं ॥ ६ ॥

निशाकरे केंद्रगते विलग्नं त्यक्त्वा त्रिकोणे यदि जीवदृष्टे । शुक्रेण दृष्टे बलपूर्णयुक्ते जातो नरो भूपतिभाग्यतुल्यः ॥ ७ ॥ नीचस्थिता जन्मनि ये ग्रहेंद्राः स्वोच्चांशगा राजसमानभाग्याः । उच्चस्थिता चेदपि नीचभागा ग्रहा न कुर्वंति तथैव भाग्यम् ॥८॥

चंद्रमा केंद्रमें हो, लग्नको छोडकर नवम पंचम दृष्टिसे बृहस्पति देखता हो, बलवान् दृष्टिसे शुक्र भी देखता हो तो मनुष्य राजाओंके भाग्यके समान भाग्यवाला होता है ॥७॥ जन्ममें जो ग्रह नीचके बैठे हों और नवांशमें उच्चके हों तो भी मनुष्य राजाओंके भाग्यके समान भाग्यवान् होता है और जन्मकुंडलीमें जो ग्रह उच्चके बैठे हों और नवांशमें नीचके हों तो मनुष्य भाग्यहीन होता है ॥ ८ ॥

त्रेधा विभज्यं तु वयःप्रमाणं खंडत्रयं तत्र वदंति संतः । व्ययादिकं प्राथमिके च खंडे शुभग्रहाः शोभनमत्र दद्युः ॥९॥

अवस्थाके तीन भाग करे और जन्मलग्नके भी तीन भाग करे ये पूर्व

मुनियोंने कहा है।बत्तीस वर्षतक अवस्थाका पहिला भाग, बत्तीससे लेकर चौसठ वर्षतक अवस्थाका दूसरा भाग,चौसठसे सौ वर्षतक अवस्थाका तीसरा भाग होता है।जन्मकुंडलीमें लग्नसे चौथे घरतक प्रथम खंड, पांचवेंसे आठवें घरतक द्वितीय खंड, नौवेंसे बारहवेंतक तृतीय खंड जन्मपत्रका हुआ, इसी तरह क्रमसे जान लेना चाहिये कि जिस खण्डमें जन्मपत्रमें राज्यकारक ग्रह बैठे हों वे क्रमसे उसी अवस्थाके भागमें शुभ फल देंगे ॥ ९ ॥

लग्ने गुरौ बुधे केंद्रे भाग्यनाथेन वीक्षितः । लग्नेशो वापि संदृष्टो राजमान्यो भवेन्नरः॥ १० ॥ सप्तमे जीवसंयुक्ते त्रिकोणे वा समन्विते । लग्नाधिपेन संदृष्टो राजमान्यो भवेन्नरः ॥११॥ केंद्रे शनौ त्रिकोणे वा स्वोच्चमूलत्रिकोणगे । राज्याधिपेन संदृष्टो नृपमानसमन्वितः ॥ १२ ॥

लग्नमें बृहस्पति हो, बुध केंद्रमें हो, नवम घरके स्वामी करके दृष्ट हो तो मनुष्य राजमान्य होता है ॥१० ॥ सातवें वा नौवें वा पांचवें बृहस्पति बैठा हो, लग्नेश करके दृष्ट हो तो मनुष्य राजमान्य होता है ॥११॥ केन्द्रमें शनि अथवा नौवें पांचवें शनि हो, अपने उच्च राशिमें वा मूलत्रिकोणराशिमें हो दशवें शनिकरके दृष्ट हो तो राजाओंके मानसहित हो ॥ १२॥

नीचे गुरौ विलग्नस्थे रंध्रस्थे वाथ धर्मपे । तथा नवांशसंयुक्ते राजमान्यो भवेन्नरः ॥ १३ ॥ पूर्वषट्के ग्रहाः सर्वे यस्य तिष्ठंति जन्मनि । भाग्याधिपे वनस्थे वा चंद्रे नृपसमो भवेत् ॥ १४ ॥

नीचका बृहस्पति लग्नमें हो, नवम घरका स्वामी आठवें चन्द्रमाके नवांशमें हो तो मनुष्य राजमान्य होता है ॥ १३ ॥ लग्नसे छठे घरतक जो सब ग्रह बैठे हों तो मनुष्य राजमान्य होता है वा नौवें घरका स्वामी चन्द्रमा सहित दूसरे बैठा हो तो राजमान्य हो ॥ १४ ॥

चंद्राधिष्ठितराश्यंशे नाथे केंद्रायकोणगे । बुधेन सहितो वापि राजराजो भवेन्नरः ॥ १५ ॥ निशाकरः सभौमस्तु वित्ते वा विक्रमेऽपि वा । पञ्चमे राहुसंयुक्ते राजतुल्यो भवेन्नरः ॥ १६ ॥

भाग्याधिपसमायुक्ते नवांशाधिपतौ सुखे । पुत्रनाथगते वापि नृपतुल्यो भवेन्नरः ॥ १७ ॥

चंद्रमा जिस राशिमें बैठा हो उस राशिका नवाँशनाथ केंद्र वा त्रिकोणमें वा ग्यारहवें या बुधकरके सहित हो तो मनुष्य राजमान्य होता है ॥१५॥ चंद्रमा मंगलसहित दूसरे वा तीसरे हो अथवा राहुसहित पांचवें हो तो मनुष्य राजमान्य होता है ॥ १६ ॥ नवम घरके स्वामीकरके सहित नवांशनाथ चौथे हो वा पंचम भावके स्वामी करके सहित हो तो पुरुष राजमान्य होता है ॥ १७ ॥

क्रूरे सकर्मभावेशे ग्रहास्तिष्ठंति चेत् क्रमात् । लग्नादिपूर्वषट्- केऽस्मिन् राजमान्यो भवेन्नरः ॥ १८ ॥ मीने राहौ भवेन्मदे भाग्यनाथेन वीक्षिते । लग्नेशे नीचखेटेन युते नृपसमो भवेत्॥१९॥

पाप ग्रह दशमेशसहित क्रमसे लग्नसे छठे घरतक बैठे हों तो मनुष्य राजमान्य होता है॥१८॥ मीनका राहु शनैश्चरसहित हो, नवमेश करके देखा गया हो, लग्नेश नीचग्रहके सहित हो तो मनुष्य राजाके समान होता है॥१९॥

वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिश्च स्वोच्चेषु षोडश नृपाः कथि- तैकलग्ने । द्व्येकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने स्वक्षेत्रगे शशिनि षोडश भूमिपाः स्युः ॥ २० ॥

मंगल, शनि, सूर्य, बृहस्पति ये चारों ग्रह अपनी उच्च राशियोंमें बैठे हों, एकके एक सन्मुख हों, केंद्रमें बैठे हों तो चार राजयोग होते हैं, बाकी ग्रह चाहे जहां बैठे हों इन्हीं चार ग्रहोंमेंसे तीन ग्रह अपने उच्च राशियोंमें बैठकर सन्मुख केंद्रमें हों तो बारह राजयोग होते हैं, पहिलेके चार मिलकर सोलह राजयोग हुए,उन्हीं चारों ग्रहोंमेंसे दो ग्रह अपनी उच्च राशियोंमें बैठकर केंद्रमें हों चंद्रमा कर्कराशिमें बैठा हो तो बारह राजयोग होते हैं, उन्हीं चार ग्रहोंमेंसे एक ग्रह अपनी उच्च राशिका होकर लग्नमें बैठा हो,चंद्रमा कर्कमें हो बाकीके ग्रह कहीं बैठे हों तो चार राजयोग होते हैं। पहिलेके बारह मिलकर सोलह हुए सब बत्तीस राजयोग हुए। नीचे लिखी कुंडलियोंमें देखो॥२०॥

राजयोगः राजयोगः राजयोगः
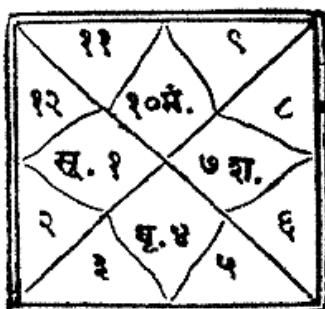
राजयोगः राजयोगः राजयोगः

राजयोगः राजयोगः राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः
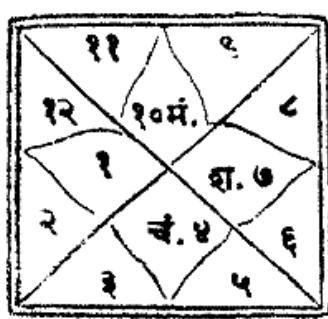
राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः राजयोगः राजयोगः
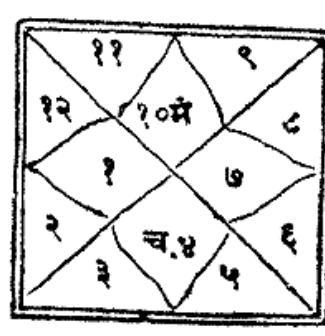
राजयोगः राजयोगः राजयोगः

राजयोगः राजयोगः

वर्गोत्तमगते लग्ने चंद्रे वा चंद्रवर्जिते ॥
चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वाविंशतिः स्मृताः ॥ २१ ॥

जन्मका लग्न वर्गोत्तम हो यानी मेष, कर्क, तुला, मकर ये हीं लग्न हों इनके पहले नवांशमें जन्म हो, अगर वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ लग्न हों तो इनके पांचवें नवांशमें जन्म हो अगर मिथुन, कन्या, धन, मीन लग्न हों तो इनका नौवें नवांशमें जन्म हो तो चंद्रमा लग्नमें हो चाहे न

हो चंद्रमाको छोडकर चार या पांच या छः ग्रह लग्नको देखते हों तो चौवालीस राजयोग होते हैं इनकी कुंडली नीचे लिखी है ।

ये योग चंद्रमा लग्नमें हो ये ग्रह देखते हों तो बाईस राजयोग होतेहैं चंद्रमा लग्नमें न हो यही ग्रह देखते हों तो भी २२ राजयोग होते हैं अगर चंद्रमा देखता होगा तो योगभंग होजायगा ॥ २१ ॥

राजयोगः
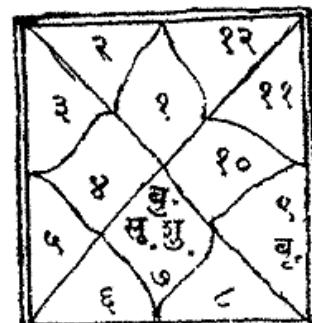
राजयोगः
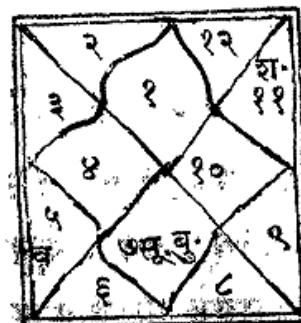
राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः
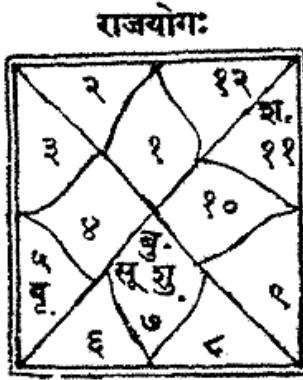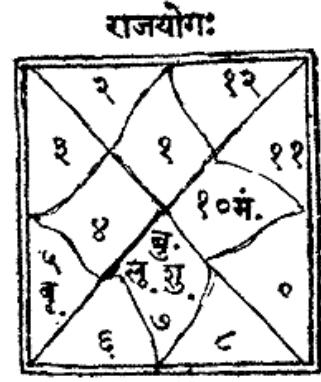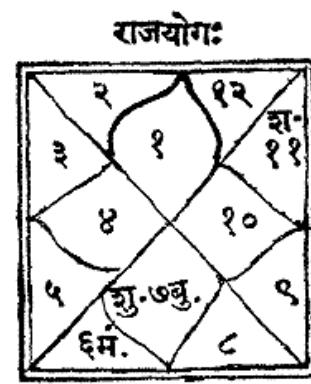
राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

राजयोगः

कदाचित् सब राशियोंके योग बनाये जायँ तो पांच सौ अट्ठाईस होते हैं ।

नभश्चराः पंच निजोच्चसंस्था यस्य प्रसूतौ स च सार्वभौमः ॥ त्रयः स्वतुंगादिगताःसराजाराजात्मजो अन्यसुतोऽत्र मंत्री॥२२॥

जिसके जन्मकालमें पांच ग्रह उच्चके हों सो मनुष्य चक्रवर्त्ती राजा होता है, और किसीके पडें तो वह मनुष्य मंत्री होता है ॥ २२ ॥

स्वोच्चे मूर्तिगतेमृतांशुतनये नक्रे सवक्रे शनौ चापे वागधिपेंदुभार्गवयुते स्याज्जन्म भूमीपतेः ॥ स्वस्थाने ननु यस्य भूमितुरगो मत्तेभमालामिलत्सेनांदोलितभूमिगोलकलनं दिग्दंतिनः कुर्वते ॥ २३ ॥

राजयोगः

जन्मलग्नमें बुध उच्चराशिका हो मकर राशिमें मंगल शनैश्वर हों, धनराशिमें बृहस्पति चन्द्रमा शुक्र मिले हुए बैठे हों तो उस राजाके राज्यमें घोडे मतवाले हाथियोंकी पंक्ति तथा सेना करके मिले हुए पृथिवीके ऊपर आनंदको दिक्पाल करते हैं ॥ २३ ॥

दिनाधिराजं मृगराजसंस्थे नक्रे सवक्रे कलशेऽर्कसूनौ ॥ पाठीनलग्ने शशिना समेते महीपतेर्जन्म महौजसः स्यात्॥२४॥

सूर्य सिंहमें बैठा हो, मकरमें मंगल, कुम्भमें शनैश्वर, मीन लग्न हो उसमें चन्द्रमा हो ऐसे योगमें पैदा हुआ मनुष्य महाराजा होता है ॥२४॥

राजयोगः
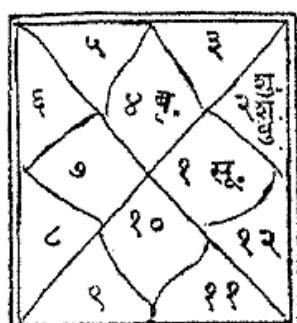
महीसुते मेषगते तनुस्थे बृहस्पतौ वा तनुगे स्वतुंगे । योगद्वयेऽस्मिन् नृपती भवेतां जितारिपक्षौ नृपनीतिदक्षौ ॥ २५ ॥

राजयोगः

मंगल मेषराशिका लग्नमें बैठा हो, बृहस्पति कर्कका चौथा हो (एको योगः) या बृहस्पति कर्कका लग्नमें हो और मंगल मेषका दशम हो इन दोनों योगोंमें पैदा हुए मनुष्य राजा, शत्रुओंको जीतनेवाले तथा नीतिमें चतुर होते हैं ॥ २५ ॥

राजयोगः

वाचस्पतिः स्वोच्चगतो विलग्ने मेषे दिनेशः शनिशुक्रसौम्याः । लाभालयस्थाः किल भूमिपालं तं भूतलास्याभरणं गृणंति ॥२६॥

राजयोगः

बृहस्पति उच्चका लग्नमें, दशममें मेषका सूर्य तथा शनि शुक्र बुध ग्यारहवें हों तो वह मनुष्य धरतीके ऊपर आभरण तथा बडा पराक्रमी राजा होता है ॥ २६ ॥

मंदो यदा नक्रविलग्नवर्ती मृगेन्द्रयुग्माजतुलाकुलीराः । स्वस्वामियुक्ता जनयंति नाथं पाथोनिधिप्रांतमहीतलस्य ॥२७॥

राजयोगः

शनैश्वर मकरका लग्नमें हो, सिंहका सूर्य, मिथुनका बुध, मेषका मंगल, तुलाका शुक्र, कर्कका चंद्रमा ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य समुद्रपासतककी धरतीका स्वामी होता है ॥२७॥

द्वंद्वे दैत्यगुरौ निशाकरसुते मूर्तौ स्वतुंगस्थिते नक्रे वक्रशनैश्चरैश्च सफरे चंद्रामरेज्यौ स्थितौ । योगोऽयं प्रभवेत्प्रसूतिसमये यस्याव-नीशो महान् वैरिव्रातमहोद्धतेभदलने पंचाननः केवलम् ॥ २८ ॥

राजयोगः

मिथुनमें शुक्र, कन्याका बुध लग्नमें हो, मकर राशिमें मंगल शनैश्वर हों, मीनमें चंद्रमा बृहस्पति हों ऐसा योग जिसके जन्मकालमें हो वह मनुष्य बडा राजा धरतीका मालिक होता है, बलवान् वैरियोंके नाश करनेवाला जैसे हाथियोंके समूहको एक सिंह हो तिस प्रकार होता है ॥ २८ ॥

राजयोगः

सिंहोदयेऽर्कस्त्वजगो मृगांकः शनैश्चरः कुं-भधरे सुरेज्यः । धनुर्धरे चेन्मकरे महीजो राजाधिराजो मनुजो भवेत्सः ॥ २९ ॥

सिंहका सूर्य लग्नमें हो, मेषमें चंद्रमा, कुंभमें शनि, धनमें बृहस्पति तथा मकरमें मंगल हो तो वह मनुष्य राजाओंका राजा होता है ॥ २९ ॥

मेषस्थितो मूर्तिगतः प्रसूतौ बृहस्पतिश्चास्तगतः कलावान् । रसातले व्योमगते सितश्चेन्महीपतिर्गीतदिगंतकीर्तिः ॥ ३० ॥
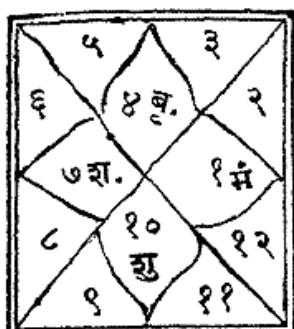
राजयोगः

मेषका बृहस्पति जन्मलग्नमें हो, चंद्रमा चौथे, दशममें शुक्र हो तो पृथ्वीमें उस राजाका यश दिशाके अंततक मनुष्य गान करते हैं ॥ ३० ॥

गुरुः कुलीरोपगतः प्रसूतौ स्मरांबुखस्था भृगुमंदभौमाः ।
तद्यानकाले जलधेर्जलानि भेरीनिनादोच्छलनं प्रयांति ॥ ३१ ॥

राजयोगः

बृहस्पति कर्कका लग्नमें हो, सातवें चौथे दशवें शुक्र शनैश्वर मंगल हों तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी यात्राके समय समुद्रका जल भेरी निनादकी तरह शब्द करता हुआ उछलता है ॥ ३१ ॥

वृषे शशी लग्नगतोऽबु सप्तखस्था रवीज्यार्कसुता भवंति ।
तद्दंडयात्रासु रजोंधकाराद्दिनेऽपि रात्रिं कुरुते प्रवेशम् ॥ ३२ ॥

राजयोगः

वृषराशिका चन्द्रमा लग्नमें बैठा हो, चौथे सातवें दशवें सूर्य बृहस्पति शनैश्वर बैठे हों ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी एक घडीमात्रकी यात्रामें धूरसे अन्धकार हो जाता है यानी दिनमें रात्रि प्रवेश कर देती है ॥ ३२ ॥

गुर्विन्दुसौम्यास्फुजितश्च यस्य मूर्तित्रिधर्मायगता भवंति ।
मृगेऽर्कसूनुस्तनुगोऽत्रनून मेकातपत्रां स भुनक्ति धात्रीम् ॥ ३३ ॥

राजयोगः

बृहस्पति, चंद्रमा, बुध, शुक्र जिसके लग्न, तीसरे, नौवें ग्याहरवें बैठे हों, मकरका शनैश्चर लग्नमें बैठा हो तो वह राजा एक छत्रधारी होकर सम्पूर्ण पृथ्वीका भोग करता है ॥ ३३ ॥

तुंगस्थितौ शुक्रबुधौ विलग्ने नक्रे च चक्रे धनुषीज्यचन्द्रौ ।
प्रसूतिकाले किल तौ भवेतामाखंडलौ भूमितलेऽपि संस्थौ ३४॥

राजयोगः

जिसके जन्म कालमें मीन राशिका शुक्र बुध सहित लग्नमें हो, मकर राशिका मंगल, धन राशिका बृहस्पति चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य समग्र पृथ्वीका राजा इन्द्रके समान धरतीपै होता है ॥ ३४ ॥

गुरुर्निजोच्चे यदि केन्द्रशाली राज्यालये दानवराजपूज्यः ।
प्रसूतिकाले किल तस्य मुद्रा चतुःसमुद्रावधिगामिनी स्यात् ३५॥

राजयोगः

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति उच्चका होकर केंद्र यानी लग्नमें बैठा हो, दशवें शुक्र बैठा हो, उस राजाकी मुहर वा सिक्का चारों समुद्रपर्यन्त चलता है ॥ ३५ ॥

देवाचार्यदिनेश्वरौ क्रियगतौ मेषूरणे क्षोणिजः पुण्ये भार्गवसौम्यशीतकिरणा यस्य प्रसूतौ स्थिताः । नूनं दिग्विजये प्रयाणसमये सैन्यैरिला व्याकुला चिंतामुद्वहतीति का गतिरहो सर्वे सहायाः स्थितैः ॥ ३६ ॥
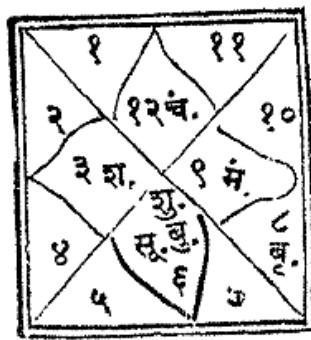
राजयोगः

बृहस्पति और सूर्य मेषराशिमें स्थित लग्नवर्ती हों, दशवें स्थानमें मंगल, नौवें घरमें शुक्र बुध चन्द्रमा हों ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी दिग्विजयकी यात्राके समय सेनाकरके पृथ्वी व्याकुल हो जाती है कि सम्पूर्ण मनुष्य आश्चर्यकरके चिंताको करते हैं कि धरतीके ऊपर अब कौन गति होनेवाली है ॥ ३६ ॥

मेषोदयेऽर्कश्च गुरुः कुलीरे तुलाधरे मंदविधू भवेताम् ।
भवेन्नृपालोऽमलकीर्तिशाली भूपालमालापरिपालिताज्ञः ॥३७॥

राजयोगः

मेषमें सूर्य, कर्कमें बृहस्पति, तुलामें शनैश्चर, चन्द्रमा हों तो ऐसे योगमें मनुष्य शरच्चंद्रकी चांदनीके समान यशस्वान् महाराजा हो, जिसकी आज्ञाको राजा पालन करते हैं ॥ ३७ ॥

मीने निशाकरः पूर्णः सर्वग्रहनिरीक्षितः ।
सार्वभौमं नरं कुर्यादिंद्रतुल्यपराक्रमः ३८॥

राजयोगः

मीनराशिका चंद्रमा जन्मलग्नमें बैठा हो परंतु लग्न वर्गोत्तम हो, चंद्रमा बलवान् हो, संपूर्ण ग्रह देखते हों तो मनुष्य सम्पूर्ण पृथ्वीका राजा तथा इंद्रके समान पराक्रमी होता है ॥ ३८ ॥

धने दिनेशो भृगुजीवचंद्रा नास्तंगता नो रिपुदृष्टियुक्ताः ।
स्यात्कंटके तत्कटके रिपुणां यशःपटो दिग्वसनाय नूनम्॥३९॥
स्वोच्चेषु वाचस्पतिसूर्यशुक्राः शनीक्षितः शीतरुचिर्निजोच्चे ।
यद्यानकाले रजसा वितानं रुणद्धि सूर्याश्वविलोचनानि ॥४०॥

धनस्थानमें सूर्य हो, शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा केंद्रमें हों परंतु न तो अस्त हों और न शत्रुओं करके देखे गये हों ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ जो राजा सो शत्रुओंकी फौजके यशके वस्त्रोंको दिग्वसन कर दे अर्थात् नंगे कर दे ॥ ३९ ॥ कर्कमें बृहस्पति, मेषमें सूर्य, मीनमें शुक्र, वृषमें चन्द्रमा स्थित हो, शनैश्चरकरके दृष्ट हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी यात्राकालमें धूरसे आकाशमें सामियाना हो जाता है और सूर्यके रथके घोडोंके नेत्र रुक जाते हैं ॥ ४० ॥

नास्तं याताः सुतगृहगताःसौम्यशुक्रामरेज्या नक्रे वक्रो रविर-
हितगो धर्मगो यस्य मंदः। यात्राकाले किल कमलिनीपुष्पस-
कोचकर्ता श्रीसूर्योऽपि प्रचलितदलोद्भूतधूलीकृतास्तः ॥४१॥

पंचम घरमें बुध, शुक्र, बृहस्पति प्राप्त हों परंतु अस्तके न हों. मक-
रका मंगल सूर्यकरके रहित, नवें घरमें शनैश्चर हो ऐसे योगमें उत्पन्न हुए
राजाकी यात्राके समय कमलिनीका पुष्प संकोच करता है उस राजाकी
फौजके चलनेसे श्रीसूर्यनारायण धूलसे अस्त होते हैं ॥ ४१ ॥

सुरासुरेज्यौ भवतश्चतुर्थेऽत्यर्थं समर्थः पृथिवीपतिः स्यात्।
कर्कस्थितो देवगुरुः सचंद्रो काश्मीरदेशाधिपतिं करोति ॥४२॥
पश्येन्मृगांकात्मजमिंद्रमंत्री विचित्रसंपन्नृपतिं करोति। एको-
ऽपि खेटो यदि पंचमांशे प्रसूतिकाले कुरुते नृपालम् ॥ ४३ ॥

बृहस्पति, शुक्र चौथे हों तो मनुष्य धनवान् पराक्रमी पृथ्वीका
पति होता है, कर्कराशिमें गुरु चन्द्रमासहित हो तो मनुष्य काश्मीरदेशका
स्वामी होता है॥४२॥ बृहस्पतिको बुध देखता हो तो अनेक तरहकी संपत्
करके सहित राजा होता है. जन्मकालमें एक ग्रह जो पांचवे नवांशमें
बैठा हो तो राजा करता है ॥ ४३ ॥

नक्षत्रनाथोऽप्यधिमित्रभागे शुक्रेण दृष्टो नृपतिं करोति।स्वांशा-
धिमित्रांशगतोऽथ वा स्याज्जीवेन दृष्टो कुरुते नृपालम्४४स्वोच्च-
स्थितः सोमसुतः ससोमः कुर्य्यान्नरं मागधदेशराजम्। कलाधि-
शाली बलवान् कलावान् करोति भूपं शुभधामसंस्थम् ॥४५॥
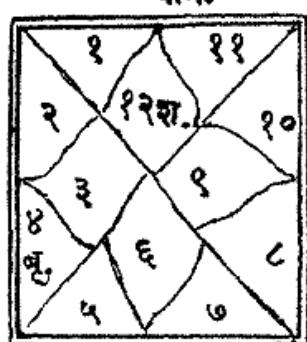
चन्द्रमा अपने अधिमित्रके नवांशमें बैठा हो शुक्रकरके दृष्ट हो तो
राजा करे है, वही चन्द्रमा अपने नवांशमें वा मित्रके नवांशमें हो बृह-
स्पति देखता हो तो राजा होता है ॥ ४४ ॥ उच्चराशिमें बैठा हो, बुध
चन्द्रमासहित हो तो मनुष्यको मगधदेशका राजा करे, चन्द्रमा बलवान्
पूर्णकला हो तो अच्छे स्थानका राजा हो ॥ ४५ ॥

जन्मेश्वरो जन्मविलग्नपो वा केन्द्रे बली नीचकुलेऽपि भूपम् ।
कुर्यादुदारं सुतरां पवित्रं किमत्र चित्रं क्षितिपालपुत्रम् ॥ ४६ ॥
मेषे दिनेशः शशिना समेतो यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यात् ।
कर्णाटकद्राविडकेरलान्ध्रदेशाधिपानामनुकूलवर्ती ॥ ४७ ॥

जन्मराशिका स्वामी जन्ममें हो और लग्नेश बली होकर केन्द्रमें हो तो नीच कुलमें उत्पन्न हुआ भी मनुष्य बडा उदार निरंतर पवित्र राजा होता है क्या आश्चर्य है जो राजाका पुत्र हो ॥४६॥ मेषका सूर्य चंद्रमासहित जिसके जन्मकालमें हो सो राजा कर्णाटक, द्राविड, केरल, आंध्रदेशके स्वामियोंके अनुकूलवर्ती होता है ॥ ४७ ॥

स्वतुंगगेहोपगतौ सितेज्यौ केंद्रत्रिकोणेषु गतौ भवेताम् ।
प्रसूतिकाले कुरुते नृपालं नृपालजातं सचिवेंद्रमान्यम् ॥ ४८ ॥
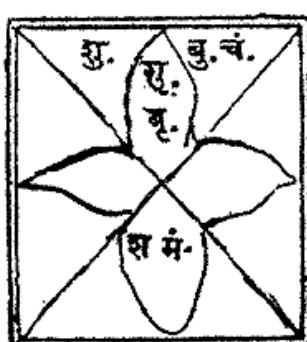
जिसके जन्मकालमें अपने उच्चराशिमें स्थित बृहस्पति शुक्र केंद्र और त्रिकोणमें बैठे हों सो मनुष्य राजाका पुत्र हो तो राजा हो, अन्य किसीका पुत्र हो तो राजमान्य मंत्री हो ॥४८॥

अथ छत्रयोगः ।

प्रसूतिकाले मदने धने च व्यये विलग्ने यदि संति खेटाः । तेष्वत्र योगो जनयंति तस्य प्राक्पुण्यपाकाभ्युदयो हि यस्य ॥ ४९ ॥

जिसके जन्मकालमें सातवें, दूसरे, बारहवें तथा लग्नमें सब ग्रह बैठे हों तो इस छत्रयोगमें पैदा हुआ मनुष्य पूर्वके पुण्यसे भाग्यवान् राजा होता है ॥ ४९ ॥

पापा विलग्ने यदि यस्य सूतौ दृष्टो भवेच्चित्रशिखंडिजेन ।
कर्के गुरुर्ब्राह्मणदेवभक्तः प्रासादवापीपुरकृन्नरः स्यात् ॥ ५०॥

राजयोगः

जिसके जन्मकालमें पापग्रह लग्नमें हों बृहस्पति करके देखे गये हों, कर्कका बृहस्पति हो तो वह मनुष्य मकान, बावडी, नगरका बनानेवाला होता है ॥ ५० ॥

मृगराशिं परित्यज्य स्थितो लग्ने बृहस्पतिः ।
करोति पृथिवीनाथं मत्तेभपरिवारितम् ॥ ५१ ॥

बृहस्पति मकरराशिको छोडके लग्नमें बैठा हो याने कर्कराशिगत कर्कके नवांशमें हो तो वह मनुष्य मतवाले हाथियों करके सहित पृथ्वी-का नाथ होता है ॥ ५१ ॥

केंद्रगः सुरगुरुः सशशांको यस्य जन्मनि च भार्गवदृष्टः ।
भूपतिर्भवति सोऽतुलकीर्तिर्नीचगो न यदि कोपि ग्रहः स्यात्५२

जिसके जन्ममें बृहस्पति चंद्रमासहित केंद्रमें हो और शुक्रकरके दृष्ट हो,जो नीचका कोई ग्रह न हो तो सो राजा बडा यशस्वी होता है ॥५२॥

धनस्थिताः सौम्यसितामरेज्या मंदारचंद्रा यदि सप्तमस्थाः ।
यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यादरातिदंतिक्षतिसिंह एव ॥५३॥
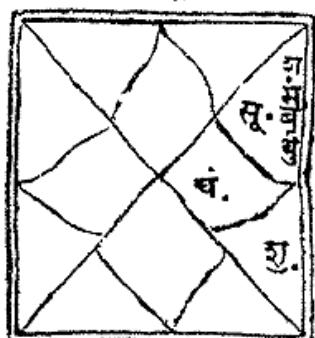
राजयोगः

जिसके जन्मकालमें दूसरे घरमें बुध, शुक्र,बृहस्पति बैठे हों, शनैश्चर,मंगल चंद्रमा जो सातवें बैठे हों तो सो राजा वैरीरूप हाथियोंके दाँतोंका तोडनेवाला सिंहके समान होता है ५३ ॥

चेद्भागवो जन्मनि यस्य पुण्ये मेषूरणे पूर्णतनुः शशांकः ॥ अन्ये ग्रहा लाभगता भवेयुः पृथ्वीपतिः पार्थिववंशजातः॥५४॥

राजयोगः

		सू. बु. गु. म.
	चं.	
		शु.

जिसके जन्ममें शुक्र भाग्य भवनमें हो दशम घरमें पूर्ण चंद्रमा हो, बाकी ग्रह संपूर्ण लाभस्थानमें हों सो राजाके वंशमें उत्पन्न हुआ पृथ्वीका राजा होता है ॥ ५४ ॥

उपचयभवनस्थाः सर्वखेटाः शशांकाद्रविगुरुशशिनश्चेद्भूमिसूनोर्भवंति । त्रितनयनवमस्थाः कुर्वते ते नरेंद्रं गजतुरगरथानां संपदा राजमान्यम् ॥ ५५ ॥

संपूर्ण ग्रह चंद्रमासे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें बैठे हों तो (एकोयोगः) अथवा सूर्य, बृहस्पति, चन्द्रमा, मंगलसे तीसरे, पंचम, नौवें हो तो हाथी, घोडा, रथ, सब संपदासहित राज्यमान्य राजा करते हैं ॥ ५५ ॥

बुधः कर्कटमारूढो वाक्पतिश्च धनुर्धरे।रविभूतसुतदृष्टौ तौ कुरुतः पृथिवीपतिम् ॥ ५६ ॥ कृत्तिकारेवतीस्वातीपुष्यस्थायी भृगोः सुतः । करोति भूभुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः ॥ ५७ ॥

बुध कर्कमें हो, धनमें बृहस्पति हो, बुधको सूर्य, बृहस्पतिको मंगल देखते हों तो राजा करते हैं ॥ ५६ ॥ कृत्तिका, रेवती, स्वाती, पुष्य इन नक्षत्रोंका शुक्र हो तो उसको धरतीका नाथ करता है, अश्विनीको शुक्र हो तो भी राजा करे ॥ ५७ ॥

षष्ठस्थ आसुरो भौमः कर्मस्थौ बुधभास्करौ । राजयोगे नरोत्पन्नो विख्यातः पृथिवीपतिः ॥५८॥ जीवमंदद्वयोर्मध्ये सर्वे तिष्ठंति खेचराः । करोति धरणीनाथं मत्तेभतुरगान्वितम् ॥ ५९ ॥

छठे घरमें राहु मंगल हो, दशवें घरमें बुध सूर्य हों तो इस राजयोगमें पैदा

हुआ मनुष्य धरतीका पति होता है ॥ ५८ ॥ बृहस्पति, शनैश्चर दोनोंके बीचमें सब ग्रह बैठे हों तो मतवाले हाथी घोडेसहित धरतीका नाथ हो ५९॥

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने यदा भृगुः । सर्वेस्थिताग्रहामध्ये राजा भवति विक्रमी ॥ ६० ॥ जीवो वृषे सुधारश्मिर्मिथुने मकरे कुजः । सिंहे भवति शौरिश्च कन्यायां बुधभास्करौ ॥ ६१ ॥ तुलायामसुराचार्यो राजयोगे भवेन्नरः । अस्मिन् योगे समुत्पन्नो महाराजो नरो भवेत् ॥ ६२ ॥ अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति मानवः । सार्वभौमस्तदा राजा जायते विश्वपालकः ॥ ६३ ॥

तीसरे घरमें बृहस्पति आठवें और शुक्र ग्रह इनके बीचमें बैठे हों तो वह मनुष्य पराक्रमी राजा होता है ॥ ६० ॥ वृषमें बृहस्पति, मिथुनमें चन्द्रमा, मकरका मंगल, सिंहका शनि, कन्याके सूर्य, बुध ॥ ६१ ॥ तुलाके शुक्र हो तो मनुष्य महाराजा होता है ॥ ६२ ॥ आठवें, बारहवें वर्षमें यह मनुष्य जीता रहे तो सार्वभौम राजा विश्वका पालनेवाला होता है ॥६३॥

एको जीवो यदा लग्ने सर्वे योगास्तदा शुभाः । दीर्घजीवी राजमान्यो जायते भटनायकः ॥ ६४ ॥ धनुष्यारश्च शुक्रश्च मीने जीवस्तुले बुधः । नीचस्थौ शनिचन्द्रौ च राजा स्याद्धनवर्जितः ॥ ६५ ॥

एक बृहस्पति जो लग्नमें उच्चका हो और चाहे सम्पूर्ण योग बुरे हों मनुष्य दीर्घ अवस्थाका, राजमान्य, सेनाका पति होता है ॥६४॥ धनके मंगल और शुक्र, मीनका बृहस्पति, तुलाका बुध, नीचके शनि चंद्रमा हों तो धनरहित राजा हो ॥ ६५ ॥

दाता भोक्ता च विख्यातो मान्यो मण्डलनायकः ।
मीने शुक्रो बुधश्चांते धने राहुस्तनौ रविः ॥ ६६ ॥

मीनका शुक्र वा बुध, दूसरे राहु, लग्नमें सूर्य हो तो मनुष्य दानी, भोगी, विख्यात, राजमान्य, धरतीका मालिक होता है ६६ ॥

सहजे च यदा जीवो लाभस्थाने निशाकरः। स राजा राजमध्यस्थो विख्यातः पृथिवीपतिः ॥६७॥ उच्चस्थानगताः सौम्याः केंद्रेषु च भवंति चेत् । ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य स्ववंशानां च पोषकः ॥ ६८ ॥

तीसरे बृहस्पति ग्यारहवें चन्द्रमा हो तो सो राजा राजोंके बीचमें विख्यात धरतीका पति होता है ॥६७॥ शुभग्रह उच्चके होकर केन्द्रमें बैठे हों तो उसका अचल राज्य हो, अपने वंशका पालनेवाला हो ॥ ६८ ॥

धने व्यये तथा लग्ने सप्तमे च यदा ग्रहाः । छत्रयोगस्तदा ज्ञेयो नराणां नायको भवेत् ॥६९॥ पंचमस्थो यदा जीवो दशमस्थो निशापतिः । राज्यवान्स महाबुद्धिस्तपस्वी विजितेंद्रियः॥७०॥

दूसरे, बाहरवें, लग्न, सातवें जो सम्पूर्ण ग्रह बैठे हों तो छत्रनाम योग जानना, उस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजा नरोंका नायक होता है ॥६९॥ पांचवें बृहस्पति और दशवें चंद्रमा हो तो राजा बडा बुद्धिमान् तपस्वी तथा जितेंद्रिय होता है ॥ ७० ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटकोदंडमकरेषु च । ग्रहास्तिष्ठंति चेत्सर्वे देशभोगी धराधिपः॥७१॥तुलाकोदंडमीनस्थो लग्नगो भास्करात्मजः । करोति पृथिवीनाथं मत्तेभपरिवारितम् ॥ ७२ ॥

सिंहका बृहस्पति, तुला, कर्क, धन, मकर इन राशियोंमें सब ग्रह हों तो मनुष्य देशका भोगनेवाला, पृथिवीका मालिक होता है ॥ ७१ ॥ तुला, धन, मीन लग्नका शनैश्चर हो तो मतवाले हाथियोंसहित पृथिवीमें नाथ होता है ॥ ७२ ॥

विद्यास्थाने यदा सौम्यः कर्मस्थाने निशापतिः । धर्मस्थाने महीसूनू राजराजो भवेन्नरः॥ ७३ ॥ मकरे कार्मुके मीने वृषे च मिथुने क्रिये। ग्रहास्तिष्ठंति चेत्सर्वे स राजा विश्वपालकः॥७४॥

पांचवें बुध, दशवें चन्द्रमा, नवें मंगल हो तो मनुष्य राजाओंका

राजा होता है ॥ ७३ ॥ मकर, धन, मीन, वृष, मिथुन, मेषमें जो सब ग्रह हों तो मनुष्य विश्वका पालनेवाला राजा होता है ॥ ७४ ॥

चतुर्थे भवने शुक्रो गुरुश्चंद्रो धरासुतः । रविशौरियुताः संति महाराजो प्रतापवान् ॥७५॥ अष्टमे द्वादशे पापा मध्यस्था क्रूरसौम्यकाः॥करोति धरणीनाथमतिकामी सुराप्रियः७६॥

चौथे घरमें शुक्र, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शनिसहित बैठे हों तो मनुष्य महाराजा प्रतापी होता है ॥ ७५ ॥ आठवें बारहवें जो पापग्रह हों बीचमें सब शुभ क्रूर ग्रह हों तो धरतीका मालिक होता है, बडा कामी, शराबका पीनेवाला होता है ॥ ७६ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चंद्रस्त्रिकोणे गुरुभास्करौ । कर्मस्थाने भवेद्भौमो जायते देशपालकः॥ ७७ ॥ द्वित्रितुर्यसुते षष्ठे कर्मभावे यदा ग्रहाः । राजयोगो विजानीयात् जायते नृपतिर्भवेत्॥७८॥

लग्नमें शनि, चन्द्रमा, पांचवें, नौवें बृहस्पति, सूर्य, दशवें मंगल हो तो देशका पालनेवाला राजा हो ॥ ७७ ॥ दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे, दशवें जो सब ग्रह हों तो राजयोग होता है,इसमें पैदा हुआ मनुष्य राजा होता है ॥ ७८ ॥

लग्ने क्रूरो व्यये सौम्यो धने क्रूरो यदा भवेत् । अस्मिन् योगे नरो जातो दरिद्री धनवर्जितः॥७९॥ चापे सौरिर्निशानाथो मेषे चित्रशिखंडिजः । दशमस्थौ राहुशुक्रौ राजयोगे नृपो भवेत्॥८०॥

लग्नमें पापग्रह, बारहवें शुभग्रह, दूसरे पापग्रह हों तो धनरहित दरिद्री हो ॥ ७९ ॥ धनमें शनि, चन्द्रमा, मेषमें बृहस्पति, दशवें राहु शुक्र हो, तो राजा हो ॥ ८० ॥

सिंहे जीवोऽथ कन्यायां भार्गवो मिथुने शनिः । स्वक्षेत्रे हिबुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ८१ ॥ शनिचंद्रौ च कन्यायां भार्गवः शफरे गतः । मकरे च कुजस्तत्र जातो विश्वस्य पालकः ॥ ८२ ॥

सिंहमें बृहस्पति, कन्याम शुक्र, मिथुनमें शनि, स्वक्षेत्रका मंगल चौथे हो तो राजा हो ॥ ८१ ॥ शनि चंद्रमा कन्यामें, शुक्र मीनमें, मकरमें मंगल हो तो विश्वका पालनेवाला हो ॥ ८२ ॥

कर्कलग्ने जीवयुक्ते लाभे चंद्रज्ञभार्गवाः ।
मेषे भानौ च यो जातः स राजा भूमिपालकः ॥ ८३ ॥
लग्ने सौरिनिशानाथावष्टमे असुरार्चितः ।
यस्य प्रसूतौ भूपालो मानी वेश्यारतः स वै ॥ ८४ ॥

कर्कलग्नमें बृहस्पति, ग्यारहवें चन्द्रमा बुध शुक्र, मेषमें सूर्य हो तो सो भूमिका पालनेवाला राजा होता है ॥८३॥ जिसके जन्मलग्नमें शनि चंद्रमा आठवें शुक्र हो सो राजा मानी, वेश्याओंमें प्रीति करनेवाला हो ॥ ८४ ॥

मिथुनस्थो यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनंदनः ।
अत्र जातः पितुर्द्रव्यं प्राप्नोति सकलं नृपः ॥ ८५ ॥
उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणस्थो यदा भवेत् ।
अपि नीचकुले जातो राजा स्याद्धनपूरितः ॥ ८६ ॥

मिथुनमें राहु, सिंहमें मंगल इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य पिताका सम्पूर्ण द्रव्य प्राप्त करता है ॥ ८५ ॥ सूर्य उच्चाभिलाषी होकर त्रिकोणमें बैठा हो तो निश्चय करके धनसे पूर्ण राजा हो ॥ ८६ ॥

उत्पन्नकारके योऽपि नीचोऽपि नृपतां व्रजेत् । राजवंशे समुत्पन्नो राजा तत्र न संशयः ॥ ८७ ॥ धनस्थश्च यदा शुक्रो दशमस्थो बृहस्पतिः । षष्ठेऽष्टमे सिंहिकाजो राजा भवति विक्रमी ॥८८॥

जो नीच वंशमें भी उत्पन्न हो पर राजयोगमें पैदा हो तो राजा होता है और राजाके वंशमें उत्पन्न हो तो जरूर ही राजा हो ॥ ८७ ॥ दूसरे शुक्र, दशवें बृहस्पति, छठे आठवें राहु हो तो पराक्रमी राजा हो ॥८८॥

सर्वग्रहैर्यदा चन्द्रो विनालिं च निरीक्षितः ।
षष्ठेऽष्टमे च यामित्रे स दीर्घायुर्धराधिपः ॥ ८९ ॥

सम्पूर्ण ग्रह जो चन्द्रमाके विना वृश्चिकको देखते हों, छठे, सातवें, आठवें हो तो दीर्घायुष्यमान् पृथ्वीका पति हो ॥ ८९ ॥

अथ सिंहासनयोगः ।

षष्ठेऽष्टमे द्वादशे च द्वितीये संस्थिता ग्रहाः ।
सिंहासनाख्ये योगेऽस्मिन् राजा सिंहासने वसेत् ॥ ९० ॥

छठे, आठवें, बारहवें, दूसरे सब ग्रह बैठे हों तो सिंहासन नाम योग होता है सो राजा राजसिंहासनको प्राप्त होता है ॥ ९० ॥

मेषलग्ने यदा भानुश्चतुर्थे च बृहस्पतिः ।
दशमे च कुजो जातो विश्वस्याधिपतिर्भवेत् ॥ ९१ ॥
केन्द्रे स्वोच्चस्थिते सौम्ये राजलक्ष्मीपतिर्भवेत् ।
केंद्रे पापे स्वोच्चसंस्थे राजा स्याद्धनवर्जितः ॥ ९२ ॥

मेष लग्नमें सूर्य हो, चौथे बृहस्पति हो, दशवें मंगल हो तो संसारका मालिक हो ॥ ९१ ॥ केन्द्रमें उच्चके शुभग्रह बैठे हों तो राज्यलक्ष्मीका पति हो । केन्द्रमे पापग्रह उच्चके बैठे हों तो धन करके रहित राजा हो ॥९२॥

चतुष्केंद्रगताःसौम्याःपापा द्वादशषष्ठगाः।भवेत्स राजा विख्यातो लब्धच्छत्रो विभूषितः ॥९३॥सूर्यः केंद्रे राजसेवी वैश्यवृत्तिर्निशाकरे । शस्त्रवृत्तिः कुजे शूरो बुधे चाध्यापको भवेत्॥९४॥

चारों केंद्रोंमें शुभग्रह हों, पापग्रह बारहवें, छठे हों तो प्राप्त किये छत्रसे शोभायमान विख्यात राजा हो ॥ ९३ ॥ सूर्य केन्द्रमें हो तो राजसेवी हो, चंद्रमा हो तो वैश्यवृत्ति करे, मंगल हो तो हथियारसे वृत्ति करे, वीर हो, बुध केंद्रमें हो तो लडकोंको पढानेवाला हो ॥ ९४ ॥

स्वानुष्ठानरतो नित्यं दिव्यबुद्धिर्गुरौ नरः ।
शुक्रे विद्यार्थसंपन्नो नीचसेवी शनैश्चरे ॥ ९५ ॥

बृहस्पति हो तो अपने अनुष्ठानमें सदैव रत उत्तम बुद्धिका हो,शुक्र केंद्रमें हो तो विद्या धनकरके सहित हो, शनैश्चर होनेसे नीचसेवा करनेसे अपनी आजीविका करे ॥ ९५ ॥

राज्यप्राप्तिकालः ।

राज्योपलब्धिर्दशमस्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवा दशायाम् ।
तयोरभावे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदि जन्मकाले॥९६॥

राज्यकरक ग्रहोंमेंसे जो ग्रह दशवें बैठा हो उसकी दशा अंतर्दशामें राज्यकी प्राप्ति कहना, अथवा लग्नमें बैठे ग्रहकी दशामें कहना चाहिये, अगर राज्ययोगकारक ग्रह दोनों स्थानोंमें हों तो उनमेंसे जो बलवान् हो उसकी दशामें राज्यकी प्राप्ति कहना और जो लग्न,दशवें बहुतसे राज-योगकारक ग्रह हों तो उनमेंसे बलीकी दशांतर्दशामें राज्यकी प्राप्ति कहनी चाहिये और कहे हुए स्थानोंमेंसे किसी स्थानमें ग्रह न हो तो राजयोग-कारक ग्रहोंमेंसे जो सबसे बली हो उसकी दशांतर्दशामें राज्यकी प्राप्ति कहनी चाहिये। उस राजयोगकारक ग्रहकी बहुतसी अंतर्दशा होगी परंतु उनमें जिस दशा वा अंतर्दशाकालमें राज्य देनेवाला ग्रह गोचरबलमें हो उसी समय राज्यकी प्राप्ति होती है और जो ग्रह शत्रुस्थानमें वा नीचस्थानमें बैठा हो तो उसकी दशा अंतर्दशामें उक्त राज्य भी छूट जाता है ॥ ९६ ॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु राजयोगाः प्रकीर्तिताः ॥
कृतो वै श्यामलालेन सर्वलोकोपकारकः ॥९७॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादा-
त्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते
ज्योतिषश्यामसंग्रहे राजयोगो नाम
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

इस अध्यायमें श्यामलालकरके सम्पूर्ण मनुष्योंके उपकारके लिये राजयोग वर्णन किया गया ॥ ९७ ॥

इति श्रीराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषा-
टीकायां राजयोगवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ स्त्रीजातकाध्यायप्रारम्भः ।

युग्मेषु लग्नशशिनोः प्रकृतिस्थिता स्त्री सच्छीलभूषणयुता शुभदृष्टयोश्च । ओजस्थयोश्च मनुजाकृतिशीलयुक्ता पापा च पापयुतवीक्षितयोर्गुणानाम् ॥ १ ॥

जिस स्त्रीके जन्मलग्नमें लग्न और चंद्रमा समराशिमें बैठे हों वह स्त्री स्त्रियोंके आकार स्वभाववाली होती है और उसी लग्न चन्द्रमाको शुभ ग्रह देखते हों तो वह स्त्री उत्तमशीलवती भूषणोंसहित होती है और जो लग्न चन्द्रमा विषमराशिके हों तो वह स्त्री पुरुषोंके समान आकार स्वभाववाली होती है और वे ही लग्न चन्द्रमा पापग्रहोंसे दृष्ट हों तो पापिनी बुरे काम करनेवाली होती है । विषमराशिमें लग्न चन्द्रमा हो, शुभ ग्रह देखते हों तो मध्यम स्वभाव कहना । समराशिमें लग्न चन्द्रमा हो और पापग्रह देखते हों तो भी मध्यम स्वभाव कहना । जो ज्यादे बली हों उसी माफिक स्वभाव कहना चाहिये ॥ १ ॥

अथ त्रिंशांशवशात्स्त्रीफलमाह ।

कन्येव दुष्टा व्रजतीह दास्यं साध्वीसमा या कुचरित्रयुक्ता । भूम्यात्मजर्क्षे क्रमशोंऽशकेषु वक्रार्कजीवेंदुजभार्गवानाम् ॥ २ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें लग्न अथवा चन्द्रमा मेष या वृश्चिकराशिमें हो और उसमें इन्हीं राशियोंका त्रिंशांश हो तो वह कन्या परपुरुषसे विवाहके पहिले गमन करती है, पूर्वोक्तराशिमें स्थित लग्न व चन्द्रमा हो, शनैश्चरका त्रिंशांश हो तो दासी होती है और बृहस्पतिका त्रिंशांश हो तो पतिव्रता होती है । बुधका त्रिंशांश हो तो माया करनेवाली होती है और शुक्रका त्रिंशांश हो तो खोटे कर्म करनेवाली होती है ॥ २ ॥

दुष्टा पुनर्भूः सगुणा कलाज्ञा ख्याता गुणैश्चासुरपूजितर्क्षे । स्यात्कापटी क्लीबसमा सती च बौधे गुणाढ्या प्रविकीर्णकामा ॥ ३ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें वृष वा तुला इन दोनोंमेंसे किसीमें लग्न अथवा चंद्रमा हो और मंगलका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री दुष्टस्वभाववाली होती है, शनैश्चरका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री विवाहके पीछे दूसरेके घरमें रहे,जो बृहस्पतिका त्रिंशांश हो तो गुणवती हो, जो बुधका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री गाने बजानेकी कलामें चतुर होती है, शुक्रका त्रिंशांश हो तो गुणाकरके नामी होती है। वही लग्न वा चंद्रमा मिथुन वा कन्या राशिका हो उसमें मंगलका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री कपट करनेवाली होती है, शनैश्चरका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री नपुंसक पुरुषके समान हिजडी होती है, जो बृहस्पतिका त्रिंशांश हो तो पतिव्रता होती है, बुधका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री गुणवती होती है और जो शुक्रका त्रिंशांश हो तो बहुत जातिके पुरुषोंसे गमन करती है ॥ ३ ॥

स्वच्छंदा पतिघातिनी बहुगुणा शिल्पिन्यसाध्वींदुभे-
स्वाचारा कुलटार्कभे नृपवधूः पुंश्चेष्टितागम्यगा।
जैवेनैकगुणाल्परत्यतिगुणा विज्ञानयुक्ता सती
दासी नीचरतार्किभे पतिरता दुष्टा प्रजा स्वांशकैः ॥ ४ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें लग्न या चंद्रमा कर्कराशिका हो और उसी समय मंगलका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री इच्छाचारी गमन करती है, शनिका त्रिंशांश हो तो पतिको मारनेवाली होती है, बृहस्पतिका त्रिंशांश हो तो बहुत गुणवती होती है, जो बुधका त्रिंशांश हो तो तसवीर खींचनेमें वा राजगिरीमें कुशल होती है, जो शुक्रका त्रिंशांश हो तो व्यभिचारिणी होती है। तैसे ही सिंहलग्न वा सिंहमें चंद्रमा हो और मंगलका त्रिंशांश हो तो पुरुषोंकेसे काम करे. जो शनिका त्रिंशांश हो तो परपुरुषगामिनी हो, जो बृहस्पतिका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री राजवधू हो। जो बुधका त्रिंशांश हो तो पुरुषस्वभाववाली होती है, जो शुक्रका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री अपने पिता भ्राता ज्येष्ठ देवर इत्यादि पुरुषोंसे गमन करती है तैसे ही लग्न

व चंद्रमा धन मीन दोनोंमेंसे किसी राशिके हों और मंगलका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री बहुत गुणोंकरके युक्त होती है, जो शनिका त्रिंशांश हो तो अल्परति करनेवाली हो, जो बृहस्पतिका त्रिंशांश हो तो बहुत गुणोंवाली हो, जो बुधका त्रिंशांश हो तो ज्ञानवती हो; जो शुक्रका त्रिंशांश हो तो परपुरुषसे प्रीति करनेवाली हो, ऐसे ही लग्न व चंद्रमा मकर कुम्भ इन दोनों राशिमेंसे किसी राशिके हों और मंगलका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री दासी हो, जो शनिका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री नीच मनुष्यसे गमन करती है, जो बृहस्पतिका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री पतिसे प्रीति करनेवाली होती है. जो बुधका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री खोटी होती है और जो शुक्रका त्रिंशांश हो तो वह स्त्री बांझ होती है ॥ ४ ॥

शशिलग्नसमायुक्तैः फलं त्रिंशांशकैरिदम् ।
बलाबलविवेकेन तयोरुक्तं विचिंतयेत् ॥ ५ ॥

लग्न और चंद्रमा इन दोनोंसे त्रिंशांशका फल कहा है उसको बलाबल विचार करके कहना, लग्नमें या चन्द्रमामें जो बलवान् हो उसके मुताबिक फल कहना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ स्त्रीस्त्रीमैथुनयोगमाह ।

दृक्संस्थावसितासितौ परस्परांशे शौक्रे वा यदि घटराशिसंभवोंऽशः । स्त्रीभिः स्त्री मदनविषानलं प्रदीप्तं संशांतिं नयति नराकृतिस्थिताभिः ॥ ६ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें शनैश्चर शुक्रके नवांशमें हो, शुक्र शनैश्चरके नवांशमें हो,परस्पर देखते ऐसा हो एक योग अथवा वृष तुलाजन्मकी लग्न हो उसमें कुंभके नवांशका उदय हो तो वह स्त्री अन्य पुरुषाकार स्त्रीके संग किसी वस्तुके लिंग बनाकर उससे कामदेवकी अग्निको शांत करती है ॥६॥

अथ कापुरुषयोगः ।

शून्ये कापुरुषोऽबलेऽस्तभवने सौम्यग्रहावीक्षिते
क्लीबोऽस्ते बुधमंदयोश्चरगृहे नित्यं प्रवासान्वितः ।

उत्सृष्टा रविणा कुजेन विधवा बाल्येऽस्तराशिस्थिते
कन्यैवाशुभवीक्षितेऽर्कतनये द्यूने जरां गच्छति ॥ ७ ॥

स्त्रियोंके जन्मलग्नसे अथवा चंद्रमासे सातवें घरमें कोई ग्रह न हो अथवा निर्बल हो या शत्रुग्रहोंकी दृष्टि सातवें घरमें न हो तो उस स्त्रीका पति निरुद्यमी होता है। जो सातवें घरपर बुध शनैश्वर हों तो उसका पति नपुंसक होता है, जो उसी सातवें घरमें चरराशि हो तो उसका पति हमेशा परदेशमें रहे, स्थिर हो तो घर ही रहे, द्विस्वभाव राशि हो तो घर और परदेश दोनोंमें रहे, उसी सातवें घरमें सूर्य हो तो वह स्त्री पतिसे त्यागी जाय और मंगल सातवें बैठा हो तो वह स्त्री बालविधवा होती है और उसी सातवें घरमें शनैश्वर हो, सब पापी ग्रह देखते हों तो वह स्त्री विना व्याही रहती है वा विवाह होते ही पति नष्ट होता है ॥ ७ ॥

आग्नेयैर्विधवास्तराशिसहितैर्मिश्रैः पुनर्भूर्भवेत् ।
क्रूरे हीनबलेऽस्तगे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता ।
अन्योन्यांशगयोः सितावनिजयोरन्यप्रसक्तांगना ।
द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहितौ भर्तुस्तदानुज्ञया ॥ ८ ॥

जिस स्त्रीके सातवें घरमें सब पापग्रह स्थित हों तो वह स्त्री जरूर विधवा होती है और जो सातवें घरमें शुभग्रह बलहीन और पापग्रह दोनों हों तो वह स्त्री निज पतिको छोडकर दूसरेको अंगीकार करती है और उसी सातवें घरमें एक पापग्रह बलरहित बैठा हो कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो भी पतिकरके त्यागी जाय। जो किसी घरमें शुक्रके नवांशमें मंगल हो, मंगलके नवांशमें शुक्र हो तो वह स्त्री परपुरुषसे भोग करती है। जो उसी सातवें घरमें चंद्रमासहित मंगल हो तो वह स्त्री पतिकी आज्ञासे परपुरुषरता होतीहै ॥८॥

अथ मात्रा सह व्यभिचारिणीयोगः ।

सौरारर्क्षे लग्नगे सेंदुशुक्रे मात्रा सार्द्धं बंधकी पापदृष्टे । कौजेऽस्तेंऽशे सौरिणी व्याधियोनिश्चारुश्रोणी वल्लभा सद्ग्रहांशे ॥ ९ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें मकर, कुम्भ, मेष, वृश्चिक इनमेंसे कोई लग्नमें हो, वहां चंद्रमा शुक्र दोनों बैठे हों पापग्रह देखते हों तो वह स्त्री माताकरके सहित परपुरुषगामिनी होती है । जिसके सातवें घरमें मंगलका नवांश हो उसको शनैश्वर देखता हो तो उस स्त्रीके भगमें रोग होता है । जो उसी सातवें घरमें शुभग्रहका नवांश हो और शुभग्रह देखते हों तो उस स्त्रीका भग बहुत सुंदर अपने स्वामीको प्यारी होती है ॥ ९ ॥

अथ वृद्धपतियोगः ।

वृद्धो मूर्खः सूर्यजर्क्षांशके वा स्त्रीलोलः स्यात् क्रोधनश्चावनेये ।
शौक्रे कांतोऽतीव सौभाग्ययुक्तो विद्वान् भर्त्ता नैपुण्यश्चैवबोधे१०

जिस स्त्रीके जन्मलग्नसे सातवें घरमें मकर कुंभके नवांशका उदय हो मकर कुंभ ही सातवें घर (लग्न) में हों तो उस स्त्रीका पति बूढा या मूर्ख होता है । जिस स्त्रीके सातवें घरमें मेष या वृश्चिक राशि हो इन्हींका नवांश हो तो उस स्त्रीका पति स्त्रियोंको प्यारा, क्रोधी होता है और उसी सातवें घरमें वृष वा तुला राशि हो और शुक्रके नवांशका उदय हो तो उस स्त्रीका पति स्वरूपवान् सबको प्यारा होता है । उसी सातवें घरमें मिथुन वा कन्या राशि हो और बुधका नवांश हो तो उस स्त्रीका पति पंडित तथा अतीव चतुर होता है ॥ १० ॥

मदनवशगतो मृदुश्च चंद्रे त्रिदशगुरौ गुणवान् जितेंद्रियश्च ।
अतिमृदुरतिकर्मकृच्च सिंहे भवति गृहेऽस्तमयस्थितेंऽशके वा ११

जिस स्त्रीके जन्मकालमें सातवें घरमें कर्कराशि हो, कर्कका ही नवांश हो तो उस स्त्रीका पति अतिकामी कोमलस्वभाववाला होता है और उसी सातवें घरमें धन या मीन राशि हो और बृहस्पतिका नवांश हो तो उस स्त्रीका स्वामी गुणवान् जितेन्द्रिय होता है और उसी सातवें घरमें सिंहराशि हो सिंहका ही नवांश हो तो उस स्त्रीका पति अतिकोमल स्वभाववाला व्यापारी होता है ॥ ११ ॥

अथ लग्नस्थग्रहफलम् ।

ईर्ष्यान्विता सुखपरा शशिशुक्रलग्ने ज्ञेन्द्वोः कलासु निपुणा सुखिता गुणाढ्या । शुक्रज्ञयोस्तु सुभगा रुचिरा कलाज्ञा त्रिष्वप्यनेकवसुसौख्यगुणा शुभेषु ॥ १२ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें चंद्रमा शुक्र लग्नमें हों तो वह स्त्री ईर्षा करनेवाली, दूसरेको संताप देनेवाली, सदा सुखी होती है। जो बुध चन्द्रमा लग्नमें बैठे हों तो वह स्त्री गाने बजानेमें चतुर, सुखी, गुणवती, सुंदरी, सबको प्यारी होती है और शुक्र बुध बैठे हों तो वह स्त्री सौभाग्यवती गीतवाद्यमें निपुण होती है और उसी जन्मकालमें बुध, शुक्र, चंद्रमा तीनों बैठे हों तो वह स्त्री अनेक प्रकारके धन सुखसहित गुणवती होती है॥ १२ ॥

अथ वैधव्ययोगः ।

क्रूरेऽष्टमे विधवता निधनेश्वरोंऽशे यस्य स्थितो वयसि तस्य समे प्रदिष्टा । सत्स्वर्थगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः कन्यालिगोहरिषु चाल्पसुतत्वमिंदोः ॥ १३ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें आठवें घरमें पापग्रह बैठे हों और आठवें घरका स्वामी जिस ग्रहके नवांशमें बैठा हो उस ग्रहकी दशांतर्दशामें वह स्त्री विधवा होती है और जो लग्नसे आठवें स्थानमें पापग्रह बैठा हो और दूसरे घरमें कोई शुभग्रह बैठा हो तो वह स्त्री स्वामीसे पहिले मृत्युको प्राप्त होती है और जिस स्त्रीके कन्या, वृश्चिक, वृष, सिंह इनमेंसे किसी राशिमें चन्द्रमा हो तो वह स्त्री अल्पपुत्रवती होती है ॥ १३ ॥

अथ बहुपुरुषगामिनीयोगः ।

सौरे मध्यबले बलेन रहितैः शीतांशुशुक्रेंदुजैः ।
शेषैर्वीर्यसमन्वितः पुरुषणी यद्योजराश्युद्गमे ।

जिस स्त्रीके जन्मकालमें शनैश्वर मध्यबली हो, चन्द्रमा, शुक्र बुध,

बलरहित हों, सूर्य, मंगल, बृहस्पति बलवान् हों और विषम राशि लग्नमें हो तो वह स्त्री बहुत पुरुषगामिनी होती है ॥

अथ ब्रह्मवादिनीयोगः ।

जीवारास्फुजिदैंदवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे ।
विख्याता भुवि नैकशास्त्रनिपुणा स्त्री ब्रह्मवादिन्यपि ॥ १४ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें बृहस्पति, मंगल,शुक्र, बुध ये बली हों और समराशिमें लग्न हो तो वह स्त्री धरतीमें विख्यात, अनेक शास्त्रकी जानने वाली, ब्रह्मविद्या यानी मोक्षशास्त्रमें कुशल होती है ॥ १४ ॥

अथ संन्यासिनीयोगः ।

पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्यां प्रव्रज्यां युवतिरुपैत्यसंशयेन ।
उद्वाहे वरणविधौ प्रदानकाले चिंतायामपि सकलं विधेयमेतत् १५

जिस स्त्रीके जन्मसमयमें पापग्रह सातवें बैठा हो और नववें स्थानमें जो ग्रह बैठा हो उसीकी प्रव्रज्या यानी संन्यासको वह स्त्री प्राप्त होती है। जैसे सूर्य बली हो तो तप करनेवाली हो, चन्द्रमासे कपालिनी, मंगलसे लाल कपड़े धारण करनेवाली, बुधसे दंडिनी, बृहस्पतिसे यति, शुक्रसे चक्र धारण करनेवाली, शनैश्चरसे नंगी होती है सो यह योग विवाहके समय वा कुण्डली मिलानेके समय अथवा सगाईके समय वा कन्यादानसे पहिले विचारना चाहिये ॥ १५ ॥

अथ स्त्रीणां राजयोगः ।

केंद्रे च सौम्या यदि पृष्ठभाजः पापाः कलत्रे च मनुष्यराशौ ।
राज्ञी भवेत्स्त्री बहुकोशयुक्ता नित्यं प्रशांता च सुपुत्रिणी च ॥१६॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें शुभग्रह केन्द्रमें बैठे हों और पापग्रह ६ । ९ । १२ । में हों, सातवें घरमें पुरुषराशि हो तो वह स्त्री बहुत धनसहित शांत स्वभाववाली पुत्रवती रानी होती है ॥ १६ ॥

बुधे विलग्ने यदि तुंगसंस्थे लाभस्थिते देवपुरोहिते च । नरेंद्र-

पत्नी वनिताप्रसंगे तदा प्रसिद्धा भवतीह भूमौ ॥ १७ ॥ एकोऽपि जीवो रसवर्गशुद्धौ केंद्रे यदा चंद्रनिरीक्षितश्च ॥ राज्ञी भवेत्स्त्री सधना सुपुत्रा रूपान्विता पीननितंबबिंबा ॥ १८ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें, जन्मलग्नमें बुध उच्चराशिका बैठा हो और ग्यारहवें घरमें बृहस्पति हो तो वह स्त्री राजपत्नी हो, स्त्रियोंकी गणनामें अग्रणी पृथ्वीपर विख्यात होती है ॥ १७ ॥ जिस स्त्रीके जन्मकालमें केवल षड्वर्गमें शुक्र केन्द्रमें बैठा हो, चन्द्रमासे दृष्ट हो तो वह स्त्री धनपुत्रसहित रूपवती, स्थूल नितंबवाली रानी होती है ॥ १८ ॥

कर्कोदये सप्तमगे पतंगे जीवेन दृष्टे परिपूर्णदेहा । विद्याधरी चात्र भवेत्प्रधाना राज्ञी गतारिर्बहुपुत्रपौत्रा ॥ १९ ॥ षड्वर्गशुद्धौ त्रिभिरेव राज्ञी चतुर्भिरंशैश्च तथैव पत्नी । पंचादिभिर्दिव्यविमानभाजा त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ॥ २० ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें कर्कराशिका उदय हो, सातवें घरमें सूर्य हो, बृहस्पतिकरके दृष्ट हो तो वह स्त्री रोगरहित, बहुत पुत्रपौत्रसहित, अप्सराओंमें प्रधान रानी होती है ॥ १९ ॥ जिस स्त्रीके षड्वर्गमें शुद्ध होकर तीन ग्रह केंद्रमें हों वह रानी होती हैं, चार ग्रह नवांशमें शुद्ध केन्द्रवर्ती पडें तो वह महारानी होती है, पांच ग्रहोंसे सुन्दर विमानपर चढनेवाली त्रैलोक्यनाथकी पत्नी होवी है ॥ २० ॥

लाभस्थितः शीतकरो भृगुश्च कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः ।
जीवेन दृष्टो भवतीह राज्ञी ख्याता धरायां सकलैः स्तुता च॥२१॥
अस्मिन्नध्यायमध्ये तु राज्ञीयोग उदीरितः ।
क्रियते श्यामलालेन लोकानां हितकाम्यया ॥ २२ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातको नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जिस स्त्रीके ग्यारहवें घरमें चंद्रमा हो, शुक्र सातवें घरमें बुध सहित हो, बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो वह स्त्री रानी होती है, पृथ्वीमें सम्पूर्ण मनुष्यों-करके स्तुत होती है ॥ २१ ॥ इस अध्यायके बीचमें श्यामलालकरके संसारके हितके लिये महारानीयोग कहे ॥ २२ ॥

इति श्रीराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ सूर्यचंद्रयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ वोशीवेशीउभयचरीकर्तरीयोगानाह ।

सूर्यादंते १२ द्वितीये मृगधररहितो पापखेटः शुभो वा
योगोऽयं भूपतुल्योऽप्युभयचरिवरो भाषितो गर्गमुख्यैः ।
अंते वोशिप्रसिद्धो धननिलयगतो वेशियोगः प्रशस्त-
स्तस्य प्रांतो द्वितीयो भवति न खचरः कर्तरीशो न शस्तः॥१॥

सूर्यसे बारहवें दूसरे चंद्रमाके विना और पापग्रह चाहे शुभग्रह हो तो उभयचरी योग होता है यह गर्गाचार्यने कहा है । सूर्यसे बारहवें कोई ग्रह हो तो वोशीयोग होता है, सूर्यसे दूसरे कोई ग्रह हो तो वेशियोग जानना और सूर्यसे बारहवें दूसरे कोई ग्रह न हो तो कर्तरीयोग होता है ॥ १ ॥

अथ वोशियोगफलम् ।

स्यान्मंददृष्टिर्बहुकर्मकर्ता पश्यन्नधश्चोन्नतपूर्वकायः ।
असत्यवादी यदि वोशियोगो भवेद्दयालुर्मनुजस्य यस्य ॥ २ ॥

जो वोशियोगमें उत्पन्न हो वह मन्ददृष्टि, बहुत कार्योंका करनेवाला, नीचेको देखनेवाला, ऊंचा शरीर,झूंठा बोलनेवाला,दयावान् होता है॥२॥

अथ वेशियोगफलम् ।

तिर्यग्दृष्टिः सत्त्वसत्यानुकंपी मर्त्योऽत्यर्थं दीर्घकायोऽलसश्च ।
सूतौ यस्य स्याद्यदा वेशियोगस्त्वल्पद्रव्यो वाग्विलासाधिशाली२

जिसके जन्मकालमें वेशियोग हो सो टेढी निगाह, पराक्रम और सत्यसहित, दयावान्, धनवान्, बडा शरीर, शोभायमान तथा वाणी विलासमें श्रेष्ठ होता है ॥ ३ ॥

अथ उभयचरीयोगफलम् ।

सर्वंसहः स्थिरतरोऽतितरां समृद्धः सत्त्वाधिको समशरीरविराजमानः । नात्युच्चकः सरसदृक् प्रबलामलश्रीयुक्तः किलोभयचरीप्रभवो नरः स्यात् ॥ ४ ॥

उभयचरीयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य निश्चय करके पृथ्वीके समान स्थिरचित्त, ऋद्धियों सहित, बलवान्, समशरीर, शोभायमान, ऊंचा नहीं, समान दृष्टि तथा लक्ष्मी सहित हो ॥ ४ ॥

सूर्यस्य वीर्यं खचरानुसाराद्राश्यंशयोगात्प्रविचार्य सर्वम्।न्यून समं वा प्रबलं नराणां फलं सुधीभिः परिकल्पनीयम् ॥ ५ ॥

सूर्यका बल ग्रहोंके समान राशि अंश नवांशके योगसे सम्पूर्ण विचारकर न्यून सम पूर्ण मनुष्योंका फल बुद्धिमानोंकरके कहने योग्य है ॥ ५ ॥

अथ सुनफानफादुरुधराकेमद्रुमयोगानाह ।

शीतांशोर्द्रविणे स्थितैश्च सुनफायोगोऽनफांत्यस्थितैः
स्वांत्यस्थैः खचरैर्भवेद्दुरुधरा पंकेरुहेशोज्झितैः ।
चेद्वित्तव्ययगा न चेद्दिविचराः केमद्रुमः स्यात्तदा
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिता योगाः शशांकोद्भवाः ॥६॥

सूर्यको छोडकर चंद्रमासे दूसरे घरमें कोई ग्रह स्थित हो तो सुनफा नाम योग होता है और चद्रमासे बारहवें कोई ग्रह होनेसे अनफायोग होता है और चंद्रमासे दूसरे बारहवें दोनों तरफ ग्रह स्थित होनेसे दुरुधरा नाम योग होता है और चंद्रमाके दोनों तरफ कोई ग्रह नहीं हो तो केमद्रुम योग होता है, ऐसा बहुत आचार्योंका मत है। कोई आचार्य कहते हैं चंद्रमासे चौथे सूर्यको छोडकर कोई ग्रह हो तो सुनफा योग होता है और चंद्रमासे

दशवें कोई ग्रह हो तो अनफा योग होता है और चौथे दशवें दोनोंमें ग्रह होनेसे दुरुधरा और चौथे दशवें दोनोंमें ग्रह न हों तो केमद्रुम योग होता है। कोई आचार्य ऐसा कहते हैं कि चंद्रमा नवांशकुंडलीमें जहां बैठा हो वहांसे सूर्यको छोडकर कोई ग्रह दूसरे हो तो सुनफा, बारहवें हो तो अनफा; नौवें हो तो दुरुधरा और दोनों तरफ ग्रह नहीं हो तो केमद्रुम योग होता है, यह प्रसिद्ध नहीं है; बहुतसे आचार्योंका मानना ठीक है ॥ ६ ॥

अथ सुनफायोगफलम् ।

भूमीपतेश्च सचिवः सुकृती कृती च नूनं भवेन्निजभुजार्जितवित्तयुक्तः । ख्यातः सदाखिलजनेषु विशालकीर्त्या बुद्ध्याधिकश्च मनुजः सुनफाभिधाने ॥ ७ ॥

सुनफायोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य राजाका मंत्री, उत्तम कर्म करनेवाला, निश्चयकरके अपनी भुजाओंसे पैदा किये हुए धनसहित, मनुष्योंमें प्रसिद्ध, बडे यशवाला तथा बुद्धिमान् होता है ॥ ७ ॥

अथ अनफायोगफलम् ।

प्रभुर्विनीतः शुभवाग्विलासः सच्छीलशाली गुणपूर्तियुक्तः ।
उदारकीर्तिः स्मरतुष्टचित्तो नित्यं नरः स्यादनफाभिधाने ॥८॥

जो मनुष्य अनफायोगमें पैदा हुआ वह मनुष्योंका स्वामी, नम्रतासहित, उत्तम वाणीका बोलनेवाला, शीलवान्, गुणसहित, उदार कीर्तिवान् तथा कामदेवसे संतुष्ट चित्त होय ॥ ८ ॥

अथ दुरुधरायोगफलम् ।

सद्वित्तसद्वारणवाहधात्रीसौख्याभियुक्तः सततं हतारिः ।
कांतासुनेत्रांचललालसः स्याद्योगे सदा दौरुधरे मनुष्यः ॥९॥

जो मनुष्य दुरुधरायोगमें उत्पन्न हो वह अच्छा धन, सवारी, पृथ्वीसहित, सुखयुक्त, हमेशा वैरियोंका नाश करनेवाला तथा अच्छे नेत्रवाली स्त्रीमें आसक्त हो ॥ ९ ॥

अथ केमद्रुमयोगफलम् ।

सद्वित्तसूनुर्वनितात्मजनावहीनः प्रेष्यो भवेत्तु मनुजो हि विदेशवासी । नित्यं विरुद्धधिषणो मलिनः कुवेशः केमद्रुमे च मनुजाधिपतेः सुतोऽपि ॥ १० ॥

केमद्रुममें उत्पन्न हुआ मनुष्य धन, पुत्र, स्त्री, मित्र, लोग इन करके हीन, दूत, हमेशा परदेशमें रहनेवाला, विरुद्ध वृत्ति, मलीन, कुवेशधारी होता है। केमद्रुमयोगमें उत्पन्न हुआ राजाका पुत्र हो तो भी ऐसा हो ॥ १० ॥

अथान्यप्रकारेण केमद्रुममाह ।

भाग्याधिनाथव्ययभावसंस्थेऽवलोकिते वित्तगते व्ययेशे ।
दुश्चिक्यसंस्थे यदि पापखेटाःकेमद्रुमो योग इति प्रदिष्टः॥११॥

नौवें घरका स्वामी बारहवें हो, बलसहित बारहवें घरका स्वामी दूसरे स्थानमें हो, तीसरे स्थानमें सब पाप ग्रह बैठे हों तो केमद्रुम नाम योग होता है ॥ ११ ॥

तस्य फलम् ।

परान्नकांक्षी मनुजो नितांतं कुधर्मकर्माभिरतोऽल्पवित्तः ।
परांगनासक्तिपरो गुणाढ्यः केमद्रुमे जाततनुर्भवेत्सः ॥ १२ ॥

केमद्रुमयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य पराये अन्नकी इच्छा करनेवाला, सदैव काल बुरे कर्मोंका करनेवाला, थोडा धन, पराई स्त्रीमें तत्पर तथा कर्जबन्द होता है ॥ २२ ॥

पुनः अन्यप्रकारेण केमद्रुमः ।

केन्द्रस्थितौ गीष्पतिमन्दचंद्रौ व्ययाष्टपुत्रोपगतौ यमारौ ।
केमद्रुमाख्यस्त्वपरोऽत्रजातःस्वजन्मभूमीरहितो नरःस्यात्॥१३॥

केंद्रमें बृहस्पति,निर्बली चन्द्रमा हों बारहवें, आठवें, पञ्चम शनि, मंगल प्राप्त हों तो केमद्रुम योग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अपनी जन्मभूमिको त्यागनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ केमद्रुमभंगमाह ।

सर्वे खेटाः केन्द्रकोणे च संस्था दुष्टो योगश्चापि केमद्रुमोऽयम् ।
दुष्टं सर्वं स्वं फलं संविहाय कुर्युः पुंसां सत्फलं वै विचित्रम् ॥ १४ ॥

संपूर्ण ग्रह केन्द्रत्रिकोणमें बैठे हों और केमद्रुमयोग हो तो उसका दुष्ट फल दूर करके अच्छा विचित्र फल मनुष्यको देते हैं ॥ १४ ॥

पुनः केमद्रुमभंगसंयोगः ।

प्रालेयांशौ सूतिकाले यदा वा सर्वैः खेटैर्वीक्ष्यमाणः करोति ।
दीर्घायुष्यं सार्वभौमं मनुष्यं सत्कोशाढ्यं हंति केमद्रुमं च ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमाको सब ग्रह देखते हों तो उस मनुष्यकी दीर्घायु करते हैं । खजाने करके सहित राजा होता है । केमद्रुमको नाश करते हैं ॥ १५ ॥

सूतौ तुलाधरगते क्षितिजे सजीवे कन्यागते दिनकरेऽत्र विधुः क्रियास्थः । नो वीक्षितोऽन्यखचरैर्जनयत्यवश्यं केमद्रुमं परिहरत्यवनीपतींद्रम् ॥ १६ ॥

जिसके जन्मकालमें तुलामें मंगल बृहस्पति हों. कन्यामें सूर्य मेषमें चंद्रमा हो और कोई ग्रह नहीं देखता हो तो जरूर ही केमद्रुमको दूर करके महाराजा करते हैं ॥ १६ ॥

अथ प्रकारांतरेण दुरुधरायोगमाह ।

रंध्रारौ रिःफलग्ने विगतशशिधरस्तस्य नेत्रे तवांशे
सौम्यो वा क्रूरखेटो दिनकररहितो यस्य जन्माधिकाले ।
योगोऽयं दुरुधराख्यो वदति मुनिवरो सर्वग्रन्थेषु धीरो
भूपो वा भूपतुल्यो भवति स पुरुषो दीनवंशेऽपि जातः ॥ १७ ॥

अष्टम, द्वादश, लग्न, छठा इन स्थानोंको छोडकर और किसी स्थानमें चंद्रमा हो, उसके बारहवें शुभ ग्रह चाहे पाप ग्रह दूसरे, सूर्यके विना बैठे हों तो दुरुधरा नाम योग मुनीश्वरोंने कहा है, इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य दीनवंशमें पैदा हुआ भी राजा वा राजाके तुल्य होता है ॥ १७ ॥

विशेषेण दुर्धरायोगमाह ।

सोमादंत्यद्वितीयगो गगनगो भानुं विना कोऽपि चे-
द्योगोऽयं खलु दुर्धराख्यकथितो जन्माधिकाले स चेत् ।
ते पूर्णेंदुसमाननाब्जस्वदशां नाथा नरा योषितां
नानावाहवसुंधराश्च वसुभिर्युक्ताः सदा जातकाः ॥ १८ ॥

चन्द्रमासे दूसरे, बारहवें, दशवें सूर्यके विना कोई ग्रह हो तो दुर्धरा नाम योग होता है । जिसके जन्मकालमें यह योग हो सो पूर्ण चन्द्रमाकी दशामें स्त्रियोंका नाथ, सवारी, धरती, धनकरके सहित होता है ॥ १८ ॥

अथोक्तयोगकारकग्रहफलम् ।

अनफा वै सुनफा च दौर्धरश्च प्रवदाम्यत्र पृथक् फलानि सम्यक् ।
क्षितिजे तस्करकं तथा प्रचंडं कुरुते क्रूरतरं खलं मनुष्यः ॥१९॥
निपुणं ज्ञानयुतं महाधनाढ्यं मनुजं वै कुरुते शशांकजन्मा ।
पूज्यं राजकुलेषु सद्गुणाढ्यं धर्मिष्ठं च सुरार्चितं करोति ॥२० ॥

अनफा, सुनफा, दुर्धरा इनके अलग अलग फलोंको भले प्रकार मैं निश्चय करके कहता हूं । मंगल हो तो कहे हुए योगमें पैदा हुआ मनुष्य चोर, प्रचंड, दुष्टस्वभाव, थोडे धनवाला तथा साहसी होता है ॥ १९ ॥ बुध हो तो चतुर, ज्ञानसहित, धनवान् होता है । बृहस्पति हो तो राजकुलमें पूज्य, अच्छे गुणोंसहित धर्मात्मा होता है ॥ २० ॥

ऐश्वर्यं च धनं जनप्रसिद्धं सौख्याढ्यं च नरं करोति शुक्रः ।
गुणवृद्धं बहुभृत्यकं च शूरं बह्वारंभकरं शनिः प्रपूज्यम् ॥ २१ ॥

पूर्वोक्त योग करनेवाला शुक्र हो तो ऐश्वर्यधनसहित मनुष्योंमें नामी सुखी होता है और शनैश्चर हो तो गुणवृद्ध, बहुत नौकर, शूर, बहुत काम करनेवाला होता है और जो कहे हुए योगकारक एक ग्रहसे अधिक हो तो सिर्फ योगकाही फल होता है, ग्रहोंका फल नहीं होता है और तिसका जन्म दिनमें हो और चंद्रमा सातवें स्थानसे लग्नपर्यंत किसी घरमें हो तो अशुभ फल चंद्रमा

देता है और जो रात्रिमें जन्म हो और चंद्रमा लग्नसे सातवें स्थानपर्यंत हो तो शुभ फल देता है और रात्रिका जन्म हो चंद्रमा सातवें घरसे लेकर लग्नपर्यंत हो तो शुभ फल देता है और दिनमें जन्म हो और चंद्रमा लग्नमें सातवें घरतक हो तो अशुभ फल देता है ॥ २१ ॥

अथ लग्नचंद्रोपचयस्थशुभग्रहफलम् ।

लग्नादतीव वसुमान् वसुमान् शशांकात्सौम्यग्रहैरुपचयोपगतैः समस्तैः । द्वाभ्यां समोऽथ वसुमांश्च तदूनितायामन्येष्वसत्स्वपि फलेष्विदमुत्कटेन ॥ २२ ॥

जिस किसीके जन्मसमयमें लग्नसे वा चंद्रमासे उपचय याने तीसरे, छठे, देशवें, ग्यारहवें जो सब शुभ ग्रह बैठे हों तौ यह मनुष्य धनवान् होता है, जो दो शुभग्रह उक्त घरोंमें बैठे हों तो मध्यम धनवाला होता है, एक शुभ ग्रह उन्हीं स्थानोंमें होय तौ थोडे धनवाला होता है, उपचय-स्थानोंमें कोई शुभ ग्रह नहीं हो तो दरिद्री होता है। जो जन्मकुण्डलीमें बहुतसे कुयोग भी हों और यह योग पूरा हो तो इसीका फल होता है। किसी कुयोगका फल नहीं होता है ॥ २२ ॥

अथ जातस्वभावज्ञानमाह ।

अधमसमवरिष्ठान्यर्ककेंद्रादिसंस्थे
शशिनि विनयवित्तज्ञानधीनैपुणानि ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यसे चंद्रमा केन्द्रमें बैठा हो उसके शील, धन, शास्त्र, ज्ञान, बुद्धि चातुर्यता यह अधम होती हैं और वही सूर्यसे चंद्रमा पणफर स्थानोंमें स्थित हो तो पूर्वोक्त फल मध्यम होता है और सूर्यसे चंद्रमा आपोक्लिमस्थानमें हो तो पूर्वोक्त फल उत्तम होता है ॥

अथ धनसौख्ययोगः ।

अहनि निशि च चंद्रे स्वेऽधिमित्रांशके वा
सुरगुरुसितदृष्टे वित्तवान्स्यात्सुखी च ॥ २३ ॥

जिस पुरुषके जन्मकालमें चंद्रमा दिनका हो और अपने अतिमित्रके नवांशमें बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य धनवान् सुखी होता है और चंद्रमा रात्रिका हो, अपने अतिमित्रके नवांशमें बैठा हो, शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य धनवान्, सुखी होता है ॥ २३ ॥

अथ अधियोगः ।

सौम्ये स्मरारिनिधनेष्वधियोग इंदोस्तस्मिंश्च भूपसचिवक्षितिपालजन्म । संपन्नसौख्यविभवा हतशत्रवश्च दीर्घायुषो विगतरोगभयाश्च जाताः ॥ २४ ॥

जिस स्थानमें चंद्रमा हो वहांसे छठे, सातवें, आठवें इन तीनों घरोंमें या दोहीमें वा एक ही स्थानमें शुभ ग्रह बैठे हों, तो अधियोग होता है। इसमें पैदा हुआ मनुष्य जो तीनों शुभग्रह बलवान् हों तो राजा होता है। मध्यमबली हों तो मन्त्री होता है और जो हीनबली हों तो सेनापति होता है। इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य ऐश्वर्य, सौख्य, सवारीसहित, शत्रुहीन, दीर्घायु, रोगविहीन प्रतापी राजा होता है ॥ २४ ॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु चंद्रयोगाः प्रकीर्तिताः ।
क्रियते श्यामलालेन नराणां सुखहेतवे ॥ २५ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे चंद्रयोगो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इस अध्यायके बीचमें श्यामलालकरके मनुष्योंके सुखके लिये निश्चयकरके चंद्रयोग वर्णन किया गया ॥ २५ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ मिश्रकाध्यायः ।

अथ निजभुजार्जितधनप्राप्तियोगः ।

अजे शुभ्ररश्मिर्घटे सूर्यजश्चेद्भृगुर्नक्रगश्चापगः पद्मिनीशः । न भुंक्ते धनं पैतृकानां कदाचित्स्वदोर्दंडवीर्येण स स्याद्वरेण्यः॥१॥

मेषमें चंद्रमा, कुम्भमें शनैश्चर, मकरमें शुक्र, धनमें सूर्य हो तो वह मनुष्य पिताके द्रव्यका भोग नहीं करता है, अपने भुजाबलसे धन पैदा करनेवाला श्रेष्ठ पुरुष होता है ॥ १ ॥

अथ दरिद्रयोगः ।

शुभग्रहाः केंद्रचतुर्थसंस्था धनस्थिताः पापनभश्चरेंद्राः । सदा दरिद्रो नितरं नरः स्याद्भीतिप्रदः स्वीयकुलोद्भवानाम् ॥ २ ॥ होराधिपे अंत्यगतेऽम्बरस्थे क्रूरे सराफे क्षणदाधिपे च । जातो हि योगः परदेशनिष्ठः सदा दरिद्री मनुजो भवेत्सः ॥ ३ ॥

शुभ ग्रह चारों केंद्रोंमें बैठे हों और धनस्थानमें पापग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य हमेशा दरिद्री होता है । अपने कुलमें उत्पन्न हुए मनुष्यों-को भय देनेवाला होता है ॥ २ ॥ जन्मलग्नका स्वामी बारहवें हो दशवें घरमें पापग्रह हो और चंद्रमा देखता हो तो वह मनुष्य हमेशा दरिद्री होता है ॥ ३ ॥

अथ ज्ञातिच्युतदरिद्रयोगः ।

रवेर्नवांशे यदि यामिनीशः सरोजिनीशः शशिनो नवांशे । एकर्क्षसंस्थौ यदि तौ तदानीं दरिद्रभाजः सततं नरः स्यात् ॥ ४ ॥ सूतौ त्रिकस्थानगताः खलाख्या ज्ञातिच्युतिं ते मनु-जस्य कुर्युः । चतुष्टयस्था यदि वापि दुःखं दारिद्रमात्मीयज-नच्युतिं च ॥ ५ ॥

सूर्यके नवांशमें चंद्रमा हो और चंद्रमाके नवांशमें सूर्य हो और सूर्य चंद्रमा दोनों एक राशिमें बैठे हों तो वह मनुष्य निरन्तर दरिद्री

होता है ॥ ४ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे,आठवें, बारहवें पापग्रह बैठे हों तो वह मनुष्य जातिसे पतित होता है और वही पापग्रह केंद्रमें बैठे हों तो वह मनुष्य दुःखी, दरिद्री तथा जातिसे पतित होता है ॥५॥

अथ स्त्रीमरणयोगः ।

उग्रग्रहैः सितचतुरस्रसंस्थितैर्मध्यस्थिते भृगुतनयेऽथ वोग्रयोः ।
सौम्यग्रहैरसहितेननिरीक्षिते वा जायावधोदहननिपातपाशजः॥६॥

पापग्रह शुक्रसे चौथे आठवें स्थित हों तो पुरुषकी स्त्री अग्निसे जलकर मरती है और पापग्रहोंके बीचमें शुक्र बैठा हो तो उसकी स्त्री ऊपरसे गिरकर मरती है और शुक्रको कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो और न शुक्रके संग हो तो उसकी स्त्री फांसीसे मरती है ॥ ६ ॥

अथ स्त्रीसहितकाणयोगः ।

लग्नाद्व्ययारिगतयोः शशितिग्मरश्म्योः पत्न्या सहैकनयनस्य वदंति जन्म । द्यूतस्थयोर्नवमपंचमसंस्थयोर्वा शुक्रार्कयोर्विकलदारमुशंति जातम् ॥ ७ ॥

जन्मलग्नसे बारहवें छठे चन्द्रमा सूर्य बैठे हों तो वह स्त्रीसहित काना होता है और सूर्य शुक्र ये दोनों लग्नसे सातवें, नौवें, पांचवें बैठे हों तो वह अंगहीन स्त्रीवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ जितेंद्रिययोगः ।

लग्नस्थितो वात्मजभावसंस्थो वाचस्पतिर्व्योमगतः शशांकः ।
जितेंद्रियः सत्यवचानुसक्तः सद्राजचिह्नैश्च विराजमानः ॥ ८ ॥

लग्नमें वा पञ्चमभावमें बृहस्पति स्थित हो और दशवें घरमें चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य जितेंद्रिय, सच बोलनेवाला, राजलक्षणसहित तथा शोभायमान होता है ॥ ८ ॥

अथ कुलश्रेष्ठयोगः ।

जीवो जूके कन्यकायां च शुक्रो गोस्थः कर्मेशस्त्वलौ पूर्णदृष्टः।

वंशश्रेष्ठोदारबुद्धिर्गुणज्ञो नित्यानंदो वित्तयुक्तोऽतिसुज्ञः ॥ ९ ॥
शुक्रो यदा तावुरिसंस्थितश्चेत्सौम्यस्तदा वृश्चिकराशिसंस्थः ।
कथं भवेतामिति चिंतनीयं मुनिप्रणीतं कथनं मया स्यात् ॥ १० ॥

बृहस्पति तुलामें हो, कन्याराशिमें शुक्र स्थित हो, वृषमें बुध दशमस्थानवर्ती होकर वृश्चिक राशिको पूर्ण दृष्टिसे देखता हो तो वह मनुष्य अपने वंशमें श्रेष्ठ, उदारबुद्धि, गुणज्ञ, नित्य आनंदको प्राप्त धनके सहित चतुर होता है ॥ ९ ॥ शुक्र वृषराशिम और बुध वृश्चिकराशिमें बैठा हो तो उसका क्या विचार करना है, मुनीश्वरोंकरके जो पहिले कहा है वैसा ही वह पुरुष होता है ॥ १० ॥

अथ वंध्यापतियोगः ।

कोणोदये भृगुतनयेऽस्तचक्रसंधौ वंध्यापतिर्यदिनसुतर्क्षमिष्टयुक्तम् ॥

जिसके लग्नमें शनैश्चर बैठा हो और कर्क वृश्चिक मीनके अत नवांशमें प्राप्त शुक्र सातवें स्थित हो और पञ्चम घरमें कोई शुभ ग्रह नहीं हो तो वह मनुष्य वंध्या स्त्रीका स्वामी होता है अर्थात् उसकी व्याही स्त्रीके पुत्र नहीं होता है ॥ ये योग मकर,वृष,कन्या लग्नवालेको होता है ॥

अथ स्त्रीपुत्रविहीनयोगः ।

पापग्रहैर्व्ययमदलग्नराशिसंस्थैः ।
क्षीणे शशिन्यसुतकलत्रजन्मधीस्थे ॥ ११ ॥

जिसके पापग्रह बारहवें, सातवें, लग्नमें स्थित हों क्षीणचन्द्रमा पंचम घरमें हो तो वह मनुष्य पुत्रहीन होता है ॥ ११ ॥

अथ तीर्थकृद्योगः।

यस्य सूतौ नैधनस्थः सौम्यः सौरिनिरीक्षितः ।
तस्य तीर्थान्यनेकानि भवंत्यत्र न संशयः ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें अष्टम स्थानमें शुभ ग्रह स्थित हों और शुभ ग्रह देखते हों तिस पुरुषको अनेक तीर्थ होते हैं इसमें संशय नहीं है॥ १२॥

अथ जलयोगः ।

केंद्रस्थिताः सूर्यशशांकमंदा व्ययस्थिताः पुण्यगृहस्थिता वा ।
जलाभिधं तज्जनयति योगमन्ये ग्रहाश्चेदबला मनुष्यः ॥ १३ ॥

केंद्रमें सूर्य, चंद्रमा,शनैश्चर बैठे हों अथवा नौवें बैठे हों पूर्वोक्त ग्रहोंसे बाकीके हीन ग्रह सम्पूर्ण निर्बल हों तो जलनाम योग होता है ॥ १३ ॥

तस्य फलम् ।

ऐश्वर्यविज्ञानधनैर्विहीनः परान्नकांक्षी चपलोऽतिदुःखी ।
लब्धिर्भवेन्नो च जलप्रकृत्या युक्तो भवेन्ना जलयोगजन्मा ॥१४॥

जो मनुष्य जलयोगमें पैदा हो वह ऐश्वर्य, चतुराई, धनकरके हीन, पराये अन्नकी इच्छा करनेवाला, चपल, अतिदुःखी हो, प्राप्ति नहीं हो तथा जलकी प्रकृति हो ॥ १४ ॥

अथ चौरयोगः ।

सबलौ रिपुगौ सौम्यभौमौ चौर्यपरो नरः ।
भवेत्स्वकर्मसामर्थ्याच्छिन्नस्त्र्यंघ्रिकरानरीन् ॥ १५ ॥
कर्केऽर्कजो मृगे भौमः सूतौ चौर्यप्रसंगतः ।
दंडाच्छाखादिखंडानि तस्य जन्तोर्भवन्ति हि ॥ १६ ॥

बलसहित छठे घरमें बुध मंगल प्राप्त हो तो चोर हो, अपने कर्ममें समर्थ होता है, हाथ पैर छिन्न हों शत्रु नष्ट हों ॥ १५ ॥ जिसके जन्मकालमें कर्कका शनैश्चर, मकरका मंगल हो उस मनुष्यके चोरोंके संगरके दंडसे शाखादिक खण्ड होते हैं ॥ १६ ॥

अन्यच्च ।

मूर्तौ क्रूरास्तृतीये च लाभे वापि विशेषतः । नीचग्रहेण संदृष्टो जायते चौरमानवः ॥१७॥ दुश्चिक्याधिपतिर्नीचो नीचग्रहसमायुतः । लग्नेशो यदि नीचस्थश्चौरो भवति मानवः ॥ १८ ॥

मूर्तिमें वा तीसरे क्रूर ग्रह हों वा विशेषकरके लाभमें हों नीचग्रह देखता हो तो मनुष्य चोर होता है॥१७॥ तीसरे घरका स्वामी नीचका हो पापग्रहसहित लग्नेशभी नीचमें हो तो मनुष्य चोर होता है ॥१८॥

तृतीये यदि नीचस्थो मंदश्चापि विशेषतः । नीचग्रहेण संदृष्टो जायते चौरमानवः ॥१९॥ तृतीयस्थो यदा नीचः कुजराहुश-नियुतः ॥ लग्नाधीशोऽपि नीचस्थो जायते चौरमानवः ॥२०॥

तीसरे घरमें पापग्रह हो, तिसमें विशेष करके शनैश्चर हो,नीचग्रहक-रके देखा गया हो तो वह मनुष्य चोर होता है ॥ १९ ॥ तीसरे घरमें जो नीच ग्रह हो, मंगल राहु शनैश्चरसहित लग्नेश भी नीचका हो तो वह मनुष्य चोर होता है ॥ २० ॥

व्यये क्रूरो धने क्रूरो दुश्चिक्ये वा विशेषतः । भावानां स्वामिनो नीचाश्चौरजातो भविष्यति ॥२१॥ सहजेशः स्थितो लाभे यदि नीचसमायुतः। लग्ननाथो व्यये भावे चौरो भवति मानवः॥२२॥

बारहवें घरमें दूसरे पापग्रह हों, तीसरे घरमें विशेषकरके पापग्रह हो इन भावोंका स्वामी नीचमें हो तो वह मनुष्य चोरसे उत्पन्न हुआ चोर होता है ॥२१॥ तीसरे घरका स्वामी लाभस्थानमें स्थित हो नीचग्रहोंके सहित लग्नका स्वामी बारहवें हो तो वह मनुष्य चोर होता है ॥ २२ ॥

अथ चौराधिपतियोगः ।

लग्नाधिपो हि सक्रूरो लग्ने नीचग्रहः स्थितः । सहजाधिपतिर्नी-चो जातश्चौराधिपो नरः ॥२३॥ लग्नलाभपतिर्नीचः क्रूरग्रहस-मन्वितः । लाभनाथस्तृतीयस्थो जातश्चौराधिपो नरः ॥२४॥

लग्नेश पापग्रहसहित हो, लग्नमें नीच ग्रह बैठा हो, तीसरे घरका स्वामी भी नीचका हो तो वह मनुष्य चोरोंका राजा होता है॥ २३ ॥ जन्मलग्नपति और लाभेश नीच होकर पापग्रहसहित हों, लाभनाथ तीसरा हो तो वह मनुष्य चोरोंका राजा होता है ॥ २४ ॥

अथ भिक्षाटनयोगः ।

नीचारिभागोपगतैः समस्तैर्नभश्वरैश्वेन्निजतुंगभेऽपि ।
सत्कर्महीनः सततं मनुष्यो भिक्षाटने नीचजनानुयातः ॥२५॥

सम्पूर्ण ग्रह शत्रुके नवांशमें षष्ठमें नीचके हों, चाहे जन्मकुंडलीमें अपने उच्चके हों तो भी वह मनुष्य अच्छे कर्मोंसे हीन, हमेशा भीखमांगता हुआ फिरता है, नीच मनुष्योंकरके सहित होता है ॥ २५ ॥

सर्वैर्ग्रहैर्नीचसपत्नभागैः कमान्यगैर्भिक्षुक एव जातः ।
होरेश्वरो रिःफगते तु पापक्रूरान्विते भौमयुते शशांके ॥२६॥

सम्पूर्ण ग्रह सप्तांशमें नीचके हों वा दशवें हों तो वह मनुष्य भिखारी होता है। लग्नका स्वामी बारहवें हो और दशम घरमें पापग्रहसहित भौमयुत चंद्रमा बैठा हो तो वह मनुष्य भिखारी होता है ॥ २६ ॥

गृहात्परिभ्रष्टविदारपुत्रो गुणेन हीनो यदि वा जडोऽसौ ।
केंद्रे शनौ लग्नगते शशांके जीवे व्यये भिक्षुक एव जातः ॥२७॥

केंद्रमें शनैश्चर स्थित हो, जन्मलग्नमें चंद्रमा हो और बारहवें बृहस्पति हो तो वह मनुष्य भिखारी, घरसे निकला हुआ, गुणहीन जड होता है॥२७॥

मेषे शशांके रविसूनुदृष्टे भिक्षाशनी

मेषका चंद्रमा हो, और शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य भीख मांगकर भोजन करनेवाला होता है ॥

अथ धनहीनयोगः ।

भूमिसुतेन दृष्टे । निश्रीर्विलग्नस्य निशाकरस्य

जो पूर्वोक्त चंद्रमाको मंगल देखता हो तो मनुष्य धनहीन होता है ॥

अथ कृपणयोगः ।

लुब्धो दिनेशात्मजदृष्टियोगात् ॥ २८ ॥

और वही चंद्रमा लग्नमें बैठा हो और शनि देखता हो तो वह मनुष्य कृपण होता है ॥ २८ ॥

अथ नीचवृत्तियोगः ।

चेत्प्राग्विलग्नेऽर्कसुतस्य दृक्के केंद्रस्य चंद्रेण निरीक्षिते च । भूपान्वये यद्यपि जातजन्मा स्यान्नीचकर्मा पुरुषो भवेत्सः ॥ २९ ॥

पूर्वलग्नमें शनैश्चर द्रेष्काणमें हो, केंद्र चंद्रमाकरके दृष्ट हो तो यदि राजाके वंशमें भी पैदा हो तो भी नीच कर्मोंका करनेवाला पुरुष हो ॥ २९ ॥

भाग्याधिपे सूर्यसुते धनस्थे सुतस्थिते वा अशुभग्रहदृष्टे । यदा स पापो रिपुभावसंस्थो स्याज्जीवनं तस्य च नीचवृत्त्या ॥ ३० ॥
कलानिधौ कर्मगतेऽर्कपुत्रे लग्नात् सुते धर्मगते धनस्थे । मृत्युस्थिते पापनभश्चरेंद्रैः स्याज्जीवनं तस्य च नीचवृत्त्या ॥ ३१ ॥

नवमस्थानका स्वामी और शनैश्वर दूसरे घरमें बैठे हों या पंचम घरमें स्थित हों, पापग्रहोंकरके दृष्ट हों अथवा पापग्रहसहित छठे भावमें स्थित हों तो उस मनुष्यका जीवन नीचवृत्तिसे होता है ॥ ३० ॥ चंद्रमा दशवें घरमें हो और लग्नसे पंचम, नवम, दूसरे शनैश्वर स्थित हो और आठवें घरमें पापग्रह बैठे हों तो उस मनुष्यका नीच वृत्तिकरके जीवन होता है ॥ ३१ ॥

अथ स्त्रीसहपुंश्चलयोगः ।

असितकुजयोर्वर्गेऽस्तस्थे सिते तदवेक्षिते ।
परयुवतिगो तौ चेत्सेंदू स्त्रिया सह पुंश्चलः ॥

जिसके जन्मकालमें शनैश्वर मंगलके षड्वर्गम स्थित होकर शुक्र सातवें बैठा हो, शनैश्चर मंगल दोनोंमसे कोई देखता हो तो वह मनुष्य परदारगामी होता है अथवा शनैश्वर मंगल एक राशिमें चंद्रमासहित स्थित हों और शनैश्वर या मंगलक नवांशादि वर्गमें शुक्र सातवें स्थानमें स्थित हो और शनैश्वर या मंगल कोई दोनोंमेंसे देखता हो तो वह मनुष्य परदारगामी होता है उसकी स्त्री परपुरुषगामिनी होती है ॥

अथ भार्यासुतहीनयोगः ।

भृगुजशशिनोरस्तेऽभार्यो नरो विसुतोऽपि वा ।

जिसके जन्मलग्नमें शुक्र अथवा चंद्रमासे सातवें शनैश्वर मंगल हों तो वह पुरुष स्त्रीहीन वा पुत्रहीन होता है ॥

अथ वृद्धास्त्रीवृद्धपुरुषयोगः ।

परिणततनू नृस्थौ दृष्टौ शुभैः प्रमदापतिः ॥ ३२ ॥

जिसके जन्मकालमें स्त्री पुरुष ग्रह एक राशिमें बैठे हों उनसे सातवें स्थानमें शुभग्रहोंसे दृष्ट शनैश्वर मंगल बैठे हों तो वह पुरुष वृद्ध अवस्थामें वृद्ध स्त्रीको प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥

अथ दुःखियोगः ।

शुक्ले वीर्याढ्यः सुधांशुः प्रपश्येल्लग्नाधीशं दुर्बलं स्यात्तपस्वी ।
निःस्वो मर्त्यो दुःखितः शोकतप्तः स्वाप्तैर्हीनो नैकलब्धान्नपानः ॥ ३३ ॥

शुक्लपक्षमें बली चंद्र लग्नपतिको देखता हो तो वह मनुष्य दुर्बल, तपस्वी, दुःखी, शोकसे संतप्त अपने जनोंसे हीन तथा धनरहित होता है ॥ ३३ ॥

ताराधीशे सौम्यवर्गेऽधिवीर्ये वोच्चर्क्षस्थान्ये खगा वा यदि स्युः ।
पश्येच्चंद्रं सूर्यजः प्राप्तवीर्यः कुर्यान्मर्त्यं तापसं दुःखभाजम् ॥ ३४ ॥

चंद्रमा बुधके नवांशमें अधिक बली होकर स्थित हो और बाकीके ग्रह उच्च राशिमें हों चंद्रमाको शनैश्वर बलसहित देखता हो तो वह मनुष्य तप करनेवाला तथा दुःखका भोगी होता है ॥ ३४ ॥

अथ वंशध्वंसियोगः ।

भाग्याधिनाथे व्ययभावसंस्थे पापान्वितौ जन्मपलग्ननाथौ ।
अस्तंगतौ जन्मनि वास्य वंशध्वंसी भवेन्ना गतपुत्रदारः ॥ ३५ ॥
वंशच्छेदकर सुधांशुभृगुजक्रूरैः खतुर्यास्तगैः ।

जिस पुरुषके जन्मकालमें नवम घरका स्वामी बारहवें स्थित हो

और जन्मराशिका स्वामी पापग्रहसहित हो और लग्नेश अस्त हो वह मनुष्य वंशका नाश करनेवाला पुत्रस्त्रीरहित होता है ॥ ३५ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा, शुक्र, सूर्य, मंगल, शनैश्वर दशवें, चौथे, सातवें स्थित हों तो वह मनुष्य वंशनाशक होता है ॥

अथ शिल्पियोगः ।

शिल्पी कंटकगार्किणेंदुजयुतत्र्यंशेऽथ संवीक्षिते ।

जिस राशिसंबंधी त्रिंशांशमें बुध स्थित हो वह राशि केंद्रमें स्थित हो और शनैश्वरकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य चित्रकर्मादिके कामसे आजीविका करनेवाला होता है ॥

अथ दासीजातज्ञानयोगः ।

अंत्ये दानवपूजितेऽर्कतनयस्यांशे च दासीसुतः ।

जिसके जन्मकालमें शनैश्चरके नवांशमें शुक्र लग्नसे बारहवें स्थानमें स्थित हो तो वह पुरुष दासीका पुत्र होता है ॥

अथ नीचकर्मकृद्योगः ।

नीचे द्यूनगयोश्च हेत्युडुपयोर्मंदेन संदृष्टयोः ॥ ३६ ॥

लग्नसे सातवें सूर्य चंद्रमा दोनों बैठे हों और शनैश्चर देखता हो तो वह मनुष्य नीचकर्म करनेवाला होता है ॥ ३६ ॥

अथ चांडालयोगः ।

केंद्रे यदैकत्र गताः सितज्ञसुधांशवो राहुयुते त्रिलग्ने । चांडालयोगे खलु यः प्रसूतो भवेन्मनुष्यो निजकर्महीनः ॥ ३७ ॥ जीवे सकेतौ यदि वा सराहौ चांडालता पापनिरीक्षिते चेत् । नीचांशगे नीचसमन्विते वा जीवो द्विजश्चेदपि तादृशः स्यात् ॥ ३८ ॥

केंद्रमें एकत्र होकर शुक्र बुध स्थित हों और चंद्रमा राहुसहित लग्नमें बैठा हो तो चांडाल नाम योग होता है । इसमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अपने कर्मसे हीन होता है॥ ३७॥ बृहस्पति, केतु अथवा राहुसहित हो और पापग्रह देखते

हों तो चांडाल होता है और बृहस्पति नीचराशि अथवा नीच नवांशमें पापग्रहसहित हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ ब्राह्मण भी हो सो भी चांडाल होता है ॥ ३८ ॥

अथ कुलपांसुयोगः ।

चतुष्टयस्थे सदसन्नभोगैर्होराधिपश्चंद्रमसा न दृष्टे । यद्वा शरांशोपगतैः शुभाख्यैर्योगः स्मृतोऽयं कुलपांसुलाख्यः ॥ ३९ ॥

जिसके जन्मकालमें केंद्रमें शुभ अशुभ ग्रह बैठे हों और लग्नेश दशमस्थानमें प्राप्त हो और चन्द्रमा नहीं देखता हो अथवा धनराशिके नवांशमें शुभग्रह प्राप्त हों तो कुलपांसु नाम योग होता है ॥ ३९ ॥

तस्य फलम् ।

विदेशवासी स्वगृहच्युतश्च सदा दरिद्री गतपुत्रदारः । नरो भवेद्दोषगणाभिभूतो यो वै प्रजातः कुलपांसुलाख्ये ॥ ४० ॥

कुलपांसुयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य विदेशवास करनेवाला अपने घरसे पतित, हमेशा दरिद्री, पुत्रस्त्रीरहित, दोषके समूहकरके सहित होता है ॥ ४० ॥

अथ पिशाचयोगः ।

ग्रस्ते लग्ने संस्थितेंदौ च पापा धीधर्मस्था मानवः स्यात् पिशाचः।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहुकरके ग्रसित चन्द्रमा लग्नमें स्थित हो और नववें पांचवें स्थानमें शनैश्चर वा मंगल स्थित हो तो वह मनुष्य पिशाची अथवा उसका इष्टदेव पिशाच होता है ॥

अथांधयोगः ।

ग्रस्ते भानौ लग्नसंस्थे तथैव चक्षुर्घातः सर्वथा कल्पनीयः ॥४१॥

वैसे ही राहुसहित सूर्य लग्नमें स्थित हो और नवमें पांचवें शनैश्चर अथवा मंगल स्थित हो तौ वह मनुष्य अन्धा होता है ॥ ४१ ॥

अथ म्लेच्छयोगः ।

लग्ने मंदे भास्करे द्यूनसंस्थे पुण्यस्थे वा संस्थितावेकराशौ । श्रेष्ठो मर्त्यो नीचयोषानुसंगान्म्लेच्छो नूनं जायते नान्यथात्र ॥ ४२ ॥ द्रेष्काणे वा नंदभागेऽर्कमंदौ त्रिंशांशे वा संस्थितावेकराशौ । श्रेष्ठो मर्त्यो नीचयोषानुसंगान्म्लेच्छो नूनं जायते नान्यथात्र ॥ ४३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें शनैश्चर और सातवें सूर्य स्थित हो अथवा नवमस्थानमें एक राशिमें स्थित हों तो श्रेष्ठ मनुष्य भी नीच स्त्रियोंके संगसे जरूर म्लेच्छ हो जाता है ॥ ४२ ॥ जिसके जन्मकालमें सूर्य शनैश्चर द्रेष्काण वा नवांश अथवा त्रिंशांशमें, पूर्वोक्त स्थानोंमें एकराशिमें स्थित हों तो मनुष्य श्रेष्ठकुलमें उत्पन्न हुआभी नीच स्त्रियोंके संगसे मुसलमान हो जाता है ॥ ४३ ॥

अथ कास्त्रीसंयोगयोगः ।

वंध्यासंगो मदे भानौ चंद्रे दासीसमाः स्त्रियः । कुजे रजस्वलासंगो वंध्यासंगश्च कीर्तितः॥ ४४ ॥ बुधे वेश्यार्थहीना वा वणिक्स्त्री च प्रकीर्तिता ॥ गुरौ ब्राह्मणभार्या च गर्भिणीसंगमो भृगौ ॥ ४५ ॥ हीना वा पुष्पिता वा स्यान्मंदराहुफणीश्वरैः । राहौ च गर्भिणीसंगः कृष्णया कुब्जया शनौ ॥ ४६ ॥

जिस मनुष्यके सप्तम सूर्य स्थित हों तो वंध्या स्त्रीका संयोग कहना। चन्द्रमासे दासीसमा स्त्रीका संयोग होता है । मंगलकरके रजस्वला स्त्रीका संग अथवा बांझका संग कहे ॥ ४४ ॥ बुधसे धनहीन वेश्याका संग जानना अथवा वैश्यवर्णकी स्त्रीका संयोग कहना चाहिये । बृहस्पति करके ब्राह्मणकी स्त्रीका संयोग कहना । शुक्रकरके ब्राह्मणकी स्त्री गर्भवतीका संगम कहना चाहिये ॥ ४५ ॥ शनैश्चर राहु केतुकरके हीनवर्णकी स्त्री वा पुष्पवती स्त्रीका संग कहना । केवल राहुकरके गर्भिणी स्त्रीका संग कहना । शनिकरके श्यामवर्ण वा कुबडी स्त्रीका संयोग कहे ॥ ४६ ॥

अथ कस्मिन् गृहे संयोगः ।

एवं सुखस्थितैरेतैरीदृक्संगममूलताम् । सूर्याद्यैः सुखगैर्वाच्यो वाहनग्रहनिर्णयः ॥ ४७ ॥ वनं गेहं च कुड्यं च विहारो देवतालयम् ॥ जलं हरिगजस्थानमिति स्थानं निरूप्यते ॥ ४८ ॥

इस प्रकार चौथे स्थानमें स्थित ग्रहोंकरके संगम कहे, सूर्यको आदि लेकरके चौथे स्थानसे कहना चाहिये । चौथे सूर्य हो तो वाहनघरमें संग कहना ॥ ४७ ॥ चंद्रमा करके वनमें, मंगलकरके घरमें, बुधकरके विहारके स्थानमें, बृहस्पतिसे देवालयमें, शुक्रकरके जलस्थानमें, शनिकरके घुडशालामें, राहुकरके गजशालामें संग कहना चाहिये ॥ ४८ ॥

अथ शूद्रेऽपि विप्रवद्योगः ।

ध्वजाहिमंदैः सहितेंद्रपूज्ये शुक्रेक्षिते वा शशिसूनुदृष्टे ।
शूद्रोऽपि चेद्विप्रसमानमेति विद्यां च सर्वामधिगम्य जातः॥४९॥

जिसके जन्मकालमें मकरराशिमें बृहस्पति स्थित हो और शुक्रकरके वा बुधकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य शूद्र भी ब्राह्मणके सदृश होता है, सम्पूर्ण विद्याओंका जाननेवाला होता है ॥ ४९ ॥

अथ विप्रघातियोगः ।

नीचे भृगौ धर्मगते सपापे द्विजप्रहर्ता यदि पापदृष्टे ॥

नीचराशिका शुक्र नवम स्थानमें पापग्रह सहित स्थित हो और पापग्रह देखते हों तो वह मनुष्य विप्रघाती होता है ॥

अथ बालघातियोगः ।

विकर्ततामेति फणींद्रयुक्ते माने तदा भौमयुते शिशुघ्नः ॥
नीचे गुरौ वासरनायके वा केंद्रस्थिते पापयुते शिशुघ्नः ॥५०॥

और जो सूर्य राहुसहित मंगलयुत दशवें स्थित हो तो वह मनुष्य बालकोंका मारनेवाला होता है और नीचका बृहस्पति सूर्यसहित पापग्रहों सहित केंद्रमें हो तो वह मनुष्य बालकोंका मारनेवाला होता है ॥५०॥

अथ गोमृगजातिघातियोगः ।

केंद्रे सपापे शुभदृष्टियुक्ते रंध्रे भृगौ गोमृगजातिहंता ॥ ५१ ॥

केन्द्रमें पापग्रह स्थित हो और शुभग्रह देखते हों, अष्टम शुक्र स्थित हो तो वह मनुष्य गोमृगजातिके जीवोंका मारनेवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ पक्षिहंतृयोगः ।

शशांकसौम्यौ दशमस्थितौ वा पापेक्षितौ पापसमागमौ वा ।
नीचांशगौ सौम्यदृशा विहीनौ जातस्तु नित्यं खलु पक्षिहंता॥५२॥

चंद्रमा, बुध दशमस्थानमें स्थित हों, पापग्रहोंकरके दृष्ट हों या पापग्रह सहित हों, नीचके नवांशमें स्थित हों और शुभग्रह कोई नहीं देखते हों तो वह मनुष्य सदैव काल पक्षियोंका मारनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

अथ दासयोगः ।

राश्यंशपोष्णकरशीतकरामरेज्यैर्नीचाधिपांशकगतैरारिभागगैर्वा । एभ्योऽल्पमध्यबहुभिः क्रमशः प्रसूता ज्ञेया स्युरभ्युपगमक्रयगर्भदासाः ॥ ५३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा जिस नवांशमें बैठा हो उस राशिका स्वामी और सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अपने नीचराशिके नवांशमें अथवा अपने शत्रुके नवांशमें स्थित हो तो वह मनुष्य दास होता है । परंतु यहां तीन भेद हैं, पूर्वोक्त चारों ग्रहोंमेंसे एक हो तो वह मनुष्य अपनी आजीविकाके निमित्त दास होता है और दो ग्रह हों तो वह मनुष्य मोल खरीदा हुआ दास होता है और जो चारों ग्रह पूर्वोक्त रीतिके अनुसार हों तो वह मनुष्य दासीका पुत्र दास होता है ॥ ५३ ॥

अथ भृतकयोगः ।

मंदारसूर्यैः शुभदृष्टिहीनैः कर्मस्थितैः स्याद्भृतको मनुष्यः॥ श्रेष्ठः खगैकेन च मध्यमश्च द्वाभ्यां त्रिभिश्चाधम एव नूनम् ॥ ५४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, शनैश्चर, मंगल लग्नसे दशवें स्थानमें स्थित हों और कोई शुभग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य दास होता है। परन्तु पूर्वोक्त तीनों ग्रहोंमेंसे एक हो तो वह मनुष्य दासोंमें श्रेष्ठ होता है। दो ग्रहोंके होनेसे मध्यम दास और तीन ग्रहोंके होनेसे दासोंमें अधम दास होता है ॥ ५४ ॥

अथ सहस्राधिपतियोगः।

सहस्रनिष्कभर्ता स्याल्लग्नेशस्य नवांशके।
गोपुरांशगते कर्मनाथेन सति वीक्षिते ॥ ५५ ॥

जिस पुरुषके जन्मकालमें लग्नेश जिस नवांशमें स्थित हो उस नवांशका स्वामी गोपुरांशमें स्थित हो और उसको दशमेश देखता हो तो वह मनुष्य एक हजार रुपयोंका मालिक होता है ॥ ५५ ॥

अथ सहस्रद्वयाधिपतियोगः।

कर्मेशसंयुक्तनवांशनाथसंयुक्तसप्तांशपती बलाढ्ये ॥
शुक्रेण देवेंद्रपुरोहितेन दृष्टे सहस्रद्वयनिष्कभर्ता ॥ ५६ ॥

जिसके जन्मकालमें दशम घरका स्वामी नवांशपति और सप्तांशपति तीनों एकत्रित होकर बलवान् हों, शुक्र बृहस्पति देखते हों तो वह मनुष्य दो हजार रुपयोंका मालिक होता है ॥ ५६ ॥

अथ त्रिसहस्राधिपतियोगः।

सौम्यषष्ठांशसंयुक्ते धनलाभसमन्विते।
तदीशेऽपि तथायुक्ते सहस्रत्रयनिष्कयुक् ॥ ५७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधके षष्ठांशमें दूसरे ग्यारहवें युक्त हो उन स्थानोंके स्वामी भी उन्हीं स्थानोंमें स्थित हों तो वह मनुष्य तीन हजार रुपयोंका मालिक होता है ॥ ५७ ॥

अथ अष्टसहस्राधिपतियोगः।

धनस्थेशदृक्काणेशसंयुक्तमुनिभागपः।
सर्वोत्तमबलोपेतस्त्वष्टसाहस्रनिष्कयुक् ॥ ५८ ॥

अथ गोमृगजातिघातियोगः ।

केंद्रे सपापे शुभदृष्टियुक्ते रंध्रे भृगौ गोमृगजातिहंता ॥ ५१ ॥

केन्द्रमें पापग्रह स्थित हो और शुभग्रह देखते हों, अष्टम शुक्र स्थित हो तो वह मनुष्य गोमृगजातिके जीवोंका मारनेवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ पक्षिहंतृयोगः ।

शशांकसौम्यौ दशमस्थितौ वा पापेक्षितौ पापसमागमौ वा ।
नीचांशगौ सौम्यदृशा विहीनौ जातस्तु नित्यं खलु पक्षिहंता॥५२॥

चंद्रमा, बुध दशमस्थानमें स्थित हों, पापग्रहोंकरके दृष्ट हों या पापग्रह सहित हों, नीचके नवांशमें स्थित हों और शुभग्रह कोई नहीं देखते हों तो वह मनुष्य सदैव काल पक्षियोंका मारनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

अथ दासयोगः ।

राश्यंशपोष्णकरशीतकरामरेज्यैर्नीचाधिपांशकगतैरारिभागगैर्वा ।
एभ्योऽल्पमध्यबहुभिः क्रमशः प्रसूता ज्ञेया स्युरभ्युपगमक्रयगर्भदासाः ॥ ५३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा जिस नवांशमें बैठा हो उस राशिका स्वामी और सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अपने नीचराशिके नवांशमें अथवा अपने शत्रुके नवांशमें स्थित हो तो वह मनुष्य दास होता है । परंतु यहां तीन भेद हैं, पूर्वोक्त चारों ग्रहोंमेंसे एक हो तो वह मनुष्य अपनी आजीविकाके निमित्त दास होता है और दो ग्रह हों तो वह मनुष्य मोल खरीदा हुआ दास होता है और जो चारों ग्रह पूर्वोक्त रीतिके अनुसार हों तो वह मनुष्य दासीका पुत्र दास होता है ॥ ५३ ॥

अथ भृतकयोगः ।

मंदारसूर्यैः शुभदृष्टिहीनैः कर्मस्थितैः स्याद्भृतको मनुष्यः॥ श्रेष्ठः खगेकेन च मध्यमश्च द्वाभ्यां त्रिभिश्चाधम एव नूनम् ॥ ५४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, शनैश्चर, मंगल लग्नसे दशवें स्थानमें स्थित हों और कोई शुभग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य दास होता है । परन्तु पूर्वोक्त तीनों ग्रहोंमेंसे एक हो तो वह मनुष्य दासोंमें श्रेष्ठ होता है। दो ग्रहोंके होनेसे मध्यम दास और तीन ग्रहोंके होनेसे दासोंमें अधम दास होता है ॥ ५४ ॥

अथ सहस्राधिपतियोगः ।

सहस्रनिष्कभर्ता स्याल्लग्नेशस्य नवांशके ।
गोपुरांशगते कर्मनाथेन सति वीक्षिते ॥ ९९ ॥

जिस पुरुषके जन्मकालमें लग्नेश जिस नवांशमें स्थित हो उस नवांशका स्वामी गोपुरांशमें स्थित हो और उसको दशमेश देखता हो तो वह मनुष्य एक हजार रुपयोंका मालिक होता है ॥ ५५ ॥

अथ सहस्रद्वयाधिपतियोगः ।

कर्मेशसंयुक्तनवांशनाथसंयुक्तसप्तांशपतौ बलाढ्ये ॥
शुक्रेण देवेंद्रपुरोहितेन दृष्टे सहस्रद्वयनिष्कभर्ता ॥ ९६ ॥

जिसके जन्मकालमें दशम घरका स्वामी नवांशपति और सप्तांशपति तीनों एकत्रित होकर बलवान् हों, शुक्र बृहस्पति देखते हों तो वह मनुष्य दो हजार रुपयोंका मालिक होता है ॥ ५६ ॥

अथ त्रिसहस्राधिपतियोगः ।

सौम्यषष्ठांशसंयुक्ते धनलाभसमन्विते ।
तदीशेऽपि तथायुक्ते सहस्रत्रयनिष्कयुक् ॥ ९७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधके षष्ठांशमें दूसरे ग्यारहवें युक्त हो उन स्थानोंके स्वामी भी उन्हीं स्थानोंमें स्थित हों तो वह मनुष्य तीन हजार रुपयोंका मालिक होता है ॥ ५७ ॥

अथ अष्टसहस्राधिपतियोगः ।

धनस्थे[illegible]संयुक्तमुनिभागगः ।
सर्वोत्तमबलोपेतस्त्वष्टसाहस्रनिष्कयुक् ॥ ९८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे घरका स्वामी, द्रेष्काणका स्वामी, सप्तांशपति तीनों एकत्रित होकर सम्पूर्ण बलसहित हों तो वह मनुष्य आठ हजार रुपयोंका स्वामी होता है ॥ ५८ ॥

अथ अयुताधिपतियोगः ।

लग्नेशस्थदृकाणेशसंयुक्तमुनिभागपः ।
वैशेषिकांशकगतस्त्वयुतं धनमाप्नुयात् ॥ ५९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नेश, द्रेष्काणेश और सप्तमांशपति ये एकत्रित होकर वैशषिकांशमें प्राप्त हों तो वह मनुष्य दश हजार रुपयोंका स्वामी होता है ॥ ५९ ॥

अथ लक्षाधिपतियोगः ।

कर्मेशस्थदृकाणेशनाथसंयुक्तसप्तपः ।
ऐरावतांशसंयुक्तो धनलक्षं समश्नुते ॥ ६० ॥

कर्मेश, दृकाणेश और सप्तांशपति ये तीनों ऐरावतांशमें बैठे हों तो वह पुरुष लक्षाधिपति होता है ॥ ६० ॥

अथ द्विलक्षाधिपतियोगः ।

लक्षद्वयं धनं याति चतुष्केंद्रे शुभान्विते ।
सिंहासनांशसंयुक्ते सति पारावतांशके ॥ ६१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चारों केंद्रोंमें शुभग्रह सिंहासनांश अथवा पारावतांशमें हों तो वह पुरुष द्विलक्षाधिपति होता है ॥ ६१ ॥

अथ त्रिलक्षाधिपतियोगः ।

लक्षत्रयाधिकारी स्याल्लाभलग्नधनाधिपे ।
वैशेषिकांशसंयुक्ते सुशीलो बुद्धिमान् भवेत् ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लाभ, लग्न, धन इन स्थानोंके स्वामी वैशेषिकांशमें प्राप्त हों तो वह मनुष्य सुशील, बुद्धिमान्, तीन लक्षरुपयों-का स्वामी होता है ॥ ६२ ॥

अथ तदूर्ध्वं धनपतियोगः ।

तदूर्ध्वं वित्तपः स्यात्तु धनलाभपती यदा । वृद्धिकेंद्रगतौ तौ चेद्बलिनौ भाग्यपस्तथा ॥ ६३ ॥ केंद्रत्रिकोणगे वीर्ये त्वथवा भवनाथयुक् । वैशेषिकांशगश्चेत्तु धनलक्षं समश्नुते ॥ ६४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे ग्यारहवें घरका स्वामी वृद्धिकेंद्रमें स्थित हो और नवम घरका स्वामी बली हो तो वह मनुष्य तीनलक्ष रुपयोंसे अधिक धनपति होता है ॥ ६३ ॥ वही भाग्यस्थानपति केंद्र वा त्रिकोणमें बैठा हो, ग्यारहवें भावके स्वामीकरके सहित वैशेषिकांशमें स्थित हो तो वह मनुष्य तीन लक्ष रुपयोंसे अधिक धनपति होता है ॥ ६४ ॥

अथ कोट्यधिपतियोगः ।

लग्नांशनाथभाग्येशाः परमोच्चांशसंयुताः ।
वैशेषिकांशे लाभेशे तदा कोटीश्वरो भवेत् ॥ ६५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नपति, नवांशनाथ और भाग्येश परमोच्चांशस्थित हो, ग्यारहवें घरका स्वामी वैशेषिकांशमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य कोट्यधिपति योगका स्वामी होता है ॥ ६५ ॥

अथ ऋणदातृयोगः ।

ऋणप्रदो विलग्नेशः संयुक्तनवभागपः । दृष्टो देवेंद्रगुरुणा केंद्रकोणस्थितो भवेत् ॥ ६६ ॥ वित्तलाभपसंयुक्तत्र्यंशकेशनवांशकः । वैशेषिकः केन्द्रकोणे ऋणदाता भवेन्नरः ॥ ६७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नका स्वामी और नवांशपति दोनों एकत्रित होकर केंद्र अथवा त्रिकोणमें स्थित हों और बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य ऋणका देनेवाला होता है ॥ ६६ ॥ दूसरे ग्यारहवें धरके स्वामीकरके सहित त्रिंशांश और नवांशपति दोनों केंद्रत्रिकोणमें वैशेषिकांशमें प्राप्त हों तो वह मनुष्य ऋण देनेवाला होता है ॥ ६७ ॥

अथ ऋणदातृयोगः ।

ऋणग्रस्तो धने पापे लग्नेशे व्ययसंयुते । कर्मेशलाभनाथेन युते दृष्टे विशेषतः ॥ ६८ ॥ धनेशे नीचराशिस्थे क्रूरषष्ठांश-संयुते ॥ लाभेशेऽपि तथा मुक्ते ऋणग्रस्तो भवेन्नरः ॥ ६९ ॥ दिनेशकरलुप्तस्तु धनेशो नीचराशिगः । पापान्विते धने [illegible]-ऋणग्रस्तो भवेन्नरः ॥ ७० ॥

जिस मनुष्यके धनस्थानमें पापग्रह स्थित हों और लग्नेश बारहवें स्थित हों, कर्मेश और लाभेशकरके युत अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य ऋणी होता है ॥ ६८ ॥ धनस्थानका स्वामी नीचराशिमें बैठा हो और पापग्रहोंके षष्ठांशमें स्थित हो और लाभस्थानपति उसी षष्ठांशमें हो तो वह मनुष्य ऋणग्रस्त अर्थात् कर्जबंद होता है ॥ ६९ ॥ सूर्यकरके अस्त धनस्थानका स्वामी नीचराशिमें प्राप्त पापग्रह सहित दूसरे अष्टम हो तो वह मनुष्य ऋणी होता है ॥ ७० ॥

अथ ज्योतिश्शास्त्रविद्योगः ।

केन्द्रे बुधे वागधिपे बालाढ्ये शुक्रे धने भ्रातृगते च सौम्ये । स्वोच्चे धने दानवपूजितो वा ज्योतिर्विदां श्रेष्ठतरो मनुष्यः ॥ ॥ ७१ ॥ गणितज्ञो भवेज्जातो वाग्भावे भूमिनन्दनः । ससोमे बुधसंदृष्टे केन्द्रे वा सोमनंदने ॥ ७२ ॥

केंद्रमें बुध बैठा हो, बृहस्पति बलसहित हो, शुक्र धनस्थानमें हो, तीसरे घरमें शुभग्रह स्थित हो अथवा धनस्थानमें उच्च राशिका शुक्र स्थित हो तो वह मनुष्य ज्योतिर्विदोंमें श्रेष्ठ होता है ॥७१॥ जो पंचम घरमें मंगल स्थित हो, और चंद्रमासहित बुध देखता हो अथवा बुध केंद्रमें स्थित हो तो वह मनुष्य गणितशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ७२ ॥

वाग्भावपे बुधे स्वोच्चे लग्ने देवेंद्रपूजिते । शनावष्टमसंयुक्ते गणितज्ञो भवेन्नरः ॥ ७३ ॥ केन्द्रे त्रिकोणगे जीवे शुक्रे स्वोच्च-गते सति । वाग्भावपेंदुपुत्रे वा गणितज्ञो भवेन्नरः ॥ ७४ ॥

पंचम घरका स्वामी और बुध ये उच्च राशिमें स्थित हों और लग्नमें बृहस्पति बैठा हो, अष्टम शनैश्वर स्थित हो तो वह मनुष्य गणितशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ७३ ॥ केंद्र अथवा त्रिकोणमें बृहस्पति स्थित हो और शुक्र उच्चराशिका पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हो अथवा पंचम घरका स्वामी और बुध ये दोनों पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हों तो वह मनुष्य गणितशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ७४ ॥

अथ न्यायशास्त्रविद्योगः ।

गुरुशुक्रौ धनेशौ चेद्रविभौमनिरीक्षितौ ।
मूलत्रिकोणे तुंगे वा तर्कशास्त्रविदांवरः ॥ ७५ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति और शुक्र और धनेश ये मूल त्रिकोण वा उच्चराशिमें स्थित केंद्रत्रिकोणवर्ती हों और रवि मंगल इनको देखते हों तो वह मनुष्य न्यायशास्त्रके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ होता है ॥ ७५ ॥

अथ शब्दशास्त्रविद्योगः ।

संपूर्णबलसंयुक्ते गुरौ तद्भवनेश्वरे ।
दिनेशभृगुसंदृष्टः शाब्दिकोऽयं भवन्नरः ॥ ७६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बलकरके सहित बृहस्पति और पंचम घरका स्वामी हो उसको सूर्य शुक्र देखते हों तो वह मनुष्य व्याकरणशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ७६ ॥

अथ वेदांतविद्योगः ।

वेदांतपरिशीलः स्यात्केंद्रकोणे गुरौ सति ।

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें केंद्र अथवा त्रिकोणमें बृहस्पति हो तो वह मनुष्य वेदांतवेत्ता होता है ॥

अथ काव्यशास्त्रविद्योगः ।

बुधेन भृगुणा युक्तो काव्यशास्त्रविशारदः ॥ ७७ ॥

और वही बृहस्पति बुधशुक्रसहित हो तो वह मनुष्य काव्यशास्त्रमें प्रवीण होता है ॥ ७७ ॥

पंचमे भवने शुक्रः सुतेशे केंद्रकोणगे ॥
ससोमे गुरुसंदृष्टे काव्यविद्यारतिर्भवेत् ॥ ७८ ॥

जिसके जन्मसमयमें पंचम घरमें शुक्र स्थित हो और पंचमेश केंद्र अथवा त्रिकोणमें स्थित हो, चंद्रमासहित उसको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य काव्यविद्यामें प्रीति करनेवाला होता है ॥ ७८ ॥

अथ षट्शास्त्रविद्योगः ।

षट्शास्त्रवल्लभः केंद्रे जीवे दानवपूजिते ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केंद्रमे बृहस्पति और शुक्र बैठे हों तो वह मनुष्य षट्शास्त्रका जाननेवाला होता है ॥

अथ वैद्यशास्त्रविद्योगः ।

पंचमे रविणा भौमो वैद्यविद्यारतिः सदा ॥ ७९ ॥

जिसके जन्मसमयमें पंचम घरमें सूर्य मंगल स्थित हों तो वह मनुष्य वैद्याविद्या अर्थात् हकीमी जाननेवाला होता है ॥ ७९ ॥

अथ मन्त्रशास्त्रविद्योगः ।

गुरुः केंद्रत्रिकोणस्थः सक्रूरे तंत्रविन्नरः ॥
सपापे केंद्रकोणस्थे भौमेऽप्येवं विनिर्दिशेत् ॥ ८० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति केंद्र अथवा त्रिकोणमें पापग्रह-सहित स्थित हो तो वह मनुष्य तंत्रशास्त्रका जाननेवाला होता है और जो मंगल पापग्रहसहित केंद्र अथवा त्रिकोणमें स्थित हो तो वह मनुष्य तंत्रशास्त्रका वेत्ता होता है ॥ ८० ॥

अथ फारसीअरबीयोगः ।

लग्नस्थितो निशानाथः सुतेशे पापसंयुते ।
पंचमे भवने पापः फारसीमारबीं पठेत् ॥ ८१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें चन्द्रमा स्थित हो और पापग्रहों-सहित पंचमेश हो और पंचम भवनमें पापग्रह हो तो वह मनुष्य फारसी अथवा अरबीका पाठी होता है ॥ ८१ ॥

अथ गोरुंडविद्यायोगः ।

पंचमे रविणा भौमे कविमंदतमा अपि ।
पापग्रहेण संदृष्टा विद्या ताम्रमुखी भवेत् ॥ ८२ ॥

जिस मनुष्यके पंचम घरमें सूर्य मंगल स्थित हों अथवा राहु, शनैश्चर, शुक्र इनमेंसे कोई स्थित हों और पापग्रह देखते भी हों तो वह मनुष्य अगरेजीविद्याका जाननेवाला होता है ॥ ८२ ॥

अथ जैनशास्त्रविद्योगः ।

रविशुक्रौ त्रिकोणस्थौ तमोमंदध्वजैर्युतौ ।
शुभग्रहेण संदृष्टो जैनविद्याविशारदः ॥ ८३ ॥

जिस मनुष्यके त्रिकोणस्थानमें सूर्य, शुक्र, स्थित हों, राहु, शनि वा केतुसहित हों, शुभग्रह देखते हों तो वह प्राणी जैनशास्त्रमें प्रवीण होता है ॥ ८३ ॥

अथ गारुडीविद्याविद्योगः ।

शनिभौमगते लग्ने गुरौ चंद्रनवांशके ।
अहिनाथेन संयुक्तो गारुडीज्ञो भवेन्नरः ॥ ८४ ॥

जिसके लग्नमें शनैश्चर मंगल स्थित हों और बृहस्पति चन्द्रमाके नवांशमें बैठा हो, राहु वा केतुकरके सहित हो तो वह मनुष्य गारुडी-विद्या अर्थात् सांप पकडनेमें चतुर होता है ॥ ८४ ॥

अथ धर्माध्यक्षयोगः ।

गुरौ वा भृगुपुत्रे वा स्वोच्चे मित्रांशके शुभे ।
धर्माधिपे बलयुते धर्माध्यक्षो भवेन्नरः ॥ ८५ ॥

बृहस्पति अथवा शुक्र अपने उच्चकी राशिमें स्थित हों और शुभ-

ग्रह अपने मित्रके नवांशमें स्थित हो और नवम घरका स्वामी बलसहित हो तो वह मनुष्य धर्माधिकारी होता है ॥ ८५ ॥

अथ दानाध्यक्षयोगः ।

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेऽपि वा । तस्मिन् केंद्रत्रिकोणस्थे दानाध्यक्षो भवेन्नरः ॥ ८६ ॥ जातः पुरोहितो वाथ ब्रह्मवंशसमुद्भवः । दानाध्यक्षस्तदा जातो वर्णभेदमिति क्रमात् ॥ ८७ ॥

बृहस्पति शुक्र ये केंद्रमें बैठे हों और नवमभावके स्वामीकरके दृष्ट हो तो (एको योगः) अथवा नवमभावका स्वामी लग्नमें स्थित हो और बृहस्पति वा शुक्र केंद्र वा त्रिकोणमें स्थित हों तो वह प्राणी दानाध्यक्ष होता है ॥ ८६ ॥ अब जो पुरोहितके वंशमें उत्पन्न हो वा ब्राह्मणोंके वंशमें उत्पन्न हो तो वह दानाध्यक्ष होता है,अन्य वंशमें उत्पन्न हुआ मनुष्य दान करनेवाला होता है । ये वर्णभेदसे जानना चाहिये ॥ ८७ ॥

अथ महादानकृद्योगः ।

भाग्ययोगे तु संप्राप्ते दानयोगे तथा भवेत् । राजयोगेऽथवा प्राप्ते महादानकरो भवेत् ॥ ८८ ॥ चतुर्थे दानभावेशे कर्मेशे केंद्रमाश्रिते । व्ययेशे गुरुसंदृष्टे महादानकरो भवेत् ॥ ८९ ॥ भाग्येशेनापि संदृष्टः स्वोच्चस्थो भूमिनंदनः ॥ लाभेशे केंद्रभावस्थे महादानतरो भवेत् ॥ ९० ॥

भाग्यवान् योगमें पैदा हो, दानयोग भी तैसे ही हो और उसी कुण्डलीमें राजयोग भी हो तो वह प्राणी महादानका करनेवाला होता है ॥ ८८ ॥ जो नवम घरका स्वामी चौथे स्थानमें स्थित हो और दशमभावका स्वामी केंद्रमें स्थित हो और बारहवें घरके स्वामीको बृहस्पति देखता हो तो वह मनुष्य महादानका करनेवाला होता है ॥ ८९ ॥ भाग्येशकरके दृष्ट उच्चराशिमें बुध स्थित हो और लाभेश केंद्रमें बैठा हो तो वह मनुष्य महादान करनेवाला होता है ॥ ९० ॥

अथ गुरुभक्तियोगः ।

गुरुस्थानेशसंयुक्ते नवांशाधिपतौ यदा । गुरुशुक्रेक्षिते वापि गुरुभक्तियुतो नरः ॥ ९१ ॥ गुरुस्थाने सौम्ययुते गुरुसंबंध-संयुते । तदीशे तनुभावस्थे गुरुभक्तियुतो भवेत् ॥ ९२ ॥

नवमभावके स्वामी नवांशनाथसहित हो और शुक्र, बृहस्पति देखते हों तो वह प्राणी गुरुका भक्त होता है ॥ ९१ ॥ नवम घरमें शुभग्रह स्थित हो, बृहस्पति संबंध करता हो और नवमभावका स्वामी लग्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य गुरुका भक्त होता है ॥ ९२ ॥

अथ गुरुदारगामियोगः ।

चन्द्रे सपापे यदि धर्मराशौ भृगोः सुते वा गुरुदारगामी ।
धर्माधिपे तादृशखेचरेण युते सपापे गुरुदारगामी ॥ ९३ ॥
धर्माधिपे स्वांशपतौ तथैव युते तदा तादृशदारगामी ।
वयोधिकस्त्रीगमनं वदंति चंद्रे सपापे यदि धर्मराशौ ॥ ९४ ॥

चन्द्रमा पापग्रहसहित जो नवमस्थानमें स्थित हो अथवा शुक्र पाप-ग्रहसहित नवमस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य गुरुदारगामी होता है । नवमस्थानका स्वामी पापग्रहसहित हो तो वह मनुष्य गुरुदारगामी होता हैं ॥ ९३ ॥ नवमस्थानका स्वामी और नवांशपति पापग्रह हो तो वह मनुष्य गुरुकी स्त्रीके सदृश स्त्रियोंसे गमन करनेवाला होता है और चन्द्रमा पापग्रहसहित नवमस्थानमें स्थित हो तो वह प्राणी अपनेसे ज्यादे उमरकी स्त्रियोंसे गमन करनेवाला होता है ॥ ९४ ॥

क्षीणे निशीशे त्वथवा तदंशे शुक्रे तथैवं गुरुदारगामी ।
धर्माधिपे नीचगते तदंशे शुक्रेण युक्ते गुरुदारगामी ॥ ९५ ॥
अस्मिन्नध्यायमध्ये तु मिश्रयोगो विचित्रयुक् ।
षष्ठाध्याय इदं प्रोक्तं श्यामलालेन धीमता ॥ ९६ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-संग्रहे मिश्रयोगवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

क्षीणचंद्रमा शुक्रसहित हो अथवा चंद्रमाके नवांशमें शुक्र हो तो वह मनुष्य गुरुदारगामी होता है । नवमस्थानका स्वामी नीचराशिमें स्थित हो और उसके नवांशमें शुक्र स्थित हो तो वह मनुष्य गुरुदारगामी होता है ॥ ९५ ॥ इस अध्यायके बीचमें मिले हुए योग अद्भुत सहित हैं ऐसा यह छठा अध्याय श्यामलाल बुद्धिमान्करके कहा गया है ॥९६॥

इति वंशबरेलिकस्थराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुदरीभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः सम्पूर्णः ॥ ६ ॥

अथ शरीरदोषाध्यायप्रारंभः ।

अथ काणयोगः ।

धनस्थिते क्रूरयुते सिते चेत्काणोऽथवा मंदविलोचनेन ।
मूको द्वितीये त्रिलवे तृतीये स्खलद्गिरःस्यान्मनुजस्तदानीम्॥१॥

जिस मनुष्यके दूसरे घरमें पापग्रहसहित शुक्र बैठा हो तो वह मनुष्य काना होता है अथवा उसके छोटे नेत्र होते हैं ॥

अथ मूकयोगः ।

वही शुक्र पापग्रहसहित द्वितीय नवांशगत दूसरे स्थानमें हो तो मनुष्य गूंगा होता है ॥

अथ स्खलद्गीयोंगः ।

वही शुक्र पापग्रहसहित तीसरे घरमें तीसरे नवांशमें स्थित हो तो स्खलद्गिर अर्थात् तोतला होता है ॥ १ ॥

द्रव्यव्यये तु कालस्य पुरुषस्य तु लोचने । ग्रहभावप्रकारेण अन्धकाणौ वदेद्बुधः॥ २ ॥ वामं वा दक्षिणं चैव क्रूरयुक्तं तु लोचनम् । तत्स्वामिनो दृष्टिपाते तद्विनष्टं बुधैः स्मृतम् ॥ ३ ॥

दूसरे बारहवें स्थान कालपुरुषके दोनों नेत्र हैं सो इन स्थानोंमें ग्रहोंकरके अंध अथवा काणयोग विद्वान् कहे ॥२॥ वाम दक्षिण नेत्र जो पाप-

ग्रहयुत हो और उसी भावके स्वामी करके दृष्ट हो तो उस नेत्रको पंडित जन नष्ट कहा करते हैं ॥ ३ ॥

धनभं दक्षिणं नेत्रं व्ययभं वामनेत्रकम् ॥ यत्र तत्र स्थिताः क्रूरास्तद्भावे पीडनं स्मृतम् ॥४॥ धनगता रविराहुशनैश्वरा धनपतिर्यदि वास्तमुपागतः॥ खलयुतो नहि पश्यति तत्पदं भवति चात्र नरो भुवि काणकः॥५॥ व्ययगृहं रविराहुसमायुतं व्ययपतिर्यदि वास्तमुपागतः ॥ अथ यदा शनिनाथयुतो स वा भवति चात्र नरो भुवि काणकः ॥ ६ ॥

धनस्थान कालपुरुषका दहिना नेत्र है और बारहवां वामनेत्र है। इन स्थनोंमें जो पापग्रह स्थित हों उसी भावको पीडित कहना चाहिये ॥ ४ ॥ धनस्थानमें सूर्य, राहु, शनैश्वर स्थित हों, धनभावका स्वामी अस्त होय, पापग्रह करके सहित हो और धनस्थानको देखता भी न हो तो वह मनुष्य पृथिवीपै काणा होता है ॥ ५ ॥ बारहवें घरमें सूर्य राहु स्थित हों और धनस्थानपति अस्तका हो अथवा शनैश्वर करके सहित हो तो वह मनुष्य धरतीपै काणा होता है ॥ ६ ॥

अथ अंधयोगः ।

सिंहे विलग्ने रविशीतभानू मंदारदृष्टौ कुरुते नरोऽधः ॥ शुभाशुभैर्बुद्बुदनेत्रयुग्मो वामं हिनस्त्यब्ज इनोऽत्यगोऽन्यत् ॥७॥ धनारिरंध्रव्ययसंस्थिताश्चेत्सूर्यारसूर्यात्मजशीतभासः ॥ अंधं प्रकुर्युः स्वबलानुसाराः खेटस्य दोषान्मनुजस्य नूनम् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें सिंह लग्न हो उसमें सूर्य चन्द्रमा स्थित हो और शनैश्वर, मंगल देखते हों तो वह प्राणी अन्धा होता है और शुभाशुभ दोनों ग्रह देखते हों तो वह मनुष्य छोटे नेत्र, कम देखनेवाला होता है और बारहवें स्थानमें सूर्य चन्द्रमाका योग हो तो वह मनुष्य वामनेत्र करके हीन होता है ॥ ७ ॥ दूसरे, छठे अष्टम बारहवें सूर्य मंगल

शनैश्चर, चन्द्रमा स्थित हों तो अपने बलके माफिक ग्रहोंके दोषसे मनुष्यको अन्धा करते हैं ॥ ८ ॥

दुश्चिक्यगो रविविधू यदि कंटकस्थौ केंद्रस्थितेऽवनिसुते खलवेश्मगे वा ॥ दृष्टे खलैर्निधनषड्व्ययगाः शुभाः स्युर्मेषूरणे च भवने तपने तदांधः ॥ ९ ॥ सुतांबुगौ पापखगौ विशेषाच्चंद्रेऽष्टरिःफारिगतेऽधता स्यात् ॥ शुभग्रहाणामवलोकहीने त्वंधोभवत्यैव शुभैर्न दोषः ॥ १० ॥

सूर्य चन्द्रमा तीसरे स्थानमें प्राप्त हों अथवा केन्द्रमें स्थित हों और पापी ग्रहकी राशिमें मंगल केंद्रमें स्थित हों और पापग्रह देखते भी हों और अष्टम, छठे, बारहवें शुभग्रह स्थित हों और दशवें स्थानमें सूर्य हो तो वह प्राणी अन्धा होता है ॥ ९ ॥ पापग्रह पञ्चम चतुर्थ प्राप्त हों विशेषकरके चंद्रमा अष्टम, बारहवें, छठे स्थित हो तो वह मनुष्य अंधा होता है और शुभग्रह हीनबलकरके देखते हों तो अन्ध होता है और जो शुभग्रह देखता हो तो दोष नहीं है ॥ १० ॥

अथ निशांधदोषः ।

त्रिकस्थितः सेन्दुसुतः प्रसूतौ भवेन्निशांधःससितो दिनेशः ॥ स लग्ननाथो जननांधकोवा वाच्यो मनुष्यः किलदैवविद्भिः ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र बुधसहित जो त्रिकस्थान ६ । ८ । १२ में स्थित हो तो वह मनुष्य निशांध अर्थात् उसको रतौंध आती है॥

अथ जन्मांधयोगः ।

और वही शुक्र, सूर्य और लग्ननाथसहित त्रिकस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य जन्मका अन्धा होता है ॥ ११ ॥

अथ पित्रादिकानामंधयोगाः ।

एवं निजो वा जनकात्मजस्त्रीसहोदरा मातुलकः पितृव्यः ॥ तत्स्थाननाथैः सहितो यदा स्यात्तेषां प्रवाच्यं हि तदांधकत्वम् १२

इसी तरह अपने पिता, पुत्र, स्त्री, भाई, मामा, चाचा, मातादि सबोंका अंधा कहना यानी शुक्र, सूर्य और इन पुरुषोंका स्थानपति त्रिकस्थान अर्थात् ६।८।१२ में स्थित हो तो उसी पुरुषको अंधा कहो ॥ १२ ॥

अथ नेत्ररोगयोगः ।

रिपुसदनपतौ चेद्वक्रतर्क्षेऽक्षिरोगं तनुसदनगतेऽस्मिन् मंददृष्टे कफात्मा । धरणिज इह जीवे भार्गवज्ञे सचंद्रे परितपनतशोकान्कामतः शास्त्रतोऽधः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे घरका स्वामी मंगलकी राशिमें अथवा मंगलके साथ स्थित हो तो उस मनुष्यको नेत्रोंका रोग होता है ॥ १३ ॥

अथ कफदोषः ।

वही छठे स्थानका स्वामी लग्नमें स्थित हो और शनैश्चर देखता हो तो कफदोष करता है ॥

अथ कामांधशास्त्रांधदोषः ।

मंगल, बृहस्पति, शुक्र, चंद्रमासहित लग्नगत हो तो वह मनुष्य परायेसे संताप शोकको प्राप्त, कामांध अथवा शास्त्रांध होता है ॥ १३ ॥

अथ कर्णरोगः ।

धनव्ययस्थो भृगुजोऽथ वारः करोति पुंसां श्रवणप्रपीडाम् ।
तत्र स्थितः शीतमयूखमालीदृग्दोषकारी मुनिभिस्तथोक्तः॥१४॥

जिसके दूसरे बारहवें शुक्र मंगल स्थित हों तो वह मनुष्य कर्णरोग करके पीडित होता है ॥

अथ दृष्टिदोषः ।

और पूर्वोक्त स्थानमें वही ग्रह चंद्रमासहित स्थित हो तो उस मनुष्यकी दृष्टिमें दोष अर्थात् कम दीख पडता है ॥ १४ ॥

अथ मंदाक्षिदोषः ।

चंद्रे व्यये वा यदि वा दिनेशे मंदे त्रिकोणे मदरंध्रभेऽर्के ।
मंदाक्षिरोगी स भवेत्तदानीं नीचारिनंदांशगतास्तथैव ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें चंद्रमा अथवा सूर्य बारहवें स्थित हो और शनैश्वर नवम, पंचम, सप्तम, अष्टम हो, सूर्यकी राशिमें हों तो उस मनुष्यके नेत्र छोटे रोगसहित थोडी दृष्टिवाले होते हैं, नीच शत्रुके नवांशमें स्थित हो तो भी पूर्वोक्त फल करे ॥ १५ ॥

अथ कर्णनाशदोषः ।

दुश्चिक्यधर्मात्मजलाभसंस्थाः पापग्रहा नो शुभदृष्टियुक्ताः ।
कर्णप्रणाशं जनयंति नूनं जामित्रसंस्था रसनाविघातम् ॥१६॥

जिसके जन्मसमयमें तीसरे, नवम, पंचम, ग्यारहवें पापग्रह हों, शुभ-दृष्टिरहित हों तो उस मनुष्यका कर्णनाश अर्थात् वह बधिर होता है ॥

अथ रसनाविघातयोगः ।

जो वही पूर्वोक्त ग्रह सप्तम स्थित हो तो उस मनुष्यकी जीभ कटी भई अथवा वह तोतला होता है ॥ १६ ॥

अथ गुंगस्वरदोषः ।

चंद्रात्मजे कर्क्यलिमीनसंस्थे भानोरधस्थे शशिनेक्षिते च ॥
ससप्तपे पापखगैः प्रदृष्टे गुंगस्वरः स्यान्मनुजस्तदानीम् ॥१७॥

बुध कर्क, वृश्चिक, मीन इन राशियोंमें स्थित होकर पंचमस्थानमें प्राप्त हो और सूर्य अधस्थानमें बैठा हो, चंद्रमा देखता हो और सप्तमस्थानपति करके सहित पापग्रह देखते हों तो वह मनुष्य गुंगस्वर होता है ॥ १७ ॥

अथ जिह्वाविघातयोगः ।

संवर्धमाने क्षणदाधिनाथे लग्नस्थिते भूमिसुतेन युक्ते ।
गुंगस्वरः स्याद्यदि वारिनाथे सोमात्मजे स्याद्रसनाभिघातः १८

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा मंगलसहित लग्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य गुंगस्वर(गूंगा) होता है,जो छठे घरका स्वामी और बुध लग्नमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी जीभ कटी होती है अर्थात् तोतला होता है ॥ १८ ॥

अथ दंतरोगः ।

स्यादंतुरो दंतरुजार्दितो वा सिंहीसुते चेद्धनभावसंस्थे ।
चंद्रेण युक्ते खलु शीतदोषः स्यात्सन्निपाताश्रययुक् नरस्य ॥१९॥

जिस मनुष्यके दूसरे घरमें राहु स्थित हो तो वह मनुष्य बडे दांतोंवाला दांतोंसे रोगी होता है ॥

अथ शीतदोषः ।

वही राहु चंद्रमा करके सहित दूसरे स्थानमें हो तो उस मनुष्यको शीतका दोष अथवा सन्निपात होता है ॥ १९ ॥

वक्रर्क्षगे रिपुपतौ उदये च वक्रर्क्षे लग्नपे समुभयोरपि मंददृष्ट्या। रंध्रे सितार्कसुतयोरशुभान्वितेऽरौ तस्याधिपे द्युनगते खलु दंतरोगः ॥ २० ॥

जिसके जन्मकालमें मंगलकी राशिमें छठे घरका स्वामी हो और लग्नमें मंगल स्थित हो और जन्मलग्नपति और शनैश्चरकी दृष्टि हो अथवा अष्टमस्थानमें शुक्र और शनैश्चर स्थित हों और अष्टमाधिपति सप्तम स्थित हो तो उस मनुष्यको दांतोंका रोग होता है ॥ २० ॥

अथ कर्णदोषः ।

सपत्नपे चंद्रसुते घटस्थे मार्तण्डपुत्रेण चतुर्थदृष्ट्या ।
विलोकिते द्रेष्यगृहे समानदर्शेक्षिते वा बधिरत्वयोगः ॥ २१ ॥

जिसके जन्मसमयमें सातवें स्थानके स्वामीकरके सहित बुध मंगलकी राशिमें हो, शनैश्चर एक चरण दृष्टिसे देखता हो, छठे घरके विषे स्थित हो वा देखता हो तो वह मनुष्य बधिर अर्थात् बहरा होता है॥२१॥

अथ सामान्यबाधिरयोगः ।

शशांकजे शत्रुगते रजन्यां भृगोस्तनूजे गगनेऽधिसंस्थे ।
उच्चस्वरेण शृणुते मनुष्यो दक्षेतरेण श्रवणेन नूनम् ॥ २२ ॥

जिसके जन्मसमयमें बुध छठे स्थानमें स्थित हो, रात्रिमें शुक्र दशम स्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य ऊँची आवाजकरके सुनता है, वाम कर्णकरके निश्चय सुनता है ॥ २२ ॥

अथ विकृतदंतयोगः ।

वृषाजगे क्रूरखगे विलग्ने क्रूरेक्षिते वैकृतदंतकः स्यात् ॥
चापोदये क्रूरयुते खलर्क्षे खल्वाटकोऽत्ये खलवीक्षते वा ॥२३॥

जिसके जन्मसमयमें वृष, मेष, धन ये लग्न हों इनमें पापग्रह स्थित हो तो उस प्राणीके दांत अच्छे नहीं होते हैं ॥

अथ खल्वाटयोगः ।

वही धन लग्न पापग्रहोंसे युत हो और पापग्रह देखते हों तो वह मनुष्य गंजा होता है अर्थात् उसके शिरपर बाल नहीं होते ॥ २३ ॥

अन्यश्च खल्वाटयोगः ।

सिंहचापालिकन्यासु लग्ने कर्कटगे विधौ ।
वीक्षितेऽवनिपुत्रेण भवेत्खल्वाटमस्तकः ॥ २४ ॥

सिंह, धन, वृश्चिक, कन्या, कर्क इनमेंसे कोई लग्न हो और वहां चन्द्रमा स्थित हो और मंगलकरके दृष्ट हो तो उस मनुष्यके शिरमें खल्वाट अर्थात् गंज होता है ॥ २४ ॥

अथ कुष्ठदोषः ।

पापमध्यनवभागगे विधौ मंदभौमयुतवीक्षितेऽथवा ।
मेषनक्रझषकर्कटांशगे कुष्ठवानपि भवेत्तदा नरः ॥ २५ ॥

मेष, मकर, मीन, कर्क इन नवांशोंमें चंद्रमा पापग्रहोंके बीचमें स्थित हो, और शनैश्चर मंगलकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है ॥ २५ ॥

धीधर्मस्था गोकुलीरारिनक्राः क्रूरैः खेटैः संयुता वीक्षिता वा ।
ते वै नूनं सूतिकाले प्रकुयुर्निःसंदिग्धं मानवं कुष्ठयुक्तम् ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नववें, पांचवें, वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर इनमेंसे कोई राशि हो और पापग्रहोंसे सहित अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य निस्संदेह कुष्ठी होता है ॥ २६ ॥

अथ लूतकुष्ठयोगः ।

चंद्रावनेयासितसंयुतेषु चंद्रूशनाः सेवितवारिभेषु ।
क्रूरार्दिते तेष्वपि लूतकुष्ठं भवेन्नराणां नियतं नराणाम् ॥२७॥

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा, मंगल, शनैश्चर मिलकर दूसरे बारहवें स्थानमें स्थित हो अथवा चंद्रमा और शुक्र दूसरे वा छठे स्थानमें स्थित हों, पापग्रहों करके अर्दित हों तो उस मनुष्यको लूतकुष्ठ होता है ॥ २७ ॥

निशाकरे कार्मुकमध्यभागे मृगांशकर्कीवृषभाजयुक्ते ।
मंदारयुक्ते तदीक्षणे वा कुष्ठी भवेत्सौम्यदृशा विहीनः ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनके पांचवें नवांशमें चंद्रमा स्थित हो और शनैश्चर मंगल इन दोनोंसहित हो अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है। अथवा किसी राशिमें मकर, कर्क, वृष, मेष इन नवांशोंमें कहीं चंद्रमा स्थित हो, शनैश्चर, मंगल इनमेंसे किसीसे दृष्ट वा युत हो और शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है और जो शुभग्रहों करके दृष्ट हो तो कुष्ठी नहीं किंतु कंडूरोगवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ दद्रुकंडूश्वेतकुष्ठयोगः ।

लग्नाधीशे नैधनस्थे प्रसूतौ क्रूरैः खेटैः संयुते वीक्षिते वा ।
पुंसां काये मंदता दद्रुकण्डूपीडा वा स्याच्छ्वेतकुष्ठः शरीरे ॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी अष्टम स्थित हो और पापग्रहोंकरके सहित अथवा दृष्ट हो तो उस मनुष्यके शरीरमें दाद कंडूरोगकी पीडा होती है अथवा श्वेत कुष्ठ होता है ॥ २९ ॥

अथ सामान्यबाधिरयोगः ।

शशांकजः शत्रगते रजन्यां भृगोस्तनूजे गगनेऽधिसंस्थे ।
उच्चस्वरेण शृणुते मनुष्यो दक्षेतरेण श्रवणेन नूनम् ॥ २२ ॥

जिसके जन्मसमयमें बुध छठे स्थानमें स्थित हो, रात्रिमें शुक्र दशम स्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य ऊँची आवाजकरके सुनता है, वाम कर्णकरके निश्चय सुनता है ॥ २२ ॥

अथ विकृतदंतयोगः ।

वृषाजगे क्रूरखगे विलग्ने क्रूरेक्षिते वैकृतदंतकः स्यात् ॥
चापोदये क्रूरयुते खलर्क्षे खल्वाटकोऽत्ये खलवीक्षते वा ॥२३॥

जिसके जन्मसमयमें वृष, मेष, धन ये लग्न हों इनमें पापग्रह स्थित हो तो उस प्राणीके दांत अच्छे नहीं होते हैं ॥

अथ खल्वाटयोगः ।

वही धन लग्न पापग्रहोंसे युत हो और पापग्रह देखते हों तो वह मनुष्य गंजा होता है अर्थात् उसके शिरपर बाल नहीं होते ॥ २३ ॥

अन्यश्च खल्वाटयोगः ।

सिंहचापालिकन्यासु लग्ने कर्कटगे विधौ ।
वीक्षितेऽवनिपुत्रेण भवेत्खल्वाटमस्तकः ॥ २४ ॥

सिंह, धन, वृश्चिक, कन्या, कर्क इनमेंसे कोई लग्न हो और वहां चन्द्रमा स्थित हो और मंगलकरके दृष्ट हो तो उस मनुष्यके शिरमें खल्वाट अर्थात् गंज होता है ॥ २४ ॥

अथ कुष्ठदोषः ।

पापमध्यनवभागगे विधौ मंदभौमयुतवीक्षितेऽथवा ।
मेषनक्रझषकर्कटांशगे कुष्ठवानपि भवेत्तदा नरः ॥ २५ ॥

मेष, मकर, मीन, कर्क इन नवांशोंमें चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें स्थित हो और शनैश्चर मंगलकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है ॥ २५ ॥

धीधर्मस्था गोकुलीरारिनक्राः क्रूरैः खेटैः संयुता वीक्षिता वा ।
ते वै नूनं सूतिकाले प्रकुर्युर्निःसंदिग्धं मानवं कुष्ठयुक्तम् ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नववें, पांचवें, वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर इनमेंसे कोई राशि हो और पापग्रहोंसे सहित अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य निस्संदेह कुष्ठी होता है ॥ २६ ॥

अथ लूतकुष्ठयोगः ।

चंद्रावनेयासितसंयुतेषु चेंदूशनाः सेवितवारिभेषु ।
क्रूरार्दिते तेष्वपि लूतकुष्ठं भवेन्नराणां नियतं नराणाम् ॥२७॥

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा, मंगल, शनैश्चर मिलकर दूसरे बारहवें स्थानमें स्थित हों अथवा चंद्रमा और शुक्र दूसरे वा छठे स्थानमें स्थित हों, पापग्रहों करके अर्दित हों तो उस मनुष्यको लूतकुष्ठ होता है ॥ २७ ॥

निशाकरे कार्मुकमध्यभागे मृगांशकर्कीवृषभाजयुक्ते ।
मंदाग्युक्ते तदवेक्षणे वा कुष्ठी भवेत्सौम्यदृशा विहीनः ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनके पांचवें नवांशमें चंद्रमा स्थित हो और शनैश्चर मंगल इन दोनोंसहित हो अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है। अथवा किसी राशिमें मकर,कर्क, वृष,मेष इन नवांशोंमें कहीं चंद्रमा स्थित हो, शनैश्चर, मंगल इनमेंसे किसीसे दृष्ट वा युत हो और शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो वह मनुष्य कुष्ठी होता है और जो शुभग्रहों करके दृष्ट हो तो कुष्ठी नहीं किंतु कंडूरोगवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ दद्रुकंडूश्वेतकुष्ठयोगः ।

लग्नाधीशे नैधनस्थे प्रसूतौ क्रूरैः खेटैः संयुते वीक्षिते वा ।
पुंसां काये मंदता दद्रुकण्डूपीडा वा स्याच्छ्वेतकुष्ठः शरीरे ॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें लग्नका स्वामी अष्टम स्थित हो और पापग्रहोंकरके सहित अथवा दृष्ट हो तो उस मनुष्यके शरीरमें दाद कंडूरोगकी पीडा होती है अथवा श्वेत कुष्ठ होता है ॥ २९ ॥

अथ कुब्जदोषः ।

आद्यांत्यशेऽब्जे तृतीये खलेन दृष्टे भूमीसंस्थमंदोपरिस्थे ।
लग्नाधीशेथाल्पचक्रालयस्थे धात्रीपुत्रे मानवः स्यात्सकुब्जः ३०॥

जिसके जन्मकालमें लग्न बारहवें स्थानका स्वामी तीसरे स्थानसे स्थित हो और पापग्रहोंकरके दृष्ट हो एको योगः १ । चतुर्थस्थानमें शनैश्वर स्थित हो, लग्नाधीश और मंगल अल्पचक्रालयमें स्थित हो तो वह मनुष्य कुब्ज अर्थात् कुबडा होता है ॥ ३० ॥

अथ उन्मादयोगः ।

उन्मादबुद्धिः स जडोऽथ वा स्याज्जातो हि चेच्चंचलबुद्धियुक्तः ।
लग्ने त्रिकोणे दिननाथचंद्रौ शौर्ये गुरौ केंद्रसमन्विते वा ॥३१॥
उन्मादबुद्धिः स भवेत्तदानीं शन्यारवारो यदि जन्मकाले ।
केंद्रस्थितौ सौम्यनिशाकरौ वा सौम्यांशहीने भ्रमसंयुतः स्यात् ३२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, नवम, पञ्चम सूर्य, चंद्रमा स्थित हों और शनैश्वर बृहस्पति केंद्रमें स्थित हों तो वह मनुष्य विक्षिप्त होता है अथवा चंचल बुद्धिवाला जड होता है ॥ ३१ ॥ जिसका शनैश्वर वा मंगल जन्मका हो और केंद्रमें बुध और चन्द्रमा स्थित हों और सौम्यांशकरके हीन हो तो वह मनुष्य उन्मादबुद्धिवाला भ्रमसंयुक्त होता है ॥ ३२ ॥

चन्द्रे सपापे फणिनाथयुक्ते रिःफे शुभे रंध्रगते तथापि । उन्माद-
भाक् तत्र सरोषता च जातस्तु नित्यं कलहप्रियः स्यात्॥३३॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा पापग्रहसहित तथा राहुयुक्त बारहवें बैठा हो और शुभग्रह अष्टम स्थित हो तो वह मनुष्य विक्षिप्त होता है, इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य क्रोधसहित सदैव कलहप्रिय होता है ॥ ३३ ॥

विलग्नधर्मात्मजगौ रवींदू केन्द्रे तृतीये यदि वा सुरेज्य । यमा-
रहोरादिवसे प्रजातो मर्त्यश्च सोन्माद इवाद्भुतः स्यात् ॥ ३४ ॥

जिसके जन्मकालमें लग्न, नवम, पञ्चम स्थानमें सूर्य, चंद्रमा स्थित

हों और केंद्रमें अथवा तीसरे बृहस्पति, शनैश्वर, मंगल स्थित हों और दिनके विषे जन्म हो तो वह मनुष्य विक्षिप्तकी तरह अद्भुत होता है ॥३४॥

अथ पातकियोगः।

स्यात्पातकी लग्नगते सुरेज्ये द्यूनस्थिते भानुसुते मनुष्यः।
सोन्मादको लग्नगते सुरेज्ये जामित्रसंस्थे तपने विशेषात्॥३५॥

जिसके जन्मकालमें लग्नमें बृहस्पति और सप्तम शनैश्वर स्थित हों तो वह मनुष्य पातकी होता है और जिसके लग्नमें बृहस्पति और सप्तम मंगल हो तो वह प्राणी विक्षिप्त होता है॥ ३५ ॥

सोन्मादको लग्नगतेऽर्कपुत्रे मंदे त्रिकोणेऽवनिजे नरः स्यात्।
क्षीणे विधौ सूर्यसुतेन युक्ते व्ययोपयाते धिषणेच यद्वा ॥ ३६ ॥

जिसके जन्मकालमें लग्नमें शनैश्वर स्थित हो और सातवें, नववें, पञ्चम इन स्थानोंमें मंगल स्थित हो तो वह मनुष्य विक्षिप्त होता है एको योगः। और क्षीण चन्द्रमा शनैश्वर सहित बारहवें स्थित हो अथवा बृहस्पति सहित बारहवें हो तो वह प्राणी विक्षिप्त होता है ॥ ३६ ॥

अथ अपस्मारयोगः।

नक्षत्रेशादित्यवक्रास्तनुस्था मृत्युस्था वा क्रूरदृष्टाः प्रसूतौ।
नानाव्याधिस्ते शरीरे प्रकुर्युः पीडां मर्त्यानामपस्मारजाताम्३७

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा और सूर्य और मंगल तनु तथा अष्टम लग्नमें स्थित हों और पापग्रहोंकरके दृष्ट हों तो वह मनुष्य अनेक व्याधियुक्त और अपस्मार रोगकी पीडासे युक्त हो ॥ ३७ ॥

अथ सत्यमदाख्ययोगः।

पापेक्षितौ केन्द्रगतौ विधुज्ञौ सुतेऽथ वा नैधनभे खलाख्यः।
जातो नरः सत्यमदाख्ययोगे भवेदपस्माररुजार्दितश्च ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केंद्रके बीचमें चंद्रमा, बुध स्थित हों और

पापग्रहों करके दृष्ट हों पञ्चम अथवा अष्टम पापग्रह स्थित हों तो इस सत्यमदयोगमें पैदा हुआ मनुष्य अपस्माररोगसे दुःखी होता है ॥ ३८ ॥

सारे शनौ रंध्ररिपुस्थिते च जातो मनुष्यः परिवेषकाले ।
लग्ने त्रिकोणे गुरुवर्जिते चेद्भवेदपस्माररुजार्दितश्च ॥ ३९ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगलकरके सहित शनैश्चर अष्टम छठे स्थित हो और लग्न, नवम, पञ्चम, बृहस्पति नहीं हो तो वह प्राणी अपस्मार-रोग करके आर्दित होता है ॥ ३९ ॥

अथ गदायोगः ।

रंध्रस्थिताः पापखगाश्च सर्वे निशाकरज्ञौ यदि केन्द्रयुक्तौ ।
योगे गदाख्ये स भवेत्तदानीं जातोऽप्यपस्मारयुतः सुतस्थः॥४०॥

अष्टमस्थानमें सम्पूर्ण पापग्रह और चंद्र बुधयुक्त केंद्रमें स्थित हों तो गदा-नाम योग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अपस्माररोगसे युक्त होता है और वही चंद्र बुध पंचमस्थित हों तो भी अपस्माररोगी होता है ॥ ४० ॥

अथ नेत्रकर्णदोषः ।

क्रूरैर्धनस्थैर्वदने नवांशे नेत्रे श्रुतौ वा व्रणकं विघातः ।

जिसके जन्मकालमें पापग्रह धनस्थानमें स्थित हों वा लग्नके नवांशमें स्थित हों तो उस मनुष्यके नेत्र वा कानोंमें व्रण अर्थात् फोडेका घाव होता है॥

अथ संग्रहणीरोगयोगः ।

विधुंतुदे वा सवितात्मजे वा तत्र स्थिते संग्रहणीरुजार्तः ॥४१॥

राहु वा शनैश्चर दोनों पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हों तो वह मनुष्य संग्रहणीरोगकरके दुःखी होता है ॥ ४१ ॥

अथ श्वासक्षयगुल्मप्लीहविद्रधियोगः ।

पापान्तरेऽब्जे तपने मृगस्थे यद्वार्कसूनौ मदनालयस्थे ।
श्वासक्षयप्लीहकगुल्मरोगैः प्रपीडितो विद्रधिना मनुष्यः ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा शनैश्वर मंगलके बीचमें स्थित हों और मकरमें सूर्य स्थित हो अथवा दो पापग्रहोंके मध्यमें चंद्रमा स्थित हो और शनैश्वर सप्तम स्थित हो तो वह मनुष्य श्वासक्षयी, प्लीहा, विद्रधि वा गुल्म इन रोगोंसे युक्त होता है। प्लीहा तापतिल्लीका नाम है, गुल्म गांठको कहते हैं, विद्रधि एक तरहके लंबे फोडेका नाम है ॥ ४२ ॥

अथ मंदाग्निगुदरोगयोगः।

षष्ठाष्टमे चंद्रसितौ नरः स्यान्मंदानलो वै गुदरोगयुक्तः।

जिसके जन्मकालमें छठे आठवें चंद्रमा और शुक्र बैठे हों तो वह मनुष्य मंदानल अर्थात् मंदाग्नि वा गुदरोगसहित होता है ॥

अथ क्षयदोषः।

सारे विधौ लग्नपतीक्षिते वा विलोमबुद्धिः क्षयरोगयुक् स्यात्४३

जो मंगलसहित चंद्रमा छठे आठवें स्थित हो और लग्नपतिसे दृष्ट हो तो वह प्राणी उलटी बुद्धिवाला क्षयीरोगसे पीडित होता है ॥ ४३ ॥

अथ गुह्यरोगयोगः।

कुलीरकीटांशगते हिमांशौ पापान्विते गुह्यरुजार्दितः स्यात्।

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा कर्क या वृश्चिकके नवांशमें स्थित पापग्रहकरके सहित हो तो वह मनुष्य गुह्यरोग अर्थात् गुप्तरोगी होता है ॥

अथ हीनांगयोगः।

वेशिस्थिते सूर्यसुते कुजेऽस्ते स्वस्थे विधौ हीनकलेवरः स्यात् ४४

जिसके जन्मकालमें सूर्यसे दूसरे स्थानमें शनैश्चर हो और सातवें मंगल, दशवें चंद्रमा हो तो वह मनुष्य हीनशरीरवाला होता है ॥ ४४ ॥

अथ शोषक्षयदोषः।

सूतौ मिथः क्षेत्रगतौ रवींदू परस्परांशोपगतौ च यद्वा।
शोषक्षयं तौ कुरुतो नराणामेकैकगेहोपगपते तथैव ॥ ४५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा ये परस्पर स्थित हों अर्थात्

सूर्यके स्थान वा नवांशमें चंद्रमा स्थित हो और चंद्रमाके स्थान वा नवां-शमें सूर्य स्थित हो तो वह मनुष्य कृशशरीर क्षयीरोगवाला होता है अथवा एक ही स्थानमें यानी सिंह वा कर्कमें सूर्य चंद्रमा स्थित हो तो भी पूर्वोक्त फल कहना चाहिये ॥ ४५ ॥

अथ क्षयीयोगः ।

लाभस्थितेऽर्के रविजे सुतस्थे क्रूरेऽष्टमस्थे क्षयपीडितः स्यात् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवें स्थानमें सूर्य स्थित हो और शनैश्चर पंचम स्थित हो और पापग्रह अष्टम स्थित हो तो वह मनुष्य क्षयरोगकरके पीडित होता है ॥

अथ कुष्ठभगंदरार्शोदोषयोगः ।

सारे विधौ कुष्ठभगंदरार्शोरोगान्वितो वै मनुजो नितांतम् ॥४६॥

मंगलकरके सहित चंद्रमा अष्टमस्थानमें स्थित हो अथवा अन्यत्र हो तो भी कुष्ठ, भगंदर, बवासीर मनुष्यको होते हैं ॥ ४६ ॥

अथ क्षयरोगयोगः ।

सूर्ये तनुस्थे चतुरस्रगे वा खस्थौ यमारौ क्षयपीडितः स्यात् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य लग्नमें स्थित हो अथवा चौथे आठवें स्थित हो और दशमस्थानमें शनैश्चर, मंगल स्थित हो तो वह मनुष्य क्षयरोगकरके पीडित होता है ॥

अथ भगंदरार्शोऽनिलशूलदोषः ।

जामित्रसंस्थैस्तपनारमंदैर्भगंदरार्शोऽनिलशूलरोगैः ॥ ४७ ॥

सप्तमस्थानमें सूर्य, मंगल, शनैश्चर, स्थित हों तो उस मनुष्यके भगं-दर, बवासीर, अनिलशूल, रोग होते हैं ॥ ४७ ॥

अथातीसारस्वेदबधिरयोगः ।

द्यूने यमारौ तनुगौ तमोज्ञौ पीडा नराणामतिसाररोगैः ।
स्वेदं च शैत्यं चरणे च पाणौ बाधिर्यता स्याच्छ्रवणद्वयेऽपि ॥४८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमस्थानमें शनैश्चर और मंगल स्थित हों और लग्नमें राहु, बुध स्थित हों तो वह मनुष्य अतीसार रोगकरके पीडित होता है और हाथ पैरोंमें पसीना और सर्दी होती है और दोनों कानोंसे बधिर होता है ॥ ४८ ॥

अथ प्रमेहदोषयोगः ।

भानौ सुतस्थे ससितेऽर्कपुत्रे यदोदयेऽर्कैवनिजेऽस्तसंस्थे ।
व्योमेऽथ वारे शनियुक्तदृष्टे नरः प्रमेहामयपीडितः स्यात्॥४९॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य पंचम स्थित हो और शुक्र शनैश्चरसहित हो तो एकोयोगः । अथवा लग्नमें सूर्य और मंगल सातवें अथवा दशम स्थानमें मंगल शनैश्चरयुक्त वा दृष्ट हो तो वह मनुष्य प्रमेहरोगसे पीडित होता है ४९॥

अथ मूत्रकृच्छ्ररोगयोगः ।

कुजेऽस्तसंस्थे खलु युक्तदृष्टे स्यान्मूत्रकृच्छ्री पुरुषोऽपि हीनः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल सातवें स्थित हो, पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो उस मनुष्यको मूत्रकृच्छ्र नामक रोग होता है ॥

अथ वातोदरयोगः ।

जामित्रसंस्थे तपने सपापे वातोदरासृक्परिपीडितः स्यात्॥५०॥

सप्तमस्थानमें सूर्य पापग्रहोंसहित स्थित हो तो उस मनुष्यकी देह वा उदर वातकरके पीडित होता है ॥ ५० ॥

अथ वातरोगयोगः ।

त्रिकोणयामित्रगते महीजे तनुस्थिते सूर्यसुते च यद्वा ।
क्षीणेंदुमंदौ व्ययभावयातौ भवेत्समीराधिकता नितांतम् ॥५१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवम पंचम स्थानमें मंगल स्थित हो अथवा लग्नमें शनैश्चर स्थित हो और क्षीण चंद्रमा, शनैश्चर बारहवें स्थित हों तो उस मनुष्यको वातरोग होता है ॥ ५१ ॥

अथ मन्दलोचनयोगः ।

धीधर्मगेऽर्के ह्यशुभैः प्रदृष्टे भवेन्नरो मंदविलोचनेन ।

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें नवम पंचम सूर्य स्थित हो और पाप ग्रहोंकरके दृष्ट हो तो वह मनुष्य मंद नेत्रवाला होता है ॥

अथ हीनांगदोषयोगः ।

हीनांगको भूमिसुते च तद्वत् ।

नवम, पंचम, मंगल स्थित हो और पापग्रहोंसे दृष्ट हो तो वह मनुष्य हीनांग होता है ॥

अथ अनेकव्याधियोगः ।

सूर्यात्मजे चेद्विविधामयार्तः ॥ ५२ ॥

पापग्रहोंसे दृष्ट शनैश्चर नवम, पंचम स्थित हो तो वह मनुष्य अनेक रोगोंकरके पीडित होता है ॥ ५२ ॥

अथ बंधनयोगः ।

व्ययत्रिकोणार्थगतैरसौम्यैश्चेन्मानवो बंधनभाग् भवेत्सः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें, नौवें, पांचवें तथा दूसरे स्थानमें पापग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य बांधा जाता है, परंतु यह बंधन राशिबोधक प्राणीके बंधन सदृश होता है ॥

अथ रज्जुबंधनयोगः ।

लग्नेषु चापाजवृषस्थितेषु स्याद्बंधनं रज्जुसमुद्भवं तत् ॥ ५३ ॥

जो मेष, वृष, धन, इन लग्नोंके विषे जो पूर्वोक्त ग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य रस्सीके बंधनमें होता है ॥ ५३ ॥

अथ निगडबन्धनयोगः ।

नृयुग्मकन्यातुलकुम्भभेषु लग्नस्थिते वा निगडोद्भवं च ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ इन लग्नोंमें पापग्रह स्थित हो तो वह मनुष्य बेडी आदिके बंधनमें होता है ॥

अथ दुर्गे बन्धनयोगः ।

कर्के चरौ मीनग्रहे च दुर्गे ।

जो कर्क, सिंह, मीन इन लग्नोंमें पापग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य किला वा गढा आदिमें घिरा रहता है ॥

अथ भूमिबंधनयोगः ।

रोधोऽथ कोटे किल भूगृहे स्यात् ॥ ५४ ॥

जो वृश्चिक लग्नमें पापग्रह स्थित हो तो भूमि अथवा गडहे इत्यादिमें उन मनुष्यका बंधन कहना और जो जन्मकालमें द्रेष्काण सर्पसंज्ञक निगडसंज्ञक वा पाशभूतसंज्ञक हो यानी 'प्रथमपंचनवपानां' इसी तरह जिस राशिसंबंधी द्रेष्काण हो वह राशि बली होकर किसी पापग्रहसे दृष्ट न हो तो उसी राशिके समान बन्धन होता है ॥ ५४ ॥

अथ शोथरोगः ।

सिते गीष्पतौ षष्ठगे पापदृष्टे सशोथो ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र बृहस्पति छठे स्थानमें स्थित हों और पापग्रहकरके दृष्ट हों तो उस मनुष्यके सूजन होता है ॥

अथ गुप्तरोगयोगः ।

मुखेंऽत्ये शनौ गुप्तदोषी ।

और पूर्वोक्त ग्रह छठे स्थानमें स्थित हों और शनैश्चर बारहवें स्थानमें बैठा हो तो वह मनुष्य गुप्तरोगी होता है ॥

अथ गंडमालारोगयोगः ।

षडेतेऽथवा भूमिपुत्रार्कियोगेशुभाऽदृष्टितो गंडमालाव्रणाद्यम् ॥ ५५ ॥

जो छठे बारहवें शनैश्चर मंगलका योग और शुभग्रह नहीं देखते हों तो उस मनुष्यके गंडमाला रोग होता है ॥ ५५ ॥

अथ पांडुकुष्ठयोगः ।

नीरे चरर्क्षे सितचंद्रयोगे खलैः समं स्यात्किल पांडुकुष्ठम् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चरराशियोंमें शुक्र चंद्रमा चतुर्थस्थानमें स्थित हो पापग्रह देखते हों तो उस मनुष्यको पांडुकुष्ठरोग होता है ॥

अथ खर्जूरकुष्ठयोगः ।

यद्वा विधौ वारिगृहे सपापे खर्जूरदोषं शनिवीक्षिते च ॥ ५६ ॥

अथवा पापग्रहसहित चंद्रमा चौथे घरमें स्थित हो और शनैश्वर देखता हो तो उस मनुष्यके खर्जूरकुष्ठ होता है ॥ ५६ ॥

अथ पातकियोगः ।

भौमाक्रांते लग्ननाथे प्रसूतौ षष्ठे चंद्रे पातकी मानवः स्यात् ।
यद्वा चैकांशस्थितौ क्रूरहत्यश्चंद्रादित्यौ चेत्तदा पातकी सः ५७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल करके आक्रांत जन्मलग्नका स्वामी हो और छठे घरमें चंद्रमा हो तो वह मनुष्य पातकी होता है अथवा एक ही नवांशमें चंद्रमा और लग्ननाथ बैठे हों तो वह मनुष्य दुष्ट हत्यारा होता है अथवा चंद्रमा सूर्य दोनों एक नवांशमें स्थित हों तो वह मनुष्य पातकी होता है ॥ ५७ ॥

अथांगशूलयोगः ।

खलार्दिते रवौ लग्ने षडष्टांगारमंदयोः ।
विकर्त्तनर्क्षगे चन्द्रः सशूलं ह्यंगजा रुजः ॥ ५८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहसहित सूर्य लग्नमें स्थित हो और छठे मंगल शनैश्वर स्थित हों सूर्यके घरमें चंद्रमा स्थित हो तो उस मनुष्यके अंगमें दर्दका रोग रहता है ॥ ५८ ॥

अथोदरहृच्छूलदोषः ।

क्षितिजसकलदृष्ट्याभ्यर्दिते देवपूज्यं यदि दिनजननेऽस्मिन् भूमिपुत्रे विनष्टे । अशुभशुभसमेते शत्रुनाथेऽलिगेऽर्के प्रभवति किल शूलं चोदरे हृत्प्रदेशे ॥ ५९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगलसे सम्पूर्ण दृष्टिकरके दुष्ट बृहस्पति

आर्दित हो, जन्म दिनमें हो, मंगल नष्ट बली हो, छठे गृहका स्वामी शुभ अशुभ ग्रहोंसहित होय, वृश्चिकमें सूर्य स्थित हो तो उस मनुष्यके उदर अथवा हृदयमें शूल उत्पन्न होता है ॥ ५९ ॥

अथोष्णशीतप्लीहरोगयोगः ।

षष्ठेशेऽब्जे पापयुक्ते विसौम्यैर्लग्नेशेऽस्ते वा यदा सूर्यपुत्रे ।
लग्ने तुर्ये कामगे वोष्णशीतप्लीहार्तः स्यात्कृष्णपक्षे निशायाम् ६०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे घरका स्वामी पापग्रहसहित हो और शुभग्रहरहित हो, जन्मलग्नका स्वामी सप्तम हो अथवा शनैश्चर लग्न चतुर्थ सप्तम स्थित हो तो कृष्णपक्षकी रात्रिमें वह मनुष्य गर्मी, सर्दी, तापतिल्ली-रोगकरके दुःखको प्राप्त होता है ॥ ६० ॥

अथ कफरोगयोगः ।

सक्रूरेऽब्जे कुंशगे भूस्थिते च पापाक्रांते स्यात्कफाफेपसो रुक् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके सहित चंद्रमा मंगलके नवांशमें स्थित हो, चतुर्थस्थानमें हो और पापग्रहोंकरके आक्रांत हो तो वह मनुष्य कफके रोगसे व्याप्त होता है ॥

अथ पित्तरोगः ।

शुक्रैरीशे भौममंदे च पित्तं सर्वत्रैवं तुर्यसम्पूर्णदृष्ट्या ॥६१॥

जो छठे स्थानका स्वामी शुक्र मंगल और शनैश्चरसहित हो और सम्पूर्ण ग्रह देखते हों तो वह मनुष्य पित्तरोगी होता है ॥ ६१ ॥

अथ कृष्णपित्तव्रणदोषः ।

पापान्विते रिपुपतौ दिवसाधिनाथे स्यादष्टमे रिपुगतेषु शुभ-ग्रहेषु । मंदावनेयधिषणस्तनुगः सपापैः स्यात्कृष्णपित्तविकृ-तव्रणकं तथांघ्रिः ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके सहित छठे घरका स्वामी और सूर्य अष्टम स्थानमें स्थित हों और शुभग्रह छठे घरमें प्राप्त हों शनैश्चर

मंगल, बृहस्पति पापग्रहसहित लग्नमें स्थित हों तो वह मनुष्य कृष्णपित्त विकृत शरीर होता है वैसे ही उसके पैरोंमें व्रण (फोडे) होते हैं ॥६२॥

अथ खंडयोगः ।

भार्गवे शनियुतेऽम्बरस्थिते रंध्रगे च शुभदृष्टिवर्जिते ।
षष्ठगे व्ययगतेऽथवा शनौ नीचभे च खलु खंडता भवेत् ॥६३॥

जिसके जन्मसमयमें शुक्र शनैश्चरसहित दशम, अष्टम स्थानमें प्राप्त हो, शुभग्रहोंकी दृष्टि न हो अथवा छठे या बारहवें स्थानमें शनैश्चर नीचराशिमें स्थित हो तो उस मनुष्यको निश्चयकरके खंडता होती है ॥६३॥

पुंस्त्रीखेटौ स्त्रीनवांशोपयातौ सूर्यस्याग्रे संस्थितावेकराशौ ।
ऊर्ध्वं तेजश्चेन्निजं प्रक्षिपेत्तन्मर्त्यो नूनं जायते छिन्नमेढ्रः ॥६४॥

पुरुषग्रह स्त्रीग्रह दोनों स्त्री नवांशमें सूर्यके आगे स्थित हों अथवा एक राशिमें स्थित हों तो वह मनुष्य अपना तेज ऊपरको फेंकता है और निश्चयकरके खंड अर्थात् नपुंसक होता है ॥ ६४ ॥

अथ कामातुरयोगः ।

द्वंद्वपरार्द्धे भृगुजे निजांशे पूर्वार्द्धके सिंहगते कुगेहे ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनके पिछले भागमें शुक्र अपने नवांशमें हो अथवा सिंहके पूर्वार्द्धमें मंगलके नवांशमें स्थित हो तो वह मनुष्य कामातुर अर्थात् विषयी होता है ॥

अथ मृताल्पसूतियोगः ।

कामातुरो मीनगते त्वरीशे भौमार्दिते चैव मृताल्पसूतिः॥६५॥

छठे घरका स्वामी मीनराशिमें प्राप्त तथा मंगलकरके अर्दित हो तो वह मनुष्य मृताल्पसूति अल्पसंततिवाला होता है ॥ ६५ ॥

अथ अर्शोदोषः।

क्रूरे खेटे मृत्युपे कामसंस्थे सौम्यादृष्टे सम्यगर्शोविकारः ।
यद्वा मंदेऽस्ते ह्यलौ पुण्यसंस्थे धात्रीपुत्रे वासरे वा तदार्शः॥६६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह और अष्टमभवनस्वामी सप्तम स्थानमें स्थित हो और शुभग्रहोंकरके दृष्ट न हो तो भले प्रकार अर्श अर्थात् बवासीर रोग होता है अथवा शनैश्चर सप्तम स्थित हो, वृश्चिक नवमस्थानमें प्राप्त हो तो मंगलके वारमें अर्शका विकार होता है ॥ ६६ ॥

मंदेऽत्यस्थे लग्ननाथारयोगे द्यूने यद्वा स्यात्तयोर्दृष्टितोऽर्शः ।
भौमेऽलौ काबेज्यदृष्ट्या विहीने मूर्तौ मंदेऽस्ते कुजेशोऽविकारः ६७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर बारहवें स्थित हो और लग्ननाथ और मंगलका योग हो, अथवा सप्तमस्थानके विषे मंगल और लग्ननाथ देखते हों तो उस मनुष्यको बवासीर रोग होता है । मंगल वृश्चिकराशिमें स्थित और बृहस्पतिकी दृष्टिविहीन हो, अथवा लग्नमें शनैश्चर और सातवें मंगल स्थित हो तौ भी अर्श अर्थात् बवासीररोग होता है ॥ ६७ ॥

अथ व्रणरोगयोगः ।

लग्नेऽलिगे क्षितिसुते गुरुशुक्रदृष्ट्या हीने भवेच्च पिटकाव्रणयुक् मनुष्यः । भूमौ तदंशकगते रविजे सकेतौ यद्वा द्वयोर्युजि तथा मदने व्ययेऽरौ ॥ ६८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकलग्नके विषे मंगल स्थित हो और बृहस्पति शुक्र न देखते हों तो उस मनुष्यके पिटका फोडा होता है । चतुर्थ स्थानमें वृश्चिकके नवांशमें शनैश्चर केतुसहित स्थित हो अथवा पूर्वोक्त दोनों ग्रह एकत्रित होकर छठे, सातवें, बारहवें हों तो भी पिटका फोडा होता है॥६८॥

अथ दद्रुदोषः ।

रूक्षाः प्रोक्ता मेषगोसिंहनक्रकन्याकोदंडाह्वपामामयश्च ।
एवं स्निग्धा द्वंद्वकर्कालिजूककुंभांत्याख्ये यावनैः संप्रदिष्टाः ।
देहाधीशे स्निग्धभे द्यूनसंस्थे भूमीभागस्थार्किणा संयुते च॥६९॥

रूक्ष राशि मेष, वृष, सिंह, मकर, कन्या, धन, मीन इसी तरह स्निग्ध मिथुन, कर्क, वृश्चिक, तुला, कुंभका पिछला भाग ये यवनाचार्यकरके भले

प्रकार दिखाये गये हैं।लग्नका स्वामी स्निग्धराशियोंमें सप्तम स्थितहो और चतुर्थस्थानमें शनैश्चर स्थित होतो वह मनुष्य दादरोगकरके दुःखी होता है।६९।

अर्थांडवृद्धियोगः ।

आर्तो मर्त्त्यो दद्रुणाब्जारशुक्रैश्छिद्रांशस्थैःकीटगैश्चांडवृद्धिः ७०॥

जो चंद्रमा, मंगल, शुक्र अष्टमस्थानमें वृश्चिकमें प्राप्त हों तो उस मनुष्यके अंडवृद्धि अर्थात् पोते बडे होते हैं ॥ ७० ॥

अथ वामनदोषः ।

लग्ने प्रांत्ये वा दिनेशे निशेशे दृष्टे भास्वत्सूनुना तुर्यदृष्ट्या ।
सौम्यादृष्टे वामनत्वं नराणां लग्नाधीशे मेषराशौ गतेऽत्र ॥७१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न अथवा बारहवें सूर्य चंद्रमा बैठे हों और शनैश्चर चतुर्थदृष्टिसे देखता हो और शुभग्रह कोई नहीं देखता हो और जन्मलग्नका स्वामी मेषराशिमें स्थित हो तो वह मनुष्य वामन अर्थात् बौना होता है ॥ ७१ ॥

अथ देहकार्श्ययोगः ।

मेषे शशांके शनिना समेते लग्नेऽन्तमेऽर्के मिथुनालिलग्ने ।
विमुक्तकेंद्रे धरणीतनूजे भवेन्नराणां कृशता शरीरे ॥ ७२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषका चंद्रमा शनैश्चरसहित स्थित हो लग्नमें या बारहवें सूर्य मिथुन या वृश्चिक लग्नमें स्थित हो, केंद्रके विना अन्य स्थानोंमें मंगल स्थित हो तो उस मनुष्यके शरीरमें दुर्बलता होती है॥ ७२ ॥

अथ देहशोषणयोगः ।

दिनेशचंद्रौ रविराशियुक्तौ चंद्रर्क्षगौ वा यदि शोषणं तत् ।
रंध्रारिवित्तांत्यगता ग्रहेंद्रा दिनेशचंद्रारयमाः क्रमेण ॥७३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा दोनों सिंहराशिमें प्राप्त हों अथवा दोनों चंद्रमाकी कर्कराशिमें स्थित हों तो उस मनुष्यकी देह सूखती है

और अष्टम, छठे, दूसरे, बारहवें क्रमकरके सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शनैश्चर प्राप्त हो तो भी उस मनुष्यकी देह सुखी होती है ॥ ७३ ॥

अथ श्वासक्षयादिरोगः।

पापमध्ये गते चंद्रे सप्तमे मंदसंयुते।
श्वासक्षयप्लीहगुल्मविद्रधिं भजते नरः ॥ ७४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंके बीचमें चंद्रमा स्थित हो सातवें शनैश्चर स्थित हो तो वह मनुष्य श्वास, क्षयी, तापतिल्ली, गुल्मकी गांठ विद्रधि नाम एक लम्बा चौडा फोडा इन रोगोंकरके दुःखी होता है७४

अथ जडवद्योगः।

केन्द्रस्थिता मंदनिशाकरार्का जडो भवेदन्यवसूपभोक्ता।
भाग्येश्वरे रिःफगते तदीशे वित्तस्थिते भ्रातृगतैश्च पापैः ॥७५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केंद्रके बीचमें शनैश्वर, चंद्रमा और सूर्य स्थित हों तो वह मनुष्य अन्य वस्तुओंका भोग करनेवाला जड होता है और नवम घरका स्वामी बारहवें स्थित हो और बारहवें घरका स्वामी दूसरे स्थानमें स्थित हो और तीसरे घरमें पापग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य मूर्ख होता है ॥ ७५ ॥

अथ कुलघ्नयोगः।

नीचे विलग्नाधिपतौ तदंशे षष्ठाष्टमस्थैर्यदि पापखेटैः। मंदो विलग्ने कुलनाशकः स्यादल्पायु राहौ शुभदृष्टिहीने ॥ ७६ ॥
माने स्थिता वा यदि वित्तराशौ पापस्तथा देवगुरौ च हीने।
भाग्येश्वरे चांत्यगते सपापे जन्मोदयेशो रविगौ कुलघ्नः॥७७॥

जिसके जन्मकालमें जन्मलग्नका स्वामी नीचमें स्थित हो वा उसके नवांशमें नीचका हो, छठे, आठवें स्थानमें पापग्रह स्थित हों, शनैश्चर लग्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य अपने कुलका नाश करनेवाला होता है और जो राहु शुभग्रहोंकी दृष्टिसे रहित हो तो वह मनुष्य थोडी आयुष्यका होता

है ॥७६॥दशवें अथवा दूसरे स्थानमें पापग्रह स्थित हो,तैसेही बृहस्पति हीन होय, नवमस्थानका स्वामी बारहवें स्थानमें पापग्रह सहित हो, जन्मलग्नका स्वामी और सूर्य बारहवें स्थानमें हों तो वह मनुष्य कुलघाती होता है ७७॥

शुभाशुभैः केन्द्रगतैः शशांको लग्नेश्वरेणापि निरीक्षितश्चेत् ।
सौरांशके वा यदि संततश्चेज्जातः कुलध्वंसकरो विदारः ॥७८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभ अशुभ ग्रह केंद्रमें स्थित हों, चंद्रमा लग्नपतिकरके दृष्ट हो अथवा शनैश्चरके नवांशमें स्थित हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य कुलका नाश करता है ॥ ७८ ॥

अथ गुल्मरोगयोगः ।

कुलीरकुंभालिनवांशयुक्ते चंद्रे समंदे यदि गुल्मरोगी ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क, कुंभ तथा वृश्चिकके नवांशमें चंद्रमा शनैश्चरसहित स्थित हो तो उस मनुष्यके गुल्मरोग होता है ।

अथ कंठरोगयोगः ।

चंद्रे सुखे तद्भवनांशयुक्ते पापान्विते स्याद्द्विजः कंठरोगी ७९॥

और वही चंद्रमा चतुर्थस्थानमें पूर्वोक्त नवांशमें पापग्रहसहित स्थित हो तो वह मनुष्य कंठरोगी होता है ॥ ७९ ॥

अथ हृच्छूलरोगयोगः ।

हृच्छूलभाक् जातनरस्तु नित्यं सराहुचंद्रो यदि सप्तमस्थः ॥
केंद्रे शनौ जन्मनि येन दृष्टे जीवे शशांके यदि वा दिनेशे ॥८०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहु चंद्रमासहित सप्तमराशियुक्त हो और केंद्रमें शनैश्चर हो, बृहस्पति चंद्रमा अथवा सूर्यकरके दृष्ट हो तो उस मनुष्यके हृदयमें दर्द होता है ॥ ८० ॥

अथ वाहनाद्भीतियोगः ।

केंद्रे शशांके क्षितिसूनुयुक्ते रंध्रस्थितो वा यदि कश्चिदस्ति ।
सवाहनाद्भीतिमुशंति तज्ज्ञाः सुखस्थिते क्षीणनिशाकरे तु ॥८१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केंद्रमें मंगलसहित चंद्रमा हो अथवा अष्टमस्थानमें स्थित हो जो कहीं हो तो उस मनुष्यको वाहनसे भय होता है। ऐसा ज्योतिषशास्त्रज्ञाता कहते हैं अथवा क्षीणचंद्रमा चतुर्थस्थानमें स्थित हो तो पूर्वोक्त फल कहना चाहिये ॥ ८१ ॥

अथ देहोष्णयोगः।

रवौ सुखे पापदृशा समेते देहोष्णमाहुः सुखमाहुरार्याः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थस्थानमें पापग्रहोंकी दृष्टिसहित सूर्य स्थित हो तो उस मनुष्यकी देह गरम तथा सुखी रहती है ॥

अथ जले मृतियोगः।

रवेः शशांके नवमस्थिते तु जले मृतिस्तस्य पितुश्च वाच्या ॥८२॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा नवम स्थित हों तो उस मनुष्यके पिताकी मृत्यु जलमें होती है ॥ ८२ ॥

पापेक्षितौ चंद्ररवी झषस्थौ जले मृतिस्तस्य पितुश्च वाच्या।
कुजाहियुक्ते दिवसेशपुत्रे सुखे शनौ वा भयमस्य वाच्यम् ॥ ८३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके दृष्ट चंद्रमा सूर्य मीनराशिमें स्थित हो तो मनुष्यके पिताकी मृत्यु जलमें होती है और मंगल राहुकरके सहित शनैश्चर स्थित हो अथवा चतुर्थस्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो उस मनुष्यके पिताकी मृत्यु जलमें होती है ॥ ८३ ॥

अथ बदरोगयोगः।

पापालोकितयोः सितावनिजयोरस्तस्थयोर्ध्यरुक् ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके दृष्ट शुक्र मंगल लग्नसे सातवें स्थानमें स्थित हों तो उस मनुष्यके बदरोग होता है ॥

अथ गुह्यरोगयोगः।

चन्द्रे वृश्चिककर्कटांशकगते पापैर्युते गुह्यरुक् ।

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा वृश्चिक कर्कके नवांशमें स्थित होकर पापग्रहयुक्त हो तो वह मनुष्य गुह्यरोगी होता है ॥

अथ श्वित्रयोगः ।

श्वित्री रिःफधनस्थयोरशुभयोश्चंद्रोदयेऽस्ते रवौ ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर, मंगल दोनों बारहवें तथा दूसरे स्थानमें स्थित हों और चंद्रमा लग्नमें बैठा हो और सातवें स्थानमें सूर्य स्थित हो तो उस मनुष्यके श्वित्र अर्थात् श्वेतकुष्ठ होता है ॥

अथ हीनांगयोगः ।

चन्द्रे खेऽवनिजेऽस्तगे च विकलो यद्यर्कजो वेशिगः ॥ ८४ ॥

जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा दशवें, मंगल सातवें, शनैश्चर, सूर्य दूसरे स्थानमें स्थित हों तो वह मनुष्य हीनांग होता है ॥ ८४ ॥

अथांगच्छेदयोगः ।

चन्द्रभौमौ यदा लग्ने अंगच्छेदः प्रकीर्तितः ।
लग्नगदौ कलत्रस्थे भौमेऽगच्छेदवान्नरः ॥ ८५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें चन्द्रमा, मंगल लग्नमें स्थित हों तो उसके अंगच्छेद होता है अथवा लग्नमें चंद्रमा और सातवें स्थानमें मंगल स्थित हो तो भी उसके अंगच्छेद होता है ॥ ८५ ॥

अथ क्रियाविहीनयोगः ।

पापो यदा नीचगतो विलग्ने शुभावसंस्थः शुभवर्जितश्च ।
स्याच्छ्यामरूपो मनुजोत्र जातः क्रियाविहीनःपिशुनस्वभावः८६॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें पापग्रह नीचराशिका लग्नमें स्थित हो और अपने स्वभावसे शुभग्रहरहित हो तो वह मनुष्य काले स्वरूपवाला, क्रियाविहीन, व्यभिचारी स्वभाववाला होता है ॥ ८६ ॥

अथ दीर्घजानुयोगः ।

सूर्ये त्रिकोणे यदि भूमिपुत्रे शनैश्वरे सौम्यगृहाश्रिते च ।
तदा मनुष्यः स तु दीर्घजानुर्विरूपदेहः प्रियसाहसश्च ॥ ८७ ॥
अस्मिन्नध्यायमध्ये तु देहदोषा मनीषिणाम् ।
यदुक्तं पूर्वकैः सर्वं तत्तदेव मयाधुना ॥ ८८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-
संग्रहे देहदोषवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मंगल नवम पंचम स्थानमें स्थित हों और शनैश्चर बुधके घरमें स्थित हो तो वह मनुष्य बडी जंघावाला, कुरूपवान् तथा साहसप्रिय होता है ॥८७॥ इस अध्यायके बीचमें मनुष्योंके देहके दोष जो पहिले आचार्योंकरके कहे गये सो मैंने कहा ॥ ८८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-
ज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां
देहदोषवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ प्रव्रज्यायोगाध्यायः ।

चतुरादिभिरेकस्थैः प्रव्रज्यां स्वग्रहैः करोति बली ।
बहुवीर्यैस्तावद्भिः प्रथमवीर्याधिकस्यैवम् ॥ १ ॥

जिन पुरुषोंके जन्मकालमें कहीं एक स्थानमें चार वा पांच वा छः ग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य संन्यासी होता है, परंतु उन ग्रहोंमें जो बली हो सो अपना संन्यास देता है और बहुत ग्रह बली हों तो उतने ही प्रकारका संन्यासी होता है, परंतु जो ग्रह सबमें बली हो वह पहिले अपना संन्यास देता है फिर दूसरे ग्रहका संन्यास होता है ॥ १ ॥

अथ प्रव्रज्याभेदमाह ।

प्रवाजिकोऽर्कादिबलक्रमेण वैखानसः खर्परधृक् च लिंगी ।
दंडी यतिश्चक्रधरश्च नग्नस्तत्प्रच्युतो जन्मपतौ जिते स्यात् ॥ २ ॥

संन्यासयोग सूर्यको आदि लेकर क्रमकरके जानना अर्थात् योगकारक ग्रहोंमें सूर्य बली हो तो वैखानस अर्थात् वनमें पैदा हुए फलोंका भोजन करनेवाला होता है। जो चंद्रमा बली हो तो खर्परधृक् अर्थात् कपाली संन्यासी होता है, मंगल बली हो तो लिंगी अर्थात् गेरुए वस्त्र धारण करनेवाला संन्यासी होता है,बुध बली हो तो दंडी अर्थात् दंड धारण करनेवाला संन्यासी होता है या मठपति संन्यासी हो,जो बृहस्पति बली हो तो यती अर्थात् ब्रह्मचारी संन्यासी हो अर्थात् भिक्षा मांगनेवाला होता है, शुक्र बली हो तो चक्रका धारण करनेवाला होता है और शनैश्चर बली हो तो नग्न अर्थात् नंगा संन्यासी होता है. जो उक्तयोगकारक ग्रहोंमेंसे कोई ग्रह बली नहीं हो तो संन्यास नहीं होता है और संन्यासयोगकारक ग्रह किसी ग्रहसे युद्धमें हार गया हो तो संन्यास ग्रहण करने पर भी छूट जाता है ॥ २ ॥

अथ संन्यासयोगः ।

जन्माधिराजो रविजत्रिभागे कुजार्कजांशेऽर्कजवीक्षितश्च ।
करोति जातं कुटिलं कुशीलं पाखंडिकं मंडनतत्परं वा ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें जन्मकालिक चंद्रमा चाहे जिस राशिसंबंधी शनैश्चरके द्रेष्काणमें स्थित होकर मंगल वा शनैश्चरके नवांशमें स्थित हो और शनैश्चर देखता हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य कुटिल,कुशील तथा पाखंडी होता है, अब योगांतरसे भी दिखाते हैं, जन्मकालिक चंद्रराशिके स्वामीको शनैश्चर देखता हो और किसी ग्रहकी दृष्टि न हो तो वह पुरुष चंद्रराशिके स्वामी वा शनैश्चर इन दोनोंसे जो बली हो उसी दशा अंतर्दशामें फकीरीको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

अथ योगिप्रव्रज्यायोगः ।

एकस्थाने स्थितैः खेटैः सर्वैश्च बलसंयुतैः ।
निरंतरं निराहारो योगमार्गपरायणः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके एक स्थानमें चार वा पांच वा छः ग्रह पूर्ण बली होकर स्थित हों तो वह मनुष्य हमेशा भोजन विना रहकर योगमार्गमें तत्पर होताहै ४

अथ चतुर्ग्रहाणां प्रव्रज्यायोगः ।

एकस्थाने खेचराणां चतुर्णां योगश्चेत्स्यान्मानवानां प्रसूतौ ।
ते स्युर्भूमीपालवंशेऽपि जाताः कांतारांतर्वासिनः सर्वथैव ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें एक घरमें चार ग्रहोंका योग हो वह मनुष्य राजाके वंशमें भी उत्पन्न हुआ तो भी हमेशा एकांतमें वास करनेवाला होता है॥५॥

अथ पंचग्रहाणां प्रव्रज्यायोगः ।

पंचखेचरपतिर्यदि सूतौ भूपतेरपि सुतः स च नित्यम् ।
कंदमूलभक्षणचित्तोऽत्यंतशांतिविजितेंद्रियशत्रुः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पांच ग्रह एक स्थानमें बलवान् स्थित हों तो वह मनुष्य राजाका पुत्र हो तो भी सदैव काल कंद, मूल, फल इनका भोजन करनेवाला, अत्यंत शांत, इंद्रियरूपी शत्रुओंका जीतनेवाला अर्थात् जितेंद्रिय होता है ॥ ६ ॥

अथ षड्ग्रहाणां प्रव्रज्यायोगः ।

एकत्र षण्णां गगनेचराणां प्रसूतिकाले मिलनं यदि स्यात् ।
ते केवलं शैलशिलातलेषु तिष्ठंति भूपालकुलेऽपि जाताः ॥७॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें छः ग्रह बली स्थित हों तो वे पुरुष पर्वतोंकी गुफामें वास करते हैं चाहे राजकुलमें क्यों न उत्पन्न हों ॥ ७ ॥

अथ प्रव्रज्याभक्तयोगः ।

दिनकरलुप्तमयूखैरदीक्षिता भक्तवादिनस्तेषाम् ।
याचितदीक्षाबलिभिः पराजितैरन्यदृष्टैर्वा ॥ ८ ॥

जिस पुरुषोंके जन्मकालमें संन्यासयोगकारक ग्रह अस्त हों उतने प्रकारकी प्रवज्याको वे लोग अंगीकार नहीं करते हैं किंतु उन प्रव्रज्या ग्रहण करनेवालोंके भक्त होते हैं और जो वही प्रव्रज्यादायक ग्रह अन्य ग्रहोंसे युद्धमें हारे हों अथवा अन्य ग्रहोंसे दृष्ट हों तो वह मनुष्य उन ग्रहोंके फकीरीको ग्रहण करनेकी याचना तो करे परंतु गुरुसे पाते नहीं हैं और संन्यास योगकारक ग्रह किसी ग्रहसे युद्धमें हारा हो और कोई ग्रह नहीं देखता हो तो वह मनुष्य फकीरी ग्रहण करके त्याग देते हैं अर्थात् फिर गृहस्थ हो जाते हैं॥८॥

अथ राजप्रव्रज्यायोगः ।

प्रव्राजितानामथ भूपतीनां योगद्वयं चेत्प्रबलं प्रसूतौ ।
फल विरुद्धं ह्यनुभूय पूर्वं ततो व्रजेद्राजपदाधिकारम् ॥९॥
अस्मिन्नध्यायमध्ये तु प्रव्रज्यायोगकीर्तितः ।
बलदेवसुतो गौडः श्यामलालेन धीमता ॥ १० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे प्रव्रज्यायोगवर्णनं नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें संन्यासयोग हो और राजयोग भी हो, दोनों योग बलवान् हों तो वह मनुष्य राजा होकरके भी संन्यासी होता है अथवा संन्यासी होकरके भी राजा होता है,जिस मनुष्यके जन्मकालमें कोई राजयोग हो और बृहस्पति, चंद्रमा, लग्न इन तीनोंको शनैश्चर देखता हो और लग्नसे नवम वा पंचमस्थानमें बृहस्पति स्थित हो तो वह मनुष्य शास्त्रका बनानेवाला होता है अर्थात् यम, यवन, मणित्थ, वराहमिहिरके समान होता है ॥ ९ ॥ इस अध्यायके बीचमें बलदेवप्रसादका पुत्र गौड-ब्राह्मण बुद्धिमान् श्यामलालकरके संन्यासयोग कहे ॥ १० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसराजज्योतिषिपंडितश्यामलाल-कृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नाभसयोगाध्यायप्रारम्भः।

अथ रज्जुयोगः।

चरभवनादिषु सर्वैराश्रयजा रज्जुमुशलनलयोगाः।
ईर्षी मानी धनवान् क्रमेण कुलविश्रुताः सर्वे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चरराशियोंमें अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर इनम संपूर्ण ग्रह स्थित हों तो रज्जुनाम योग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य ईर्षा करनेवाला पराये वैभवको देखकर जलनेवाला होता है॥

अथ मुशलयोगः।

स्थिरराशि वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ इनमें सब ग्रह स्थित हों तो मुशल नाम योग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य मानी होता है॥

अथ नलयोगः।

जो द्विस्वभावराशि मिथुन,कन्या,धन,मीन इनमें सब ग्रह स्थित हों तो नल नाम योग होता है। इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य धनवान् होता है॥ १॥

अथ दलयोगः।

केंद्रत्रयगैः पापैः शुभैर्दलाख्यो ह्यहिश्च माला च।
सर्पेऽतिदुःखितानां मालायां जन्म सुखिनाम् ॥ २ ॥

तीन केंद्रोंमें संपूर्ण पापी ग्रह पडें तो दल वा अहि नाम योग होता है। इसमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अत्यंत दुःखी होता है ॥

अथ मालायोगः।

तीन केंद्रोंमें सब शुभ ग्रह पडें तो माला नाम योग होता है। इसमें पैदा हुआ मनुष्य अत्यंत सुखी होता है ॥ २ ॥

अथ गदायोगः।

द्विरनंतरकेंद्रस्थैर्गदा विलग्नास्तसंस्थितैः शकटम्।
खचतुर्थयोर्विहंगः शृंगाटकमुदयः पुत्रनवगैः ॥ ३ ॥

पास पास दो केंद्रोंमें सब ग्रह पडें तो गदा नाम योग होता है सो चार प्रकारका है अर्थात् लग्न चौथे स्थानमें सब ग्रह पडें तो एको योगः। चतुर्थ सप्तम स्थानमें सब ग्रह पडें तो द्वितीयो योगः। सप्तम दशम स्थानमें सब ग्रह पडें तो तृतीयो योगः। दशम लग्नमें सब ग्रह पडें तो चतुर्थो योगः॥

अथ शकटयोगः ।

लग्न और सातवें स्थानमें सब ग्रह पडें तो शकटयोग होता है।

अथ विहंगयोगः ।

दशवें, चौथे स्थानमें सब ग्रह पडें तो विहंगयोग होता है॥

अथ शृंगाटकयोगः ।

लग्न,पांचवें, नौवें स्थानमें सब ग्रह पडें तो शृंगाटक योग होता है॥ ३ ॥

अथ हलनामयोगः ।

शृंगाटके गतैर्हलमेतेषां क्रमात्फलोपनयः ।
यज्वा शकटाजीवी दूताश्चरसौख्यकृषिकृत् ॥ ४ ॥

शृंगाटक योगमें जो स्थान कहे हैं उनको छोडकर बराबर त्रिकोण अर्थात् नौवें; पांचवें स्थानमें सब ग्रह पडें तो हल नाम योग होता है। सो तीन प्रकारका है। जो दूसरे, छठे, दशवें स्थानमें सब ग्रह पडें तो एको योगः। तीसरे, सातवें, ग्यारहवें स्थानमें पडें तो द्वितीयो योगः। चौथे, आठवें बारहवें स्थानमें हों तो तृतीयो योगः।

अथ गदायोगफलम् ।

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य यज्ञका करनेवाला होता है॥

अथ शकटयोगफलम् ।

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य गाडीवान् अथवा गाडीसे आजीविका करनेवाला होता है॥

अथ विहंगयोगफलम् ।

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य दूत अर्थात् हलकारा होता है॥

अथ श्रृंगाटकयोगफलम् ।

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य बुढापेमें सुखी होता है ॥

अथ हलयोगफलम् ।

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य खेती करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ वज्रयोगः ।

लग्नस्मरस्थानगतैः शुभाख्यैः पापैश्च मेषूरणबंधुपातैः ।
वज्राभिधस्तैर्विपरीतसंस्थैर्यवैश्च मिश्रैः कमलाभिधानः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न और सातवें स्थानमें सब शुभग्रह पडें और चौथे दशवें स्थानम सब पापग्रह पडें तो वज्र नाम योग होता है॥

अथ जवयोगः ।

लग्न तथा सातवें स्थानमें सब पापग्रह पडें और चौथे, दशवें स्थानमें शुभग्रह पडें तो जवनाम योग होता है ॥

अथ कमलयोगः ।

चारों केंद्रोंमें किसीमें शुभग्रह किसीमें पापग्रह पडें तो कमल नाम योग होता है ॥ ५ ॥

अथ वापीयोगः ।

त्यक्त्वा केन्द्राणि चेत्खेटाः शेषस्थानेषु संस्थिताः ।
वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ॥ ६ ॥

केंद्रको छोडकर अन्य स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो वापी नाम योग होता है ॥ ६ ॥

अथ यूपयोगः ।

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्गृहस्थैर्गगनेचराणाम् ।
क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दंडः प्रदिष्टः खलु जातकज्ञैः ॥ ७ ॥

लग्नसे चौथे स्थानतक जो सम्पूर्ण ग्रह पडें तो यूप नाम योग होता है ॥

अथ शरयोगः ।

और चौथे घरसे लेकर सातवें स्थानपर्यंत जो सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो शरनाम योग होता है ॥

अथ शक्तियोगः ।

और सातवें घरसे लेकर दशम स्थानपर्यंत सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो शक्ति नाम योग होता है ॥

अथ दंडयोगः ।

जो दशवें स्थानसे लेकर लग्नपर्यंत संपूर्ण ग्रह स्थित हों तो दंड नाम योग होता है ॥ ७ ॥

अथ नौकायोगः ।

नौकूटच्छत्रचापानि तद्वत्सप्तर्क्षसंस्थितैः ।
अर्धचन्द्रस्तु नावाद्यैः प्रोक्तस्त्वन्यर्क्षसंस्थितैः ॥ ८ ॥

लग्नसे लेकर सप्तमस्थानपर्यंत जो सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो नौका नाम योग होता है ॥

अथ कूटयोगः ।

और जो चतुर्थ स्थानसे लेकर दशमस्थानपर्यंत सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो कूट नाम योग होता है ॥

अथ छत्रयोगः ।

और जो सप्तम स्थानसे लेकर लग्नपर्यंत सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो छत्र नाम योग होता है ॥

अथ चापयोगः ।

और जो दशम स्थानसे लेकर चतुर्थ स्थानपर्यंत सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो चाप नाम योग होता है ॥

अथ अर्धचन्द्रयोगः।

अर्द्धचंद्र योगके आठ भेद हैं। दूसरे स्थानसे अष्टम स्थान-पर्यंत जो सम्पूर्ण ग्रह पडें तो एको योगः। तीसरे स्थानसे नवम स्थान-पर्यंत सब ग्रह हों तो द्वितीयो योगः। पंचम स्थानसे ग्यारहवें स्थानपर्यंत सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो तृतीयो योगः। छठे स्थानसे बारहवें स्थानपर्यंत सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो चतुर्थो योगः। अष्टम स्थानसे द्वितीय स्थानप-र्यंत सब ग्रह पडें तो पंचमो योगः। नवमस्थानसे तृतीयस्थानतक सब ग्रह पडें तो षष्ठो योगः। ग्यारहवें स्थानसे पंचम स्थानतक सब ग्रह पडें तो सप्तमो योगः। बारहवें स्थानसे छठे स्थानपर्यंत सब ग्रह पडें तो अष्टमो योगः। ये ८ अर्धचंद्र योगके भेद हैं ॥ ८ ॥

अथ चक्रदामिनीयोगः।

एकांतरे विलग्नात्त्वङ्कवनावस्थितैर्ग्रहैश्चक्रम् ॥
अर्थाच्च तद्वदुदधिनौप्रभृतिफलानि सप्तानाम् ॥ ९ ॥

लग्नसे लेकर एक एक घर छोडकर छः स्थानोंमें अर्थात् १। ३। ५। ७। ९। ११। इन स्थानोंमें सब ग्रह पडें तो चक्रदामिनी योग होता है ॥

अथ समुद्रयोगः।

जो पूर्वोक्त स्थानको छोडकर शेष स्थानोंमें अर्थात् २। ४। ६। ८। १०। १२ इनमें सब ग्रह पडें तो समुद्र नाम योग होता है ॥ ९ ॥

अथ वीणायोगः।

संख्यायोगाः स्युः सप्तसप्तर्क्षसंस्थैरेका पापाद्वल्लकी दामिनी च।
पाशः केदारः शूलयोगो युगं च गोलश्चान्यान्पूर्वमुक्तां विहाय १०

सप्त स्थानोंमें सब ग्रह स्थित हों तो वीणा नाम योग होता है ॥

अथ दामिनीयोगः ।

और जो छः स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो दामिनी नामक योग होता है ॥

अथ पाशयोगः ।

जो पांच स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो पाश नामक योग होता है॥

अथ केदारयोगः ।

चार स्थानोंमें सब ग्रह स्थित हों तो केदार नामक योग होता है ॥

अथ शूलयोगः ।

जो तीन स्थानोंमें सब ग्रह स्थित हों तो शूल नामक योग होता है ॥

अथ युगयोगः ।

दो स्थानोंमें सम्पूर्ण ग्रह स्थित हों तो युग नाम योग होता है ॥

अथ गोलयोगः ।

जो एक ही स्थानमें सम्पूर्ण ग्रह पडे तो गोल नाम योग होता है । अब पूर्वोक्त योग तिनमें संख्यायोगके सदृश हो तो संख्यायोग नहीं ग्रहण करना चाहिये । पूर्वोक्त योग प्रमाण करना चाहिये ॥ १० ॥

अथ वज्रयोगफलम् ।

आद्ये भागे जीवितस्यांतिमे च सौख्योपेतो भाग्यवान्मानवः स्यात् ।
मध्ये भागे भाग्यहीनः प्रकामं कामक्रोधैरन्वितो वज्रयोगे ॥ ११ ॥

वज्रयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य पहली अवस्थामें और अंतमें अर्थात् बुढापेमें सुखसहित भाग्यवान् मनुष्य होता है और जवानीमें भाग्य हीन तथा कामक्रोधसहित होता है ॥ ११ ॥

अथ जवयोगफलम् ।

नित्यं हर्षोत्कर्षशाली बलीयान् चंचत्कांतिः स्याद्विनीतो वदान्यः ।
नित्योत्साहः शुद्धवृत्तिः प्रशांतः शांतक्रोधो यः प्रसूतो यवाख्ये १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें यव नाम योग होता है सो पुरुष सदैव काल हर्षको प्राप्त, बलसहित, शोभायमान, नम्रतासंयुक्त, मिष्ट वाणीका बोलनेवाला, सदैव उत्साहवाला, अच्छी वृत्तिका करनेवाला, शांतस्वभाव तथा क्रोधरहित होता है ॥ १२ ॥

अथ कमलयोगफलम् ।

मध्ये भागे धर्मकामार्थसंपत् चंचत्कांतिर्गीतकीर्तिर्मनुष्यः ।
योगे सूतिश्चेत्सरोजे स राजा राज्ञो वंशे वा भवेद्दीर्घजीवी ॥१३॥

जिसके जन्मकालमें कमल योग होता है सो मनुष्य जवानीमें धर्म, अर्थ, काम तीनों प्रकारके सुखसहित, शोभायमान स्वरूप, मनुष्य जिसकी प्रशंसा करे ऐसा और जो राजाके वंशमें उत्पन्न हो तो बडी उमर- वाला राजा होता है ॥ १३ ॥

अथ वापीयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्यादात्मवंशावतंसः सौख्योपेतोऽत्यंतधीरो मनीषी ।
चंचद्वाक्यः सन्मनाः पुष्पवापी वापीयोगे यः प्रसूतः प्रतापी ॥१४॥

वापी योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य बडी उमरवाला, अपने वंशमें सूर्यके समान, सुखसहित, अत्यंतधीरजवाला, मनीषी, शोभायमान वाक्य- वाला, उत्तम मनवाला, पुष्प बगीचा सहित तथा प्रतापी होता है ॥ १४ ॥

अथ यूपयोगफलम् ।

धीरोदारो यज्ञकर्मानुसारी नानाविद्यासद्विचारो नरो वै ।
यस्योत्पत्तौ वर्तते यूपयोगो योगो लक्ष्म्या जायते तस्य नूनम् १५॥

जिसके जन्मकालमें यूप योग होता है वह मनुष्य धीर, उदारयज्ञक- र्मोंके अनुसार, अनेक विद्यासहित, अच्छा विचार करनेवाला होता है जिस- के जन्मकालमें यूपयोग हो निश्चय तिसके आधीन लक्ष्मी होती है ॥ १५॥

अथ शरयोगफलम् ।

हिंस्रोऽत्यंतं शिल्पदुःखैः प्रतप्तः प्राप्तानंदः काननांते शरज्ञः ।

मर्त्यो योगे यो शरे जातजन्मा जन्मारंभात्तस्य न क्वापि सौख्यम् १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शर नाम योग होता है सो मनुष्य अत्यंत हिंसाका करनेवाला, चित्रकारीसे दुःखको प्राप्त, आनंदको प्राप्त वनके अंततक शरका जाननेवाला होता है । जो मनुष्य शरयोगमें उत्पन्न हो उसको जन्मसे आखिरतक सुख न हो ॥ १६ ॥

अथ शक्तियोगफलम् ।

नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो निर्मलश्च ।
वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शालासौख्यस्याल्पता शक्तियोगे १७

जिसके जन्मकालमें शक्तियोग होता है सो मनुष्य नीच ऊंच पुरुषोंसे प्रीति करनेवाला, आलस्यसहित, सुख और धनसे रहित, निर्मल होता है विवाद और युद्धमें उसकी बुद्धि विशाल, स्थानका सुख अल्प होता है ॥ १७ ॥

अथ दंडयोगफलम् ।

दीनो हीनोन्मत्तसंजातसौख्यः प्रेष्यद्वेषी गोत्रजैर्जातवैरः ।
कातापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्ध्या दंडयोगाप्तजन्मा ॥ १८ ॥

जिसके जन्मकालमें दंड नाम योग हो वह मनुष्य दीन, हीन, उन्मत्त, सुखको प्राप्त, दूतसे वैर करनेवाला, गोत्रके पुरुष अर्थात् भाई बंधुसे वैर करनेवाला, स्त्री पुत्र धन मित्रसे रहित तथा बुद्धिहीन होता है ॥ १८ ॥

अथ नौकायोगफलम् ।

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनो नौकायोगे लब्धजन्मा मनुष्यः ।
क्लेशी शश्वच्चंचलः शांतवृत्तिर्वृत्तिस्तोयोद्भूतधान्येन तस्य ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकालमें नौका योग हो वह मनुष्य कृपण, भोग सुख करके हीन, सदैवकाल क्लेश भोगनेवाला, चंचल, शांतवृत्ति, तोयोद्भूतधान्यसे आजीविका करनेवाला होता है । कोई आचार्य नौका करके इसकी आजीविका होगी ऐसा कहते हैं ॥ १९ ॥

अथ कूटयोगफलम् ।

दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लो भिल्लाद्भीतिर्निर्धनो निंद्यकर्मा ।
धर्म्माधर्म्मज्ञानहीनश्च कूटः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ॥२०॥

इस कूटयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य घोर वनमें वास करनेमें शील जिसका, मल्लिवान्, भिल्लोंसे भय माननेवाला, धनरहित, निंदित कर्म करनेवाला, धर्म अधर्मके ज्ञानसे हीन तथा कुटिल होता है ॥ २० ॥

अथ छत्रयोगफलम् ।

प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्त्ता दयालुः पूर्वं पश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः ।
यस्योत्पत्तौ छत्रयोगोपलब्धिर्लब्धिस्तस्य चामराद्यापि छत्रः॥२१॥

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य पंडित, राजाओंके काम करनेवाला, दयावान्, पहली पिछली अवस्थामें सम्पूर्ण सुखसहित होता है । जिसके उत्पत्तिके समय छत्रयोगकी प्राप्ति हो उस मनुष्यको चमर आदि लेकर छत्र वगैरेकी प्राप्ति होती है ॥ २१ ॥

अथ चापयोगफलम् ।

आद्यें भागे चांतिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः ।
योगे जातः कार्मुकः सोऽतिगर्वो गर्वोन्मत्तापत्तिकृत्कार्मुकास्त्रः॥२२॥

जो मनुष्य चापयोगमें उत्पन्न होता है सो उमरके पहिले और अंतभागमें सुखसहित, वन और पर्वतोंमें प्रचार करनेवाला, अभिमानसे उन्मत्त तथा धनुषके बाणोंसे आपत्तिकरनेवाला अर्थात् गोली चलानेवाला होता है २२

अथार्द्धचन्द्रयोगफलम् ।

भूमीपालात्प्राप्तचंचत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थांबराद्यैः ।
चेदुत्पत्तौ यस्य योगार्द्धचंद्रश्चंद्रः साक्षादुत्सवार्ये जनानाम् ॥२३॥

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य राजाओंसे उत्तम प्रतिष्ठाको प्राप्त, अच्छी सेना आभूषण धन वस्त्रादिसहित होता है, जिसके जन्मकालमें अर्द्ध-चंद्र योग हो सो मनुष्य जनोंमें चंद्रके समान स्वरूपवान् होता है ॥२३॥

अथ चक्रयोगफलम् ।

श्रीमद्रूपोऽत्यंतजातप्रतापो भूपो भूपोपायनैरन्वितः स्यात् ।
योगे जातः पूरुषो यस्तु चक्रे चक्रे पृथ्व्याः शालिनी तस्य कीर्तिः २४

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य लक्ष्मीवान्, स्वरूप, अधिक प्रताप-वाला, वारंवार सवारीकरके सहित होता है, जो मनुष्य चक्रयोगमें पैदा हो उसकी कीर्ति पृथिवी चक्रपर प्रगट होती है ॥ २४ ॥

अथ समुद्रयोगफलम् ।

दानी धीरश्चारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्राप्तसौख्यप्रकामः ।
योगे जातो यः समुद्रे स धन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनं नरेण ॥२५॥

इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य दान करनेवाला, धीरजवान्, उत्तम स्वभावसहित, दयालु तथा राजाओंसे सुखको प्राप्त होता है,जो पुरुष समुद्र-योगमें पैदा हो सो धन्य होता है तथा उसका वंश भी धन्य होता है॥ २५॥

अथ वीणायोगफलम् ।

अर्थोपेताः शास्त्रपारंगताश्च संगीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहूनाम् ।
नानासौख्यैरन्वितास्तु प्रवीणा वीणायोगे प्राणिनां जन्मकाले २६॥

जिस पुरुषके जन्मकालमें वीणा योग होता है वह मनुष्य धनसहित शास्त्रका जाननेवाला, गीतविद्याको जाननेवाला, बहुत मनुष्योंका पालन करनेवाला, अनेक सुखसहित तथा अनेक कामोंमें प्रवीण होता है ॥२६॥

अथ दामिनीयोगफलम् ।

जातानंदो नंदनाद्यैः सुधीरो विद्वान् भूषाकोशसंजाततोषः ।
चंचच्छीलोदारबुद्धिः प्रशस्तः शस्तः सूतौदामिनी यस्य योगः २७

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य आनंदसहित, सम्पूर्ण सौख्ययुक्त, उत्तम बुद्धिवाला, विद्वान्, आभूषण खजाना करके सहित, संतोषको प्राप्त, उत्तम शील, जिसकी उदारबुद्धि तथा प्रशस्त हो। जिसके जन्मकालमें दामिनी योग हो सो मनुष्य अच्छा होता है ॥ २७ ॥

अथ पाशयोगफलम्।

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बंधनार्ता भूरितल्पाः सदंभाः।
नानानर्थाः पाशयोगे प्रजाता जातारण्यप्रीतयः स्युर्मनुष्याः॥२८॥

इस पाशयोगमें पैदा हुआ मनुष्य दीनस्वरूपवाला, बुराई करनेमें तत्पर, बंधन करके दुःखी, बडा कृपण, क्रोधसहित, अनेक अनर्थ करनेवाला तथा जंगलमें उत्पन्न हुए जीवोंसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ केदारयोगफलम्।

सत्योपेताश्चार्थवंतो विनीता भूपात्प्राप्तिश्चोपकारादरश्च।
योगे केदारे नरास्तेऽपि जाता धीराचाराश्चापि तेषां विशेषात् २९

इस केदार योगमें पैदा हुआ मनुष्य सच बोलनेवाला, धनवान्, नम्रतासहित, राजासे प्राप्ति करनेवाला, आदरसे उपकार करनेवाला, धीर तथा विशेष आचार करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ शूलयोगफलम्।

युद्धे वादे तत्पराश्चाति शूराः क्रूराः स्वार्थे निष्ठुरा निर्धनाश्च।
योगे येषां सूतिकाले हि शूलाः शूलप्रायास्ते जनानां भवंति३०॥

इस शूल योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य युद्ध और विवादमें तत्पर, दुष्ट, अपने काममें निष्ठुर तथा धनरहित होता है, मनुष्योंको शूलप्राय होता है ॥ ३० ॥

अथ युगयोगफलम्।

पाखंडेनाखडितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मप्रमुक्ताः।
पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये ॥३१॥

इस युगयोगमें पैदा हुआ मनुष्य पाखंडकरके खंडित प्रीति करनेवाला, निर्लज्ज, धर्मकर्मरहित, पुत्रधनकरके सदैवकाल रहित, युक्तियोंसे युक्त तथा ज्ञानशून्य होता है ॥ ३१ ॥

अथ गोलयोगफलम् ।

विद्यासत्त्वौदार्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रवासाः ।
येषां योगे संभवे गोलनामा नानासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते ३२ ॥
प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्मकाले ।
तस्मादेते श्यामलालेन उक्ताः पूर्वाचार्यैर्जातके संप्रदिष्टाः॥३३॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-
संग्रहे नाभसयोगवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

इस योगमें पैदा हुआ मनुष्य विद्या, पराक्रम, उदारता तथा साम-र्थ्यकरके हीन, अनेक आयास सहित, सदैव परदेश जानेवाला होता है। जिसके जन्मकालमें गोल नाम योग होता है वह मनुष्य अनेक झूठ व अनीतिमें प्रीति करनेवाला होता है ॥३२॥ ये नाभसाख्य योग सब प्राणियोंके जन्मकालमें होते हैं अत एव पूर्वाचार्योंने जातकमें इनका वर्णन किया है मैंने (श्यामलालने) भी उसीप्रकार यहां उनका वर्णन किया है ॥ ३३ ॥

इति वंशबरेलिकस्थराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां भाषाटीकायां
नाभासयोगवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ पंचमहापुरुषाध्यायप्रारंभः ।

ये वै महापुरुषसंज्ञकभूमिपालाः पंचैव पूर्वमुनिभिः किल संप्र-
दिष्टाः । वक्ष्याम्यहं सुसरलामलकोक्तिभिस्तान्सद्राजयोगवि-
धिदर्शनलिप्सया च ॥ १ ॥

जो महापुरुषसंज्ञक पांच राजयोग पहिले मुनीश्वरोंने निश्चयकरके दिखाये उन योगोंको सरलप्रकारसे, निर्मल उक्तिसे, अच्छे राजयोगविधि-दर्शनकी इच्छाकरके मैं कहता हूं ॥ १ ॥

अथ रुचकादियोगः ।

स्वर्क्षोच्चाश्रयकेंद्रस्थैरुच्चगैर्वा कुजादिभिः ।
क्रमाद्रुचकभद्राख्यहंसमालव्यशाशकाः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगलको आदि लेकर अपनी राशिके उच्चके आश्रयमें केंद्रमें स्थित हों अथवा आप उच्चके हों तो क्रमसे रुचकादि योग होते हैं अर्थात् जिसके केंद्रमें मंगल मेष, वृश्चिक या मकरका स्थित हो तो रुचक नामक योग होता है ॥

अथ भद्रयोगः ।

जिसके जन्मकालमें बुध कन्या वा मिथुनराशिमें स्थित होकर केंद्रमें बैठा हो तो भद्र नाम योग होता है ॥

अथ हंसयोगः ।

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति धन वा मीन वा कर्कराशिमें स्थित होकर केंद्रमें हो तो हंस नाम योग होता है ॥

अथ मालव्ययोगः ।

जिसके जन्मकालमें शुक्र वृष वा तुला वा मीन राशिमें स्थित होकर केंद्रमें बैठा हो तो मालव्य नाम योग होता है ॥

अथ शशकयोगः ।

जिसके जन्मकालमें शनैश्चर मकर वा कुंभराशिमें स्थित होकर केंद्रमें बैठा हो तो शशक नाम योग होता है ॥ २ ॥

अथ रुचकयोगफलम् ।

रक्तः श्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कंबुकंठो महौजाः
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजंघः ।
दीर्घायुः स्वच्छकांतिर्बहुरुधिरबलो साहसी वा ससिद्धि-
श्चारुभ्रूर्निलकेशः समकरचरणो मंत्रविच्चारुकीर्तिः ॥ ३ ॥

लाल और श्यामता लिये स्वरूप जिसका, शूर, शत्रुओंके बलका नाश करनेवाला, शंखकीसी गरदन, महान् यशस्वी, क्रूर, मनुष्योंका भक्त ब्राह्मण और गुरुसे नम्र, जानु और जंघा दुर्बल, बडी उमरवाला, निर्मल कांतिमान्,

रुधिर बल अधिक, साहसी, सिद्धियोंसहित, उत्तम भौंहैं, श्यामकेशवाला, हाथ पैर एक समान, मंत्रका ज्ञाता तथा उत्तम कीर्तिमान् होता है ॥३॥

खट्वांगपाशवृषकार्मुकचक्रवीणावज्रांकहस्तचरणः सरलांगुलिः स्यात् । मंत्राभिचारकुशलस्तु लपेत्सहस्रं मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥ ४ ॥ सह्यस्य विंध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिजीवितोऽसौ । शस्त्राग्निचिह्नो रुचकाभिधाने देवालये तन्निधनं प्रयाति ॥ ५ ॥

रुचक योगमें पैदा हुआ मनुष्य खट्वांग, पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, वज्र इनकरके अंकित हैं हाथ पैर जिसके, सीधी अंगुली, सलाह करनेमें चतुर हजारों मनुष्योंमें नामी, मध्यशरीर, चौंडा मुख ॥४॥ सह्य, विंध्य, उज्जायिनीदेशोंका स्वामी, सत्तरवर्षतक जीये,शस्त्र अग्निके चिह्नोंकरके युक्त होता है तथा यह देवताके स्थानमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ भद्रयोगफलम् ।

शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षस्थलो लंबापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः । कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगंडस्थलो प्राज्ञः पंकजगर्भपाणिचरणो सत्त्वाधिको योगवित् ॥ ६ ॥ शंखासिकुंजरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जलांगलविचिह्नितपाणिपादः । यत्रागजेंद्रमदवारिकृतार्द्रभूमिः सत्कुंकुमप्रतिमगंधतनुः सुघोषः ॥ ७ ॥

भद्रयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सिंहके समान, गजकीसी चाल, ऊंचा वक्षस्थल,लंबी मोटी सुढार दोनों बाहें, तिसकेही समान ऊंचा,कामी,कोमल शरीर, महीन रोम, उत्तम कपोल, पंडित,कमलके समान हाथ पैर,बलवान् योगका ज्ञाता ॥६॥ शंख, तलवार, हाथी,गदा,पुष्पपताका, कमल, लांगल इन चिह्नोंसे अंकित हाथ पैर जिसके,मत्त हाथीकीसी चाल,पृथ्वीको शोभायमान, अच्छे कुंकुम और गंधमय शरीर तथा उत्तमवाणी होती है ॥ ७ ॥

सद्रूपगोऽतिमतिमान् खलु शास्त्रवेत्ता मानोपभोगसहितोऽतिनिगूढगुह्यः । सत्कुक्षिधर्म्मनिरतः सुललाटपट्टो धीरो भवेदसि-

तकुंचितकेशपाशः ॥ ८ ॥ स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनप्रतिम-क्षमी । भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः ॥ ९ ॥ भारं तुलायां तुलयेत्सुरत्नैः श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः ॥ भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम् ॥ १० ॥

भद्रयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य उत्तमस्वरूप, अतिबुद्धिमान्, निश्चयकरके शास्त्रका वेत्ता, मानभोगसहित, छिपा हुआ गुह्यस्थान, अच्छी कुक्षि, धर्ममें तत्पर, मस्तक जिसका अच्छा, धैर्यवान्, अतिश्याम, घूंघरवाले बाल जिसके ॥ ८ ॥ सम्पूर्ण कार्योंमें स्वतंत्र, अपने मनुष्योंपर दया करनेवाला, ऐश्वर्यका भोगनेवाला, जिसके विभवको सदैव मनुष्य भोग करे ॥ ९ ॥ जिसकी तुलाका भार रत्नोंकरके तौला जाय तथा कान्यकुब्जदेशका स्वामी होता है, पुत्र स्त्रीके सुखसहित राजा होता है और अस्सी बरस जीता है ॥ १० ॥

अथ हंसयोगफलम् ।

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसे प्रसन्नेन्द्रियो गौरः पीनकपोलरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मलः । शंखाब्जांकुशमत्स्यदामयुगलैः खट्वांगमालाघटैश्चंचत्पादकरस्थले मधुनिभैर्नेत्रे सुवृत्तिं शिरः ११

हंसयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य लाल मुख, ऊंची नासिका, अच्छे पर, प्रसन्न चित्त, गौर, मोटे कपोल, जिसके लाल नख, हंसकीसी वाणी बोलनेवाला, शंख, कमल, अंकुश, युगल मच्छ, खट्वांग (शस्त्रविशेष), माला, घट ये चिह्न जिसके हाथों पैरोंमें हैं, शोभायमान, सहतके समान अरुण नेत्र, उत्तम शिर होता है ॥ ११ ॥

जलाशयप्रीतिरतीवकामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम् ।
उच्चोङ्गुलैर्वा षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षण्णवतिः समानाम् ॥ १२ ॥
बाह्लीकदेशांतरशूरसेनगांधर्वगंगायमुनांतरालम् । भुक्त्वा
वनांते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः पुराणैः ॥ १३ ॥

जलाशयसे प्रीति करनेवाला, अतिकामी, स्त्रियोंसे अतृप्त, छयासी अंगुल शरीर ऊंचा होता है, छयानवे बरसकी उमर होती है ॥ १२ ॥ बाह्लीक,

शूरसेन, गंधर्व, गंगा, यमुनाका मध्य इन देशोंको भोग करनेवाला, वनके अंतमें मृत्युको प्राप्त होता है. प्राचीन मुनीश्वरोंने यह हंसयोग कहा है ॥ १३ ॥

अथ मालव्ययोगफलम् ।

अस्थूलोष्ठोऽथ विषमवपुर्नैव रिक्तांगसंधिर्मध्यक्षामः शशिधर-रुचिर्हस्तनासासुगंडः । सद्दीप्ताक्षः समसितरदो जानुदेशाप्त-पाणिर्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥ १४ ॥

इस मालव्य योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य मोटे होंठ, दुर्बल शरीर, एकसी देह कहीं खाली नहीं कमर जिसकी, छीन चंद्रमाकीसी रुचि, हाथ नासिका कपोल जिसके अच्छे, प्रकाशवान् नेत्र, बराबर सफेद दांत, आजानुबाहु होता है । इस मालव्ययोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य सत्तर वर्षकी उमरतक राजसुखको भोग करता है ॥ १४ ॥

वक्त्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं तिर्यक् दशाङ्गुलमितं श्रवणांतरालम् । मालव्यसंज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं लाटांश्च मालवकसिंधुसुपारियात्रान् ॥ १५ ॥

मुख जिसका तेरह अंगुल बडा हो और कानोंके बीचमें दश अंगुल होता है । मालव्य नाम राजा निश्चयकरके लाट, मालवा, सिंधु, पारियात्र इन देशोंको भोग करता है ॥ १५ ॥

अथ शशकयोगफलम् ।

लघुः शरीरोऽद्भुतगः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः। वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः ॥ १६ ॥

नानासेनानिचयनिरतो दंतुरश्चापि किंचिद्धातोर्वादे भवति कुशलश्चंचलः कोलनेत्रः । स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजंघो मध्येक्षामः सुललितमती रंध्रद्वेषी परेषाम् ॥ १७ ॥

शशकयोगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य छोटा शरीरवाला, अद्भुत, क्रोधसहित, अत्यंत शठ, शूर, जंगलमें प्रचार करनेवाला, वन, पर्वत, किला, नदी इनके बीचमें आसक्त, अतिथियोंका प्यारा, अति छोटा नहीं, किंतु

प्रसिद्ध होता है ॥ १६ ॥ अनेक सेनाको इकट्ठा करनेमें तत्पर, कुछ छिदरे दांत, धातुकी परीक्षामें कुशल, चंचल कंज नेत्र, स्त्रीमें आसक्त, परधनका हरनेवाला, माताका भक्त, उत्तम जांघोंवाला, बीचमें दुर्बल, शोभायमान बुद्धि, दूसरेके छिद्रोंको देखनेवाला होता है ॥ १७ ॥

पर्य्यंकशंखशरशस्त्रमृदंगमालावीणोपमा खलु करे चरणे च रेखा । वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं सम्यक्च्छशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ १८ ॥

पर्यंक, शंख, बाण, तलवार, मृदंग, माला, वीणा इन चिह्नोंके समान निश्चय करके हाथ पैरोंमें रेखा होती है जिसके,सत्तर वर्षकी उमरतक भले प्रकार राज्य करता है यह शशक नाम योग मुनीश्वरोंने कहा है ॥१८॥

अथ पंचमहापुरुषभंगयोगः ।

केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवंति ।
कुर्वंति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छंति ते केवलसत्फलानि ॥ १९ ॥

महापुरुषयोगोऽयं पंचपूर्वमुनिः कृतः ।
तदुक्तं श्यामलालेन संदृष्ट्वा जातकोत्तमैः ॥ २० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते पंचमहापुरुषयोगवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

भौमादि ग्रह सूर्य अथवा चंद्रमासहित केंद्रमें उच्चके प्राप्त हों तो अपनी दशामें पृथिवीका पति नहीं करते हैं, केवल उत्तम फलके दाता होते हैं ॥ १९ ॥ ये पांच महापुरुष योग पूर्वमुनीश्वरोंने किये सो योग उत्तम जातकको देखकर श्यामलालकरके कहे गये ॥ २० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ राशिप्रभेदाध्यायप्रारंभः ।

कालनरस्यांगम् ।

शीर्षास्यं मदनं च बाहुयुगलं हृच्चोदरं कट्यथो
बस्तिर्गुह्यमुरू च जानुजघने पादद्वयं वै क्रमात् ।
मेषाद्याः किल राशयः समुदिताः पूर्वे सुबोधाय य-
त्वेके लग्नभतश्च आद्यवयवा ज्ञेयास्तु निःसंशयाः ॥ १ ॥

मनुष्योंके जन्मकालमें नराकार चक्र बनाकर उसके शिरपर मेष राशि स्थापित करे । मुख वृष, दोनों बाहें और छातीमें मिथुन, यथा (मिथुनं तृतीयः प्रजायते स्कंधभुजांगदेशे) हृदयमें कर्क,पेटमें सिंह, कमरमें कन्या,नाभिके नीचे तुला,लिंग गुदा वृश्चिक,जंघा दोनों धन,पैरोंके बीचकी संधि मकर,पिंडली दोनों कुंभ, चरण दोनों मीन हैं। इसी तरह सब अंगोंमें सब राशियोंको स्थापित करके उनको कालपुरुषके अंग माने। इसका प्रयोजन यह है जिस राशिमें शुभाशुभग्रह स्थित हों वह राशि कालपुरुषके जिस अंगोंमें हो उस अंगको पुष्ट अथवा क्षीण कहे । मेषको आदि लेकर जो राशि कही है इनको लग्नभ आद्यवयव राशि क्षत्र ऋक्ष ग्रह भवनादि कहते हैं । जहां जो नाम आवे उसको राशि जानना चाहिये ॥ १ ॥

अथांगविभागप्रयोजनम् ।
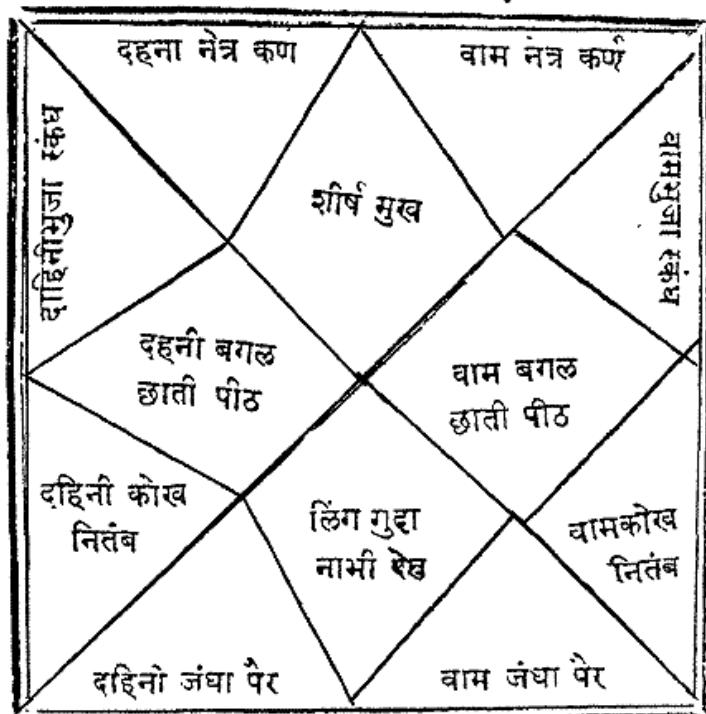
कालनरस्यावयवान् जंतूनां चिंतयेत्प्रसवकाले ।
सदसद्ग्रहसंयोगात्पुष्टान् सोपद्रवांश्चापि ॥ २ ॥

कालपुरुषके अंग प्रत्यंग वा जीवोंके अंग जन्मकालमें जो राशि शुभग्रहसहित हो कालपुरुषके जिस अंगमें हो, सो अंग बलवान् कहना चाहिये और जो राशि पापग्रहसहित हो सो अंग घातसहित कहना अर्थात् इन अंगोंको निर्बल वा व्रण तिल लसहन वहां जानना ॥ २ ॥

अब दूसरे प्रकारसे कुंडलीके अनुसार मनुष्य वा पशुपक्षीके अंगके स्थान लिखते हैं सो आगे चक्रमें देखना, उन स्थानोंको अच्छे ग्रहोंके संयोगसे अच्छा कहना पापग्रहके संयोगसे उस स्थानको घाती कहाना चाहिये॥

अथ अंगचक्रम्।

अथ भचक्रराशिव्यवस्थामाह।

अश्विनी भरणी मेषः कृत्तिकापाद एव च। तत्पादत्रितयं ब्राह्मं वृषः सौम्यदलं तथा ॥३॥ सौम्यार्द्धमार्द्रा मिथुनमादित्यचरणत्रयम्। तत्पादः पुष्यमाश्लेषा राशिः कर्कटकः स्मृतः ॥ ४ ॥ पित्र्यं भागमथार्यम्णो भागः सिंहः प्रकीर्तितः। तत्पादत्रितयं कन्या हस्तचित्रार्द्धमेव च ॥ ५ ॥

अश्विण, भरणी, कत्तिकाके एक चरणतक मेष राशि होती है। और कृतिकाके तीन चरण, रोहिणी, मृगशिरके दो चरणतक वृषराशि होती है ॥३॥ मृगशिरके दो चरण और आर्द्रा, पुनर्वसुके तीन चरणतक मिथुन राशि होती है। पुनर्वसुका एक चरण, पुष्य, आश्लेषा नक्षत्रतक कर्कराशि होती है ॥४॥ मघा, पूर्वा, उत्तराके एक चरण तक सिंह राशि होती है। उत्तराके तीन चरण, हस्त और आधी चित्रातक कन्याराशि जाननी चाहिये॥ ५॥

तुला चित्रादलं स्वाती विशाखाचरणत्रयम् । तत्पादं मित्र-
दैवत्यं ज्येष्ठा वृश्चिक उच्यते ॥ ६ ॥ मूलमाप्यं तथा धन्वि-
पादो विश्वेश्वरस्य च । तत्पादत्रितयं विष्णुर्मकरो वासवं
दलम् ॥ ७ ॥ तद्दलं वारुणं कुंभस्तथाजचरणत्रयम् ।
तत्पादमेकं मीनः स्यादहिर्बुध्न्य च रेवती ॥ ८ ॥

चित्रार्द्ध, स्वाती, विशाखाके तीन चरणतक तुलाराशि होती है। विशाखाका एक चरण, अनुराधा, ज्येष्ठाके अंततक वृश्चिकराशि होती है ॥६॥ मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढाके एक चरणतक धनराशि होती है। उत्त-राषाढाके तीन चरण, श्रवण, धनिष्ठाके दो चरणतक मकर राशि होती है ॥ ७ ॥ आधी धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदाके तीन चरणतक कुंभराशि होती है। पूर्वाभाद्रपदाके एक चरण और उत्तराभाद्रपदा, रेवतीके अंततक मीन राशि होती है ॥ ८ ॥

अथ राशिस्वरूपम् ।

झषद्वयं मीन इति प्रदिष्टो नक्रो मृगास्यो मिथुनो नृयुग्मम् ।
वीणागदाभृच्च तुलाधरो ना धनुर्धरो ना धनुरश्वजंघः ॥ ९ ॥
तरिस्थिता तु कन्यका हुताशसस्यसंयुता ।
सरिक्तकुंभपूरुषो घटः स्वनामवत्परे ॥ १० ॥

दो मछली उसकी पूछ उसके मुहमें ऐसा मीन राशिका स्वरूप है। मक-रराशिका मृगकासा मुख, देह मगरके समान है। मिथुनराशिका स्वरूप स्त्री पुरुष दोनों जोडा हैं, वीणा धारण किये स्त्री, गदा धारण किये पुरुषके सदृश मिथुनराशि है। तराजू लिये पुरुषके समान तुलाराशिका स्वरूप है। धनुषको धारण किये, घोडेके समान जंघवाले पुरुषके सदृश धन है॥९॥ नावमें स्थित एक हाथमें अग्नि, दूसरे हाथमें तृणको लिये ऐसा कन्याराशिकास्वरूप है। वाम-कंधेपर खाली घडा धरे पुरुषके समान कुंभराशिका रूप है। शेषराशियोंका ना-मके समान स्वरूप है अर्थात् मेषका मेष (मेंढे) के समान, वृषका बैलके सदृश, सिंहका शेरके समान, कर्कका गिगचेके समान स्वरूप जानना चाहिये॥ १०॥

अथ राशिस्वामी ।

कुजः सितो बुधो विधुर्भगुज्ञशुक्रभूमिजाः ।
सुरेज्यमन्दसूर्यजा गुरुः क्रमाच्च भेश्वराः ॥ ११ ॥

मंगल,शुक्र, बुध, चंद्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनैश्वर, शनैश्वर, बृहस्पति ये ग्रह क्रमसे मेषादिराशियोंके स्वामी हैं, अर्थात् मेषका मंगल, वृषका शुक्र, मिथुनका बुध, कर्कका चंद्रमा, सिंहका सूर्य, कन्याका बुध, तुलाका शुक्र, वृश्चिकका मंगल, धनका बृहस्पति, मकरका शनैश्वर,कुंभका शनैश्वर, मीनका बृहस्पति स्वामी है ॥ ११ ॥

अथ राशिस्वामिचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मंगल.	शुक्र.	बुध.	चंद्रमा.	सूर्य.	बुध.	शुक्र.	मंगल.	बृहस्पति.	शनैश्वर.	शनैश्वर.	बृहस्पति.

अथ राशिनामानि ।

छागः क्रियो मेष अविस्त्वजः स्याद्वृषोक्षगावो वृषभश्च तावुरिः ।
द्वंद्वो नृयुग्मो मिथुनोथ युग्मोथो वैणिकाख्योजितमोथजित्मः १२
कर्कः कुलीराह्वयकर्कटौ च सिंहाख्यकण्ठीरवकेसरी च ।
लेयो मृगेन्द्रश्च हरिश्च कन्या बालाऽबला स्त्री प्रमदांगनाख्या १३॥

छाग, क्रिय, मेष, अवि, अज ये मेषराशिके नाम हैं ॥

अथ वृषराशिनामानि ।

वृष, उक्ष, गाव, वृषभ, तावुरि ये वृषराशिके नाम हैं ॥

अथ मिथुनराशिनामानि ।

द्वंद्व, नृयुग्म, मिथुन, युग्म, वैणिक, जितम, जित्म ये मिथुनराशिके नाम हैं ॥ १२ ॥

अथ कर्कराशिनामानि ।

कर्क, कुलीर, कर्कट ये कर्कराशिके नाम हैं ॥

अथ सिंहराशिनामानि ।

सिंह, कंठीरव, केसरी, लेय, मृगेंद्र, हरि ये सिंहराशिके नाम हैं ॥

अथ कन्याराशिनामानि ।

कन्या,बाला, अबला, स्त्री,प्रमदा, अंगना ये कन्याराशिके नाम हैं १३

पाथोननामाथ तुलाधरः स्यात्तुलाघटो जूकतुले च तौलिः ।
कौर्प्यश्च कीटश्च सरीसृपश्च स स्यादलिर्वृश्चिकसंज्ञ उक्तः॥१४॥
धनुर्धरो चापधरो धनुश्च कोदंडसंज्ञश्च शरासनश्च ।
चापो हयस्तौक्षिककार्मुकोऽथ धन्वी धनाख्यो धनुषस्तथोक्तः १५

अथ तुलाराशिनामानि ।

पाथोन,तुलाधर, तुलाघट, जूक, तुला, तौलि ये तुलाराशिके नाम हैं ॥

अथ वृश्चिकराशिनामानि ।

कौर्प्य, कीट, सरीसृप, अली,वृश्चिक ये वृश्चिकराशिके नाम हैं॥१४॥

अथ धनराशिनामानि ।

धनुर्धर, चापधर, धनु, कोदंड, शरासन, चाप, हय, तौक्षिक, कार्मुक, धन्वी, धन, धनुष ये धनराशिके नाम हैं ॥ १५ ॥

आकोकेरो मृगो नक्रो मकरो मृगवक्त्रकः । घटः कुम्भधरो कुम्भो हृद्रोगः कलशः स्मृतः॥१६॥ शफरी पृथुरोमांत्यो मत्स्यो मीनो झषस्तिमिः । राशिसंज्ञाः स्मृताः ह्येताः प्राचीनमुनिसंमताः॥१७॥

अथ मकरराशिनामानि

आकोकर, मृग, नक्र, मकर, मृगवन्मुख ये मकरराशिके नाम हैं ॥

अथ कुम्भराशिनामानि ।

घट, कुंभधर, कुंभ, हृद्रोग, कलश ये कुंभराशिके नाम हैं ॥ १६ ॥

अथ मीनराशिनामानि ।

शफरी,पृथुरोम, अंत्य, मत्स्य, मीन, झष, तिमि ये मीन राशिके नाम हैं। ये राशिसंज्ञा पुराने मुनीश्वरोंकी संमतिसे कही है ॥ १७ ॥

अथ राशीनां वर्णः ।

रक्तः सितो हरितपाटलको ततश्च पांडुर्विचित्रस्त्वसितः पिशंगः ।
स्यात्पिंगलः कर्बुरबभ्रुभास्वान् वर्णास्त्वजादेः क्रमशो निरुक्ताः १८

मेषराशिका लाल वर्ण है, वृषका सफेद, मिथुनका हरा, कर्कका गुलाबी, सिंहका पीत धूसर वर्ण, कन्याके अनेक रंग हैं। तुलाका श्याम, वृश्चिकका सोनेके रंगके माफिक, धनराशिका पीला वर्ण, मकरका लाल सफेद, कुम्भका निउलेके समान, मीनका मछलीके सदृश वर्ण कहना चाहिये। ये नष्ट वस्तु इत्यादिमें विचार करना ॥ १८ ॥

अथ राशीनां वर्णचक्रम् ।

रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
वर्ण.	लाल.	सफेद.	हरित.	गुलाबी.	धूसरपीत.	अनेकवर्ण.	श्याम.	सुवर्णवत्.	पीतवर्ण.	सफेदलाल	नकुलवत्.	मीनवर्ण.

अथ राशीनां पुंस्त्रीसंज्ञामाह ।

पुंस्त्री क्रूराक्रूरौ चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाश्च ।
अजवृषमिथुनकुलीराः पंचमनवमैः सहेन्द्राद्याः ॥ १९ ॥

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ ये राशि क्रूर हैं। वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर ये राशि सौम्य कहाती हैं ॥

अथ चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञामाह ।

मेष, कर्क, तुला, मकर ये राशि चरसंज्ञक कहाती हैं। वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ इन राशियोंको स्थिर कहते हैं। मिथुन, कन्या, धन, मीन

इन राशियोंको द्विस्वभाव कहते हैं । मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ इनकी पुरुष संज्ञा है । और वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन इन राशियोंकी स्त्रीसंज्ञा है ॥

अथ राशीनां दिगीशमाह ।

मेष, वृष, मिथुन, कर्क ये चारों राशि आप और अपनेसे पांचवें नवमी राशिसहित पूर्वादि दिशाओंमें रहती हैं अर्थात् मेष, सिंह, धन ये पूर्व दिशाके ईश हैं । वृष, कन्या, मकर ये राशि दक्षिणदिशाके ईश हैं । मिथुन, तुला, कुम्भ ये राशि पश्चिमदिशाके ईश हैं और कर्क, वृश्चिक, मकर, मीन ये राशि उत्तरदिशाके स्वामी हैं ॥ १९ ॥

अथ क्रूरसौम्यपुरुषस्त्रीचरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू. सौ.
पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु. स्त्री.
च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च. स्थि. द्वि.

अथ दिगीशचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
पू.	दक्षिण.	पश्चिम.	उत्तर.	पू.	दक्षिण.	पश्चिम.	उत्तर.	पू.	दक्षिण.	पश्चिम.	उत्तर.	दिशा.

अथ चतुष्पदादिसंज्ञामाह ।

नक्राद्यखंड धनुषः परार्द्धं गोसिंहमेषाश्च चतुष्पदाः स्युः ।
कन्यानृयुग्मं घटतूलभृच्च चापादिखंडं द्विपदा प्रदिष्टाः ॥ २० ॥

मकरका पूर्वार्द्ध और धनका परार्द्ध, वृष, सिंह, मेष इन राशियोंकी चतुष्पद संज्ञा है और कन्या, मिथुन, कुंभ, तुला इन राशियोंकी द्विपदसंज्ञा है और धनका पूर्वार्द्ध भी द्विपदसंज्ञक है ॥ २० ॥

अथ कीटसंज्ञामाह ।

मृगो तदर्द्धं शफरीकुलीरौ नीरेचराः कीटक एव कीटः ।
संध्याद्युरात्रं बलिनो भवंति कीटा नराः साऽप्यचतुष्पदाख्याः॥२१

मकरराशिका पूर्वार्ध, मीन, कर्क, वृश्चिक इन राशियोंकी जलचर कीटक कीट संज्ञा है। कीट राशि सायंकालके समय बली और द्विपदराशि दिनमें बली और चतुष्पद राशि रात्रिमें बली होती हैं ॥ २१ ॥

अथ चतुष्पदचक्रम्.					द्विपदचक्रम्.						जलचर चक्रम्.			
म.	ध.	वृ.	सिं.	मे.	क.	मि.	तु.	कुं.	ध.	म.	क.	वृ.	मी.	रा.
पूर्वार्द्धचतुष्पाद्.	परार्द्धचतुष्पाद्.	चतुष्पाद्.	चतुष्पाद्.	चतुष्पाद्.	द्विपद्.	द्विपद्.	द्विपद्.	द्विपद्.	पूर्वार्द्धद्विपद्.	परार्द्धजलचर.	जलचर.	कीट.	जलचर.	संज्ञा.

अथ राशीनां कालबलचक्रम् ।

मे.	वृ.	सिं.	ध.	म.	क.	मि.	तु.	कुं.	ध.	म.	क.	वृ.	मी.	रा.
रात्रिबली	रात्रिबली.	रात्रिबली,	रात्रिबली.	रात्रिबली.	दिनबली.	दिनबली,	दिनबली.	दिनबली,	दिनबली,	संध्याब.	संध्याब.	संध्याब.	संध्याब.	कालब.

अथ राशीनां केंद्रबलमाह ।

लग्नस्थिताः पूर्वगता नराख्याश्चतुष्पदा याम्यगताः खभस्थाः ।
कीटाः प्रतीच्यां बलिनोस्तसंस्था रसातलस्था जलजाश्च सौम्यैः२२

मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ, धनका पूर्वार्द्ध ये नरसंज्ञक राशि जन्मलग्नमें मूर्तिवर्त्ती बली पूर्व दिशामें होती हैं। वृष, सिंह, मेष, मकरका पूर्वार्द्ध, धनका परार्द्ध ये चतुष्पदराशि दशमस्थानमें दक्षिणदिशामें बली होती हैं और वृश्चिकराशि कीटसंज्ञक सप्तम घरमें पश्चिमदिशामें बली होती हैं और कर्क, मीन, मकरका परार्द्ध ये राशि जलचर चतुर्थस्थानमें उत्तरदिशामें बली होती हैं ॥ २२ ॥

अथ राशीनां दिनरात्रिबलम् ।

मेषो वृषो द्वंद्वकुलीरचापकुरंगवक्राश्च निशाबलाः स्युः ।
तुलाधरो वृश्चिककुम्भभृच्च कन्यालिमीना दिवसात्मिकाः स्युः २३

मेष, वृष, मिथुन, कक, धन, मकर ये रात्रिमें बलवान् होती हैं और कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन, कुंभ, सिंह ये राशि सदैव काल दिनमें बली होती हैं ॥ २३ ॥

अथ दिनरात्रिबलचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	कर्क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
रात्रि.	रात्रि.	रात्रि.	रात्रि.	दिन.	दिन	दिन.	दिन.	रात्रि.	रात्रि.	दिन.	दिनरात्रि	दिनरात्री

अथ पृष्ठोदयमाह ।

अविर्वृषः कर्कधनुर्धराश्च पृष्ठोदयाख्यामकरः सदा ह्यः ।
कन्यातुलायुग्मघटालिसिंहाः शीर्षोदयाख्या ह्युभयोदयोंत्यः २४॥

मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर ये राशि पृष्ठोदय हैं । कन्या, तुला, मिथुन, कुंभ, सिंह, वृश्चिक ये राशि शीर्षोदय हैं और मीनराशि पृष्ठोदय शीर्षोदय दोनों हैं ॥ २४ ॥

अथ पृष्ठोदयशीर्षोदयचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि.
पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीर्षो.	पृष्ठो.	शीर्षो.	शीर्षो.	शीर्षो.	शीर्षो.	पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीर्षो.	उभयो.	पृष्ठो. शीर्षो.

अथ सप्तवर्गमाह ।

क्षेत्रं होरात्र्यंशसप्तांशकाश्च नन्दांशो वा द्वादशत्रिंशदंशाः ।
पूर्वैः प्रोक्ताः सप्तवर्गाः समौजे होरे स्यातामिंदुरव्यो रवींद्वोः ॥२५॥

जिस ग्रहकी जो राशि है उसको क्षेत्र कहते हैं और उसका होरा कहाता है और राशिके तीसरे भागको द्रेष्काण कहते हैं और सातवें भागका नाम सप्तांश और नौवें हिस्सेका नाम नवांश है और राशिके बारहवें हिस्से का नाम द्वादशांश होता है और तीसरे हिस्सेका नाम त्रिंशांश कहाता है ॥

अथ होराकथनम् ।

एक राशिके पंद्रह २ अंशके दो भाग किये उन हर एकको होरा कहते हैं । विषमराशि अर्थात् मेष,मिथुन,सिंह,तुला,धन,कुम्भ इनमें पहिले पंद्रह अंशतक सूर्यका होरा अर्थात् सिंहराशिका होता है और पंद्रहसे तीस अंशतक चंद्रमाका अर्थात् कर्क राशिका होरा होता है और समराशियोंका याने वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन इन राशियोंमें पहिले पंद्रह अंशतक चंद्रमाका अर्थात् कर्कराशिका होरा रहता है और पंद्रहसे तीस अंश तक सूर्य अर्थात् सिंहराशिका होरा होता है ॥ २४ ॥

अथ होराचक्रम् ।

मे	वृ.	मि	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु	मी	र.
सू ५	चं ४	सू ५	चं. ४	सू ५	चं. ४	सू. ५	चं. ४	सू ५	चं ४	सू ५	च. ४	अंश. १५
चं ४	सू ५	च ४	सू २	चं. ४	सू. ५	च. ४	सू ५	चं. ४	सू ५	चं. ४	सू. ५	३०

अथ द्रेष्काणमाह ।

द्रेष्काणाः स्युः स्वीयपञ्चाङ्कपानाम् ।

एक राशि तीस अंशकी होती है उसका तीसरा भाग दश अंश हुए उनमें दश२अंशका प्रत्येक द्रेष्काण होता है । पहिला द्रेष्काण उसी राशि का दूसरा द्रेष्काण उस राशिसे पंचम राशिका और तीसरा द्रेष्काण उस राशिसे नवमराशिका होता है । यथा मेषराशिमें पहिला द्रेष्काण मेषका दूसरा सिंहका, तीसरा धनका, वृषराशिमें पहिला वृषका, दूसरा कन्या का, तीसरा मकरका इत्यादि जानो ॥

अथ द्रेष्काणचक्रम् ।

म.	वृ.	नि.	क	सि	क.	तु	वृ	ध.	म	कुं	मी
मे. १०	वृ. १०	मि. १०	क. १०	सिं. १०	क १०	तु. १०	वृ १०	ध. १०	म. १०	कुं. १०	मी. १०
सि २०	क. २०	तु २०	वृ. २०	ध. २०	म. २०	कु. २०	मी. २०	मे. २०	वृ. २०	मि. २०	क. २०
ध ३०	म. ३०	कु ३०	मी. ३०	मे ३०	वृ. ३०	मि. ३०	क. ३०	सिं. ३०	क. ३०	तु. ३०	वृ. ३०

अथ सप्तांशमाह ।

सप्तांशाः स्युस्त्वोजराशौ स्वभाद्याः ॥ द्यूनाद्युग्मे ।

मेषसे लेकर मीनपर्यंत बारह राशिको सप्तांश कहते हैं । राशिका सातवां भाग सप्तांश होता है सो विषमराशि अर्थात् मेष,मिथुन,सिंह, तुला, धन, कुंभ इनमें पहिले इनका ही सप्तांश ४।१७।८।३४ चार अंश सत्रह कला आठ विकला चौतीस प्रतिविकलातक रहता है। इसके बाद फिर दूसरी राशिका फिर तीसरी राशिका। यथा मेषमें पहिले मेषका, फिर वृषका, मिथुनका, कर्कका, सिंहका, कन्याका, तुलातक होता है और समराशिमें पहिले सातवीं राशिका याने वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन इनमें पहिले सातवीं राशिका सप्तांश होता है। वृषराशिमें पहिला वृश्चिकादि सात राशियोंका होता है और कर्कराशिमें पहिले मकरादि सात राशियों का सप्तांश होता है ॥

अथ सप्तांशचक्रम् ।

मे.	वृ	मि.	क	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशिसप्तांशाः			
मे	वृ.	मि	म.	सिं	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क	४	१७	८	३४
वृ.	ध	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	तु.	८	३४	१७	८
मि.	म.	सिं.	मी	तु	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	१२	५१	२५	४२
क.	क	क.	मे	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	१७	८	३४	१७
सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	२१	२५	४२	५१
क.	मे	वृ	मि	म.	सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	२५	४२	५१	२५
तु	वृ	ध.	क	कुं	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	३०	०	०	०

अथ द्वादशांशमाह ।

द्वादशांशाः स्वभाद्या विज्ञेयास्ते हौरिकैर्बुद्धिमद्भिः ॥ २५ ॥

मेषादि मीनपर्यंत द्वादश राशियोंमें एक राशिका बारहवां भाग द्वादशांश कहाता है और सब राशियोंमें क्रमसे पहिले अपनी ही राशिका द्वादशांश होता है तथा मेषमें पहिला मेषका फिर वृषका फिर मिथुन इत्यादि । और वृष राशिमें पहिला वृषका फिर मिथुन इत्यादिका जानो और मिथुन राशिमें पहिला मिथुनका फिर कर्कका इत्यादि रीतिसे सब राशियोंमें सब राशियोंके द्वादशांश होते हैं । एक द्वादशांश दो २ अंश तीस ३० कलाका होता है ॥ २५ ॥

अथ द्वादशांशचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मे. २।३०	वृ. २।३०	मि. २।३०	क. २।३०	सिं. २।३०	क. २।३०	तु. २।३०	वृ. २।३०	ध. २।३०	म. २।३०	कुं. २।३०	मी. २।३०
वृ. ५	मि. ५	क. ५	सिं. ५	क. ५	तु. ५	वृ. ५	ध. ५	म. ५	कुं. ५	मी. ५	मे. ५
मि. ७।३०	क. ७।३०	सिं. ७।३०	क. ७।३०	तु. ७।३०	वृ. ७।३०	ध. ७।३०	म. ७।३०	कुं. ७।३०	मी. ७।३०	मे. ७।३०	वृ. ७।३०
कर्क. १०	सिं. १०	क. १०	तु. १०	वृ. १०	ध. १०	म. १०	कुं. १०	मी. १०	मे. १०	वृ. १०	मि. १०
सिं. १२।३०	क. १२।३०	तु. १२।३०	वृ. १२।३०	ध. १२।३०	म. १२।३०	कुं. १२।३०	मी. १२।३०	मे. १२।३०	वृ. १२।३०	मि. १२।३०	क. १२।३
क. १५	तु. १५	वृ. १५	ध. १५	म. १५	कुं. १५	मी. १५	मे. १५	वृ. १५	मि. १५	क. १५	सिं. १५
तु. १७।३०	वृ. १७।३०	ध. १७।३०	म. १७।३	कु. १७।३०	म. १७।३०	मे. १७।३०	वृ. १७।३०	म. १७।३०	क. १७।३०	सिं. १७।३०	क. १७।३०
वृ. २०	ध. २०	म. २०	कुं. २०	मी. २०	मे. २०	वृ. २०	मि. २०	क. २०	सिं. २०	क. २०	तु. २०
ध. २२।३०	म. २२।३०	कुं. २२।३०	मी. २२।३०	मे. २२।३०	वृ. २२।३०	मि. २२।३०	क. २२।३०	सिं. २२।३०	क. २२।३०	तु. २२।३०	वृ. २२।३०
म. २५	कुं. २५	मी. २५	मे. २५	वृ. २५	मि. २५	क. २५	सिं. २५	क. २५	तु. २५	वृ. २५	ध. २५
कुं. २७।३०	मी. २७।३०	मे. २७।३०	वृ. २७।३०	मि. २७।३०	क. २७।३०	सिं. २७।३०	क. २७।३०	तु. २७।३०	वृ. २७।३०	ध. २७।३०	म. २७।३०
मी. ३०	मे. ३०	वृ. ३०	मि. ३०	क. ३०	सिं. ३०	क. ३०	तु. ३०	वृ. ३०	ध. ३०	म. ३०	कुं. ३०

अथ नवांशविधिमाह ।

मेषे हरौ चापधरेष्वजाद्याः कन्योक्षनक्रेषु मृगा नवांशाः ।
जूके घटे वैणिकभे तुलाद्याः कर्कालिमीनेषु च कर्कटाद्याः २६

मेषादि मीनपर्यंत द्वादशराशियोंमें नवांश इस प्रकारसे होता है । मेष, सिंह, धन इन राशियोंमें पहिले मेषका नवांश होता है और धनराशिपर्यंत रहता है और कन्या, वृष, मकर इन राशियोंमें पहिले मकरका नवांश होता है सो कन्याराशिपर्यंत रहता है और मिथुन, कुंभ, तुला इन राशियोंमें पहिले तुलाका नवांश होता है और मिथुनराशिपर्यंत रहता है और कर्क, वृश्चिक, मीन इन राशियोंमें पहिले कर्कका नवांश होता है और मीनपर्यंत रहता है । एक राशिमें नौ नवांश भोग करते हैं और एकनवांश तीन ३ अंश वीस कलाका होता है । यथा—एक राशि तीस ३० अंशकी होती है । उसमें नौका भाग दिया लब्ध मिले तीन उनको अंश मानो शेष रहे तीन३ उनको साठ ६० से गुणा किया तो हुए १८०एक सौ अस्सी । उसमें फिर नौका भाग दिया तो लब्ध आये २० वीस शेष कुछ नहीं रहा तो तीन अंश वीस कला ३ । २० का एक नवांश हुआ सो मेषराशिमें पहिले तीन३ अंश २० कलातक मेषका रहा फिर पीछे वृषका फिर मिथुन इत्यादिका जानो । वृषराशिमें पहिले तीन अंश २० कलातक पहिले मकरका नवांश रहता है फिर कुंभका इत्यादि जानो । मिथुनराशिमें पहिले तीन ३ अंश २० वीस कलातक पहिले तुलाका नवांश रहता है फिर वृश्चिक आदिका रहता है और कर्कराशिमें पहिले तीन ३ अंश२० कलातक पहिले कर्कराशिका ही नवांश रहता है फिर सिंह आदि राशिका नवांश क्रमसे होता है । इसी तरह सब जगह जानो और एक यह भी रीति है कि जितनी चरराशि हैं उनमें पहिले उन्हीं राशियोंका नवांश होताहै और स्थिरराशियोंमें पहिले दशवीं राशिका नवांश होता है और द्विस्वभाव राशिमें पहिले पंचमराशिका नवांश होता है सो चक्रमें देखो ॥ २६ ॥

अथ नवांशचक्रम् ।

एक राशिमें नौ नवांश होते हैं एक नवांश ३ अंश २० कलाका होता है ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मे. ३।२०	म. ३।२०	तु. ३।२०	क. ३।२०	मे. ३।२०	म. ३।२०	तु. ३।२०	क. ३।२०	मे. ३।२०	म. ३।२०	तु. ३।२०	क. ३।२०
वृ. ६।४०	कुं. ६।४०	वृ. ६।४०	सिं. ६।४०	वृ. ६।४०	कुं. ६।४०	वृ. ६।४०	सिं. ६।४०	वृ. ६।४०	कु. ६।४०	वृ. ६।४०	सिं. ६।४०
मि. १०	मी. १०	ध. १०	क. १०	मि. १०	मी. १०	ध. १०	क. १०	मि. १०	मी. १०	ध. १०	क. १०
क. १३।२०	मे. १३।२०	म. १३।२०	तु. १३।२०	कुं. १३।२०	मे. १३।२०	म. १३।२०	तु. १३।२०	क. १३।२०	मे. १३।२०	म. १३।२०	तु. १३।२०
सिं. १६।४०	वृ. १६।४०	कुं. १६।४०	वृ. १६।४०	सिं. १६।४०	वृ. १६।४०	कु. १६।४	वृ. १६।४०	सिं. १६।४०	वृ. १६।४०	कु. १६।४०	वृ. १६।४०
क. २०	मि. २०	मी. २०	ध. २०	क. २०	मि. २०	मी. २०	ध. २०	क. २०	मि. २०	मी. २०	ध. २०
तु. २३।२०	क. २३।२०	मे. २३।२०	म. २३।२०	तु. २३।२०	क. २३।२०	मे. २३।२०	म. २३।२०	तु. २३।२	क. २३।२०	मे. २३।२०	म. २३।२०
वृ. २६।४०	सिं. २६।४०	वृ. २६।४०	कुं. २६।४०	वृ. २६।४०	सिं. २६।४०	वृ. २६।४०	कु. २६।४०	वृ. २६।४०	सिं. २६।४०	वृ. २६।४०	कुं. २६।४०
ध. ३०	क. ३०	मि. ३०	मा. ३०	ध. ३०	क. ३०	मि. ३०	मी. ३०	ध. ३०	क. ३०	गि. ३०	मी. ३०

अथ त्रिंशांशविधि ।

शरे ५ षु ५ नागा ८ द्रि ७ समीरणा ५ नां भौमार्किजीवज्ञसितास्त्वधीशाः । त्रिंशांशकानां विषमे समर्क्षेषूक्ताद्विलोमाः खलु ज।तकज्ञैः ॥ २७ ॥

मेषादि मीनपर्यंत द्वादशराशियोंमें त्रिंशांश इस तरहसे होता है, याने मेष, मिथुन, सिंह, धन, कुंभ, तुला इन राशियोंमें पहिले पांच ५ अंशतक मंगलका अर्थात् मेषराशिका होता है फिर पांचसे लेकर दश अंशतक शनैश्चरकी कुम्भराशिका त्रिंशांश रहता है फिर दशसे लेकर अठारह अंशतक बृहस्पतिकी राशि धनका त्रिंशांश होता है और अठारहसे लेकर पचीस अंशतक बुधकी राशि याने मिथुनका त्रिंशांश होता है फिर पचीससे लेकर

तीस अंशतक शुक्रकी तुला राशिका त्रिंशांश होता है और समराशियोंमें वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन इन राशियोंमें पहिले उलटा समझना चाहिये।यथा—पांच अंशतक शुक्रकी राशि वृषका त्रिंशांश रहता है। दूसरा पांच अंशसे लेकर बारह अंशपर्यंत बुधकी राशि कन्याका त्रिंशांश होता है और बारह अंशसे लेकर वीस अंशपर्यंत बृहस्पतिकी राशि मीनका त्रिंशांश होता है और वीस अंशसे लेकर पचीस अंशपर्यंत शनैश्चरकी राशि मकर-का त्रिंशांश रहता है और पचीस अंशसे लेकर तीस अंशपर्यंत मंगलकी राशि वृश्चिकका त्रिंशांश रहता है सो आगे चक्रमें देखो ॥ २७ ॥

अथ त्रिंशांशचक्रम् ।

ग्रह	मं.	श.	बृ.	बु.	शु.	स्वामी.
विषमराशि.	५	१०	१८	२५	३०	अंश. ३०
ग्रह	शु.	बु.	बृ.	श.	मं.	स्वामी.
समराशि.	५	१२	२०	२५	३०	अंश. ३०

अथ भावनामानि ।

तनुर्धनं च भ्रातारं सुहृद्पुत्रो रिपुस्त्रियः । मृत्युश्च धर्मकर्माय व्ययभावाः प्रकीर्तिताः ॥ २८ ॥

तनु, धन, भ्रातृ, सुहृद्, पुत्र, रिपु, स्त्री, मृत्यु, धर्म, कर्म, आय, व्यय ये भाव कहे हैं अर्थात् लग्नका तनु, दूसरेका धन, तीसरेका भ्रातृ, चौथेका सुहृद्, पांचवेंका पुत्र, छठेका रिपु, सातवेंकी स्त्री, आठवेंका मृत्यु, नौवेंका धर्म,दशवेंका कर्म,ग्यारहवेंका आय,बारहवेंका व्यय नाम है॥२८॥

अथ भावनामचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भवा
तनु	धन	भ्राता	सुहृद्	पुत्र	रिपु	स्त्री	मृत्यु	धर्म	कर्म	आय	व्यय	नाम

अथ केन्द्रस्थाननाम ।

अथ च केन्द्रचतुष्टयकंटकं तनुसुखांबरसप्तमभे स्मृतम् ।
पणफरं धनलाभसुताष्टमं सहजशत्रुनवांत्यमपोक्लिमम् ॥२९॥

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम इन स्थानोंको केंद्र, चतुष्टय, कंटक, लग्नसद ये चारों नाम हैं ॥

अथ पणफरनाम ।

दूसरे, ग्यारहवें, पंचम, अष्टम इन स्थानोंको पणफर कहते हैं ॥

अथापोक्लिमनाम ।

तीसरा, छठा, नवम, बारहवां इनको आपोक्लिम कहते हैं ॥ २९ ॥

अथ त्रिकोणसंज्ञामाह ।

अथ त्रिकोणं नवपंचमर्क्ष स्यात्त्रित्रिकोणं नवमं च तद्वत् ।
षष्ठत्रिकोणं रिपुभं निरुक्तं तुर्याष्टमर्क्षं चतुरस्रसंज्ञम् ॥ ३० ॥

नवम,पंचम स्थानको त्रिकोण कहते हैं और नवमसे तीसरे ग्यारहवें स्थानको भी त्रिकोण कहते हैं और ग्यारहवेंसे तीसरा लग्न होता है उसको भी त्रिकोण कहते हैं और लग्नसे तीसरा स्थान तृतीय हुआ उसको भी त्रिकोण कहते हैं और तीसरेसे तीसरा स्थान पंचम हुआ उसको भी त्रिकोण कहते हैं और छठा त्रिकोण छठे घरका भी नाम है ॥

अथ नामान्तर ।

और चौथे आठवें घरका नाम चतुरस्र भी है ॥ ३० ॥

अथ ग्रहाणां त्रिकोणस्थानमाह ।

ये मंदाद्यास्त्रिखेटाः कलियुगबलिना विक्रमारित्रिकोणं
सूर्यस्य क्षोणिसूनोर्दशमभवगृहं कोणसंज्ञं पवित्रम् ।
अन्येषां खेचराणां नवमशिवमुखं तत्त्रिकोणं प्रसिद्धं
सर्वग्रंथेषु धीरा मुनिजनसहिता पांडुपुत्रा वदंति ॥ ३१ ॥

ये जो शनैश्चरको आदि करके तीन ग्रह याने शनि राहु केतु ये कलियुगमें बली हैं और तीसरे छठे स्थानमें त्रिकोणवर्ती कहलाते हैं और सूर्य, मंगल ये दोनों ग्रह दशम, ग्यारहवें घरमें त्रिकोणवर्ती होते हैं और शेष ग्रह बुध, चंद्रमा, शुक्र ये तीनों ग्रह नवम, एकादश, लग्न इन स्थानोंमें स्थित त्रिकोणवर्ती होते हैं । संपूर्ण ग्रंथोंमें धीर मुनीश्वरोंकरके सहित पाण्डुके पुत्र सहदेवजी कहते हैं ॥ ३१ ॥

अथोपचयसंज्ञामाह ।

दुश्चिक्यलाभांबरषष्ठगेहं प्रोक्तं तथैवोपचयं त्रिकं तु ।
षंडत्यरंध्रं च निजं नवांशं वर्गोत्तमाख्यं विबुधा वदंति ॥ ३२ ॥

तीसरे, ग्यारहवें, दशम, छठे इन स्थानोंकी उपचय संज्ञा है ॥

अथापचयसंज्ञामाह ।

लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सातवां, अष्टम, नवम, द्वादश इन स्थानोंकी अपचय संज्ञा है ॥

अथ त्रिकसंज्ञामाह ।

छठे, आठवें, बारहवें इन स्थानोंकी त्रिकसंज्ञा होती है ॥

अथ उपचयादिसंज्ञाचक्रम् ।

१	४	७	१०	केंद्र	कटक	चतुष्टय	लचसद	नाम
२	५	८	११	पणफर				नाम
३	६	९	१२	आपोक्लिम				नाम
३	६	१०	११	उपचय				नाम
१	२	४	५	७	८	९	१२	अ च
६	८	२	त्रिक					न म
९	५	त्रिकोण						

अथ वर्गोत्तमसंज्ञकनवांशमाह ।

चर, स्थिर, द्विस्वभाव राशियोंमें पहिला, पांचवां, नववां नवांश-क्रमसे वर्गोत्तम संज्ञक होता है अर्थात् मे. क. तु. म. इन राशियोंमें पहि-ला नवांश वर्गोत्तम होता है और स्थिर राशि वृ. सिं. वृ. कुंभ इनमें पांचवां नवांश वर्गोत्तम होता है और मि. क. ध. मी. इन राशियोंमें नवम नवांश वर्गोत्तम होता है यह जन्मकालमें शुभफलका देनेवाला है ॥ ३२ ॥

अथ वर्गोत्तमनवांशचक्रम् ।

म.	क.	तु.	म.	वृ.	सि.	वृ.	कु.	मि.	क.	ध.	मी.	राशि
१	१	१	१	५	५	५	५	९	९	९	९	वर्गोत्तम नवांश

अथ तनुभावनामानि।

लग्नं मूर्तिः कल्पमाद्यं वपुः स्यादंगं देहश्चोदयाख्यं तनुश्च। स्वं कोशार्थाख्यं कुटुंबं धनं च प्रांत्यं रिःफश्चांतिमाख्यं व्ययं स्यात् ॥ ३३ ॥

लग्न, मूर्ति, कल्प, आद्य, वपु, अंग, देह, उदय, तनु ये नव नाम लग्नके हैं ॥

अथ धनभावनामानि।

स्व, कोश, अर्थ, कुटुंब, धन ये पांच नाम धनभावके हैं ॥

अथ व्ययभावनामानि।

प्रांत्य, रिःफ, अंतिम, व्यय ये चार नाम बारहवें स्थानके हैं ॥३३॥

अथ चतुर्थभावनामानि।

अंबा तुर्यं वाहनं वेश्म बंधुर्गेहं पातालं हिबुकं सुहृच्च क्षेत्रम्। भूश्च नीरमंबु जलाख्यं संज्ञाः प्रोक्तास्तुर्यभावस्य तज्ज्ञैः ॥३४॥

अंबा, तुर्य, वाहन, वेश्म, बंधु, गह, पाताल, हिबुक, सुहृत्, क्षेत्र, भू, नीर, अम्बु, जल ये नाम चतुर्थस्थानके ज्योतिषियोंने कहे हैं॥३४॥

अथ तृतीयभावनामानि।

दुश्चिक्यविक्रमपराक्रमभं तृतीयं भ्रातुस्ततः सहजभं गदितः पुराणैः। स्यादष्टमं निधनजीवितमायुरंध्रं छिद्रं ततो लयपदं मृतियाम्यसंज्ञम् ॥ ३५ ॥

दुश्चिक्य, विक्रम, पराक्रम, तृतीय, भ्रातृ, सहज ये छः नाम तीसरे स्थानके हैं ॥

अथाष्टमभावनामानि।

अष्टम, निधन, जीवित, आयु, रंध्र, छिद्र, लयपद, मृति, याम्य ये नाम अष्टमस्थानके हैं ॥ ३५ ॥

अथ दशमभावनामानि ।

व्यापारमेषूरणमध्यकर्ममानास्पदाज्ञाजनकं च राज्यम् ।
खमंबरं वै गगनं नभश्च व्योमाख्यमुक्तं दशमं पुराणैः ॥ ३६ ॥

व्यापार, मेषूरण, मध्य, कर्म, मानास्पद, आज्ञा, जनक, राज्य, ख, अंबर गगन, नभ, व्योम, दशम इतने नाम आचार्योंने दशम घरके कहे हैं ॥ ३६ ॥

अथ पंचमस्थाननामानि ।

विद्यात्मजाख्यं तनयं तनूजं वाग्बुद्धिसंज्ञं किल पंचमं स्यात् ।
गुर्वाख्यमुक्तं नवमं तपश्च भाग्याभिधा धर्मक्रियाश्च पुण्यम् ३७

विद्या, आत्मज, तनय, तनुज, वाक्, बुद्धि ये नाम निश्चय करके पंचमस्थानके हैं ॥

अथ नवमस्थाननामानि ।

गुरु, नवम, तप, भाग्य, धर्म ये नाम नवमस्थानके मुनीश्वरोंने कहे हैं ॥ ३७ ॥

अथ सप्तमस्थाननामानि ।

जामित्रमस्तं मदनं द्युनद्यूनं स्मरं मदः ।
स्त्रीकामाख्यमिति प्रोक्तं सप्तमं पूर्वसूरिभिः ॥ ३८ ॥

जामित्र, अस्त, मदन, द्युन, द्यून, स्मर, मद, स्त्री, काम ये नाम सप्तमस्थानके पहिले विद्वानोंने कहे हैं ॥ ३८ ॥

अथ षष्ठस्थाननामानि ।

षष्ठः शत्रू रिपुर्द्वेष्यः सपत्नाख्यं च वैरिभम् ।
भवलाभागमं प्राप्तिमायमेकादशं स्मृतम् ॥ ३९ ॥

षष्ठ, शत्रु, रिपु, द्वेष्य, सपत्न, वैरि ये छठे स्थानके नाम हैं ॥

अथ एकादशस्थाननामानि ।

भव, लाभ, आगम, प्राप्ति, आय ये नाम एकादशस्थानके हैं ॥ ३९ ॥

अथ लग्नबलज्ञानम्।

स्वस्वामिना वीक्षितसंयुतो वा बुधेन वाचस्पतिना प्रदृष्टः।
स एव राशिर्बलवान् किल स्याच्छेषैर्यदा दृष्टयुतो न चात्र ॥४०॥
राशिर्यदा खेटयुतो न दृष्टः स्वीयस्वभावात्स फलं ददाति।
दृष्टोऽथ युक्तो सदसद्ग्रहेण पापोऽपि सौम्यः शुभदोऽपि पापः॥४१॥

अपने स्वामी करके देखी गई हो जो राशि अथवा अपने स्वामी करके सहित हो अथवा बृहस्पति करके दृष्ट हो सो राशि निश्चय करके बलवान् होती है और शेष ग्रहोंकरके दृष्ट या संयुक्त हो तो वह राशि निर्बल होती है ॥४०॥ और जो राशि किसी ग्रहकरके युक्त दृष्ट न हो तो वह राशि अपने ही स्वभावसे अपना फल देती है और शुभ ग्रह पापग्रहोंकरके दृष्ट अथवा युक्त हो तो भी पापराशि शुभ फलको देती है अगर पापग्रहोंसे दृष्ट युक्त हो तो सौम्यराशी भी पापफलको देती है ॥ ४१ ॥

यो यो हि भावः पतिदृष्टयुक्तोऽथवा शुभैस्तस्य च वृद्धिरस्ति।
हानिस्त्वसौम्यैरथ तद्विलोमाच्चिंत्यं फलं रंध्ररिपुव्ययानाम् ॥४२॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु राशिभदो मयोच्यते।
बहुभिर्जातकैर्दृष्ट्वा श्यामलालेन धीमता ॥ ४३ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-संग्रहे राशिभेदो नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

जो जो भाव अपने स्वामी करके दृष्ट वा युत हो अथवा शुभग्रहों-करके दृष्ट वा युत हो तो उस स्थानकी वृद्धि कहनी चाहिये और पापग्रहों-करके दृष्ट वा युत हो तो उस भावकी हानि कहनी चाहिये। अगर छठे आठवें बारहवें पूर्वोक्त ग्रह स्थित हों तो उलटा फल कहना चाहिये ॥४२॥

इस अध्यायके बीचमें बहुतसे जातकग्रंथोंको देखकर श्यामलाल बुद्धिमान्‌-करके राशिके भेद कहे ॥ ४३ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-
ज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां
राशिभेदवर्णनं नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ ग्रहप्रभेदाध्यायप्रारंभः ।

आत्मा रविः शीतकरो मनस्तु सत्त्वं कुजो भाषणमब्जसूनुः ।
वाचांपतिर्ज्ञानसुखे मदश्च शुक्रो भवेदर्कसुतोऽतिदुःखम् ॥ १ ॥

कालपुरुषकी आत्मा सूर्य है, मन चंद्रमा, सत्त्व अर्थात् धैर्य मंगल है, वाणी बुध है और ज्ञान सुख बृहस्पति है, कामदेव शुक्र है, और दुःख शनैश्चर है इसका प्रयोजन यह है कि जो ग्रह निर्बल अथवा पीडित होकर जिस घरमें स्थित हो बालकके उसी स्थलको खंडित जानना चाहिये और जो ग्रह बली हो तो उसी स्थलको सुखी जानो ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां नृपादिसंज्ञा ।

दिनेशचंद्रौ नरपालमुख्यौ सेनाकुजः सोमसुतः कुमारः । शुक्रे-
ज्यपूज्यौ सचिवौ शनिश्च प्रेष्यस्तु तद्वृत्तिमुपैति जातः ॥२॥

सूर्य चंद्रमा ये दो राजा हैं, मंगल फौजका मालिक अर्थात् सेनापति है और बुध युवराज है, शुक्र बृहस्पति दोनों मंत्री हैं और शनैश्चर दास अथवा दूत है । पूर्वोक्त जो ग्रह जिस भावमें बली अथवा सुखी हो तो बालकको उसी ग्रहकी वृत्ति याने आजीविका कहनी चाहिये यथा—सूर्य चन्द्रमा बली हों तो राजसेवा नृपकार्यसे आजीविका होती है ॥ २ ॥

अथ ग्रहाणां संज्ञा ।

सूर्यो हेलिर्भानुमान्दीनरश्मिश्चंडांशुः स्याद्भास्करोऽहस्करश्च ।

अब्जः सोमश्चंद्रमाः शीतरश्मिः शीतांशुः स्यात् ग्लौर्मृगांकः कलेशः ॥ ३ ॥ आरो वक्रश्चावनेयः कुजः स्याद्भौमः क्रूरो लोहितांगोऽथ पापी । विज्ज्ञः सौम्यो बोधनश्चंद्रपुत्रश्चांद्रिः शांतः श्यामगात्रोऽतिदीर्घः ॥ ४ ॥

सूर्य, हेलि, भानुमान्, दीप्तरश्मि, चंडांशु, भास्कर, अहस्कर ये नाम सूर्यके हैं ॥

अथ चन्द्रनामानि ।

अब्ज, सोम, चन्द्रमा, शीतरश्मि, शीतांशु, ग्लौ, मृगांक, कलेश ये चन्द्रमाके नाम है ॥ ३ ॥

अथ भौमनामानि ।

आर, वक्र, आवनेय, कुज, भौम, क्रूर, लोहितांग, पापी ये मंगलके नाम हैं ॥

अथ बुधनामानि ।

विद्, ज्ञ, सौम्य, बोधन, चन्द्रपुत्र, चांद्रि, शांत, श्यामगात्र, अतिदीर्घ ये बुधके नाम हैं ॥ ४ ॥

अथ गुरोर्नामानि ।

जीवोंऽगिरा देवगुरुः प्रशांतो वाचांपतीज्यत्रिदिवेशवंद्याः । भृगूशनोभार्गवसूनवोऽच्छः काणः कविर्दैत्यगुरुः सितश्च ॥ ५ ॥ छायात्मजः पंगुयमार्कपुत्राः कोणोऽसितः शौरिशनी च नीलः । क्रूरः कृशांगः कपिलाक्षदीर्घौ तमोऽसुरश्चेत्यगुसैंहिकेयौ ॥ ६ ॥ राहुः सुवर्भानुविधुंतुदो स्यात्केतुः शिखी स्याद्ध्वजनामधेयः ॥ ७ ॥

जीव, अंगिरा, देवगुरु, प्रशांत, वाचांपति, इज्य, त्रिदिवेशवन्द्य ये बृहस्पतिके नाम हैं ॥

अथ शुक्रनामानि ।

भृगु, उशना, भार्गवसुनु, अच्छ, काण, कवि, दैत्यगुरु, सित ये शुक्रके नाम हैं ॥ ५ ॥

अथ शनिनामानि ।

छायात्मज, पंगु, यम, अर्कपुत्र, कोण, असित, शौरि, शनि, नील, क्रूर, कृशांग, कपिलाक्ष, दीर्घ ये शनैश्चरके नाम हैं ॥

अथ राहुनामानि ।

तम, असुर, अगु, सैंहिकेय, राहु, स्वर्भानु, विधुंतुद ये राहुके नाम हैं ॥

अथ केतुनामानि ।

केतु, शिखी, वृज ये केतुके नाम हैं । जो जहां संज्ञा आवे उसको इस नामसे जान लेना चाहिये ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ सूर्यस्वरूपम् ।

शूरोऽस्थिसारश्चतुरस्रगात्रः श्यामारुणो वृद्धपटुः पृथुश्च ।
पित्तस्वरूपोऽल्पकचो गभीरो नात्युच्चकोऽर्को मधुपिंगनेत्रः ॥८॥

शूर, संग्राम प्यारा जिनको, अस्थि अर्थात् हाडमें सार, जितने लंबे उतने ही चौडे, श्यामारुण वर्ण, वृद्ध, चतुर,पित्तप्रकृति, थोडे बाल, गंभीर, अधिक ऊंचे नहीं, सहतके समान पीले नेत्र ऐसा सूर्यका स्वरूप है ॥ ८ ॥

अथ चन्द्रस्वरूपम् ।

कामी मृदुर्मध्यवयी सुवक्ता प्राज्ञः सितः कुंचितकृष्णकेशः ।
पद्मेक्षणो वातकफी सुवृत्तः स्याद्रक्तसारः शुभगः शशांकः॥ ९ ॥

विषय करनेवाला, मीठी वाणीका बोलनेवाला, युवा अवस्था कोमल, पंडित, श्वेत वर्ण, काले बाल, कमलसे नेत्र, वात कफवाली प्रकृति, सुडौल, रुधिरमें सार, शोभायमान ऐसा चंद्रमाका स्वरूप है ॥ ९ ॥

अथ भौमस्वरूपम् ।

हिंस्रो युवा पैत्तिकरक्तगौरः पिंगेक्षणो वह्निनिभः प्रचंडः ।
शूरोऽप्युदारो सतमस्त्रिकोणो मज्जाधिको भूतनयः सगर्वः॥१०॥

हिंसा करनेवाला, युवा अवस्था, पित्तकी प्रकृति, गौरवर्ण, कंजे नेत्र, अग्निके समान कांति, प्रचंड, शूर, उदार, छोटा, त्रिकोण स्वरूप, मज्जा अर्थात् चरबीमें सार ऐसा भौमका स्वरूप है ॥ १० ॥

अथ बुधस्वरूपम् ।

प्राज्ञः कलाज्ञो मधुवाक् त्रिदोषी त्वक्सारकः श्यामतनुः शिरालः ।
रजःकुमारोऽप्यथ मध्यरूपो रक्तेक्षणश्चंद्रसुतः सुहृष्टः ॥ ११ ॥

पंडित, नृत्य गान कलाओंका जाननेवाला, मीठी वाणीका बोलने-वाला, त्रिदोष प्रकृति, त्वचामें सार, दूर्वा सदृश श्यामता लिये वर्ण, राज-सी, बालक, मध्यम शरीर, लाल नेत्र, पुष्ट देह ऐसा चन्द्रपुत्रका स्वरूप है ॥

अथ गुरुस्वरूपम् ।

दक्षः सकामः सबलः सगौरः प्राज्ञः सुवृत्तोत्कटबुद्धिसत्त्वः ।
मेदाधिकः सिंहरवः सुवृद्धः पिंगेक्षणो ह्रस्वतनुः सुरेज्यः॥ १२ ॥

चतुर, कामसहित, बलवान्, गौरवर्ण, पंडित, सुडौल, अति बुद्धि-मान्, मेदामें सार, सिंहकीसी चाल, वृद्ध अवस्था, पीले नेत्र, छोटा कद सब गुणोंमें श्रेष्ठ ऐसा बृहस्पतिका स्वरूप है ॥ १२ ॥

अथ भृगुस्वरूपम् ।

सुलोचनः काव्यकरोऽतिकाणः सुखी बली सुन्दरकांतिपूर्णः ।
अनीलवर्णांकितरोमयुक्तो रजोगुणः सर्वगुणाभिरामः ॥१३ ॥

अच्छे नेत्र, काव्य करनेवाला, एक आखसे काने, सुखी, बलवान्, सुन्दर कांतिमान्, नीलवर्णके रोमावलीसे अंकित देह, रजोगुणसहित, सम्पूर्ण गुणोंमें उत्तम ऐसा शुक्रका स्वरूप है ॥ १३ ॥

अथ शनिस्वरूपम् ।

मूर्खोऽलसःकृष्णतनुःकृशांगःस्यात्स्नायुसारो मलिनोऽतिदीर्घः ।
क्रोधी ज्वलत्पिंगदृशोऽर्कसूनुः सपैत्यबाहुः पृथुरोमदंतः ॥ १४ ॥

मूर्ख, आलसी, काला शरीर, दुर्बल देह, नाडियोंमें सार, मलीन, बहुत बडा, क्रोधसहित, पीले नेत्र, बडी भुजा, स्थूल रोम और दांत बडे ऐसा शनैश्चरका स्वरूप है ॥ १४ ॥

अथ ग्रहाणां वर्णाः ।

रक्तः सितो रक्ततरः सुनीलः पीतोऽतिशुक्लस्त्वसितोऽत्र वर्णः ।
सूर्यादधीशा दहनोंऽबुभूमी दामोदरः शक्रशचीविरंचिः ॥ १५ ॥

लाल वर्णका सूर्य स्वामी है, श्वेतवर्णका चन्द्रमा, अधिक लाल वर्णका मंगल, हरे वर्णका बुध अथवा नीले वर्णका बुध स्वामी होता है। पीत वर्णका बृहस्पति, अधिक सफेद अथवा चित्र विचित्र वर्णका शुक्र और कृष्ण वर्णका स्वामी शनैश्चर और राहु केतुका काले अंजनके समान वर्ण होता है। (रविजाविधिरिपू प्रौढनीलांजनाभौ) ये ग्रह इस वर्णोंके स्वामी हैं अथवा इनके वर्ण भी ये ही हैं ॥

अथ ग्रहाणां वर्णेशचक्रम् ।

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	ग्रह
लाल	सफेद	अ. लाल.	नील. हरा.	पीत	सफेद. विचित्र	कृष्ण	श्याम	वर्ण

अथ ग्रहेशमाह ।

सूर्यका अग्नि, चंद्रमाका जल देवता है, भूमि मंगलका और बुधका विष्णु देवता है। बृहस्पतिका इन्द्र, शुक्रका इन्द्राणी, शनैश्चरका ब्रह्मा और राहुकेतुका राक्षस देवता है ॥ १५ ॥

अथ वर्णेशचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु	श	रा	ग्रह
अग्नि.	जल.	भूमी.	विष्णु.	इंद्र.	इंद्राणी.	ब्रह्मा.	राक्षस.	ईश.

अथ दिगीशानाह ।

प्राच्यादितः सूर्यसितारराहुमंदेंदुसौम्यांगिरसो दिगीशाः ।
वेदाधिनाथाः क्रमशः सुरेज्यपूर्वामरेज्यावनिजेंदुपुत्राः॥ १६ ॥

पूर्वादि दिशाओंके क्रमसे सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनैश्वर, चन्द्रमा, बुध,बृहस्पति ये ग्रह स्वामी होते हैं अर्थात् पूर्वदिशाका स्वामी सूर्य, अग्निकोणका शुक्र, दक्षिणका मंगल, नैर्ऋत्यकोणका राहु, पश्चिमका शनैश्वर, वायव्यकोणका चन्द्रमा, उत्तरका बुध, ईशानकोणका बृहस्पति स्वामी है ॥

अथ दिगीशचक्रम् ।

सू.	शुक.	मंगल.	राहु.	सौरी.	चंद्रमा.	बुध.	बृहस्पति.	ईश.
पूर्व.	आग्नेय.	दक्षिण.	नैर्ऋत्य.	पश्चिम.	वायव्य	उत्तर.	ईशान.	दिशा.

अथ वेदनाथानाह ।

यजुर्वेदका स्वामी शुक्र है, ऋग्वेदका स्वामी बृहस्पति है, सामवेदका स्वामी मंगल है और अथर्ववेदका स्वामी बुध है ॥ १६ ॥

अथ ब्राह्मणादिवर्णेशमाह ।

विप्रौ भवेतां गुरुदानवेज्यौ दिनेशभौमौ नरपालमुख्यौ ।
सोमश्च विद्वैश्यकुलप्रसूतौ दिनेशपुत्रस्तु चतुर्थवर्णः ।
चांडालजातिस्त्वथ सैंहिकेयः केतुश्च जात्यंतरमंत्यजादि १७॥

बृहस्पति और शुक्र ये ब्राह्मणवर्णके स्वामी हैं । सूर्य, मंगल क्षत्रियवर्णके स्वामी हैं । चंद्रमा, बुध वैश्यवर्णके स्वामी हैं और शनैश्वर शूद्रोंका स्वामी है, राहु चांडाल वा म्लेच्छोंका स्वामी है और केतु अन्त्यज वर्णका स्वामी होता है ॥ १७ ॥

अथ ब्राह्मणादिवर्णेशचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ईश.
क्षत्री.	वैश्य.	क्षत्री	वैश्य.	ब्राह्मण.	ब्राह्मण.	शूद्र.	चांडाल	अंत्यज.	वर्ण.

अथ पापग्रहसंज्ञामाह ।

क्षीणेंदुभूसूनुदिनेशमंदाः पापा बुधस्तत्सहितस्तु पापः ॥ १८ ॥

क्षीण चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, शनैश्वर, राहु, केतु इनकी पाप संज्ञा है और इन्हीं ग्रहोंसहित बुध हो तो वह भी पापी होता है, बलवान् चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र इनकी शुभ संज्ञा है ॥ १८ ॥

अथ ग्रहाणां पुरुषादिसंज्ञामाह ।

प्रोक्ता नराः सूर्यकुजामरेज्या क्लीबौ शनिज्ञौ युवती सितेंदू ।
सत्त्वं रवीज्यक्षणदाधिपाः स्यू रजःसितारौ ज्ञयमौ तमश्च॥१९॥

सूर्य, मंगल, बृहस्पति ये पुरुष हैं अर्थात् इनकी पुरुष संज्ञा है । शनैश्वर और बुध ये नपुंसक हैं और शुक्र, चंद्रमा इनकी स्त्री संज्ञा है ॥

अथ ग्रहाणां पुरुषादिचक्रम् ।

सू.	मं.	बृ.	पुरुष.
शु.	चं.	०	स्त्री.
बु.	श.	०	नपुंसक.

अथ ग्रहाणां गुणेशमाह ।

सूर्य, बृहस्पति, चंद्रमा सत्त्वगुणके स्वामी हैं और शुक्र, मंगल ये रजोगुणके स्वामी हैं, बुध शनैश्वर ये तमोगुणके स्वामी हैं ॥ १९ ॥

अथ ग्रहणां गुणेशचक्रम् ।

सत्त्व.	रज.	तम.	गुण.
सूर्य.बृ.चं.	शु. मं.	बु. श.	ईश.

अथ ग्रहाणां रसज्ञानमाह ।

बुधः कषायः कटुकौ कुजार्कौ पटुर्विधुर्मंदतमौ च तीक्ष्णौ ।
अम्लोशनाख्यो मधुरः सुरेज्यः प्रोक्ता अमी षड्रसनायकाश्च२०

सूर्य कटुकरसका स्वामी है । चन्द्रमा लवण रसका और मंगल

कटुरसका स्वामी है। शनैश्चर, राहु तीक्ष्ण रसके स्वामी हैं। शुक्र अम्ल रसका और बृहस्पति मिष्ट रसका स्वामी है। बुध कषायरसका स्वामी है ॥ २० ॥

अथ ग्रहाणां रसचक्रम् ।

सू.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	चं.	के.	ग्रह
कटुक.	कटुक.	कषाय.	मिष्ट.	अम्ल.	तीक्ष्ण.	तीक्ष्ण.	लवण.	तीक्ष्ण.	रस.

अथ ग्रहाणां लोकमाह ।

सितेंदू पितृलोकेशौ मंदज्ञौ नरकाधिपौ ।
तिर्यग्लोकस्य सूर्यारौ केचित्स्वर्गाधिपो गुरुः ॥ २१ ॥

शुक्र, चन्द्रमा पितृलोकके स्वामी हैं। शनैश्चर, बुध, राहु ये नरकके स्वामी हैं। सूर्य,मंगल मृत्युलोकके स्वामी हैं और बृहस्पति स्वर्गका अधिपति है ॥ २१ ॥

अथ ग्रहाणां लोकचक्रम् ।

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	ईश.
मृत्युलोक.	पितृलोक.	मृत्युलोक.	नरकलोक.	स्वर्गलोक.	पितृलोक.	नरक.	नरक.	लोक.

अथ ग्रहाणां सारमाह ।

भौमस्य मज्जापि वसा गुरोस्तु शुक्रं भृगोस्त्वक् शशिनंदनस्य ।
चंद्रस्य रक्तं दिनपस्य चास्थि स्नायुः शनेर्धातुवशादुपाधिः॥२२॥

मंगल मज्जा सारवशी है। बृहस्पति मेदोसारवशी है। शुक्र वीर्यसारवशी है। बुध त्वचासारवशी है। चन्द्रमा रुधिरसारवशी है। सूर्य अस्थि सारवशी है और शनैश्चर स्नायुसारवशी है। ये ग्रहसार अर्थात् बलवाले होते हैं और इनमें जो ग्रह रोगकारक हो वह उसी धातुसे रोग उत्पन्न करता है ॥ २२ ॥

अथ ग्रहाणां सारचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह.
हाड.	खून.	हाडके भीतरकी मींग	खाल.	चर्बी.	बीज.	नसें.	धातुसार.

अथ ग्रहाणां स्थानमाह ।

देवस्थानं भास्करस्यांबुवासं चंद्रस्याग्निस्थानमंगारकस्य ।
क्रीडास्थानं सोमपुत्रस्य कोशस्थानं जीवस्येवमाहुर्भृगोस्तु २३
सुप्तिस्थानं भानुजस्योत्करं तु सर्पस्थानं सैंहिकेयस्य चैवम् ॥

सूर्यका देवस्थान है । चन्द्रमाका जलस्थान है । मंगलका अग्निस्थान है । बुधका क्रीडास्थान है । बृहस्पतिका कोशस्थान है । शुक्रका शयन स्थान है । शनैश्चरका ऊषर स्थान है और राहुका सर्पस्थान है २३

अथ ग्रहाणां स्थानचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	ग्रह.
देव.	जल.	अग्नि.	क्रीडा.	कोश.	शयन.	ऊषर.	सर्प.	स्थान.

अथ ग्रहणां वस्त्रमाह ।

जीर्णं शनेर्वासरनायकस्य स्थूलं गुरोर्मध्यमकं कवेश्च ॥ २४ ॥
काठिन्यमब्जस्य तु नूतनं वित् क्लिन्नं कुजस्याग्निहतं च वस्त्रम् ।
कंथा फणींद्रस्य तु चित्ररूपा केतोर्महाछिद्रयुता विशेषात् २५॥

शनैश्चरका जीर्ण अर्थात् पुराना वस्त्र है । सूर्यका मोटा वस्त्र है । बृहस्पतिका अधपुराना वस्त्र है । शुक्रका कठिन अर्थात् मजबूत वस्त्र है । चन्द्रमाका नवीन वस्त्र है । बुधका जलसे भीजा हुआ, मंगलका आगसे जला हुआ, राहुका पुराना फटा चित्रविचित्र वस्त्र है । केतुका बहुत छेदवाला वस्त्र है ॥ २४ ॥ २५ ॥

अथ ग्रहाणां वस्त्रचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
मोटा.	नवीन.	अग्नि. दग्ध.	भीजा हुआ.	अध पुराना.	मजबूत	पुराना.	फटा पुराना.	छिद्रा वस्त्र.	वस्त्र.

अथ ग्रहाणां द्रव्यमाह ।

ताम्रं दिनेशस्य निशाकरस्य मणिर्हिरण्यं तु धरासुतस्य ।
शुक्तिर्विदो देवगुरोश्च रौप्यं शुक्रस्य मुक्ता ह्यसमर्कसूनोः ॥२६ ॥
राहोस्तु सीसं शिखिनश्च नैल्यं धरामणिस्तत्कथयंति तज्ज्ञाः ।

सूर्यका तांबा, चंद्रमाकी मणि, मंगलका सोना, बुधका पीतल कांसा, बृहस्पतिकी चांदी, शुक्रका मोती, शनैश्चरका लोहा, राहुका सीसा और केतुका जस्ता द्रव्य है ॥ २६ ॥

अथ ग्रहद्रव्यचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
तांबा.	मणि.	सोना.	कांसा.	चांदी.	मोती.	लोहा.	सीसा	जस्त.	द्रव्य.

अथ ग्रहाणां वस्त्रमाह ।

पीतांबरं देवगुरोर्भृगोस्तु क्षौमांबरं भास्करस्येंद्रगोपम् ॥ २७ ॥
शुक्लं क्षौमंरात्रिनाथस्य चांद्रेः श्यामं क्षौमं रक्तचित्रं कुजस्य ।
वस्त्रं चित्रं पट्टवस्त्रं शनेस्तु नीलं राहोर्जीर्णचित्रान्वितं च ॥ २८ ॥
रूपान्वितं तद्वसनं च केतोर्बलान्वितानां तु वदेद्ग्रहाणाम् ॥ २९॥

बृहस्पतिका पीत वस्त्र है । शुक्रका सफेद रेशमी वस्त्र है । सूर्यका बीरबहूटीके माफिक रंगका वस्त्र है ॥ २७ ॥ चन्द्रमाका सफेद वल्कल वा रेशमी वस्त्र है । बुधका श्याम रेशमी यानी कौशेय वस्त्र है । मंगलका लाल चित्रकारी वस्त्र है और शनैश्वरका चित्रकार पट्ट वस्त्र है । राहुका नील वस्त्र पुराना चित्रित है ॥ २८ ॥ और केतुका नील वस्त्र

चित्रित रूपवान् है । पहले ग्रहसे वस्त्र चौर्यज्ञान वा प्रसूतिका ज्ञान करना ॥ २९ ॥

अथ ग्रहाणां वस्त्रवर्णचक्रम् ।

सू.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
गुले अनार.	श्वेत चित्र.	लाल चित्रित.	श्याम वल्कलब	पीतांबर.	सनका.	रशमी वस्त्र.	नील वस्त्र.	नाल वस्त्र.	वस्त्रवर्ण.

अथ ग्रहाणां ऋतुमाह ।

भृगोर्वसंतः क्षितिसूनुभान्वोर्ग्रीष्मः शशांकस्य ऋतुः प्रवर्षः ।
विदः शरद्देवगुरोस्तु हैम्नो ऋतुः शनेः स्याच्छिशिरस्तु कालः ३०

शुक्रकी वसंत ऋतु है । मंगल सूर्यकी ग्रीष्म ऋतु है । चन्द्रमाकी वर्षा, बुधकी शरद् ऋतु,बृहस्पतिकी हेमंत,शनैश्चरकी शिशिर ऋतु जानना चाहिये । प्रयोजन इनमें जो ग्रह लग्नमें स्थित हो उसकी ऋतु कहनी चाहिये । अगर बहुत ग्रह लग्नमें स्थित हों तो जो ग्रह बलवान् हो उसकी ऋतु जाननी चाहिये । जो कोई ग्रह लग्नमें न हो तो जिसका द्रेष्काण हो उसी ग्रहकी ऋतु जानना चाहिये । यथा वृष लग्न है उससे नवम द्रेष्काण शनैश्चरकेमें जन्म है तो शनैश्चरकी शिशिरऋतुमें जन्म जानो । नष्ट कुंडली इत्यादिमें ऋतु ज्ञान जानो । यथा—वराहः "द्रेष्काणैः शिशिरादयः" ॥ ३० ॥

अथ ग्रहाणां ऋतुचक्रम् ।

सू.	चं.	मं	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह.
ग्रीष्म.	वर्षा.	ग्रीष्म.	शरद.	हेमंत.	वसंत.	शिशिर	ऋतु.

अथ ग्रहाणामूर्ध्वसमदृष्टिमाह ।

अथोर्ध्वदृष्टी दिननाथभौमौ दृष्टिः कटाक्षणे कवींदुसून्वोः ।
शशांकगुर्वोः समभागदृष्टिस्त्वधोक्षिपातस्त्वहिनाथशन्योः ॥ ३१ ॥

सूर्य, मंगल ऊर्ध्वदृष्टि करके देखते हैं। शुक्र, बुध कटाक्ष करके दृष्टि करते हैं। चंद्रमा, बृहस्पति समभाग अर्थात् बराबर दृष्टि करके देखते हैं। राहु, शनैश्चर नीचे दृष्टि करके देखते हैं ॥ ३१ ॥

अथोर्ध्वसमाधोदृष्टिचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	ग्रह.
ऊर्ध्वदृष्टि.	समभाग.	ऊर्ध्वदृष्टि.	कटाक्ष.	समभाग.	कटाक्षदृष्टि.	अधोदृष्टि.	अधोदृष्टि.	दृष्टि.

अथ वृद्धिदृष्टिमाह ।

दृष्टिर्दिक्त्रितये ग्रहे नवशरे वेदाऽष्टके कामभे
पश्यन्त्यर्कविधुज्ञदैत्यगुरवः पादाभिवृद्धिः क्रमात् ।
मंदेज्यक्षोणिभूनां चरणद्विचरणा वह्निपादं तथैव
पूर्णं पश्यंति भावान् वदति मुनिवराः सर्वग्रंथेषु धीराः ॥ ३२ ॥

दशवें, तीसरे, नौवें, पांचवें, आठवें, चौथे, सातवें, सूर्य, चंद्रमा, बुध, शुक्र चरणवृद्धिकरके देखते हैं अर्थात् एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं। यथा-दशवें, तीसरे एक चरण, नौवें पांचवें दो चरण, चौथे, आठवें तीन चरण और सातवें चारों चरण दृष्टिसे देखते हैं। शनैश्चर, बृहस्पति, मंगल ये भी एक चरण, दो, तीन तथा चारों चरणोंसे देखते हैं। यथा-शनि नवम पंचम एक चरण, चतुर्थ अष्टम दो पाद, सप्तम तीन, तृतीय दशम चारों चरणोंमें देखता है और बृहस्पति अष्टम चतुर्थ एक चरण, सप्तम दो पाद, तृतीय दशम तीन पाद, नवम पंचम सम्पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं। मंगल सप्तम स्थानको एक चरण, तृतीय दशम दो चरण, नवम पंचम तीन और चतुर्थ अष्टम चारों चरणोंसे देखता है ॥ ३२ ॥

अथ तमस्य पादवृद्धिदृष्टिमाह ।

सुते सप्तमे पूर्णदृष्टिं तमस्य तृतीये रिपौ पाददृष्टिर्नितांतम् ।

घने राज्यगेहार्धदृष्टिं वदंति स्वगेहे त्रिपादं तथा चैव केतोः ३३॥

राहु, केतु सदैव पंचम, सप्तम पूर्ण, तीसरे, छठे एक पाद, द्वितीय, दशम द्विपाद और अपने घरको त्रिपाद दृष्टिसे देखते हैं ॥ ३३ ॥

अथ ग्रहाणां दृष्टिचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
३ १०	३ १०	७	३ १०	८ ४	३ १०	९ ५	३ ६	३ ६	एकपाद.
९ ५	९ ५	३ १०	९ ५	७	८ ५	४ ८	२ १०	२ १०	द्विपाद.
४ ८	४ ८	९ ५	४ ८	३ १०	४ ८	७	१	१	त्रिपाद.
७	७	४ ८	७	९ ५	७	३ १०	५ ७	५ ७	सम्पूर्ण

अथ सूर्यस्य उच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

तुंगोऽजस्तौलिनीचो गहनचरपतिः पद्मनीप्राणपालः
शत्रू दैत्येज्यमंदौ शशिधरतनयौ यस्य सामान्यभावः ।
शेषा मित्राणि खेटा उपचयशुभगो मध्यमः कोशकोणे
केंद्रे दुष्टोऽतिदुष्टो व्ययगजभवने कीर्तितः कोविदोच्चैः ॥ ३४ ॥

सूर्य मेषका उच्च और तुलाका नीच कहाता है और सिंहराशिका स्वामी है । यह शुक्र शनैश्चरसे शत्रुता रखता है, बुधसे सामान्य प्रीति करता है और चंद्रमा, मंगल, बृहस्पतिसे मित्रभाव रखता है । सूर्य, तीसरे छठे, दशवें, ग्यारहवें इन स्थानोंमें स्थित शुभ फल देता है, द्वितीय, पंचम, नवममें स्थित मध्यम फल देता है, लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशममें स्थित दुष्ट फल देता है और अष्टम, चतुर्थमें स्थित अतिदुष्ट फल देता है ॥ ३४ ॥

अथ चन्द्रस्योच्चनीचमित्रामित्रमाह ।

कर्काधीशो वृषोच्चो जलनिधितनयो वृश्चिको यस्य नीचो
मित्रे चंडांशुसौम्यौ तदनु परखगा यस्य सामान्यभावः ।

पाताले कोशकोणे जनकभवगृहे सर्वसिद्धार्थकारी,
सामान्यो भ्रातृकामे तदनुपरगृहे चंद्रमा न प्रशस्तः ॥ ३५ ॥

चंद्रमा कर्कराशिका स्वामी है। वृषराशिका उच्च और वृश्चिकराशिका नीच कहाता है। यह सूर्य बुधसे मित्रता रखता है। मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चरसे समता भाव रखता है। चन्द्रमा चतुर्थ, द्वितीय, पंचम, नवम, दशम, एकादश इन स्थानोंमें स्थित सम्पूर्ण सिद्धियोंका देने वाला होता है। तृतीय सप्तममें स्थित सामान्य फल देता है और लग्न, षष्ठ, अष्टम और व्ययमें स्थित नेष्ट फल देता है ॥ ३५ ॥

अथ भौमस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

मेषालीशो मृगोच्चः सलिलचरनतश्चंद्रजो यस्य शत्रु-
र्मित्राणींद्वर्कजीवास्तदनुभृगुशनी द्वौ च सामान्यभावौ ॥
राज्ये लाभे त्रिषष्ठे सकलसुखकरः कीर्तितो ब्रह्मपुत्रैर्भावे-
ऽन्यस्मिन्न शस्तो झटिति फलकरो मंगलः खड्गहस्तः ॥ ३६ ॥

मंगल मेष, वृश्चिकराशिका स्वामी है। मकरराशिका उच्च होता है। कर्क राशिका नीच कहाता है। यह चंद्रमा, सूर्य, बृहस्पतिसे मित्रता मानता है। बुधसे शत्रुता रखता है और शुक्र शनैश्चरसे समता रखता है। मंगल दशम, एकादश, तृतीय, षष्ठ स्थानमें स्थित सम्पूर्ण सुखका देनेवाला और लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम और द्वादश इन स्थानोंमें स्थित दुष्ट फलका देनेवाला होता है ऐसा गर्गवसिष्ठादिकोंने कहा है॥ ३६॥

अथ बुधस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

कामेशः कन्यकोच्चः प्रणतजलचरो वैरिणो यस्य चंद्रो
मित्रे दैत्येज्यसूर्यौ कुजशनिगुरवो यस्य सामान्यभावाः ।
लग्ने लाभे चतुर्थे सुतनवजनके कामकोशे प्रशस्तो
भावेऽन्यस्मिन्न शस्तो हिमकरतनयः कीर्तितो गर्गमुख्यैः ॥ ३७ ॥

बुध मिथुनराशिका स्वामी है। कन्याराशि इसकी उच्च है। मीन

राशिका नीच है । यह चन्द्रमासे शत्रुता मानता है । शुक्र सूर्यसे मित्रता रखता है । मंगल, शनैश्चर, बृहस्पतिसे समभाव रखता है । बुध लग्न एकादश चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम, सप्तम और द्वितीय इन स्थानोंमें स्थित अतिश्रेष्ठ फलदाता होता है और तृतीय, षष्ठ, अष्टम और व्यय इन भावोंमें स्थित नष्ट फलका देनेवाला होता है । ऐसा गर्गादि ऋषीश्वरोंने कहा है ॥३७॥

अथ जीवस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

कर्कोच्चो नक्रनीचो विबुधपतिगुरुर्मीनकोदंडनाथो
मित्राणींद्वर्कभौमा रविज अपि समो वैरिणौ सौम्यशुक्रौ ।
कोणे केंद्रायकोशे अतिशुभफलदो मध्यमो भ्रातृगेहे
रंध्रे कैवल्यदाता तदनु परगृहे नैव जीवः प्रशस्तः ॥ ३८ ॥

बृहस्पति कर्कराशिका उच्च है । मकरराशिका नीच है । मीन, धन राशिका स्वामी है । यह सूर्य, चंद्रमा, मंगलसे मित्रता और शनिसे समभाव रखता है । बुध, शुक्र इसके शत्रु हैं । बृहस्पति नवम, पंचम, लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम, एकादश और द्वितीय इन स्थानोंमें स्थित अतिश्रेष्ठ फलदाता है, तृतीय भावस्थित मध्यम फलका देनेवाला है । अष्टमस्थानस्थित मुक्तिका दाता और षष्ठ, व्ययस्थित नेष्ट फलदाता है ॥ ३८ ॥

अथ शुक्रस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

मीनोच्चो नीचकन्यस्तुलवृषभपतिर्वैरिणौ भानुचंद्रौ
सामान्यौ पूज्यभौमौ तदनु च सुहृदौ सौम्यमन्दौ ग्रहौ द्वौ ।
संप्राप्तौ लाभगेहे तनुसुखजनके कोशकोणे प्रशस्तो
भावेऽन्यस्मिन्न शस्तो गणकमुनिवरैः प्रोक्तमित्थं समस्तैः ॥३९॥

शुक्र मीनराशिका उच्च है, कन्याराशिका नीच है तथा तुला और वृषराशिका स्वामी है । यह सूर्य, चन्द्रमासे शत्रुता, बृहस्पति, मंगल इनसे समभाव और बुध, शनैश्चरसे मित्रता रखता है । शुक्र एकादश, लग्न, सुख, दशम, द्वितीय, पंचम और नवम इन स्थानोंमें स्थित अतिश्रेष्ठ फलका

देनेवाला, तृतीय, षष्ठ, अष्टम, सप्तम और व्यय इन भावोंमें स्थित अतिनेष्ट फलका दाता है ऐसा ज्योतिषशास्त्रके ज्ञाता मुनीश्वरोंने कहा है ॥ ३९ ॥

अथ मंदस्योच्चनीचस्वक्षेत्रमित्रामित्रमाह ।

तौलोच्चो मेषनीचो हरिणघटपतिः पद्मिनीपालपुत्रो
दुष्टेंदू (ग्लौ) भानुभौमौ बुधसिततमसो यस्य मित्राणि खेटाः ।
सामान्यो देवपूज्यो रसशिवसहजे अर्कजश्चातिशस्तो
भावेऽन्यस्मिन्न शस्तो मुनिगणसहितैर्भाषितः पूर्वधीरैः ॥४०॥

शनैश्चर तुलाका उच्च है । मेषराशिका नीच है और मकर, कुम्भ राशिका स्वामी है । यह सूर्य, चन्द्रमा, मंगलसे शत्रुता, बुध, शुक्र, राहुसे मित्रता और बृहस्पतिसे समभाव रखता है । शनैश्चरसे छठे,ग्यारहवें और तृतीय इन स्थानोंमें स्थित अति शुभ फलको देता है । लग्न,द्वितीय,चतुर्थ, पंचम,सप्तम, अष्टम, नवम,दशम और द्वादश इन स्थानोंमें स्थित अति नेष्ट फलको देता है ऐसा मुनीश्वरोंके गणसहित पूर्व धीर विद्वानोंने कहा है॥४०॥

अथ तमस उच्चनीचमित्रामित्रमाह ।

कामोच्चः कामिनीशः प्रणतशरधरः सिंहिकागर्भभूतो
दुष्टाः सूर्येन्दुभौमा बुधसितशनयो यस्य मित्राणि खेटाः ।
सामान्यो देवमंत्री सहजरसशिवे सर्वदोषप्रहर्ता
शेषे भावे न शस्ताः कलियुगफलदाः कालरुद्रा वदंति॥ ४१ ॥

राहु मिथुनराशिका उच्च है । कन्याराशिका स्वामी है । धनराशिका नीच है । यह सूर्य, मंगल, चन्द्रमासे शत्रुता रखता है । बुध,शुक्र, शनैश्चरसे मित्रता और बृहस्पतिसे समता रखता है।राहु तीसरे,छठे,ग्यारहवें स्थानमें स्थित सम्पूर्ण दोषका हरनेवाला और लग्न, द्वितीय, चतुर्थ,पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, व्यय स्थानमें स्थित अतिनेष्ट फलका देनेवाला है। राहु विशेषकरके कलियुगमें फल देता है ऐसा कालरुद्र कहते हैं॥४१॥

अथ केतोरुच्चनीचमित्रामित्रमाह ।

चापोच्चः कामनीचो घनरसचरपः कज्जलाभः करालः
सिंहो मूलत्रिकोणं हितसमरिपवो राहुवद्भावकर्ता ।
कोपात्मा कोपकेलिर्हिमकरदमनः क्रूरकर्मा कठोरो
म्लेच्छानां कार्यकर्ता झटिति कलियुगे विक्रमागारकेतुः ॥४२॥

केतु धनराशिका उच्च है, मिथुनराशिका नीच है और मीनराशिका स्वामी है । काजलकासा वर्णवाला है । कराल है। सिंहराशिका मूलत्रिकोण है । मित्रके समान शत्रु है । राहुके सदृश भाव फलका दाता है,क्रोधी है । क्रोध हीहै खेल जिसका,चंद्रमाको दमन करनेवाला,दुष्ट कर्मोंका करनेवाला, कठोर, कलियुगमें मुसल्मानोंके कामको जल्दी करनेवाला केतु है ॥४२॥

अथ ग्रहोच्चनीचराश्यंशमाह ।

दिशा गुणा गजाश्विनः शरेंदवः समीरणाः ।
नगाश्विनः करोद्भवो रवेस्तु तुंगजा परा ॥ ४३ ॥

सूर्य मेषराशिके दश अंशतक उच्च है और तुलाराशिके दश अंशतक नीच है । चंद्रमा वृषराशिके तीन अंशतक उच्च है और वृश्चिकके तीन अंशतक नीच है । मंगल मकरके अट्ठाईस अंशतक उच्च है और कर्कके अट्ठाईस अंशतक नीच है। बुध कन्याके पंद्रह अंशतक उच्च है और मीनके पन्द्रह अंशतक नीच है । बृहस्पति कर्कके पांच अंशतक उच्च है और मकरके पांच अंशतक नीच है। शुक्र मीनके सत्ताईस अंशतक उच्च है और कन्याके सत्ताईस अंशतक नीच है।शनैश्चर तुलाके बीस अंशतक उच्च है और मेषके बीस अंशतक नीच है । राहु मिथुनके शून्य अंशतक उच्च है और धनके शून्य अंशतक नीच है। केतु धनके शून्य अंशतक उच्च है और मिथुनके शून्य अंशतक नीच है । सूर्य सिंहका, चन्द्रमा वृषका, मंगल मेषका, बुध कन्याका, बृहस्पति धनका, शुक्र तुलाका, शनैश्चर कुंभका, राहु कर्कका और केतु सिंहका ये ग्रह मूलत्रिकोणी होते हैं ॥ ४३ ॥

अथ ग्रहाणामुच्चराश्यंशचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
मे	वृ.	म.	क.	क.	मी.	तु.	मि.	ध.	राशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	०	०	उच्चांश

अथ ग्रहाणां नीचराश्यंशचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
तु.	वृ.	क.	मी.	म.	क.	मे.	ध.	मि.	राशि.
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	०	०	नीचांश.

अथ नैसर्गिकमैत्रीचक्रम् ।

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के	ग्रह.
चं. मं. बृ.	सू. बु. ०	बृ. चं. सू.	सू. शु ०	सू. च. मं.	बु. श. रा.	शु. बु. रा.	बु. शु. श.	बु. शु. श.	मित्र.
० बु. ०	मं. बृ. शु. श.	शु. श. रा.	मं. श. बृ. रा.	श. रा. ० ०	बृ. मं. ० ०	० बृ. ० ०	०. बृ. ० ०	० बृ. ० ०	सम.
शु. श. रा. ०	० ० ० ०	बु. ० ० ०	चं. ० ० ०	बु. शु. ० ०	सू. चं. ० ०	सू. चं. मं.	सू. चं. मं.	सू. चं. मं.	शत्रु.

अथ तात्कालिकमैत्रीमाह ।

भवंति तात्कालिकमित्रभूताः सर्वे च वाक्सोदरबंधुयुक्तः ।
स्वात्स्वात्क्रमाद्व्युत्क्रमतस्तथैवमन्यस्थितास्तत्समपारिभूताः ४४

सम्पूर्ण ग्रह अपने स्थानसे दूसरे, तीसरे, चौथे, देशमें, ग्यारहवें, बारहवें स्थानमें स्थित ग्रहके परस्पर मित्र होते हैं। किसी आचार्यका यह भी मत है कि अपने उच्चराशिमें स्थित वा पंचमस्थित ग्रह भी मित्र होते हैं और सब ग्रह अपने स्थानसे अर्थात् जिस जगह स्थित हों वहांसे प्रथम, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम स्थानमें स्थित ग्रह शत्रु होते हैं ॥ ४४ ॥

अथ पंचधामैत्रीमाह ।

तत्कालमित्रं तु निसर्गमित्रं द्वयं भवेत्तत्त्वधिमित्रसंज्ञम् ।
तथैव शत्रोरधिशत्रुसंज्ञमेकत्र शत्रुः समतामुपैति ॥ ४५ ॥

जो ग्रह तत्काल मित्र और नैसर्गिक मित्र हो तो वह ग्रह अधिमित्र होता है और जो ग्रह तत्काल मैत्रीमें शत्रु हो और नैसर्गिकमें भी शत्रु हो वह अधिशत्रु होता है और जो ग्रह एक जगह मित्र हो और दूसरी जगह शत्रु हो वह ग्रह समभावको प्राप्त होता है और सम शत्रु हो तो शत्रु और मित्र सम हो तो मित्र मानना चाहिये ॥ ४५ ॥

अथ ग्रहाणामुच्चमूलत्रिकोणस्वक्षेत्रभेदमाह ।

हरौ रवेर्नखा लवास्त्रिकोणकं परे ग्रहम् । वृषे विधोस्तु तुंगजा गुणास्त्रिकोणजाः परे ॥४६॥ कुजस्य भास्करा अवौ त्रिकोणजाः परे स्वभम् । धर्नुधरे गुरौ दिशस्त्रिकोणजाः परे स्वभम् ॥४७॥

सूर्य सिंहराशिमें स्थित हो तो मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र दोनों सम्बन्ध होते हैं तहां बीस अंशतक मूलत्रिकोणी होता है और बीससे तीस पर्यंत स्वक्षेत्री कहाता है। इसी तरह वृषराशिमें स्थित चन्द्रमाको उच्च मूलत्रिकोण दोनों सम्बन्ध होते हैं । तहां तीन अंशतक चन्द्रमा उच्चका रहता है और तीनसे लेकर तीस अंशपर्यंत मूलत्रिकोणी कहता है ॥४६॥ इसी प्रकार मेषराशिमें स्थित मंगलको मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र दोनों सम्बन्ध होते हैं सो बारह अंशतक मंगल मूलत्रिकोणी रहता है । बारहसे तीसपर्यंत स्वक्षेत्री कहाता है । इसी तरह धन राशिमें स्थित बृहस्पतिको मूलत्रिकोण और स्वक्षेत्र दोनों सम्बन्ध होते हैं तहां दश अंशतक मूलत्रिकोणी रहता है और दश अंशसे लेकर तीस अंशपर्यंत स्वक्षेत्री कहाता है ॥ ४७ ॥

घटे भृगोः शरेंदवस्त्रिकोणकाः परे स्वभम् । घटे शनेस्त्रिकोण-जानखाः परे स्वगेहजाः ॥४८॥ बुधस्य तुङ्गजास्त्रियां शरेंदवः परेशराः । स्वभं परे त्रिकोणजा दिशस्तु संस्मृता बुधैः ॥४९॥

इसी तरह तुलाराशिमें स्थित शुक्रको मूलत्रिकोण और स्वक्षेत्र दोनों सम्बन्ध होते हैं तहां पन्द्रह अंशतक मूलत्रिकोणी रहता है। इसी तरह कुंभराशिमें स्थित शनैश्चरको भी मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र दोनों सम्बंध प्राप्त होते हैं, तहां वीस अंशावधि मूलत्रिकोणी रहता है और तीस अंशतक स्वक्षेत्री रहता है ॥ ४८ ॥ इसी तरह कन्याराशिमें स्थित बुधको उच्च मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र तीनों सम्बन्ध प्राप्त होते हैं। सो पंद्रह अंशपर्यंत उच्चका रहता है। पंद्रहसे वीस अंशतक स्वक्षेत्री कहाता है और वीससे तीस अंशतक मूलत्रिकोणी रहता है ॥ ४९ ॥

अथ तमस्य उच्चमूलत्रिकोणस्वक्षेत्रभेदमाह।

शून्येषु भूय उच्चं स्यात्कोणक्षेत्रं तमः शिखी।
युग्मं कुलीरकन्या श्वसिंहमीनाः स्मृता बुधैः ॥ ५० ॥

इसी तरह मिथुनराशिमें स्थित राहु शून्य अंशतक परमोच्च रहता है, कर्कराशिमें पांच अंशतक मूलत्रिकोणी होता है और कन्याराशिमें स्थित चौवीस अंशतक स्वक्षेत्री रहता है। धनराशिमें प्राप्त केतु शून्य अंशतक परमोच्च होता है,सिंहराशिमें स्थित पांच अंशतक मूलत्रिकोणी रहता है और मीनराशिमें स्थित चौवीस अंशतक स्वक्षेत्री रहता है ॥ ५० ॥

अथ उच्चमूलत्रिकोणस्वक्षेत्रांशभेदचक्रमाह।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह.
मे. १०	वृ. ३	म. २८	क. १५	क. ५	मी. २७	तु. २०	मि. ०	ध. ०	उच्चांश.
सिं. २०	वृ. २७ तीनके मी.	मे. १२	क. २० से ३० तक.	ध. १०	तु. १५	कुं २०	क. ५	मी. २५	मूलत्रिकोणांश.
सिं. १०	क. २७	मे. १८	क. ५	ध. २	तु. १५	कुं. १०	क. २४	मी. २४	स्वस्थानांश.

अथ ग्रहाणां स्थानबलमाह।

स्वोच्चे सुहृद्भे स्वनवांशकेऽपि स्वर्क्षे दृकाणे द्विरशांशकेऽपि।
कलांशकाद्यंशयुतेऽपि चैवमुपैति तत्स्थानबलं ग्रहेंद्रः ॥ ५१ ॥

अपने उच्चस्थानमें, अपने मित्रके स्थानमें, अपने नवांशमें, अपनी राशिमें,अपने द्रेष्काणमें वा द्वादशांशमें,कलाअंशादिमें स्थित ग्रह स्थानबलको प्राप्त होता है ॥ ५१ ॥

अथ दिग्बलमाह ।

लग्ने बुधज्यौ बलिनौ तु पूर्वे वीर्ये यमे तद्दशमेऽर्कभौमौ ।
कामेऽर्कसूनुर्बलवाञ्जलेशे बंधौ निशानाथकवी कुबेरे ॥ ५२ ॥

पूर्वादि चारों दिशाओंमें अर्थात् चारों केंद्रमें बुध, बृहस्पति, सूर्य, मंगल,शनैश्चर,शुक्र,चन्द्रमा ये ग्रह बलवान् होते हैं तथा लग्नमें बुध, बृहस्पति स्थित पूर्व दिशामें बली होते हैं । दशवें स्थानमें सूर्य, मंगल स्थित दक्षिण दिशामें बली होते हैं।सप्तस्थानमें शनैश्चर राहु स्थित पश्चिमदिशामें बली होते हैं और चतुर्थस्थानमें शुक्र चन्द्रमा स्थित उत्तरदिशामें बलवान् होते हैं और सब ग्रह अपने स्थानसे सप्तमस्थानमें निर्बल होते हैं। मध्य त्रैराशिक रीतिसे बल लेना चाहिये । जैसे लग्नमें बृहस्पति स्थित है सो पूर्ण बलको प्राप्त होता है तो चतुर्थस्थानमें स्थित बृहस्पतिको कितना बल मिलेगा ॥ ५२ ॥

अथ दिग्बलचक्रम्.

तत्सप्तमे दिग्बलशून्यमाहुस्तदंतरे चेत्त्वनुपात एव ।
स्वमासहोरादिनवत्सरेषुवीर्यान्विता भानुमुखा ग्रहेन्द्राः ॥५३॥

सूर्य आदि सम्पूर्ण ग्रह अपने महीने, दिन, वर्ष और होरामें भी बलवान् होते हैं और इसी पूर्वोक्त रीतिके अनुसार उच्च बल भी बनता है अर्थात् अपने उच्चमें स्थित ग्रह पूर्व बली होता है और उच्चस्थानसे सप्तम स्थानमें सब ग्रह हीनबली होते हैं। उच्च नीच राशिके मध्यमें स्थित ग्रहोंका बल त्रैराशिक रीतिसे बनाना चाहिये ॥ ५३ ॥

अथ दृष्टिबलमाह ।

शुभेक्षिताः पूर्णबलान्वितास्तु दृष्टे बल पापखगैरदृष्टः । सौम्यायने त्वतिबली दिवसाधिनाथश्चंद्रस्तदन्यसमये बलपूर्णयुक्तः ॥ ५४ ॥ वक्रान्विताः क्षितिसुतप्रमुखाः समस्ता युद्धे जयी जलजदिग्गतिकांतियुक्तः ॥ ५५ ॥

शुभग्रह करके दृष्ट जो ग्रह हो सो पूर्ण बलको प्राप्त होता है और पापग्रह करके दृष्ट हीनबली होता है ॥

अथ चेष्टाबलमाह ।

उत्तरायण अर्थात् मकरादि छः राशियोंमें सूर्य अतिबली होता है और चन्द्रमा कर्कादि छः राशियोंमें बली होता है ॥ ५४ ॥ वक्रान्वित अर्थात् उलटा चलनेवाले चन्द्रमासे संयुक्त मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर बली होते हैं । सूर्यके संयोगको प्राप्त ग्रह अस्त और चंन्द्रमाके संयोगको प्राप्त समागम मंगलके संयोगको प्राप्त ग्रह युद्ध कहते हैं । "जीवार्कस्फुजितोऽहिविच्च सततं मन्देन्दुभौमा निशि । होरामासदिनाधिपाश्च बलिनः सौम्याः सितेन्येऽसिते । संग्रामं जयिनो विलोमगतयःसम्पूर्णभावो ग्रहाः सूर्येन्दू पुनरुत्तरेण बलिनौ सत्योक्तचेष्टाबले" ॥

अथ ग्रहयुद्धलक्षणम् ।

" विपुलः स्निग्धद्युतिमान्नुत्तरदिक्स्थो जयी ज्ञेयः " । यानी विपुल किरणोंवाला स्निग्धकांतिमान् युद्धमें जो ग्रह उत्तरकी तरफ स्थित हो वह ग्रहजयी अर्थात् बली होता है । जिस ग्रहकी शीघ्र केंद्र दूसरे वा तीसरे पदमें स्थिति हो वह ग्रह विपुलकिरणवाला कहा जाता है इस रीतिसे चेष्टाबल कल्पना करनी चाहिये ॥ ५५ ॥

अथ कालबलमाह ।

रात्रौ बलाढ्याः शनिचद्रभौमास्त्रयो ग्रहाश्चाह्नि रवीज्यशुक्राः । सदा बली वित् सितकृष्णपक्षे सौम्यास्तदन्ये बलिनः क्रमेण ५६

शनैश्चर, चन्द्रमा, मंगल ये रात्रिमे बलवान् होते हैं। सूर्य बृहस्पति शुक्र ये तीनों दिनमें बलवान् होते हैं और बुध रात्रि दिन दोनों समयमें बलवान् हैं ॥

अथ पक्षबलम् ।

शुभ ग्रह शुक्लपक्षमें, पापग्रह कृष्णपक्षमें बली होते हैं ॥ ५६ ॥

अथ अयनबलम् ।

सौम्यायने सूर्यसितेज्यभौमा याम्ये शनींदू ह्युभयत्र सौम्यः ।
वीर्यान्विता आयनवीर्यमिंदुरुदग्बली स्यादिति केचिदूचुः५७॥

मकरादि छः राशियोंमें अर्थात् उत्तरायणमें सूर्य, शुक्र, बृहस्पति, मंगल बली होते हैं।और कर्कादि छःराशियामें शनैश्चर, चन्द्रमा बली होते हैं । और बुध दोनों अयनमें बली होता है । कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं कि चंद्रमा अधिक बली हो तो उत्तरायणमें बलवान् होता है ॥ ५७ ॥

अथ दिनरात्रिबलमाह ।

गुरुः सदा सोमसुतो दिनादौ मध्यंदिनेऽर्कों रविजस्तथान्ते ।
क्षपामुखे शीतरुचिर्निशीथे शुक्रो निशांते कुसुतो बलीयान् ५८

बृहस्पति सर्वकालमें बलवान् है; बुध दिनके आदिमें बलवान् होता है, सूर्य मध्याह्नकालमें बलवान् होता है,शनैश्चर दिनके अंतमें बलवान् होता है, चंद्रमा सायंकालके समय बलवान् होता है, शुक्र अर्द्धरात्रिमें बलवान् होता है और मंगल रात्रिके अंतमें बलवान् होता है ॥ ४८ ॥

अथ नैसर्गिकबलम् ।

मंदारसौम्येज्यकवींदुसूर्या यथोत्तरं पूर्णबला निसर्गात् ।

शनैश्चर, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, चन्द्रमा और सूर्य ये ग्रह क्रमसे उत्तरोत्तर बली होते हैं, अर्थात् शनैश्चरसे मंगल,मंगलसे बुध, बुधसे बृहस्पति, बृहस्पतिसे शुक्र, शुक्रसे चन्द्रमा, चन्द्रमासे सूर्य नैसर्गिक बलको प्राप्त होते हैं ॥

ग्रहयोनिप्रभेदोऽयमध्याये द्वादशे मया ।
कृतो वै श्यामलालेन सर्वलोकोपकारकः ॥ ५९ ॥
इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ग्रहप्रभेदवर्णनं
नाम द्वादशोऽध्यायः॥ १२ ॥

इस बारहवें अध्यायमें सम्पूर्ण मनुष्योंके उपकारके निमित्त श्याम-लालकरके ग्रहके भेद वर्णन किये गये ॥ ५९ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-
पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां ग्रहप्र-
भेदवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ नष्टजातकाध्यायप्रारम्भः ।

आधानकालोऽप्यथ जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम् ।
प्रसूतिकालं प्रवदंति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च ॥ १ ॥

जो किसीको अपना गर्भाधानकाल वा जन्मकाल मालूम नहीं हो तो उस मनुष्यको उचित है कि किसी उत्तम पंडितसे पूछे । तब उस पंडितको उचित है कि उस मनुष्यका जन्मकाल नष्टजातकसे प्रश्न-कालिक लग्नद्वारा कहे ॥ १ ॥

तज्जातकं येन शुभाशुभाप्तिर्जातस्य जंतोर्जननोपकालात् ।
तस्मिन् प्रनष्टे सति जन्मकालो येनोच्यते नष्टकजातकं तत् २

पैदा हुए प्राणीके जन्मकालसे जिससे शुभाशुभकी प्राप्ति हो वह जातक उसके नष्ट होनेपर जिससे जन्मकाल कहा जाता है सो नष्टजातक है ॥२॥

अथ राशिगुणकविधिमाह ।

मेषादितः प्रश्नविलग्नलिप्ताः कार्याः क्रमात्ता मुनिभिः७ खचंद्रैः
१०। गजैश्च ८ वेदै४ र्दश १० भिश्च बाणैः५ शैलै ७ र्भुजंगैः

८ खचरैः ९ शरै ५ श्च ॥ ३ ॥ शिवैः ११ पतंगैर्निहताः पुरस्ताद्विलग्नगाश्चेद्भृगुभौमजीवाः । तदा तुरंगैः७ करिभिः८ खचंद्रै १० र्गुण्याः शरै ५ रन्यखगा यदि स्युः ॥ ४॥

मेषको आदि लेकर मीनपर्यंत प्रश्नकालकी लग्नकी कला करे अर्थात् जिस समय प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करे उस समय जो लग्न जितनी गत हुई हो उसकी लिप्तापिंडी करे अर्थात् प्रश्नलग्नके गत अंशोंको साठ६० से गुणे, फिर कलाओंको जोड दे इसको लिप्तापिंडी कहते हैं । उदाहरण—प्रश्न लग्न सिंह है उसको स्पष्ट करनेसे बारह१२अंश, तेंतालीस४३कला,पचपन ५५विकला हुई, इन बारह अंशोंको साठसे गुणा किया तो७२० सात सौ बीस अंक हुआ, इसमें तेंतालीस ४३ कला और मिलाय दीं तो समग्र कलात्मक पिंड सात सौ त्रेसठ ७६३ अंक हुआ । इसको कलात्मक पिंड कहते हैं । अब लिप्तापिंड किये हुए अंकोंके गुणनेकी विधि कहते हैं, जो प्रश्नकालकी मेष लग्न हो तो कुल लिप्तापिंडी किया हुआ अंक सातसे फिर गुणना चाहिये और वृष हो तो दश १० से गुणे, मिथुनको आठ ८ से, कर्कको चार ४ से, सिंहको दश१० से, कन्याको पांच से, ५ तुलाको सात७ से, वृश्चिकको आठ ८ से, धनको नौ९ से, मकरको पांच५ से, कुंभको ग्यारह ११ से और मीनको बारह १२ से गुणना चाहिये । उदाहरण—यहां प्रश्न लग्न सिंह५ है उसका लिप्तापिंड किया हुआ अंक सातसौ त्रेसठ ७६३ है तो इसको दश १० से गुणा करना चाहिये । अब दशसे गुणनेपर समग्र अंक सात हजार छः सौ तीस हुए ७६३० ॥

अथ राशिगुणकचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि.
७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२	गुणक.

अब ग्रह गुणनविधि कहते हैं । जो प्रश्नलग्नमें शुक्र स्थित हो तो उस लिप्तापिंड किया हुआ अंक राशिके अंकसे गुणा हुआ जो अंक है उसको

फिर सातसे गुणना चाहिये । लग्नमें मंगल स्थित हो तो उस अंकको आठ ८ से गुणा करना चाहिये, प्रश्नलग्नमें बृहस्पति स्थित हो तो उस लिप्तापिंडी किये हुए अंकको दश १० से गुणना चाहिये । अन्य ग्रह कोई अर्थात् सूर्य, चंद्रमा, बुध, शनैश्चर ये ग्रह लग्नमें स्थित हों तो उस कलात्मक पिंड राशिके अंकोंसे गुणे हुएको पांचसे गुणना चाहियें ॥ ३ ॥ ४ ॥

अथ ग्रहगुणकचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह.
५	५	८	५	१०	७	५	गुणकांक.

ग्रहद्वयं वा बहवो विलग्ने तदा तदीयैर्गणकैश्च गुण्याः ।
एवं कृते कर्मविधानयोगो राशिः पृथक्स्थः परिक्षरणीयः ॥५॥

जो प्रश्नलग्नमें दो या तीन ग्रह अथवा बहुत ग्रह स्थित हों तो प्रत्येक ग्रहोंके गुणकांकोंसे पहिले गुणे हुए अंकको वारंवार गुणे । उस गुणे हुए अंकको विशेष रक्षाकरके अलग किसी एकांतस्थानमें स्थापित करे ॥५॥ उदाहरण--यहां सिंह लग्न है उसमें दो ग्रह बृहस्पति और चंद्रमा बैठे हैं तो इन दो ग्रहोंके गुणकांकोंसे इस लिप्तापिंडी किये हुए अंकको गुणते हैं सो देखो लिप्तापिंडी किया हुआ अंक दशसे गुणा हुआ समग्र अंक ७६३०सात हजार छः सौ तीस है, इनको पहिले बृहस्पातिके गुणकांक अर्थात् १० दशसे गुणा किया तो ७६३००छियत्तर हजार तीन सौ हुए । अब इन अंकोंको चन्द्रमाके गुणकांकोंसे गुणा किया अर्थात् ५ पांचसे गुणा किया तो ३८१५०० तीन लाख इक्यासी हजार पांच सौ भये । अब इस गुणे हुए अंकको एकांतस्थापित करते हैं (३८१५००) ॥ ५ ॥

अथ नक्षत्रज्ञानमाह ।

प्रत्यक्स्थराशिमुनिभिर्विनिघ्नस्त्वाद्ये दृकाणे नवयुक् द्वितीये
यथास्थितोऽयं नववार्जितोऽन्त्ये भसंज्ञयासो ह्यवशेषमृक्षम् ॥ ६

अब अलग स्थापित करी जो राशि है उसको फिर सातसे गुणे

और जो प्रश्नलग्नमें प्रथम द्रेष्काणका उदय हो तो उसे सातसे गुणे हुए अंकमें नौ और जोड देना । जो दूसरे द्रेष्काणका उदय हो तो न कुछ जोडे न कुछ घटावे । जो तीसरे द्रेष्काणका उदय हो तो नौ घटा देना चाहिये । फिर उस अंकमें २७सत्ताईसका भाग दे जो लब्ध आवे उसको त्याग दे और शेष रहे उसको अश्विन्यादि नक्षत्र जन्मकालका जाने ।

उदाहरण—अलग धरी हुई राशि) ३८१५०० (

इसको सातसे गुणे ७) ३८१५०० (

तो इतने हुए) २६७०५०० (

अब यहां सिंह लग्नके १२ बारह अंश गये हैं तो १० दशतक पहिले द्रेष्काण रहा और दस १० से बीसतक दूसरा द्रेष्काण रहा, तो यहां दूसरा द्रेष्काण है तो इसमें न कुछ मिलाना चाहिये न कुछ घटाना चाहिये तो उतना ही अंक रहा इसमें सत्ताईस २७ का भाग देना चाहिये शेष रहे सो जन्मनक्षत्र जानना ।

इसमें सत्ताईसका भाग दिया २७) २६७०५०० (

गुणा किया ९) २७ (ल. ९

)२४३ (हुए इन्हें घटाया

तो शेष) २४०५०० (रहे

भाग २७ ल. ८

गु. ८) २१६ (घटाया

तो शेष) २४५०० (रहे

गु. ९।२७ भा.ल. ९

) २४३ (घटाया

शेष) २०० (रहे

गु. ७।२७ भा. ल. ७

) १८९ (घटाया

शेष रहे ।११ । ग्यारह इनमें

भाग जाता नहीं तो जानना चाहिये कि प्रश्नकर्ताका जन्मनक्षत्र अश्वि-न्यादि गिननसे ग्यारहवां पूर्वाफाल्गुनी हुआ ॥ ६ ॥

अथ वर्षज्ञानमाह।

दशाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन्।
खार्कैर्हते शेषमिताष्टसंख्या आयुर्गतं तत्खलु पृच्छकस्य ॥७॥

जिस समय प्रश्नकर्ताने प्रश्न किया है उस समयकी जो लग्न है उसका लिप्तापिंडी किया हुआ जो अंक है उसको राशिके अंकोंसे गुणना, उस लग्नमें जो ग्रह स्थित हो उनके अंकोंसे गुणनेके बाद दश १० से गुणे, फिर नौ घटाके या मिलाके वर्ष निकालना चाहिये, परंतु एक सौ बीसका १२० भाग दे जो शेष रहे सो प्रश्नकर्ताकी आयु गत जाननी चाहिये।

उदाहरण—लिप्तापिंडी किया हुआ राशिके अंकोंसे ग्रहके गुणकसे गुणा हुआ अंक नौ मिलाय घटाय यहां मध्य द्रेष्काण है इससे न कुछ मिलाया है. सो अंक) ३८१५०० (इसको १० से गुणा तो इतना हुआ) ३८१५००० (इसमें १२० भाग दिया

भाग १२० ल. २
घ. ३६०
शेष) २१५०० (
१२० भा. ल. १
शे.) ९५००० (
१२० भा. ल. ७
८४०
शे.) ११००० (
१२० भा. ल. ९
१०८०
शे.) २०० (
१२० भा. ल. १
शेष) ८० (

यहां शेष ८० बचे तो प्रश्नकर्ताके गतवर्ष ८० हुए इक्यासीवां प्रवेश है अर्थात् उस शेषांकको वर्त्तमान संवत्में घटा देनेसे जन्मका संवत् निश्चय हो जायगा ॥ ७ ॥

लग्नस्य राशेर्गुणकेन गुण्याश्चेत्संभवो लग्नगतग्रहस्य ।
पुनस्तदीयेन गुणेन गुण्याः प्रागुक्तवद्वं परिवेदितव्यम् ॥ ८ ॥

प्रश्नलग्नको राशिके गुणकांकसे गुणनेके बाद जो ग्रह प्रश्नलग्नमें स्थित हों फिर उनके गुणकांकसे गुणा करके पूर्वोक्त प्रकार उसमें नौ मिला घटाके उसको फिर दशसे गुणना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ ऋतुज्ञानमाह ।

षड्भिर्विभक्ते ऋतवो भवंति शेषांकतुल्या शिशिरादयः स्युः ।
द्विभाजिते शेषकमेकमंत्रे पूर्वापरो तहतुजौ च मासौ ॥ ९ ॥

उसी कर्म विधान की हुई राशिको दशसे गुणकर सम्पूर्ण अंकोंमें छः का भाग देनेसे जो शेष बचे वह ऋतु जाननी चाहिये और उसीमें दोका भाग देनेसे एक बचे तो ऋतुका पहिला महीना और दो बचे अर्थात् शून्य शेष रहे तो प्रश्नकर्ताके जन्मका दूसरा मास जानना चाहिये ॥

उदाहरण ।

इससे गुणा राशिका अंक) ३८१५००० (
इसमें भाग ६ । ६ ल. ६
३६
शेष) २१५०००(ल. ३
६
१८
शेष) ३५०००(ल ३
६
३०

शेष) ५००० (ल. ८ अब यहां छः भाग देनेसे शेष २ दो रहे तो
६ जानना चाहिये शिशिरऋतु आदि
४८ लेकर दूसरी ऋतु वसंत हुई तो प्रश्नकर्ताके
शेष) २०० (प्रसवकालमें वसंत ऋतु हुई ।

) २०० (ल. ३
६
१८
शेष) २० (ल. ३
६
१८
शेष) २ (

अब वही जो दशसे गुणी राशि है अर्थात् जिसमे छःका भाग दिया है उसमें दोका भाग देनेसे ऋतुका मास सिद्ध होता है जो एक बचे तो ऋतुका पहिला महीना, शून्य बचे तो ऋतुका दूसरा मास जानना चाहिये॥

उदाहरण ।

दशसे गुणी हुई राशि) ३८१५००० (ल. १
इसमें दोका भाग २ २
शेष) १८१५००० (ल. ९
२
१८
शे.) १५००० (ल. ७
२
१४
शे.) १००० (ल. ५००
२
भागो नास्ति लब्धं शून्यम् ।

यहां भाग देनेसे शेष शून्य अर्थात् कुछ नहीं बचा तो जानना चाहिये कि प्रश्नकर्ताका जन्म वसंतऋतुके दूसरे महीने वैशाखका है ॥ ९ ॥

अथ पक्षज्ञानमाह ।

अष्टाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रतुल्येऽस्ति पूर्वापरपक्षकौ स्तः ॥ १० ॥

अब जो कर्म विधान की हुई राशि है उसको ८ आठसे गुणना चाहिये पहिलेकी तरह नौ मिलाय घटाके दोका भाग दे जो एक शेष रहे तो कृष्णपक्ष और शून्य बचे तो शुक्ल पक्ष जानना चाहिये ॥ १० ॥

उदाहरण ।

कर्म विधान करी राशिका अंक--

इसको आठ ८ गुणा करे ८) ३८१५०० (

इतने हुए) ३०५२००० (ल. १

२

शे.) १०५२००० (ल. ५

२

शे.) ५२००० (ल. २

२

शे.) १२००० (ल. ६

२ शेष) ०० (

यहां शेष शून्य बचा तो जानना कि प्रश्नकर्त्ताका जन्म शुक्लपक्षका है ॥

अथ तिथिज्ञानमाह ।

पंचेंदुभक्ते सति शेषतुल्याः पक्षे च तस्मिन् तिथयो भवंति ।
नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्वारविचारणात्र ॥ ११ ॥

अब जो आठसे गुणी हुई राशि है उसमें पंद्रह १५ का भाग देनेसे

जो शेष बचे उसको प्रश्नकर्ताके जन्मकी तिथि जाननी चाहिये ओर वारका ज्ञान इस तरहसे करना चाहिये यानी नक्षत्र तिथिके योगसे अथवा अहर्गणसे वार लाना चाहिये और नहीं तो गणितके द्वारा प्रश्नकर्ताका जो संवत्,मास, तिथि निर्णय कर चुके हैं उस संवत्के पंचाङ्गसे वार जानना चाहिये ॥

उदाहरण ।

आठसे गुणी हुई राशि) ३०५२००० (इसमें १५ भाग दे ल. २
१५
३०
शे.) ५२००० (ल. ३
१५
४५
शे.) ७००० (ल. ४
१५
६०
शे.) १००० (ल. ६
१५
९०
शे.) १०० (ल. ६
१५
९०
शे.) १० (

शेष १० दश बचे तो जानना चाहिये कि वैशाखके महीनेमें शुक्लपक्षमें दशमी तिथिको प्रश्नकर्ताका जन्म है ॥ ११ ॥

अथ दिनरात्रिकालज्ञानमाह ।

समाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम् १२ ॥

अब जो कर्मविधान की हुई राशि है उसको पहिलेकी तरह नौ मिलाय घटाय सातसे गुणना चाहिये उसमें दोका भाग देना चाहिये, जो एक शेष रहे तो दिन और शून्य शेष रहे तो रात्रिका जन्म प्रश्नकर्ताको कहना उचित है ॥

उदाहरण ।

कर्म विधान की हुई राशि) ३८१५०० (

इसको सातसे गुणा किया ७) २६७०५०० (तो इतने हुए

भा. २ ल. १

शे.) ६७०५०० (ल. ३०

२

६०

शे.) ७०५०० (ल. ३

२

६

शे.) १०५०० (ल. ५

२

१०

शे.) ५०० (ल. २

२

४

शे.) १०० (ल. ५

२

१०

शेष) ०० (

अब शेष शून्य रहा तो जानना चाहिये कि प्रश्नकर्ताका जन्म रात्रिके समयका है ॥ १२ ॥

अथ इष्टकालज्ञानमाह ।

पंचाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेऽवशिष्टं दिनरात्रिनाड्यः १३॥

वह जो कर्मविधान की हुई राशि है उसको पांचसे गुणना चाहिये । उसमें पहिला द्रेष्काण हो तो नौ जोडना, मध्य द्रेष्काण हो तो न जोडना, न कुछ घटाना, तीसरा द्रेष्काण हो तो नौ घटाकर जो दिनको जन्म हो तो दिनमानका और जो रात्रिका जन्म हो तो रात्रिमानका भाग देनेपर जो शेष रहे उतनी ही घडी दिन अथवा रात्रिकी व्यतीत हुए पर जन्म कहना उचित है । फिर इसी इष्टकालसे लग्नसाधन करके पूर्वजातकके समान ग्रह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश कुंडली बनाके शुभाशुभ फल कहना चाहिये । यथा—उदाहरण । कर्म विधान की हुई राशिके अंक (३८१५००) को पांचसे गुणना तो गुणा अंक (१९०७५००) इतना हुआ यहां मध्य द्रेष्काण है इससे न कुछ घटाया न मिलाया है । अब प्रश्नकर्ताका जन्मादिन वैशाख सुदि दशमी रात्रिके समयका ज्ञात हुआ तो रात्रिमानका भाग देना चाहिये । अब प्रश्नकालके समय दिनमान ३३ घटी६ पलका है । तो इसको ६० साठमें घटा दिया २६ दंड ५४ पल शेष रहा सो रात्रिमान हुआ इस रात्रिमानको पांचसे गुणे हुएअंकमें भाग देना चाहिये।

) १९०७५०० (ल. ७
भाभ २६
१८२
शे.) ८७५०० (ल. ३
२६
७८
शे.) ९५०० (ल. ३.
२६
७८

शे.) १७०० (ल. ६
२६
१५६
शे.) १४० (ल. ५
२६
१३०
शे.) १० (

अब यहां शेष दश रहे सो जानना चाहिये कि प्रश्नकर्ताका जन्मसमय दश १० दंड रात्रिगत हुएका है । अब पल निकालनेका उपाय लिखते हैं । वही जो पांचसे गुणी हुई राशिको साठसे ६० गुणना चाहिये उसमें पलोंका भाग देना चाहिये शेष रहे सो पल जानना चाहिये ।

उदाहरण ।

पांचसे गुणी राशि) १९०७५०० (इसको ६० गुणा

इसमें पल ५४ भाग दिया) ११४४५०००० (ल. २

५४

१०८

शे.) ६४५०००० (ल. १

५४

शे.) १०५०००० (ल. १

५४

शे.) ५१०००० (ल. ९

५४

४८६

शे.) २४००० (ल. ४

५४

२१६

शे.) २४०० (ल. ४

५४

२१६

शे.) २४० (ल. ४

५४

२१६

शे.) २४ (

अब यहां शेष २४ चौवीस रहे जानना चाहिये कि २४ पल रहे तो समग्र नष्ट जन्मपत्र इसी प्रकारसे सब जगह जानो अर्थात् वैशाखसुदि दशमी समस्त दिन गत रात्रि घट्यादि इष्ट १० पल २४ होते हैं ॥१३॥

एवं पित्रादिकानां च नष्टजन्म वदेत् क्रमात् ।
कृतो वै श्यामलालेन तिलको भाषयान्वितः ॥ १४ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे नष्टजातकवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इस प्रकार प्रश्नकर्ताके पिता, माता, भ्राता, स्त्री, पुत्र, मित्र, शत्रुका भी नष्टजन्मपत्र निश्चयकरके क्रमसे कहे। पंडित श्यामलाल ज्योतिषिकरके श्यामसुंदरी भाषाटीकासहित ज्योतिषश्यामसंग्रह किया गया ॥ १३ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां नष्टजातकवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ गर्भाधानाध्यायप्रारंभः ।

अथ गर्भाधानऋतुयोगः ।

स्त्रीणां गतोऽनुपचयर्क्षमनुष्णरश्मिः संदृश्यते यदि धरातनयेन तासाम् । गर्भग्रहार्तवमुशंति तदा सुवंध्यावृद्धातुरालपवयसामपि नैतदिष्टम् ॥ १ ॥

मासमासमें स्त्रियोंके रजस्वला होनेका हेतु चंद्रमा और मंगल है जब चंद्रमा स्त्रियोंकी जन्मराशिसे प्रथम, द्वितीय,, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, द्वादश राशियोंमें जाता है तब उनको गर्भधारण करने लायक ऋतु होता है अर्थात् जब चंद्रमा उक्त स्थानोंमें स्थित हो और उसको मंगल देख तब

स्त्रियां रजस्वला होती हैं और उसी ऋतुसे गर्भ धारणके योग्य होती हैं परंतु ये योग वंध्या, वृद्ध, रोगिणी, बालस्त्रियोंको छोड़कर जानना चाहिये ॥ १ ॥

यथा–अनुपचयराशिसंस्थे कुमुदाकरबान्धवे रुधिरदृष्टे । प्रतिमासं युवती भवति रजोदर्शनम् । इन्दुर्जलं कुजो अग्निः जलाग्निप्रकोपेन पित्तोद्भवः । पित्तेन रजः प्रवर्त्तत उपचयभवनस्थे चन्द्रे रजोदर्शनं निष्फलं भवेत् ॥

अथ स्त्रीपुरुषसंयोगगर्भयोगः ।

बलान्वितावर्कसितौ स्वभांशे पुंसां सदा चोपचये भवेताम् ।
तथांगनानां शशिभूमिजौ वा तदा भवेद्गर्भसमुद्भवश्च ॥ २ ॥

बलकरके सहित सूर्य, शुक्र अपने नवांशमें स्थित हो, पुरुषके उपचय-स्थानमें हो तैसे ही स्त्रियोंके चंद्रमा, मंगल उपचयस्थानमें स्थित हो तो गर्भ होता है अर्थात् पुरुषकी जन्मराशिसे सूर्य उपचयस्थानमें स्थित हो उसको शुक्र देखता हो और स्त्रीकी जन्मराशिसे चंद्रमा उपचयमें स्थित हो, भौम देखता हो तो निश्चय गर्भ स्थित होता है ॥ २ ॥

स्त्रीणां विधौ चोपचये कुजेन दृष्टेऽपि गर्भग्रहणेऽपि योग्या ।
पुंसां तथा गीष्पतिना प्रदृष्टे स्त्रीपुंसयोर्योगमतोऽन्यथा च ॥ ३ ॥

स्त्रियोंके चंद्रमा उपचय अर्थात् तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें स्थानमें स्थित हो और उस चंद्रमाको मंगल देखता हो तो स्त्री गर्भग्रहणके योग्य होती है और पुरुषके उपचयस्थानमें चंद्रमा स्थित हो और वह बृहस्पतिकरके दृष्ट हो तो स्त्रीपुरुषका संयोग प्राप्त होता है अन्य प्रकारसे यह संयोग नहीं होता ॥ ३ ॥

यथा–उपचयभवने शशभृद् गुरुणा दृष्टो अथवा सुहृद्भिर्दृष्टो तदा पुंसां करोति योगं विशेषतः शुक्रसंदृष्टः चन्द्रो कुजेन दृष्टे पुष्पवती सह संयोगो भवति तत्र सौम्ये चपलमतिना भृगुणा कान्तेन रूपान्विता राजपुरुषेण रविणा रविजेनाप्नोति भृत्येन अन्ये कुजादिभिः पापैः सर्वे स्वगृहं गत्वा गच्छन्ति वेश्या युवतिः उपचयभवने शशभृ-दृदृष्टस्तत्रोपचयभवने पुरुषस्यैव । तथा च बादरायणः । पुरुषोपचयगृहस्थो गुरुणा यदि दृश्यते स्त्रीपुरुषसंयोगं तदा वदेदन्यथा नैवमिति । अयं विचारश्चतुर्थदिने । भणित्थः । ऋतुविरमे स्नातायां यद्युपचयसंस्थितः शशी भवति । बलिना गुरुणा दृष्टो

मंत्रिसहसङ्गमश्च तदा । ननु पूर्वोक्तसारावलीये गुरुशुक्रदृष्टे चंद्रे स्वपुरुषयोगोऽन्यदृष्टे राजपुरुषादिभिः पुष्पवतीसंयोग उक्तोऽस्ति । तत्र साध्वीनां परपुरुषयोगाभावात्कथं योगो घटते तत्र राजपुरुषादिचेष्टास्वरूपादियुतेन स्वपुरुषेणैव योगो वाच्यो नतु परपुरुषेण । वेश्यापदं चात्र निर्लज्जत्वं ज्ञातव्यम् ।

अथ मैथुनप्रकारमाह ।

निषेकेऽस्तराशिर्यथा मैथुने च तथा तत्समः पूरुषो मैथुने स्यात् ।
असत्खेचरैः संयुते वीक्षतेऽस्ते सरोषः शुभैर्हास्ययुक्सद्विलासः॥४॥

गर्भाधानकालका लग्न वा जन्मलग्न अथवा प्रश्नकालके लग्नसे सातवें स्थानमें जो राशि हो वह जीव जैसे मैथुन करता है उसी प्रकार कुंडली वालेके माबापका मैथुन कहना चाहिये और जो उस सातवें स्थानमें पापग्रहोंका योग हो या पापग्रहोंकरके दृष्ट हो तो मातापिताका मैथुन क्रोध वा झगड़ा वा जबरदस्तीके साथ मैथुन कहना चाहिये और जो शुभ ग्रहोंकरके दृष्ट वा युत सप्तम स्थान हो तो सुखपूर्वक हास्य विलासके साथ मैथुन कहना चाहिये और जो शुभग्रह पापग्रह दोनों समान देखते हों अथवा दोनों नहीं देखते हों; न युत हों तो समभावकरके मैथुन कहना चाहिये। अथवा पापग्रह जादे देखते हों वा युत हों और शुभग्रह कमती देखते हो वा कम युत हों तो ऊपर खुशी भीतर क्रोधसे मैथुन हुआ है और शुभग्रह जादे देखते हों वा युत हों और पापग्रह अल्प युत हों वा कम देखते हो तो भीतर आनंद बाहिरमें क्रोध करके मैथुन कहना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ ऋतोरनंतरं संयोगदिनानि ।

स्त्रीणां ऋतुःषोडशकं निशानां तासां त्यजेत्सप्तकमत्र पूर्वम् ।
समे नराणां विषमेऽङ्गनानां गर्भा भवेयुः पुरुषस्य योगात् ॥ ५ ॥

स्त्रियोंके ऋतुकालके बाद सोलह रात्रिके भीतर उस ऋतुके दिनसे सात दिनपर्यंत स्त्रीके साथ संयोग नहीं करना चाहिये फिर सात दिनके पीछे नौ दिनतक बुद्धिमान् पुरुष शुभमुहूर्तमें स्त्रीसे गमन करे। सम दिनोंमें अर्थात् आठ, दश, बारह, चौदह इन षोडश दिनोंमें जो गर्भ पुरुषके योगसे स्थित

होगा वह गर्भ पुत्रदायक होता है । विषम दिन अर्थात् नौ, ग्यारह, तेरह, पंद्रह इन दिनोंमें स्थित हुआ गर्भ कन्याकी प्रजाको करता है ॥ ५ ॥

अथ गर्भसंभवयोगः ।

शनैश्चरक्ष्मासुतशुक्रसूर्यैर्निजांशगैश्चोपचयस्थितैश्च ।
त्रिकोणलग्नोपनते सुरेज्ये वीर्यान्विते गर्भसमुद्भवः स्यात् ॥ ६ ॥

शनैश्चर, मंगल, शुक्र, सूर्य किसी राशिमें अपने नवांशमें स्थित हों तो गर्भाधानमें संतानकी योग्यता प्राप्त होती है । कदाचित् पूर्वोक्त ग्रह अपने नवांशमें स्थित न हों तो पुरुषकी जन्मराशिसे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें राशिमें स्थित शुक्र, सूर्य ये अपने ही नवांशमें स्थित हों और स्त्रीके जन्म-राशिसे तीसरे, छठे, दशवें ग्यारहवें राशिमें स्थित शनैश्चर मंगल अथवा चंद्रमा,मंगल अपने ही नवांशमें स्थित हों तो निश्चय संतानकी योग्यता होती है । अथवा बृहस्पति नवें, पांचवें, लग्नमें स्थित हो तो भी गर्भग्रहण होता है । परंतु ये योग होते भी हिजराक निष्फल हो जाते हैं । जैसे चंद्रमाकी किरण अंधे मनुष्योंको निष्फल होती है ॥६॥

यथा-शुक्रजातके । सूर्यशुक्रौ स्वांशकस्थौ पुरुषोपचयर्क्षगौ । स्त्रीणां कुजाद् वीर्याढ्यौ स्वांशोपचयसंस्थितौ ॥ गर्भप्रदौ पञ्चमे च निर्बलक्रूरसंयुते । सुतेशेऽस्तं गते नीचे न गर्भः ॥ यथा-शुक्रार्कभौमशनिभिः स्वांशोपचयस्थितैः सुरेज्ये वाथ धर्मेऽथवात्मजे लग्नगे सति गर्भसम्भवो भवति । अयं योगो निषेककाले ज्ञेयः । उक्तं च सूर्यजातके-यदुक्तैश्चन्द्रशुक्रारैः स्वांशोपचयसंस्थितैः । आधानलग्ने गर्भस्य सम्भवो भवति ध्रुवम् ।

तथाच गर्भपुष्टियोगः ।

वीर्यान्विते लग्नगते सुरेज्ये त्रिकोणसंस्थे यदि वात्र योगः ।
स्युर्निष्फलास्ते हतवीर्यकाणां वीणेव शब्दः श्रववर्जितस्य ॥ ७ ॥

बलकरके सहित बृहस्पति लग्न, नवम, पंचम भावमें गर्भाधानकालमें स्थित हो तो ऐसे योगमें स्त्रियोंके निश्चय गर्भ स्थित रहता है परंतु स्त्री वंध्या, बाल, वृद्धा, रोगिणी न हो और पुरुष हतवीर्य अर्थात् नपुंसक अथवा जिनको वीर्यविकार है ऐसे पुरुषोंके संयोगसे गर्भ नहीं स्थित

होता है। जिस तरह बधिर पुरुषको वीणाशब्द नहीं सुनाई पड़ता और अंधेको चंद्रमाकी चांदनी नहीं दीख पड़ती तैसे ही वीर्यहीन पुरुषसे गर्भ नहीं स्थित रहता है ॥ ७ ॥

यथा-भगवान् गर्ग आह। लग्नस्थो वा सुतस्थो वा धर्मस्थो वा बली गुरुः। प्रोक्तर्क्षे शुभवारे च धारयेद्गर्भमुत्तमम् ॥ अन्येपि निषेकलग्नाद्योगानाहुः-पुंग्रहाः षष्ठलाभस्थाः पञ्चमेशो यदा बली। अन्ये विषमराशिस्था गर्भयोगा इमे स्मृताः ॥ लग्नात्मजेशौ संयुक्तावन्योन्यं वाभिवीक्षितौ। परस्परक्षेत्रगौ वा गर्भयोगा इमे स्मृताः॥ ओजराश्यंशगे चन्द्रे लग्नपुंग्रहवीक्षिते। स्ववर्गगाश्चंद्रतीव्रभौमाः स्युर्योगकारकाः ॥ तथाच शुक्राचार्यः--लग्नाधिपे सुतस्थाने दारास्थानगतेऽपि वा। सुतजायाधिपौ लग्ने तदा स्याद्गर्भसम्भवः ॥

अथ गर्भस्य मातापित्रादिशुभाशुभम्।

यथा नृनार्यो हि मनःस्वभावो रतौ तथा गर्भगतोऽत्र जंतुः।
द्यूने रवेर्मंदकुजौ तु पुंसो रोगप्रदौ शीतरुचेः स्त्रियाश्च ॥ ८ ॥

जैसे पुरुष-स्त्रीके मनका स्वभाव मैथुनके समय हो उसी प्रकारका जीव गर्भमें प्राप्त होता है। गर्भाधानकालमें जिस स्थानमें सूर्य स्थित हो उस स्थानसे शनैश्वर, मंगल सप्तम स्थानमें स्थित हो तो पुरुष उनके महीनेमें रोगी होता है और चंद्रमासे सातवें स्थानमें शनैश्वर अथवा मंगल स्थित हों तो उनके महीनेमें स्त्रीको रोग होता है वा शनैश्वर, मंगलसे सूर्य दृष्ट या युत हो तो भी पूर्वोक्त फल करता है ॥ ८ ॥

यथा-निषेककाले सूर्यस्य सप्तमस्थौ कुजार्कजौ। पुंसो रोगप्रदौ वार्कः पूर्णदृष्ट्या च वीक्षितः ॥ मध्यो मन्दाख्योरेकतरेणार्कजौ संयुतः पुंसाम्। मृत्युप्रदश्चंद्रः सूर्यवत्स्त्रीणां मृत्युदः ॥ योगकारकयोर्वीर्यात्तन्मासे मृत्युमादिशेत्। तथाच सूर्यजातके-विवीतिनामिमे योगा न विचार्याः कदाचनेति। विशेषो मीनराजजातके-मन्दारयोः सप्तमराशिसंस्थयोर्यदा निषेको मरणं तदा पितुः। रवेः शशांकालयतज्जनन्या राकेन रोगाः पुरुषप्रवादाः ॥

सूर्ये यमारांतगते तु पुंसः स्त्रियास्तथेंदौ मृतिदौ तयोः स्तः।
मंदेन वारेण दिवाकरेंदू युक्तौ च दृष्टौ निधनं तयोर्वा ॥ ९ ॥

सूर्यसे शनैश्वर, मंगल बारहवें स्थित हों इन दोनोंमें जो बली हो वह अपने महीनेमें पुरुषको मारनेवाला होता है और तैसे ही चंद्रमासे शनै-

श्वर, मंगल बारहवें स्थित हों इन दोनोंमें जो बली हो तो अपने महीनेमें स्त्रीको मृत्यु देता है । शनैश्वर अथवा मंगल करके सूर्य, चंद्रमा दोनों युत हों वा दृष्ट हों तो स्त्री पुरुष दोनोंकी मृत्युको करते हैं ॥ ९ ॥

यथा—यदा हिमांशुर्व्ययतो दिवाकरश्छिद्रं गतो भूतभवश्चतुर्थः । मृत्युस्तदा सम्भवते युवाभ्यां शस्त्रेण शौरेण तु बन्धनेन ॥ मृत्युकरः शीतकरश्च रिःफे सुखस्थिते सूर्यसुतः सभौमः । न गर्भसम्भूतिरिह प्रदिष्टा योगैः स्वसौम्यैः प्रवदन्ति कृच्छ्रात् ॥

अथ स्त्रीणां वन्ध्यत्वयोगः ।

स्वर्क्षस्थितौ रंध्रगतौ यमार्कौ प्रष्टुः स्त्रियं संदिशतश्च वंध्या ।
छिद्रस्थितौ चंद्रबुधौ सदोषा वा काकवंध्या वदतोऽगना वै १०

अपनी राशिके होकर अष्टम स्थानमें शनैश्वर, सूर्य स्थित हों तो प्रश्नकर्ताकी स्त्रीको वंध्या कहना चाहिये और अष्टमस्थानमें चंद्रमा,बुध निर्बल स्थित हों तो उस मनुष्यकी स्त्रीको काकवंध्या कहना चाहिये ॥ १० ॥

अथ स्त्रीणां मृतप्रजायोगः ।

मृतप्रजा छिद्रगतौ सितेज्यौ गर्भस्रवा भूमिसुतेष्टमस्थे ।
छिद्रेश्वरे छिद्रगते बलान्विते पुष्पं न विंदत्यथवा सुगर्भदम् ११

जो प्रश्नकर्ताकी जन्मलग्न अथवा प्रश्नलग्नसे अष्टमस्थानमें शुक्र, बृहस्पति स्थित हों तो उसकी स्त्री मृतप्रजा अर्थात् उसके संतान उत्पन्न होकर मर जाती हैं और जो मंगल अष्टमस्थानमें स्थित हो तो उसकी स्त्री गर्भस्रवा अर्थात् उसके गर्भ स्थित होकर पतित हो जाते हैं और जो अष्टमेश अष्टम स्थित हो तो उसकी स्त्री गर्भको ही धारण नहीं करती है ॥ ११ ॥

अथ स्त्रीणां रजोवर्णमाह ।

सूर्येऽत्र कपिलं पुष्पं चंद्रे श्वेतं कुजेऽरुणम् । बुधे विचित्रवर्णाभं गुरौ मंजिष्ठवर्णभम् ॥१२॥ सिते श्वेतं शनौ कृष्णं राहौ जलसमं वदेत् ॥ शून्येऽष्टमे स्वभावस्थं मार्गे याति खलग्रहैः ॥१३॥

जिन स्त्रियोंके जन्मकाल अथवा प्रश्नकालमें सूर्य अष्टम स्थित हो तो उन स्त्रियोंका वीर्य कपिल रंगका अर्थात् बंदरके रंगके सदृश होता

है, चंद्रमा करके सफेदवर्ण, मंगलकरके गुलाबी रंग, बुधकरके विचित्र-वर्ण, बृहस्पतिकरके मंजिष्ठ वर्णका वीर्य जानना ॥ १२ ॥ शुक्रकरके श्वेत वर्ण, शनैश्चरकरके श्याम वर्ण, राहुकरके जलके समान स्त्रियोंका वीर्य कहना चाहिये और जो अष्टमस्थानमें कोई ग्रह नहीं हों तो स्वभावस्थ-वीर्यका वर्ण कहना उचित है और उसी अष्टमस्थानमें पापग्रह स्थित हो तो स्त्रियोंका वीर्य गिरता हुआ कहना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ स्त्रीणां वीर्यशीतोष्णमाह ।

पुष्पमेति तदुष्णं तु भौमार्कौ शीतलं परैः ।
कटीवातं वदेद्राहौ पीडाकरमहर्निशम् ॥ १४ ॥

स्त्रियोंका वीर्य मंगल, सूर्य करके अति उष्ण कहना चाहिये । चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर ये अष्टम स्थित हों तो शीतल वीर्य कहना और जो राहु अष्टम स्थानमें स्थित हो तो कमरमें वात-रोग रातदिन पीडा करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ गर्भान्मातापित्रादिशुभाशुभज्ञानम् ।

दिनेऽर्कशुक्रौ पितृमातृसंज्ञौ नक्तं शनींदू सहजेऽन्यथा तत् ।
पितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौ च तयोः शुभावोजसमर्क्षगौ तौ ॥१५॥

जिस मनुष्यका दिनमें गर्भ रहे तो उस जीवका सूर्य पिता होता है और शुक्र माता होती है और रात्रिमें गर्भ रहे तो शनैश्चर पिता संज्ञक और चंद्रमा माता संज्ञक होता है और दिनमें गर्भस्थित हो तो शनैश्चर पितृ-व्य अर्थात् पिताका भाई और चंद्रमा मातृष्वसृसंज्ञक अर्थात् मौसी होता और रात्रिमें सूर्य पितृव्यसंज्ञक और शुक्र मातृष्वसृसंज्ञक होता है । इसका प्रयोजन यह है कि गर्भाधानकालमें पूर्वोक्त ग्रह विषमराशि, सम राशियोंमें स्थित होकर पिता पितृव्य माता मातृष्वसृ इनके वास्ते शुभ फलके देनेवा-ले होते हैं । जिस जीवका गर्भाधान दिनमें हो और मेष, मिथुन, सिंह, तुला,

धन, कुम्भ इन विषम राशियोंमें सूर्य कहीं स्थित हो तो पिताके वास्ते शुभ फलका देनेवाला होता है और रात्रिमें पिताके भाईको शुभकारी होताहै और जो गर्भाधान दिनमें हो और शुक्र समराशिमें अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीनमें स्थित हो तो माताको शुभकारी होता है । तैसे ही रात्रिमें मौसीको शुभ फल देनेवाला होता है । तैसे ही रात्रिमें गर्भाधान हो और विषमराशियोंमेंसे किसी एक राशिमें स्थित शनैश्चर पिताके लिये श्रेष्ठ फलका देनेवाला होता है और दिनमें पिताके भाईको शुभफल देता है और रात्रिमें समराशियोंमेंसे किसी राशिमें स्थित चंद्रमा माताके लिये शुभ देता है और दिनमें मौसीको शुभदायक होता है और पहिले कहे अनुसार उलटा हो तो अशुभ फलको देते हैं । जैसे दिनमें गर्भाधान हो और सूर्य समराशिमें स्थित हो तो पिताके वास्ते नेष्ट फलका देनेवाला होता है और रात्रिके समय सम राशिमें स्थित सूर्य पिताके भाईको नेष्ट फलका देनेवाला होता है और दिनमें गर्भ हो और शुक्र विषम राशिमें स्थित हो तो माताके लिये अशुभ फल देता है और रात्रिमें मौसीको अशुभ होता है और रात्रिमें गर्भाधान हो और सम राशिमें शनैश्चर स्थित हो तो पिताको अशुभफलदायक होता है और दिनमें पितृव्यको अशुभ फल देता है और जिसका रात्रिमें गर्भाधान हुआ हो और विषम राशिमें चन्द्रमा स्थित हो तो माताको अशुभ फल देनेवाला होता है और दिनमें मौसीको अशुभ फल देता है ॥ १५ ॥

तथाच कल्याणवर्मा–दिवसेति मातापितरौ शुक्ररवी शशिशनी निशायां च । मातृभगिनीपितृव्यौ विपर्ययात्कीर्तितौ यवनवृद्धैः ॥ दिवसे निषिक्तस्य जातस्य वेति शेषः । एवं निशायामित्यत्रापि । लग्नाद्विषमर्क्षगतः पितुः पितृव्यस्य खेचरः शस्तः मातृभगिनीजनन्योः । समगृहगौ अन्योन्यता तेषु अन्यान्योक्तवैपरीत्ये तेषु मातृपित्रादिषु अन्यः विपरीतफलः अशस्त इत्यर्थः । होरामकरंदे–आदौ द्विराज्योः पितृमातृखेटौ फलं तु पूर्णं ददतुः स्वकीयम् । अंते तयोस्तु धमतीव मध्ये पापं शुभं वा परिकल्पनीयः ॥ तथाच वाराहः–दिवार्कशुक्रौ पितृमातृसंज्ञकौ शनैश्चरेंदू निशि तद्विपर्ययात् । पितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौ तु तावथौजयुग्मर्क्षगतौ तयोः शुभौ ॥

अथ गर्भिणीमरणयोगः ।

क्रूरांतस्थौ लग्नचंद्रौ निषेके क्रूरैः खेटैः संयुतौ वाऽथ दृष्टौ ।
सौम्यैश्चेत्तौ वीक्षितौ नैव युक्तौ नारी गर्भेणान्विता मृत्युमेति॥१६॥

जिस मनुष्यके गर्भाधानकालमें लग्न और चंद्रमासे बारहवें पापग्रह बैठे हों और लग्न चंद्रमा पापग्रहों करके युत वा दृष्ट हो, शुभग्रहों करके लग्न और चंद्रमा युत और दृष्ट न हो तो वह स्त्री गर्भकरके सहित मृत्युको प्राप्त होती है ॥ १६ ॥

अथ गर्भिणीमरणयोगत्रयम् ।

चंद्रात्तनोर्वा यदि पापखेटैर्बंधुस्थितैर्भूमिसुतेऽष्टमस्थे ।
यद्वा कुजार्कौ व्ययबंधुसंस्थौ क्षीणे निशीशे मृतिरुक्तवत्स्यात् १७

चंद्रमासे चतुर्थ स्थानमें पापग्रह और अष्टम स्थानमें मंगल स्थित हो (एको योगः) अथवा लग्नसे चौथे स्थानमें पापग्रह और अष्टम स्थानमें मंगल स्थित हो (द्वितीयो योगः) अथवा लग्नसे बारहवें मंगल और चौथे सूर्य स्थित हो, क्षीण चंद्रमा कहीं बैठा हो तो इन तीन योगोंमेंसे किसी योगके होनेसे गर्भवती मरणको प्राप्त होती है ॥ १७ ॥

शुक्रो यदा मंदयुतोथ दृष्टश्चंद्रात्सुतस्थः स तु मातृहंता ।
सपापकः कर्मगतोऽथवा चेद्दिवाकरो मातुरनिष्टदः स्यात् ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र, शनैश्वरकरके युत वा दृष्ट हो और चंद्रमासे पंचम स्थित हो तो वह गर्भ गर्भिणीको मृत्यु देता है और जो पापग्रहसहित सूर्य, चंद्रमासे दशम स्थानमें स्थित हो तो भी माताको नेष्ट फल देता है ॥ १८ ॥

क्षीणे विधौ पापयुते च मृत्युस्तदन्यथार्के जनकस्य नूनम् ।
आधिर्भवेत्पापनिरीक्षितौ द्वौ मिश्रैर्विमिश्रं शुभदैः शुभं स्यात्१९

क्षीण चंद्रमा पापग्रहोंकरके युत हो तो भी गर्भिणीको मृत्यु देता है और जो सूर्य पापग्रहसहित हो तो पिताकी मृत्यु करता है और जो सूर्य

चंद्रमा दोनों पापग्रहोंकरके दृष्ट हों तो रोगको देते हैं और जो सूर्य, चंद्रमाको पापग्रह और शुभग्रह दोनों देखते हों तो शुभ अशुभ मिश्रित फल कहना उचित है ॥ १९ ॥

यथा-क्रूरान्तस्थः सूर्यश्चन्द्रो वा युगपदेव मरणमसौम्यैरदृष्टयुवतीनां गर्भसहितानाम् अत्र लग्नेंदू पापांतस्थौ ज्ञेयाविति च वराहः । तद्यथा-पापद्वयमध्यसंस्थितौ लग्नेंदू न च सौम्यवीक्षितौ । युगपत्पृथगेव वा वदेन्नारी गर्भयुता विपद्यते ॥ उदयं यातैः पापैः सौम्यैरनिरीक्षितैर्मरणस्थैः । अत्र द्वादशगैः क्रूरैर्योगमाह गर्गः-अशुभैर्द्वादशक्षेस्थैः शुभदृष्टिविवर्जितैः । आधानलग्नं मरणं योषितः प्रवदेद्बुधः ॥ सारावलीपद्ये मूलं मृग्यम् वराहेणापि अभिलषद्भिरुदयर्क्षमसद्भिरित्यनेन द्वादश क्रूरग्रहा उक्ताः । उदयस्थितेऽर्के ज्ञे वा क्षीणेंदौ भौमसंदृष्टौ । व्ययगेऽर्के शशिनि कृशे पाताले लोहिते सगर्भौ च ॥ स्त्री म्रियतेऽस्मिन्नथवा शुक्रे पापद्वयांतस्थे । चन्द्रे चतुर्थे क्रूरैर्लग्नगतैर्वा विपद्यते गर्भः ॥ होराष्टमे क्षितिजे म्रियते गर्भः सह जनन्या च । वराहेणायं योगोऽन्यथोक्तः क्रूरः शशिनश्चतुर्थगैर्लग्नाद्वा निधनमाश्रिते कुजे । अथ निधनमाश्रिते कुजे चन्द्राल्लग्नाच्च योगद्वयं ज्ञेयम् । हिबुकस्थिते धरणिसुते रिःफगतेऽर्के क्षपाकरे क्षीणे । गर्भेण समं म्रियते पापग्रहदर्शने प्राप्ते ॥ लग्ने रविसंयुते क्षीणेंदौ वा कुजेऽथ वा म्रियते । व्ययभवनस्थैः पापैस्तथैव ॥

अथ शस्त्रेण गर्भिणीमरणयोगः ।

सप्तमस्थे दिवानाथे लग्नस्थे धरणीसुते ।
शस्त्रप्रहरान्निधनं ज्ञायते नात्र संशयः ॥ २० ॥

जिस जीवके गर्भाधानलग्नमें सप्तम सूर्य स्थित हो और लग्नमें मंगल स्थित हो तो वह गर्भिणी शस्त्रप्रहारकरके मृत्युको प्राप्त होती है इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ २० ॥

यथा-यामित्रगे दृष्टे लग्नगते कुजे निषिक्तस्य गर्भस्य भवति मरणं शस्त्रच्छेदैः सह जनन्या बलिभिर्बुधगुरुशुक्रैर्दृष्टेऽर्के नच शस्त्रप्रहारेण मृत्युः । किन्तु गर्भः पुष्टो भवति इत्यर्थः ॥

अथ आधानान्मासक्रममाह ।

कललं च घनं शाखास्थित्वग्रोमोद्गमः स्मृतिः ।
भुक्तिरुद्वेगसम्भूतिर्मासेष्वाधानतः क्रमात् ॥ २१ ॥

पहिले महीनेमें कलल अर्थात् रुधिर और वीर्य मिलकर रक्तरूप रहता है, दूसरे महीनेमें वीर्य और खून दोनों मिलकर करी पड़ता है उसको घन कहते हैं, तीसरे महीनेमें हाथ परके चिह्न होते हैं इनको शाखा कहते हैं, चौथे महीनेमें गर्भगत प्राणीके हड्डियां उत्पन्न होती हैं इनको अस्थि कहते हैं, पांचवें महीनेमें त्वक् अर्थात् खाल पैदा होती है, छठे महीनेमें रोग उत्पन्न होते हैं, सातवें महीनेमें स्मृति याने चेतनता होती है, आठवें महीनेमें भुक्ति अर्थात् अशन करता है, जो गर्भवती अन्न जल खाती है उसका रस नालके द्वारा बालक पाता है, नवमें महीनेमें उद्वेग अर्थात् घबराता है और दशमें महीनेमें उसका प्रसव अर्थात् जन्म होता है ॥ २१ ॥

आद्यमासे तु कललं द्वितीये शिवसंमुखः। तथा तृतीयेऽपि भवन्ति शाखा अस्थीन्यथ स्नायुशिराश्चतुर्थे ॥ तथा चर्माण्यपि पञ्चमे च षष्ठे त्वसृग्रोमनखाः शकृच्च। चेतस्विता सप्तममासि चेतस्तृष्णाशनास्वादनमष्टमे स्यात् ॥ स्पर्शोऽथ गन्धो नवमे मतिश्च स्रोतोभिघातीव च पूर्णदेहो गर्भोऽथ मासे दशमे प्रसूते।

अथ गर्भमासेशज्ञानम्।

शुक्रारजीवार्कशशीयमज्ञा लग्नेशशीतांशुदिवाकराः स्युः।
मासेश्वरास्तैः कलुषैः प्रपीडा पातो हतैर्वीर्ययुतैश्च पुष्टिः ॥२२॥

शुक्र, मंगल, बृहस्पति, सूर्य, चंद्रमा, शनैश्चर, बुध, लग्नेश, चंद्रमा सूर्य ये क्रमकरके पहिले महीनेस लेकर दशवें महीनेतकके स्वामी होते हैं अर्थात् पहिले महीनेका स्वामी शुक्र, दूसरेका मंगल, तीसरेका बृहस्पति चौथेका सूर्य, पंचमका चंद्रमा, छठेका शनैश्चर, सातवेंका बुध, आठवेंका लग्नेश, नवमका चंद्रमा, दशमका सूर्य स्वामी है। मासेशके सदृश अच्छा बुरा फल गर्भवतीको होता है अर्थात् जिस महीनेका स्वामी पापी हीनबल हो अथवा मासेश किसी ग्रहके साथ युद्धमें हारा हो वा उल्कापातसे मारा गया हो तो उसी महीनेमें गर्भपात होता है और हर एक महीनेका स्वामी बली हो, युद्धमें हारा न हो तो वह गर्भ पुष्ट होता है ये योग प्रश्नलग्नसे वा गर्भाधानलग्नसे जानना चाहिये ॥ २२ ॥

जिस स्त्रीके गर्भाधानकालमें मकरलग्नके अंत्य नवांशमें उदय अर्थात् उत्पन्न हो और सूर्य चंद्रमा शनैश्वर करके दृष्ट हो तो गर्भस्थ बालक बौना कहना चाहिये ॥

अथ भुजहीनयोगः ।

और गर्भाधानकालमें लग्नसे पंचम राशिमें जो द्रेष्काण हो उसको सूर्य चंद्रमा शनैश्वर देखते हों, उसमें मंगल स्थित हो तो गर्भस्थ भुजाहीन होना चाहिये ॥

अथांघ्रिहीनयोगः ।

गर्भलग्न वा प्रश्नलग्नसे नवम राशिमें जो द्रेष्काण हो उसको सूर्य चंद्रमा शनि देखते हों उसमें मंगल स्थित हो तो गर्भस्थ चरणहीन होता है ॥

अथ शिरोविहीनयोगः ।

और आधानकालमें लग्नगत जो द्रेष्काण हो उसको सूर्य चंद्रमा शनैश्चर देखते हों उसमें मंगल स्थित हो तो गर्भस्थ शिरहीन होता है। कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं कि तीनों बातें लग्नके ही द्रेष्काणसे विचारना चाहिये यथा लग्नम प्रथम द्रेष्काण शिरविहीन, उसकी लग्नमें द्वितीय द्रेष्काण पंचम राशिका होता है, उससे हाथविहीन, उसी लग्नमें तृतीय द्रेष्काण नवम राशिका होता है उससे पादविहीन जानो, परंतु ये किसी आर्चायका मत है इससे अप्रमाण है ॥ २५ ॥

तथाच—गार्गिः । लग्नद्रेष्काणगो भौमः शौरिसूर्येन्दुवीक्षितः । कुर्यादशिरसं तद्वत्पञ्चमे बाहुवर्जितम् ॥ अपदं नवमस्थाने यदि सौम्यैर्न वीक्षितः। तथाच सारावल्याम्—कुजयुतो द्रेष्काणस्त्रिकोणलग्नेषु भेषु दृष्टाश्च । विभुजांघ्रिमस्तकः स्याच्छनिरविचंद्रैस्तथा गर्भः ॥ कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं । द्रेष्काणाः स्युः स्वीयपंचांकपानाम् । तथाच शम्भुहोराप्रकाशे । विलग्नद्रेष्काणगते महीजे निरीक्षिते सूर्यशनींदुभिश्च ॥ कुर्यादशीर्षं सुतभे विबाहुं धर्मे विपादं न शुभेक्षितश्च ॥

अथ अधिकांगयोगः ।

बुधस्त्रिकोणगे शेषैर्बलहीनैर्नभश्चरैः ।
मुखपादकरैरेवं द्विगुणः स्यात्तदा शिशुः २६ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें पंचम नवम स्थानमें बुध स्थित हो और संपूर्ण ग्रह बलहीन चाहे जहां स्थित हों तो उस बालकके मुख पाद हाथ दुगुने होते हैं अर्थात् दो शिर चार पैर चार हाथ होते हैं ॥ २६ ॥

अथ मूकयोगः ।

चंद्रो वृषस्थितः पापैः कर्ककीटाह्वप्रांतकैः ।
नवांशः संयुतश्चापि मूकः स्याच्छुभनेक्षितः ॥ २७ ॥

चंद्रमा वृषराशिमें स्थित हो और सम्पूर्ण पापग्रह कक वृश्चिक मीन राशियोंके अंत्य नवांशमें स्थित हों तो गर्भस्थ मूक उत्पन्न होता है ॥

अथ सामान्यमूकयोगः ।

और पूर्वोक्त योग हो और चंद्रमाको शुभग्रह देखते हों तो गर्भस्थ अधिक दिनोंमें बोलनेवाला उत्पन्न होता है ॥ २७ ॥

अथ सदंतोत्पत्तियोगः ।

सौम्यर्क्षांशे रविजरुधिरौ चेत्सदंतोऽत्र जातः कुब्जः स्वर्क्षे
शशिनि तनुगे मंदमाहेयदृष्टे । पंगुर्मीने यमशशिकुजैर्वीक्षिते
लग्नसंस्थे संधौ पापैः शशिनि च जडः स्यान्न चेत्सौम्यदृष्टः२८

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें कन्या मिथुन राशियोंमें अथवा इन राशियोंके नवांशमें शनैश्चर मंगल दोनों स्थित हों तो गर्भस्थ बालक दांतयुक्त कहना चाहिये।

अथ कुब्जयोगः ।

और चंद्रमा कर्क राशिमें प्राप्त लग्नमें स्थित हो उसको शनैश्चर मंगल देखते हों तो गर्भस्थ कुबडा कहना योग्य है ।

अथ पंगुलयोगः ।

गर्भाधानकालमें मीन लग्न हो उसको शनि मंगल चंद्रमा ये ग्रह देखते हों तो गर्भस्थ पैर रहित अर्थात् लूला कहना चाहिये ।

अथ जड़योगः ।

गर्भाधानकालमें कर्क, वृश्चिक, मीन राशियोंके नवम नवांशमें पापग्रह सहित चंद्रमा स्थित हो तो गर्भस्थ बधिर अर्थात् बहिरा होता है, परंतु चंद्रमाको कोई शुभग्रह न देखता हो तो ॥ २८ ॥

अथ अंधयोगः ।

रविशशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षिते नयनरहितस्सौम्या-सौम्यैस्स बुद्बुदलोचनः । व्ययगृहगतश्चन्द्रो वामं हिनस्त्यपरं रविस्त्वशुभगदिता योगा जाप्या भवंति शुभेक्षितः ॥ २९ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें सिंहलग्न हो उसमें सूर्य, चंद्र स्थित हों और मंगल करके दृष्ट हों तो गर्भस्थ बालक अंधा होना चाहिये॥

अथ काणयोगः ।

सिंहराशिगत लग्न हो, उसमें सूर्य स्थित हो और मंगल, शनि देखते हों तो गर्भस्थ दाहिनी आंखसे काना कहना चाहिये और सिंहलग्नमें चंद्रमा स्थित हो उसको मंगल,शनि देखते हों तो गर्भस्थ बालक वामनेत्रसे काना कहना चाहिये और वही सिंहलग्नमें सूर्य चंद्रमा दोनों स्थित हों और शुभाशुभग्रह देखते हों तो गर्भस्थ बालक फुल्लीसहित आंखवाला कहना चाहिये और बारहवें स्थानमें स्थित चंद्रमा हो तो बाईं आंखसे काना कहो और जो सूर्य हो तो दाहिनी आंखको नष्ट करता है परंतु सूर्य, चंद्रमाको कोई शुभ ग्रह न देखता हो,पापग्रहोंसे दृष्ट हो तो यह योग पूरा मिलेगा ॥२९॥

अथ पुत्रकन्याज्ञानमाह ।

ओजभेषु तनुचन्द्ररवीज्यौ त्र्यंशकेषु बलिभिर्नरजन्म ।
योषिदंशसहितौ समभस्थौ स्तः स्त्रियो मुनिवराः कथयंति ३० ॥

गर्भाधानिक लग्न चंद्रमा, सूर्य, बृहस्पति ये सब अथवा इनमें बली हो सो विषमराशियोंमें अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ इनमें स्थित हो अथवा इनके नवांशोंमें स्थित हो तो गर्भस्थ बालक पुरुष कहना

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें पंचम नवम स्थानमें बुध स्थित हो और संपूर्ण ग्रह बलहीन चाहे जहां स्थित हों तो उस बालकके मुख पाद हाथ दुगुने होते हैं अर्थात् दो शिर चार पैर चार हाथ होते हैं ॥ २६ ॥

अथ मूकयोगः ।

चंद्रो वृषस्थितः पापैः कर्कर्कीटाह्वप्रांतकैः ।
नवांशः संयुतश्चापि मूकः स्याच्छुभनेक्षितः ॥ २७ ॥

चंद्रमा वृषराशिमें स्थित हो और सम्पूर्ण पापग्रह कक वृश्चिक मीन राशियोंके अंत्य नवांशमें स्थित हों तो गर्भस्थ मूक उत्पन्न होता है ॥

अथ सामान्यमूकयोगः ।

और पूर्वोक्त योग हो और चंद्रमाको शुभग्रह देखते हों तो गर्भस्थ अधिक दिनोंमें बोलनेवाला उत्पन्न होता है ॥ २७ ॥

अथ सदंतोत्पत्तियोगः ।

सौम्यर्क्षांशे रविजरुधिरौ चेत्सदंतोऽत्र जातः कुब्जः स्वर्क्षे शशिनि तनुगे मंदमाहेयदृष्टे । पंगुर्मीने यमशशिकुजैर्वीक्षिते लग्नसंस्थे संधौ पापैः शशिनि च जडः स्यान्न चेत्सौम्यदृष्टः२८

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें कन्या मिथुन राशियोंमें अथवा इन राशियोंके नवांशमें शनैश्चर मंगल दोनों स्थित हों तो गर्भस्थ बालक दांतयुक्त कहना चाहिये ।

अथ कुब्जयोगः ।

और चंद्रमा कर्क राशिमें प्राप्त लग्नमें स्थित हो उसको शनैश्चर मंगल देखते हों तो गर्भस्थ कुबडा कहना योग्य है ।

अथ पंगुलयोगः ।

गर्भाधानकालमें मीन लग्न हो उसको शनि मंगल चंद्रमा ये ग्रह देखते हों तो गर्भस्थ पैर रहित अर्थात् लूला कहना चाहिये ।

अथ जड़योगः ।

गर्भाधानकालमें कर्क, वृश्चिक, मीन राशियोंके नवम नवांशमें पापग्रह सहित चंद्रमा स्थित हो तो गर्भस्थ बधिर अर्थात् बहिरा होता है, परंतु चंद्रमाको कोई शुभग्रह न देखता हो तो ॥ २८ ॥

अथ अंधयोगः ।

रविशशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षिते नयनरहितस्सौम्या-
सौम्यैस्स बुद्बुदलोचनः । व्ययगृहगतश्चन्द्रो वामं हिनस्त्यपरं
रविस्त्वशुभगदिता योगा जाप्या भवंति शुभेक्षितः ॥ २९ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें सिंहलग्न हो उसमें सूर्य, चंद्र स्थित हों और मंगल करके दृष्ट हों तो गर्भस्थ बालक अंधा होना चाहिये॥

अथ काणयोगः ।

सिंहराशिगत लग्न हो, उसमें सूर्य स्थित हो और मंगल, शनि देखते हों तो गर्भस्थ दाहिनी आंखसे काना कहना चाहिये और सिंहलग्नमें चंद्रमा स्थित हो उसको मंगल,शनि देखते हों तो गर्भस्थ बालक वामनेत्रसे काना कहना चाहिये और वही सिंहलग्नमें सूर्य चंद्रमा दोनों स्थित हों और शुभाशुभग्रह देखते हों तो गर्भस्थ बालक फुल्लीसहित आंखवाला कहना चाहिये और बारहवें स्थानमें स्थित चंद्रमा हो तो बाईं आंखसे काना कहो और जो सूर्य हो तो दाहिनी आंखको नष्ट करता है परंतु सूर्य, चंद्रमाको कोई शुभ ग्रह न देखता हो,पापग्रहोंसे दृष्ट हो तो यह योग पूरा मिलेगा ॥२९॥

अथ पुत्रकन्याज्ञानमाह ।

ओजभेषु तनुचन्द्ररवीज्यौ त्र्यंशकेषु बलिभिर्नरजन्म ।
योषिदंशसहितौ समभस्थौ स्तः स्त्रियो मुनिवराः कथयंति ३० ॥

गर्भाधानिक लग्न चंद्रमा, सूर्य, बृहस्पति ये सब अथवा इनमें बली हो सो विषमराशियोंमें अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ इनमें स्थित हो अथवा इनके नवांशोंमें स्थित हो तो गर्भस्थ बालक पुरुष कहना

चाहिये और जो वेही सब ग्रह बली होकर समराशि अथवा समनवांशगत हों तो गर्भस्थ प्राणी स्त्री कहना चाहिये ॥ ३० ॥

विषमर्क्षे विषमनवांशे संस्थिता गुरुशशांकलग्नार्काः । पुंजन्मकराः समभेषु योषितः समनवांशगताः ॥ तथाच ओजर्क्षे पुरुषांशकेषु बलिभिर्लग्नार्कगुर्विंदुभिः पुंजन्म प्रवदेत्समांशकगतैर्युग्मेषु तैर्योषितः । तथाच गार्गिः । विषमर्क्षगता लग्नगुरुशशांकार्काः पुंजन्मकराः ।

बलिनौ विषमेऽर्कगुरू नरं स्त्रियं समगृहे कुजेंदुसिताः ।
यमलौ द्विशरीरांशष्विदुदृष्टाः स्वपक्षसमौ ॥ ३१ ॥

बलवान् होकर विषमराशिमें सूर्य, बृहस्पति स्थित हो अथवा विषमनवांशगत हों तो पुरुष गर्भगत कहना और चंद्रमा, शुक्र, मंगल ये बलवंत होकर समराशियोंमें और सम नवांशगत हों तो गर्भस्थ स्त्री कहना चाहिये॥

अथ यमलयोगः ।

वही चंद्रमा, शुक्र, मंगल, बृहस्पति द्विशरीरराशियोंके नवांशगत हों इन्हें बुध देखता हो तो अपने पक्षम जोरला पुरुष वा जोरली स्त्रीकारक होते हैं अर्थात् मिथुन कन्या धन मीन ये चार राशि द्विशरीर कहाती हैं इनमें मिथुन धन ये दो पुरुष हैं और कन्या मीन ये दो स्त्रीसंज्ञक हैं अब मिथुन, धनमें कहीं सूर्य बृहस्पति स्थित हों इन्हें बुध देखता हो तो दो जोरला पुरुषोंका जन्म कहना और कन्या, मीनमें कहीं चंद्र शुक्र मंगल स्थित हो इन्हें बुध देखता हो तो दो जोरली स्त्रियोंका जन्म कहना चाहिये पूरे दोनों योग हों तो दो पुरुष व दो स्त्रियोंका जन्म कहना ॥ ३१ ॥

एतत्स्पष्टमुक्तं शुक्रजातके--रविजीवौ युग्मधनुर्नवांशस्थौ बुधेक्षितौ पुंयुगम् । मीनकन्याराशिस्था भौमेंदुशुक्राः स्त्रीयुगं वदेत् ॥ भौमेंदुशुक्रा मीनस्त्रीनवांशस्था बुधेक्षिताः । स्त्रीयुगं चापयुग्मांशे गर्भेपुंस्त्रीयुगं वदेत् ॥ द्व्यंगस्था द्विस्वभावराशिनवांशस्था इति व्याख्येयम् अन्यथा ।

लग्नं त्यक्त्वा च विषमे पुत्रदो भास्करात्मजः ।
समे कन्याप्रदः प्रोक्तो नान्यग्रहनिरीक्षितः ॥ ३२ ॥

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें लग्नको छोड़कर लग्नसे विषम स्थान अर्थात् तीसरे पांचवें सातवें नवम एकादश स्थानमें स्थित शनि हो तो गर्भस्थ पुरुषका जन्मकारक है इसी प्रकार जो लग्नसे द्वितीय चतुर्थ षष्ठ अष्टम दशम द्वादश स्थानमें स्थित शनि गर्भस्थ कन्याका कारक होता है परंतु अन्य कोई ग्रह नहीं देखता हो तो इसी प्रकार ग्रहोंका बलाबल देखकर पुरुष अथवा स्त्री गर्भमें कहना चाहिये ॥ ३२ ॥

यया–लग्नाद्विषमोपगतः शनैश्वरः पुत्रजन्मदो भवति । निगदितयोगबलाबलमवलोक्य निश्चयो वाच्यः ॥ यत्र पुरुषयोगसम्भवः स्त्रीयोगसम्भवश्च तुल्यो दृश्यते तदाऽत्रैवंयोगकर्तृग्रहाणां बलाधिक्यं तस्यैव निश्चयो वक्तव्यः । विशेषोक्तः शुकजातके विहाय लग्नं विषमर्क्षसंस्थः शौरोऽपि पुंजन्मकरो विलग्नात् । प्रोक्तग्रहाणामवलोक्य वीर्यं वाच्यः प्रसूतौ पुरुषोंऽगना वा ॥ तथाच । एकोपि केंद्रे तु खगो बलीयान् स्वांशे स्ववर्गे नरखेटदृष्टः । सूते नरं स्वोच्चगतोऽथ केंद्रे स्त्रीसंज्ञकः स्त्रीजननस्तथैव ॥

अथ क्लीबयोगः ।

अन्योन्यं यदि पश्यतश्शशिरवी यद्यार्किसौम्यावपि
वक्रो वा समगं दिनेशमसमे चन्द्रोदये चेत्स्थितौ ।
युग्मौजर्क्षगतावपींदुशशिजौ भूम्यात्मजेनेक्षितौ
पुंभागे सितलग्नशीतकिरणाः षट् क्लीबयोगा अमी ॥ ३३ ॥

सूर्य चन्द्रमा आपसमें परस्पर देखते हों याने समराशिगत चन्द्रमा विषमराशिमें स्थित सूर्यको देखता हो इसी तरह चन्द्रमाको सूर्य देखता हो तो (एको योगः) और सप्तम राशिमें स्थित शनि और विषमराशिगत बुधको देखता हो और बुध शनिको देखता हो तो (द्वितीयो योगः) और मंगल विषम राशिमें स्थित होकर समराशिगत सूर्यको देखता हो और सूर्य मंगलको देखता हो (तदा तृतीयो योगः) और लग्न अथवा चंद्रमा ये दोनों विषमराशिमें स्थित हों और समराशिगत मंगल उन्हें देखता हो (तदा चतुर्थो योगः) और समराशिगत चंद्रमा और विषमराशिमें स्थित बुध इन दोनोंको किसी जगह स्थित हुआ मंगल देखता हो (तदा पंचमो योगः) और शुक्र,

लग्न चन्द्रमा ये किसी राशिमें पुरुषनवांशगत हों (तदा षष्ठो योगः) इन छःयोगोंमेंसे कोई एक भी योग गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें हो तो गर्भस्थ नपुंसक कहना चाहिये ॥ ३३ ॥

अन्योन्यं रविचन्द्रौ विषमर्क्षस्वमर्क्षगावलोकपातिनिरीक्षितौ । इन्दुजरविपुत्रौ चाद्दष्टौ बलिनौ नपुंसकं कुरुतः ॥ सूर्यसमराशिगतं वक्रो विषमर्क्षगोऽवलोकयति । विषमर्क्षे लग्नेंदू कुजेक्षितौ खण्डसम्भवं कुरुतः ॥ बुधचन्द्रौ विषमर्क्षे समर्क्षगौ तथा कुरुतः । ओजनवांशकसंस्था लग्नेंदुस्तथैवोक्ताः ॥ पश्यति वक्रः सप्तमे सूर्यश्चंद्रादयश्च विषमर्क्षे । यद्येवं गर्भस्थः क्लीबो मुनिभिः सदा दृष्टः । ओजसमराशिसंस्थौ इंदू खण्डं कुजेक्षितौ कुरुतः ॥ नरभे विषमनवांशे होरेंदुसितबुधार्किदृष्टा वा । तथाच--जाया-स्थाने यदा मिश्रे हिबुके च तथाविधः । नपुंसको भवेज्जातो यदि रक्षेत्स्वयं हरिः ॥ एते षट् क्लीबयोगाः स्मृताः । तथाच । बलाबलं विलोक्यैषां ग्रहाणां योगकारिणाम् । तथा स्त्रीपुंसक्लीबानां निर्णयः इति ।

अथ संतानद्वययोगः ।

युग्मे चंद्रसितावथोजभवने स्युर्ज्ञारजीवोदया
लग्नेंदू नृनिरीक्षितौ च समगौ युग्मेषु वा प्राणिनः ।
कुर्युस्ते मिथुनं ग्रहोदयगतान् द्व्यगांशकान्पश्यति
स्वांशज्ञस्त्रितयं ज्ञगांशकवशाद्युग्मं त्वमिश्रः समम् ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें चंद्रमा, शुक्र ये दोनों ग्रह समराशियोंमें स्थित हों और बुध, मंगल, बृहस्पति, लग्न ये चारों विषमराशिमें स्थित हों तो गर्भस्थ एक पुरुष और एक स्त्री अर्थात् कन्या कहना चाहिये अथवा लग्न चंद्रमा समराशिमें स्थित हों उनको कोई पुरुष ग्रह देखता हो तो उस गर्भमें एक लड़का और एक लड़की कहना अवश्य है और बुध, मंगल, बृहस्पति, लग्न ये चारों बली होकर समराशिमें स्थित हों तो उस गर्भमें भी एक पुरुष एक कन्या संतान कहनी चाहिये ॥

लग्ने समराशिगते चंद्रेण निरीक्षिते बलयुतेन । गणितविदां वक्तव्यं मिथुनं गर्भ-संस्थितं नूनम् । लग्नेंदू समराशिगौ शशिसितयोः विषमे गुरुवक्रसौम्येषु द्विशरीरे बलिषु प्रवदेत् स्त्रीपुरुषमत्रैव द्विशरीरांशकयुतां गृहविलग्नं च पश्यति इंदुयुते कन्यांशे द्वे कन्ये पुरुषस्य विनिश्चिते गर्भे मिथुनांशे कन्यैका द्वौ पुत्रौ चिन्तनीयमेवं स्यात् ॥

अथ त्रयसंतानयोगः ।

सम्पूर्ण ग्रह और लग्न जो द्विस्वभावराशियोंके नवांशमें स्थित हों और बुध मिथुनके नवांशमें स्थित होकर उन्हें देखता हो तो गर्भस्थ दो पुरुष एक स्त्री कहना चाहिये और जो बुध कन्या राशिके नवांशमें स्थित हो और पूर्वोक्त ग्रहोंको देखता हो तो उस गर्भमें दो स्त्री एक पुरुष कहना चाहिये और जो बुधसहित सम्पूर्ण ग्रह और लग्न ये सब स्त्रीसंज्ञक अथवा पुरुषसंज्ञक नवांशोंमेंसे एक ही तुल्य नवांशोंमें स्थित हों उसीके अनुसार तीनों स्त्री वा तीनों लडके गर्भमें कहना चाहिये अर्थात् मिथुनके नवांशोंमें बुध स्थित होकर मिथुन धनके नवांशोंमें स्थित सब ग्रहोंको देखता हो तो उस गर्भमें तीन पुरुष कहना चाहिये और कन्याके नवांशमें स्थित बुध, कन्या मीनके नवांशोंमें स्थित सब ग्रहोंको देखता हो तो उस गर्भमें तीन कन्या कहनी चाहिये ३४

यथा-नृमिथुनं धनुरंशगतान् ग्रहान् विलग्नं च पश्यति इन्दुसुतः मिथुनांशसुस्थितः यदा पुरुषत्रयं स्यात् तदा गर्भे कन्या मीनांशस्थितः विहगा उदयं च युवतिभागतः पश्यति इंदुसुतः कन्यात्रितयं स्यात् ॥

अथ प्रभूतसंतानयोगः ।

धनुर्धरस्यांतगते विलग्ने ग्रहैस्तदंशोपगतैर्बलिष्ठैः ।
ज्ञेनार्किणा वीर्ययुतेन दृष्टे संति प्रभूता अपि कोशसंस्थाः ॥३५॥

धनराशिके अंत्यनवांश लग्न हो और उसी धनके नवांशपै बलवान् होकर सब ग्रह स्थित हों और बलकरके बुध और शनैश्वर उस लग्नको देखते हों तो उस गर्भकोशमें जेरमें लपटे हुए प्रभूत संतान अर्थात् पांच वा सात वा बहुतसे बालक कहना चाहिये ॥ ३५ ॥

यथा-धनुर्धरस्यांतगते विलग्ने धनस्यांतिमनवांशे अत्र प्रभूताः पंचसप्तदशपरिमिता इत्युपलक्षितम् ।

अथ प्रसवकालज्ञानम् ।

द्विषट्कभागे शशभृद्धि यस्मिंस्तस्मिन् प्रसूतिः पुरतो मृगांके ।
उदेति यावान्झनवांशकः स्यात्तावद्गते जन्मदिनोषसोः स्यात् ३६

गर्भाधानकालमें अथवा प्रश्नकालमें जितनी संख्याके द्वादशांशमें चंद्रमा स्थित हो उस द्वादशांशसे उतनी ही राशिमें स्थित चंद्रमामें जन्म कहना चाहिये। गर्भाधानलग्नके अथवा प्रश्नलग्नके समय जो लग्न जितनी व्यतीत हो गई हो उतना ही दिन अथवा रात्रि व्यतीत होनेपर जन्म कहना और जो दिनबली लग्न हो तो दिनमें जन्म कहना और रात्रिबली हो तो रात्रिमें जन्म कहना । यथा"गोजाश्विकर्किमिथुनाः समृगा निशाख्याः पृष्ठोदया विमिथुनाः कथितास्त एव ॥" उस लग्नके जितने अंश व्यतीत हुए हों उतने ही अंशोंके हिसाबसे दिन व रात्रि व्यतीत हुए जन्म कहना चाहिये। उसीपरसे जन्मलग्न, होरा, द्रेष्काण नवांश आदि कल्पना करे और जिस दिन जन्म निश्चय हो उस दिनके पंचांगसे अथवा सिद्धान्तसे ग्रह जान लेना चाहिये ॥ ३६ ॥

उदाहरण–जिस समय प्रश्नकर्ताने कहा कि मेरी स्त्री गर्भवती है मेरेको पुत्र अथवा कन्या होगी ? तब विद्वान्को चाहिये उक्त समय जितना दिन-मान हो या रात्रिमान हो उसको रखना चाहिये और उक्त समयकी लग्न स्पष्ट करनी चाहिये और उक्त समयका चंद्रमा स्पष्ट करना चाहिये । यथा दिनमानम् ३० । पल । ०० । रात्रिमानम् ३० । ०० । उक्त समयकी लग्न स्पष्ट ३ । ८ । १२ । २० । चंद्रस्पष्ट ४ । १० ।२५ । २५ अब जानना चाहिये कि सिंह राशिगत चंद्रमाके १०अंश२५कला गई१० दश अंशतक चौथा द्वादशांश हुआ यहां दशसे जादे हैं तो सिंहराशिगत चंद्रमा पंचद्वादशांशमें स्थित है तो सिंहराशिसे पंचम धनराशि हुई और धन-से पंचम मेष राशि होती है तो जानना चाहिये कि इस प्राणीका जन्म मेष-राशिगत चंद्रमामें गर्भसे दशम मासमें होगया और नक्षत्र जाननेकी यह रीति है कि चंद्रमाका द्वादशांश पूरा एक राशि भोग करता है तो चंद्रभुक्त द्वाद-शांश प्रमाणसे कितना आवेगा यहां त्रैराशिक गणित करके फिर एक राशिको चंद्रभुक्त द्वादशांशसे गुणना, उसमें चंद्रस्थ द्वादशसे भाग देना जो अंशादिक लब्ध आवे उसीसे जन्मकालका नक्षत्र जानना चाहिये ।

अथ कालज्ञानमाह।

यहां प्रश्नलग्न कर्क है ये रात्रिबली हैं तो इस गर्भस्थप्राणीका रात्रिमें जन्म कहना उस लग्नके जितने अंश व्यतीत हुए हों उतने ही अंशोंके हिसाबसे दिन चढ़े अथवा रात्रि गये जन्म कहना। यहां लग्नके ८अंश१२क० २० विकला गईं और जन्मके दिनमान तीस घड़ी हैं।जैसे ही रात्रिमान भी ३०दंड हुआ और एक लग्नके भी ३० अंश होते हैं तो एक २ अंशके एक दंड मिला इसी हिसाबसे आठ अंशको ८ दंड मिले और बारह १२ कलाको बारह पल मिले और २० विकलाको २० विपल मिले तो पूरा इष्ट ८ दंड १२ पल २० विपल रात्रि व्यतीत हुए पर कहना चाहिये॥

तथा च गार्गिः—यावत्संख्ये द्वादशांशे शीतरश्मिर्व्यवस्थितः। तत्संख्यो यस्ततो राशिर्जन्मेंदुस्तद्गतो भवेत्॥ अस्यार्थः॥ मेषादिगणनया यावत्संख्ये द्वादशांशे चंद्रमा व्यवस्थितः तद्राशियावत्संख्यो यो राशिस्तत्र वर्तमाने जन्म वक्तव्यमिति। अथ चन्द्रद्वादशांशप्रमाणेन २।३०।कलात्मकेन।१५०। सकलचन्द्रराशिरष्टशतकला१८०० लभ्यते तदा भुक्तद्वादशकलाप्रमाणेन किमिति इत्यनुपातलब्धम्। चंद्रराशिभुक्तं कलात्मके ज्ञेयं ततोऽष्टशतकलाकल्पनया चंद्रनक्षत्रं ज्ञेयम् इति शेषः। अन्ये तु वराहः— तत्कालमिंदुसहितो द्विरसांशको यस्तत्तुल्यराशिसहिते पुरतश्शशांके। यावानुदेति दिनरात्रिसमानभागस्तावद्गते दिननिशोः प्रवदंति जन्म॥ अस्यार्थः॥ तत्कालेंदुना यावत्संख्यो द्वादशभागमधिष्ठितः तावत्संख्याराशिस्थे चन्द्रे सति प्रसवकाले प्रसवो वक्तव्यः। तथाच सारावल्याम्—यस्मिन् द्वादशभागे गर्भाधाने व्यवसिते चन्द्रे। तत्तुल्यर्क्षे प्रसवं गर्भस्य समादिशेत्प्राज्ञः॥ समुद्रजातकेऽपि—यतमे द्वादशांतः सूतिस्तत्संख्यो विधाविति। अत्र चन्द्रलग्नयोर्मध्ये यो बलवान् तस्य द्वादशांशकवशेन चन्द्रराशिर्ज्ञेयः। इत्युक्तं शुकजातके॥ लग्नेंद्वोर्यो बलवान् तस्य द्विदशांशकान्विते शशिस्थिते विधौ प्रसवः इति गर्गजातके। शुकाचार्ययोरेकवाक्यं स्यात्सारावल्याम्—समुद्रजातकादिमते मूलं मृग्यम्। दिनरात्रिकालज्ञानं सारावल्याम्। तत्कालदिवसनिशासंज्ञः समुदयाति राशिभागो यः। यवानुदयस्तावान् वाच्यो दिवसो निशैव वक्तव्यः॥ तथा च। सम्यक् ज्ञाते नूनमाधानकाले योगानुक्तांश्चिंतयेज्जातकज्ञः। यद्वा सर्वे प्रश्नतः सूतिकालाः प्रोक्तास्ते वै तत्फलज्ञैर्महद्भिः। प्रश्नभे कुमुदिनीपतौ स्थिते सप्तमं वदति बादरायणः। गर्ग आह-भगवान् नृजन्मभं पञ्चमं तु मुनिसंमतं त्विदम्। तत्कालशीतांशुनवांशकाच्च जामित्रगे शीतकरे प्रसूतिः॥ लग्नस्य नन्दांशपतेस्तु यद्वा क्षेत्रं प्रयाते

हिमगौ प्रसूतिः । यस्मिन् द्विषड्भागगते विधौ तद्राशिस्थितेऽब्जे पुरतः प्रसूतिः ॥ रसातलेशे बलसंयुते च गर्भस्तदानीं सुखसंयुतः स्यात् । यदोदयेन्द्वोः सबलस्तु तस्य द्विषट्कभागैः सहितोऽत्र राशिः ॥ तावद्धि तद्राशिगते मृगांके भवेत्प्रसूतिः पुरतश्च केचित् । यावानुदेति द्युनिशोर्नवांशे तावद्गते घस्रनिशोर्जनुः स्यात् ॥ द्युरात्रिसंज्ञाः कथितास्तु पूर्वं तद्राशितः कालविमिश्रतः स्यात् । अत्रोदाहरणम् ॥ तत्र प्रश्नकाले दिनमानं च ३०।०० रात्रिमानम् ३०।०० स्पष्टचन्द्रो राश्यादि ४। १०।२५।३५।लग्नं च ३।८।१२।२०। अत्र चन्द्रः सिंहराशौ पञ्चमे द्वादशांशे धन्वाख्येऽस्ति ततो धनुषः पञ्चमे मेषराशौ चन्द्रे सति जन्म ॥ तत्र नक्षत्रानयनार्थमनुपातः । अत्र पञ्चमे द्वादशांशे भुक्तकलादि २५।३५ ततो यदि द्वादशांशप्रमाणेन १५० सकलचन्द्रराशिकला १८०० लभ्यन्ते तदा आभिर्भुक्तकलाभिः २५। किमित्यत्र फलार्थम् द्वयोः सार्द्धशतेनापवर्तते इति छाया ।२५।३५। गुणागुणिते जाता ३०७ ततो नक्षत्रप्रमाणेन ८०० भक्तेर्लब्धऋक्षम् । अश्विनी ततश्चरणप्रमाणलिप्ताभिः ८०० भक्ते शेष ३०७ लब्धचरणे भुक्तः १ तेनाश्विनीद्वितीयचरणे जन्म जातम् इति ज्ञानम् ॥ अथ कालज्ञानम् ॥ तत्र कर्कराशिः रात्रिबलसंज्ञकस्तेन रात्रौ जन्मेति ज्ञानम् ॥ अथ घट्यादिज्ञानार्थमुपायः ॥ यदि त्रिंशद्भिरंशैर्निशाप्रमाणम्, त्रिंशद्घटिकात्मकम् लभ्यते तदा लग्नभुक्तांशैः ८।१२। २०। किमत्रापि फलार्थयोस्त्रिंशतापवर्तते कृते लब्धरूपं तेन भुक्तगुणिते च लब्धमविकृतम् अतो जाता रात्रिगतघटिका।८।१२।२०। एवं सर्वत्र बोधनीयम्। एवं कालज्ञाने चन्द्रादिनज्ञाने च जाते जन्मोक्तं चिन्त्यमित्याह कल्याणवर्मा। इत्याधानं प्रथमं प्रसूतिकालं सुनिश्चितं कृत्वा । जातकविहितं च विधिं विचिंतयेत् तत्र गणितज्ञ इति । अथ जन्मनि चन्द्रज्ञानं प्रकारांतरेणाह । यथा--यदेकराशिसंस्थितौ श्वेतेश्वरक्षपाकरौ । तदैव गुर्विणी वधूः प्रसूयते तु नान्यथा । प्रश्नलग्नादासन्नप्रसवकालं चिन्तयति ।

अथ गर्भलग्नात्प्रसवमासज्ञानम् ।

गर्भाधानं चरे राशौ नवमे मासि सूयते ॥
स्थिरभे दशमे मासे द्व्यंगे चैकादशे च सः ॥ ३७ ॥

जो गर्भाधानकालमें चरराशि हो तो गर्भसे नवम मासमें बालककी उत्पत्ति होती है और स्थिरलग्नमें गर्भाधान रहे तो दशममासमें बालक उत्पन्न होता है और द्विस्वभावलग्नमें जो गर्भाधान रहे तो ग्यारहवें मासमें प्रसूति कहना चाहिये ॥ ३७ ॥

अथ प्रश्नलग्नाद्गर्भगतमासज्ञानम् ।

लग्नेंऽशकास्तु यावंतस्तावन्तो गर्भमासकाः ॥
सुताद्वांगाद् बली शुक्रो यावद्गेहेऽथ तन्मितिः ॥ ३८ ॥

प्रश्नलग्नके जितने नवांश व्यतीत हुए हों उतने ही गर्भके मास व्यतीत कहना चाहिये और जो नवांश वर्तमान हो उतना ही गर्भका मास वर्तमान कहना चाहिये । यथा—यहां लग्नके ८ अंश १२ कला २० विकला हैं तो जानना चाहिये कि दो नवांश व्यतीत हुए तो दो मास गर्भके गत हो गये तीसरा नवांश वर्तमान है तो तृतीय मासप्रवेश है अथवा पंचम स्थानसे वा जितने स्थान आगे शुक्र बली होकर स्थित हो उतने ही मास गर्भके जानना चाहिये ॥ ३८ ॥

अथ वर्षत्रयप्रसूतियोगः ।

मकरांशगते लग्ने द्यूनस्थे भास्करात्मजः ॥
अस्मिन् योगे निषेकस्तु सूतिरब्दत्रये भवेत् ॥ ३९ ॥

गर्भाधानकालमें चाहे कोई राशि लग्नमें स्थित हो उसमें मकर अथवा कुंभका नवांश उदय हो और लग्नसे सातवें घरमें शनैश्चर स्थित हो तो तीन वर्षमें गर्भस्थका जन्म कहना चाहिये ॥ ३९ ॥

अथ द्वादशाब्दे प्रसूतियोगः ।

कर्कटांशगते लग्ने सप्तमस्थे कलानिधिः ॥
तदा द्वादशवर्षेण मुच्यते गर्भबंधनात् ॥ ४० ॥

जो गर्भाधानकालिक लग्नमें कर्क राशिके नवांशका उदय हो और लग्नसे सातवें स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो तो बारह वर्षमें गर्भस्थका जन्म कहना चाहिये । गर्भाधानाध्यायमें जो कहा है जन्मकालसे भी तैसे ही प्रश्नकालसे भी तिसी प्रकार विचार कर फल कहना चाहिये ॥ ४० ॥

अस्मिन्नध्यायमध्ये तु गर्भाधानमुदीरितम् ॥
बलदेवसुतो गौडः श्यामलालबुधेन वै ॥ ४१ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज- राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम- संग्रहे गर्भाधानवर्णनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

इस अध्यायके बीचमें बलदेवप्रसादका पुत्र गौड़ श्यामलाल पंडितने गर्भाधानका वर्णन किया ॥ ४१ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि- पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां गर्भाधानवर्णनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ प्रसवाध्यायप्रारंभः ।

अथ प्रसूतिमासज्ञानम् ।

आधानके चरगृहे दशमे प्रसूतिस्त्वेकादशे स्थिरगृहे ऽप्युभये- र्कमासाः ॥ शीर्षोदयैश्च शिरसाप्युभये कराभ्यां पृष्ठोदयैश्च जननं भवतीह पद्भ्याम् ॥ १ ॥

जिस प्राणीका गर्भाधान चरराशिवर्ती लग्नमें होता है उस प्राणीका जन्म दशवें मासमें होता है और स्थिरमें हो तो ग्यारहवें मासमें प्रसव कहना और द्विस्वभावमें हो तो बारहवें मासमें प्रसूति कहनी चाहिये ॥

अथ प्रसवप्रकारज्ञानमाह ।

जो राशि लग्नमें स्थित हो उसका जिस तरह उदय होता है उसी प्रकार जन्म होते समय बालकको कहना चाहिये यथा जो शीर्षोदय राशि लग्नमें स्थित हो तो उस बालकका जन्म शिरकी तरफसे कहना और उभयोदय- लग्नमें जन्म हो तो उस बालकका हाथोंकी तरफसे जन्म कहना और पृष्ठोदय राशि लग्नमें स्थित हो तो पैरोंकी तरफसे बालकका जन्म कहना चाहिये परन्तु इसमें जन्मसमयमें नवांशका विचार कर लेना ॥ १ ॥

शीर्षोदये विलग्ने मूर्ध्ना प्रसवोऽन्यथोदये चरणैः । उभयोदये च हस्तैः शुभदृष्टः शोभनोऽन्यथा कष्टैः ॥ तथा गर्गजातके—शिरसा प्रसवो ज्ञेयः समयः स्कंधदर्शनात् । अंघ्रिभ्यां प्रसवे काले जंघासंदर्शनाद्भवेत् ॥ कराभ्यां प्रसवे चैव मणिबंधस्य दर्शनात् ॥ मणित्थः-लग्नाधिपेंऽशगते लग्नस्थे वक्रिमे गृहे । विपरीतिगतो मोक्षो वाच्यो गर्भस्य संक्लेशः॥कोई आचार्य कहते हैं कि शीर्षोदयराशि लग्नमें स्थित हो तो उत्तानपाद होते हैं॥

अथ नालवेष्टितजन्मज्ञानम् ।

लग्नेषु सिंहाजवृषस्थितेषु तत्स्थे कुजे सूर्यसुते च यद्वा ।
सार्कोऽर्कजो भांशसमे च गात्रः स्यादर्भको नालविवेष्टितांगः ॥ २ ॥

मेष, वृष, सिंह इन राशियोंमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो उनमें मंगल अथवा शनैश्चर स्थित हो तो नालसे लिपटा हुआ बालक उत्पन्न होता है, सूर्यसहित शनैश्चर जिस नवांशमें उदय हो उसी अंगमें कालपुरुषके नाल लपटा हुआ कहो ॥ २ ॥

सिंहाजगोभिरुदये सूतौ नालेन वेष्टितो जन्तुः । लग्ने कुजेऽथ शौरे राश्यंशसमानगात्रे च ॥ राश्यंशेति । राशिलग्ने यद्राशिनवांशस्योदये भवति स राशिकालः पुरुषस्य यस्मिन्नंगे व्यवस्थितः तस्मिन्नंगे नालवेष्टितः ।

अथ कोशवेष्टितयमलयोगः ।

रवौ चतुष्पदे स्थिते द्विदेहसंस्थितैः परैः ।
बलान्वितैस्तदा यमौ स एव कोशवेष्टितौ ॥ ३ ॥

सूर्य चतुष्पदराशि अर्थात् मेष, वृष, सिंह, धनका परार्द्ध, मकरका पूर्वार्द्ध इनमेंसे किसीमें स्थित हो और शेष ग्रह द्विदेह मिथुन, कन्या,तुला, धनका पूर्वार्द्ध, मकरका परार्द्ध, कुंभ इन राशियोंमेंसे किसीमें बलसहित स्थित हो तो एक जेरसे लपटे हुए दो जुरे हुए बालक पैदा होते हैं॥ ३ ॥

सूर्यश्चतुष्पदस्थः शेषा द्विशरीरसंस्थिता बलिनः । कोशवेष्टितदेहौ यमलौ खलु सम्प्रसूयेत ॥

अथ सदंतप्रसूतियोगः ।

सौम्यस्य भांशोपगतौ यमारौ बालं सदंतं कुरुतः प्रसूतौ ।
कुलीरलग्ने हिमागौ तदा चेन्मंदारदृष्टे स तु कुब्जकः स्यात् ॥ ४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या, मिथुन राशिमें अथवा इनके नवांशमें शनैश्चर, मंगल ये दोनों स्थित हों तो उस बालककी उत्पत्ति दांत करके सहित कहनी चाहिये ॥

अथ कुब्जयोगः ।

कर्कलग्न हो उसमें चन्द्रमा स्थित हो उसको शनैश्चर या मंगल देखते हों तो बालक कुबड़ा पैदा होता है ॥ ४ ॥

अथ मासेषु दंतोत्पत्तिफलम् ।

दंतैर्यतश्चेत्प्रथमेऽर्भकः स्यात्स्वयं विनश्येदनुजं द्वितीये ।
हन्यात्तृतीये भगिनीं चतुर्थे स्वमातरं बाणमितेऽग्रजातम् ॥५॥
षष्ठादिमासे शुभदो नितांतं साकं यदा जन्म भवेत्तु दंतैः ।
तस्योर्ध्वपंक्तिः प्रथमं द्विजाः स्युः स्वमातरंस्वं च निहंति तातम् ६

जिस बालकके पैदा होनेके बाद पहिले महीनेमें दांत पैदा हों तो वह बालक आप ही नाशको प्राप्त होता है और द्वितीय मासमें जिस बालकके दंतोत्पत्ति हो तो वह बालक छोटे भ्राताको नाश करता है और तृतीय मासमें दंतोत्पत्ति हो तो वह बालक बहिनका नाश करता है, चतुर्थमास-में दंतोत्पत्ति हो तो अपनी माताका नाश करता है और पंचममासमें दंतोत्पत्ति हो तो वह बालक अपने बड़े भाईका नाश करता है ॥५॥ छठे महीनेको आदि लेकर अर्थात् सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, द्वादश मासोंमें जो दंतोत्पत्ति हो तो श्रेष्ठ फलको करता है, जो बालककी दंतोत्पत्ति ऊपरकी पंक्तिकी पहिले हो तो वह बालक अपनी माताको और अपने पिताको नाश करता है ॥ ६ ॥

अथ मूकयोगः ।

कर्कालयंत्यांतगैः पापैर्भौत्यस्थे वा वृषे विधौ ।
मूकः पापेक्षिते सद्भिर्दृष्टे गीः स्याच्चिरेण तु ॥ ७ ॥

कर्क, वृश्चिक, मीन इन राशियोंके नवम नवांशपर सम्पूर्ण पापग्रह स्थित हों और चंद्रमा वृषराशिमें स्थित हो उसको पापग्रह देखते हों तो वह बालक मूक होता है और पूर्वोक्त योग हो और चन्द्रमाको शुभग्रह देखते हों तो वह बालक बहुत दिनमें बोलता है ॥ ७ ॥

अथ पंगुयोगः ।

लग्ने झषे चंद्रयुते च यद्वा सिंहाजचापांतगतैश्च पापैः ।
वृषे विधावर्कयमारदृष्टे पंगुर्नरः स्याच्छुभदृष्टिहीने ॥ ८ ॥

मीनराशि लग्नमें स्थित हो उसमे चन्द्रमा युक्त हो, सिंह, मेष, धन इनके अंत्यनवांशपर पापग्रह स्थित हों (एको योगः) । अथवा वृष राशिमें चन्द्रमा स्थित हो उसको सूर्य, शनैश्चर, मंगल देखते हों, शुभग्रहकी दृष्टि न हो तो वह बालक पंगु अथात् लूला होता है ॥ ८ ॥

अथ जडयोगः ।

क्रूरग्रहैः संधिगतैः शुभालोकनवर्जितैः ।
हिमांशुसहितैर्बालो जडः स्यान्नात्र संशयः ॥ ९ ॥

पापग्रह संधिगत हों अर्थात् पूर्वोक्त राशियोंके नवम नवमांशमें स्थित हों शुभग्रह कोई न देखते हों चन्द्रमा करके सहित हो तो वह बालक जड़ होता है अर्थात् ज्ञानविचाररहित मूर्ख होता है ॥ ९ ॥

अथांधयोगः ।

सिंहे विलग्ने रविशीतभानू मंदारदृष्टौ कुरुतो नरोंऽधः ।
शुभाशुभैर्बुद्बुदनेत्रयुग्मं वामं हिनस्त्यब्ज इनोंऽत्ययोगात् १०

सिंहलग्न हो उसमें सूर्य चन्द्रमा स्थित हों उनको शनैश्चर मंगल देखते हों तो वह बालक अंध उत्पन्न होता है और पूर्वोक्त योग होय उनको शुभग्रह भी देखते हों तो उस बालकके नेत्रोंमें फूली कहना उचित है और सिंह लग्न हो व्ययस्थानमें उसमें सूर्य स्थित हो और मंगल शनैश्चर देखते हों तो दहिने नेत्रसे काना कहना चाहिये । इसी प्रकार सिंहलग्न हो

व्ययस्थान उसमें चन्द्रमा स्थित हो, उसको मंगल शनैश्चर देखते हों तो वामनेत्रसे काना कहना चाहिये, परंतु सिंहलग्न व्ययस्थानवर्ती हो तो काना योग कहना चाहिये ॥ १० ॥

अथ विलोमजन्मज्ञानम् ।

विलग्नगेऽर्कजे विधौ व्यये च नीचगे रवौ ।
विलोमजन्म भूमिजे सभार्गवे त्वनालकः ॥ ११ ॥

जन्मलग्नमें शनैश्चर चन्द्रमा स्थित हों और व्ययस्थानमें नीच राशिगत सूर्य स्थित हो तो उस बालकका उलटा जन्म कहना चाहिये और पूर्वयोग रहते मंगल शुक्रसहित स्थित हो तो वह बालक नालरहित उत्पन्न होता है ॥ ११ ॥

अथ क्लेशान्वितजन्मज्ञानम् ।

विलग्नभांशाधिपतौ विलग्ने विलोमसंस्थे सति विग्रहः स्यात् ।
क्लेशान्विते व्यस्तगतं च जन्म शुभैः प्रदृष्टे च ततः सुखं हि ॥१२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न नवांशपति दोनों लग्नमें विलोम स्थित हों तो उस बालकका जन्म विग्रहसे हो और पूर्वोक्त योग रहते लग्ननवांशपति व्यस्तगत हों तो उस बालकका जन्म क्लेशकरके कहना चाहिये और उसी पूर्वयोग होते शुभग्रह देखते हों तो उस बालकका जन्म सुखपूर्वक होता है ॥ १२ ॥

अथ जारजातज्ञानम् ।

न प्राग्विलग्नं च विधुः प्रपश्येज्जीवोऽर्कयुक्तं सितगुं च यद्वा ।
सार्के विधौ पापयुतेऽथवा चेत्स्याज्जारजातस्य तदाहि जन्म १३

जन्मलग्नको चंद्रमा न देखता हो और बृहस्पति लग्न व चंद्रमाको न देखता हो तदा एको योगः। अथवा सूर्ययुक्त चंद्रमाको बृहस्पति न देखता हो तदा द्वितीयो योगः। अथवा सूर्य चंद्रमायुक्त होकर पापग्रहसहित हो तो इन योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य परपुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना चाहिये॥ १३॥

सुरेज्यदृष्टे तनुगेऽथवाब्जे देवेज्यवर्गोज्झित एष चन्द्रः ।
सपापकेऽर्केण युतेऽथ चंद्रे स्याज्जारजातस्य तदा हि जन्म १४

बृहस्पति करके दृष्ट चंद्रमा लग्नमें स्थित हो बृहस्पतिके वर्ग अर्थात् षड्वर्गमें चंद्रमा न हो तदा एको योगः । और पापग्रहसहित चंद्रमा सूर्ययुक्त हो तो भी मनुष्य जारजात अर्थात् दूसरे मनुष्यसे पैदा कहना चाहिये॥ १४॥

नीचोपगाः सूर्यसुरेज्यचन्द्राः कुर्वंति ते जन्मनि जारजातम् ।
यद्वा तनौ सूर्यसुतेन दृष्टाः शुभैश्च चन्द्रोदयभार्गवाख्याः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नीचराशिमें प्राप्त सूर्य, बृहस्पति, चंद्रमा हों तो वह बालक परपुरुषसे उत्पन्न कहना चाहिये अथवा चंद्रमा,शुक्र लग्नमें स्थित हों उसको शनैश्चर देखता हो तो जारजात कहना चाहिये ॥ १५ ॥

अथ न जारजातयोगः ।

चन्द्रे गुरुक्षेत्रगतेऽथ वा चेत्सुरेज्ययुक्तेऽन्यगृहे स्थितेऽब्जे ।
गुरोर्दृकाणेऽथ नवांशके वा न जारजातस्तु भवेत्प्रसूतिः ॥१६॥

चंद्रमा बृहस्पतिके स्थानमें स्थित हो अथवा बृहस्पति करके चंद्रमा युत वा दृष्ट हो अथवा बृहस्पतिके द्रेष्काण अथवा नवांशमें चंद्रमा स्थित हो अथवा इसी प्रकार लग्न हो तो वह मनुष्य अपने ही बापकरके उत्पन्न कहना ॥ १६ ॥

न लग्नं पश्यतींदुं च जीवः सूर्योपेतं शीतरश्मिं च यद्वा । सार्के चन्द्रे पापयुक्तेऽथवा स्यान्निःसंदिग्धं जारजातस्य जन्म ॥ अत्र सूर्येंदू एकत्र पृथक्स्थौ वा पापयुक्तौ गुरुणा न दृष्टौ जारजातजन्मकरौ इत्युक्तं शुक्रजातके—न पश्यति गुरुश्चंद्रे लग्नं वा परजातकः । सार्केंदुनेक्षिते जीवः सूर्येंदू पापसंयुतौ ॥ एकस्थौ वा पृथक्स्थौ वा नैक्षितौ गुरुणा तथेति । योगांतरमाह गुणाकरः—नीचस्थिताश्चन्द्रदिवाकरेज्याः कुर्वंत्यमी जन्मनि जारजातम् । लग्नेऽथवा सूर्यसुतेन दृष्टाः सौम्यैश्च शुक्रोदयशीतभासः॥ अथ तिथिवारर्क्षयोगानाह—स्वातौ द्वितीयारविवारयोगे सोमात्मजे सप्तमिरेवतीषु । स्याद्द्वादशी वासवमंदवारे जारेण जातं प्रवदंति बालम् ॥ नवमस्थो गुरुर्यत्र धने चंद्रोऽर्कमण्डले । अन्यजातः स विज्ञेयो योगोऽस्मिन्पतिते ध्रुवम् ॥ चन्द्रारभानवः षष्ठा गुरुः पञ्चमगो यदि । योगेऽस्मिन्नात्र संदेहश्चान्यजातः स उच्यते ॥ अर्यम्णभे स्याद्रविवासराष्टमी विश्वे चतुर्थी गुरुवासरं च । हिर्बुध्नभे भौमदिनं चतुर्दशी स्याज्जारजात-

व्ययस्थान उसमें चन्द्रमा स्थित हो, उसको मंगल शनैश्चर देखते हों तो वामनेत्रसे काना कहना चाहिये, परंतु सिंहलग्न व्ययस्थानवर्ती हो तो काना योग कहना चाहिये ॥ १० ॥

अथ विलोमजन्मज्ञानम् ।

विलग्नगेऽर्कजे विधौ व्यये च नीचगे रवौ ।
विलोमजन्म भूमिजे सभार्गवे त्वनालकः ॥ ११ ॥

जन्मलग्नमें शनैश्चर चन्द्रमा स्थित हों और व्ययस्थानमें नीच राशिगत सूर्य स्थित हो तो उस बालकका उलटा जन्म कहना चाहिये और पूर्वयोग रहते मंगल शुक्रसहित स्थित हो तो वह बालक नालरहित उत्पन्न होता है ॥ ११ ॥

अथ क्लेशान्वितजन्मज्ञानम् ।

विलग्नभांशाधिपतौ विलग्ने विलोमसंस्थे सति विग्रहः स्यात् ।
क्लेशान्विते व्यस्तगतं च जन्म शुभैः प्रदृष्टे च ततः सुखं हि ॥ १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न नवांशपति दोनों लग्नमें विलोम स्थित हों तो उस बालकका जन्म विग्रहसे हो और पूर्वोक्त योग रहते लग्ननवांशपति व्यस्तगत हों तो उस बालकका जन्म क्लेशकरके कहना चाहिये और उसी पूर्वयोग होते शुभग्रह देखते हों तो उस बालकका जन्म सुखपूर्वक होता है ॥ १२ ॥

अथ जारजातज्ञानम् ।

न प्राग्विलग्नं च विधुः प्रपश्येज्जीवोऽर्कयुक्त सितगु च यद्वा ।
सार्के विधौ पापयुतेऽथवा चेत्स्याज्जारजातस्य तदा हि जन्म १३

जन्मलग्नको चंद्रमा न देखता हो और बृहस्पति लग्न व चंद्रमाको न देखता हो तदा एको योगः। अथवा सूर्ययुक्त चंद्रमाको बृहस्पति न देखता हो तदा द्वितीयो योगः। अथवा सूर्य चंद्रमायुक्त होकर पापग्रहसहित हो तो इन योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य परपुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना चाहिये॥ १३॥

सुरेज्यदृष्टे तनुगेऽथवाब्जे देवेज्यवर्गोज्झित एष चन्द्रः ।
सपापकेऽर्केण युतेऽथ चंद्रे स्याज्जारजातस्य तदा हि जन्म १४

बृहस्पति करके दृष्ट चंद्रमा लग्नमें स्थित हो बृहस्पतिके वर्ग अर्थात् षड्वर्गमें चंद्रमा न हो तदा एको योगः । और पापग्रहसहित चंद्रमा सूर्ययुक्त हो तो भी मनुष्य जारजात अर्थात् दूसरे मनुष्यसे पैदा कहना चाहिये॥ १४॥

नीचोपगाः सूर्यसुरेज्यचन्द्राः कुर्वंति ते जन्मनि जारजातम् ।
यद्वा तनौ सूर्यसुतेन दृष्टाः शुभैश्च चन्द्रोदयभार्गवाख्याः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नीचराशिमें प्राप्त सूर्य, बृहस्पति, चंद्रमा हों तो वह बालक परपुरुषसे उत्पन्न कहना चाहिये अथवा चंद्रमा,शुक्र लग्नमें स्थित हों उसको शनैश्वर देखता हो तो जारजात कहना चाहिये ॥ १५ ॥

अथ न जारजातयोगः ।

चन्द्रे गुरुक्षेत्रगतेऽथ वा चेत्सुरेज्ययुक्तेऽन्यगृहे स्थितेऽब्जे ।
गुरोर्दृकाणेऽथ नवांशके वा न जारजातस्तु भवेत्प्रसूतिः ॥१६॥

चंद्रमा बृहस्पतिके स्थानमें स्थित हो अथवा बृहस्पति करके चंद्रमा युत वा दृष्ट हो अथवा बृहस्पतिके द्रेष्काण अथवा नवांशमें चंद्रमा स्थित हो अथवा इसी प्रकार लग्न हो तो वह मनुष्य अपने ही बापकरके उत्पन्न कहना ॥ १६ ॥

न लग्नं पश्यतींदुं च जीवः सूर्योपेतं शीतरश्मिं च यद्वा । सार्के चन्द्रे पापयुक्तेऽथवा स्यान्निःसंदिग्धं जारजातस्य जन्म ॥ अत्र सूर्येंदू एकत्र पृथक्स्थौ वा पापयुक्तौ गुरुणा न दृष्टौ जारजातजन्मकरौ इत्युक्तं शुक्रजातके—न पश्यति गुरुश्चंद्रं लग्नं वा परजातकः । सार्केंदुनेक्षिते जीवः सूर्येंदू पापसंयुतौ ॥ एकस्थौ वा पृथक्स्थौ वा नैक्षितौ गुरुणा तथेति । योगांतरमाह गुणाकरः—नीचस्थिताश्चन्द्रदिवाकरेज्याः कुर्वंत्यमी जन्मनि जारजातम् । लग्नेऽथवा सूर्यसुतेन दृष्टाः सौम्यैश्च शुक्रोदयशीतभासः॥ अथ तिथिवारर्क्षयोगानाह—स्वातौ द्वितीयारविवारयोगे सौमात्मजे सप्तमिरेवतीषु । स्याद्द्वादशी वासवमंदवारे जारेण जातं प्रवदंति बालम् ॥ नवमस्थो गुरुर्यत्र घने चंद्रोऽर्कमण्डले । अन्यजातः स विज्ञेयो योगोऽस्मिन्पतिते ध्रुवम् ॥ चन्द्रारभानवः षष्ठा गुरुः पञ्चमगो यदि । योगेऽस्मिन्नात्र संदेहस्त्वान्यजातः स उच्यते ॥ अर्यम्णभे स्याद्रविवासराष्टमी विष्वे चतुर्थी गुरुवासरं च । हिबुध्नभे भौमदिने चतुर्दशी स्याज्जारजात-

स्य च जन्मकाले ॥ दिनांतं च तिथिमांते लग्नमान्ते च सूतिषु । वारस्यान्ते च यो जातः सोऽन्यजातः प्रकीर्तितः ॥ लग्नपादर्क्षसंयोगाद्वितीया द्वादशी यदि । सप्तमी चार्कमन्दारे जारतो जायते ध्रुवम् ॥ अत्रापवादमाह गार्गिः--गुरुक्षेत्रगते चन्द्रे तद्युक्ते अन्यराशिके । तद्द्रेष्काणे तदंशे वा न परैर्जात इष्यते ॥ शुक्रजातके सौम्यराश्यंशगे चन्द्रे जारजातयोगापवाद उक्तः--सौम्यराश्यंशगे चन्द्रे गुरुराश्यंशगेऽपि वा । जारजातस्य योगेऽपि न परैर्जात इष्यते ॥

अथ कारागारगृहे जन्मज्ञानम् ।

लग्नेंदुभ्यां द्वादशे सूर्यपुत्रे गुप्त्यां सूतिर्वीक्षिते पापखेटैः ।
लग्ने कर्के वृश्चिके मंदयुक्ते गर्तायां स्याच्चंद्रयुक्ते प्रसूतिः ॥ १७ ॥

जन्मलग्नके बीचमें चंद्रमा स्थित हो और बारहवें स्थानमें पापग्रहोंसे दृष्ट शनैश्चर स्थित हो तो ऐसे योग जिसके पड़े वह मनुष्य बंधनके स्थान अर्थात् जेलखाना वा हवालातमें उसका जन्म कहना चाहिये ॥

अथ गर्तस्थजन्मज्ञानम् ।

वृश्चिक अथवा कर्कलग्न जन्मकालकी हो उसमें शनैश्चर स्थित हो चंद्रमा युक्त अथवा दृष्ट हो तो उस बालकका जन्म गढ़े अथवा खाईमें कहना चाहिये ॥ १७ ॥

अथ नौकाजन्मज्ञानम् ।

लग्ने सौम्ये वेश्मगे सौम्यखेटे प्रालेयांशौ स्वर्क्षगे पूर्णदेहे ।
आये लग्ने द्यूनगे वा मृगांके गर्भो नूनं सूयते नावसंस्थः॥१८॥

जन्मलग्नमें बुध स्थित हो और चतुर्थ स्थानमें शुभ ग्रह स्थित हों और चंद्रमा कर्कराशिमें पूर्ण स्थित हो अथवा जलचर राशि लग्नमें हो और लग्न वा सप्तम वा एकादश स्थानमें चंद्रमा स्थित हो तो निश्चय करके बालकका जन्म नावमें कहना चाहिये ॥ १८ ॥

सौम्ये लग्ने पूर्णे स्वगृहगते शशिनि सलिलपातालस्थैश्च शुभैर्जलजे लग्नेऽस्तगे शशिनि । अत्र स्वराशिगे पूर्णेंदौ बुधे लग्नगे अन्यैः सौम्यैश्चतुर्थगैः सलिलसम्पाते सलिलं जलं तत्र सम्पातः सम्बन्धो यस्येति नौकादिके जन्म वाच्यम् । अत्र बुधात् शुक्रस्य चतुर्थगत्वासम्भवाच्चतुर्थगो गुरुर्ज्ञेयः । उक्तं च समुद्रजातके--पूर्णेंदौ स्वगृहगते जीवे तुय तरीगत इति । अथवा जललग्ने सप्तमगेंदौ नौकायां जन्म वाच्यम् ॥

अथ ऊषरभूमिजन्मज्ञानम् ।

लग्ने नीरे मंदयुते दृष्टे चंद्रार्कचन्द्रजैः ।
ऊषरे देवतागारे क्रीडागेहे क्रमात्सवः ॥ १९ ॥

शनैश्वर जलचरराशिमें स्थित होकर लग्नमें स्थित हो उसको चंद्रमा देखता हो तो ऊषरभूमिमें बालकका जन्म कहना चाहिये ॥

अथ देवगृहे जन्मज्ञानम् ।

पूर्वोक्त योग हो और शनैश्वरको सूर्य देखता हो तो उस बालकका देवताके स्थानमें जन्म कहना ॥

अथ क्रीडागेहे जन्मज्ञानम् ।

पूर्वोक्त योग रहते शनैश्वरको बुध देखता हो तो उस बालकका जन्म क्रीडागेह अर्थात् खेलनेकी जगह वा विहारभूमिमें कहना चाहिये॥१९॥

अथ उदयस्थिते रविजे जलजविलग्ने बुधेन दृष्टे क्रीडागेहे प्रसवः । रविणा दृष्टे देवागारे वा मखालये प्रसवो भविष्यति । चंद्रेण दृष्टे ऊषरभूमौ वा अरण्यगिरिवनदुर्गे प्रसवो ज्ञेयः ।

अथ श्मशाने जन्मज्ञानम् ।

पुंलग्नस्थे भानुसुते श्मशाने शैल्पिके गृहे । भूपालये च गोष्ठे च देवागारे मखालये ॥ २० ॥ वीक्षितैर्भौमसौम्येंदुशुक्रार्कगुरुभिः क्रमात् । प्रसवोऽयं समाख्यातः सत्यलल्लादिसूरभिः ॥ २१ ॥

पुरुषलग्न अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ, धनका पूर्वार्द्ध इन मनुष्यराशियोंमेंसे किसी राशिमें स्थित शनैश्वर लग्नमें स्थित हो तो श्मशान अर्थात् मरघट, शैल्पिक अर्थात् राजगीरी करनेवालेके मकानमें, राजाके घरमें, गोशालामें, देवस्थान और यज्ञशालामें क्रमसे जन्म कहना चाहिये ॥२०॥ अर्थात् भौम, बुध, चंद्रमा, शुक, सूर्य बृहस्पतिकरके देखा जाय तो क्रमसे प्रसव कहा गया. सत्याचार्य, लल्लाचार्यको आदि लेकर पहिले आचार्योंने अर्थात् नरराशियोंमेंसे किसी राशिमें स्थित शनैश्वर लग्नमें बैठा हो उसको

मंगल पूर्णदृष्टिसे देखता हो तो उस बालकका जन्म मुर्दा फूकनेकी जगहमें होना चाहिये और जो बुध देखता हो तो उस बालकका जन्म राजगीरी करनेवालेके मकानमें कहना चाहिये और जो चंद्रमा देखता हो तो राजाके घरमें जन्म कहना चाहिये और जो शुक्र देखता हो तो उस बालकका जन्म गोशालामें कहना चाहिये और जो सूर्य देखता हो तो देवालयमें जन्म कहना, जो बृहस्पति देखता हो तो उस बालकका जन्म अग्निशाला वा यज्ञशालामें कहना चाहिये यह सत्यलल्लादि आचार्योंका मत है ॥ २१ ॥

नरविलग्ने रुधिरेक्षिते श्मशाने शिल्पिकीनिलये च सौम्येन सूर्येक्षिते गोकुलदेवालये शुक्रेंदुजाभ्यां रमणीयदेशे । सुरेज्यदृष्टे द्विजवह्निहोत्रे नरोदये संप्रवदंति सूतिम् ॥ अत्र नृराशिगे शनौ भौमादिदृष्टे श्मशानादौ जन्म वाच्यम् । उक्तं च समुद्रजातके-पुंलग्नं पंच पश्येदर्कादिश्चैत्यगोकुले । चरे श्मशाने शिलीचगृहे वह्निगृहे प्रसूतिः ॥

अथ अरण्ये जन्मज्ञानम् ।

यदैकराशिगौ लग्नचंद्रौ दृष्टिविवर्जितौ ।
विजने प्रसवः प्रोक्तो मणित्थाद्यैश्च सूरिभिः ॥ २२ ॥

जो एक राशिमें लग्न और चंद्रमा दोनों हों और लग्नगत एक ही नवांशमें हों उनको कोई ग्रह नहीं देखता हो तो उस बालकका जन्म जिस जगह मनुष्य न रहते हों अर्थात् शून्यस्थल वा जंगलमें जन्म कहना चाहिये ॥

अथ नराणां समूहे जन्मज्ञानम् ।

और जो पूर्वोक्त योग हो और लग्नम बहुतसे ग्रह स्थित हों और चंद्रमाको देखते हों तो बालकका जन्म बहुतसे जहां स्त्रीपुरुष हों वहां कहना चाहिये, मणित्थको आदि ले विद्वानोंने कहा है ॥ २२ ॥

लग्नेंदू यद्येकराशिसंस्थौ तदाटव्यां जन्म । अत्र बहुवचनात् तत्र आदिभिरेकराशिगैर्ग्रहैर्लग्नेंदू न दृष्टौ तदा अटव्यां जन्म विजने जन्म अर्थात् दृष्टौ जनाकीर्णे जन्म वाच्यम् । अत्रैकराशिगैः सौम्यैरेव योगो भवति ॥

अथ सलिले जन्मज्ञानम् ।

आप्योदयमाप्यगः शशी संपूर्णः समवेक्षितोऽपि वा ।
मेषूरणबंधुलग्नगः स्यात् सूतिः सलिले न संशयः ॥ २३ ॥

जलचर लग्नमें जन्म हो अर्थात् कर्क मकरका परार्द्ध, मीन इन जल-राशियोंमें कोई राशि लग्नमें स्थित हो और पूर्ण चंद्रमाभी जलचरराशिमें स्थित हो तो जलके किनारे जन्म कहना। अथवा लग्नमें स्थित जलचर-राशिको पूर्ण चंद्रमा देखता हो तो द्वितीयो योगः। अथवा जलचरराशिमें स्थित चंद्रमा दशमें वा चतुर्थ वा लग्नमें स्थित हो तो भी निश्चय करके जलके किंनारे उत्पन्न हुआ बालक जानना चाहिये ॥ २३ ॥

अथ जन्मदेशज्ञानम्।

चरेभांशचारेण तुल्ये पथि स्यात्प्रसूतिः स्थिरे स्वर्क्षगैः खेचरेन्द्रैः।
निजांशस्थितैः स्वीयगेहेऽथवीर्यात्फलं भांशयोर्होरिकेंद्रा वदंति २४

जन्मलग्नमें जिस राशिके नवांशका उदय हो उस राशि या नवांश राशिके सदृश अर्थात् 'शेषाः स्वनामवत्परे' प्राणी जिस स्थानमें वास करता हो उसी स्थानमें जन्म कहना चाहिये और जो वह राशि जन्मलग्नकी हो अथवा नवांश राशि चरसंज्ञक हो तो उसके तुल्य प्राणी जिस मार्गमें विचरता हो उसी मार्गमें जन्म कहना चाहिये. और जो स्थिरसंज्ञक जन्मलग्न नवांश हो तो उस प्राणीके घरमें जन्म कहना चाहिये और द्विस्वभावसंज्ञक जन्मलग्न नवांश दोनों हों तो उस प्राणीके घरके बाहर जन्म कहना चाहिये और जो जन्मलग्नमें अपनी राशिके नवांशका उदय हो तो उसके समान प्राणीके घरमें जन्म कहना चाहिये और जहां जन्मलग्नपर राशि नवांशराशि पृथक् हो तो उनमें जो बलवान् हो उसी के योगके जन्मका स्थान कहना चाहिये ॥ २४ ॥

अथ जन्मगृहज्ञानम्।

तातांबाभवनेषु तद्बलवशान्नीचस्थितैः साधुभिः।
सूतिः स्यात्तरुशालकादिषु तदा यद्वा तरोराश्रितम् ॥ २५ ॥

पूर्वोक्त पितृसंज्ञक पितृव्यसंज्ञक अर्थात् जो बालक दिनमें उत्पन्न हो तो उस बालकका सूर्य पिता और शुक्र माता है, रात्रिमें उत्पन्न हो तो उस बाल-कका शनैश्चर पिता और चंद्रमा माता है और दिनमें उत्पन्न हो तो शनैश्चर

पितृव्य अर्थात् पिताका भाई और चंद्रमा मातृष्वसृसंज्ञक अर्थात् मौसी है और रात्रिमें जन्म हो तो उस बालकका सूर्य पितृव्यसंज्ञक और शुक्र मौसी है इन सब ग्रहोंमें जो सबसे बलवान् हो उसीके घरमें बालकका जन्म कहना चाहिये । यथा जो पितृसंज्ञक बलवान् हो तो पिताके घरमें और मातृसंज्ञक बलवान् हो तो माताके संबंधियोंके घरमें अर्थात् नानी के घरमें जन्म कहना चाहिये और पितृव्यसंज्ञक बलवान् हो तो पिताके भाई या बुआ आदिके घरमें जन्म कहना और मातृष्वसृसंज्ञक बलवान् हो तो माताकी बहिन या मामा इत्यादिके घरमें जन्म कहना चाहिये और जो सम्पूर्ण शुभग्रह अपने नीचस्थानमें स्थित हों तो उस बालकका जन्म साधुके स्थान वा वृक्षोंके नीचे मकानमें अथवा बगीचेमें अथवा इनके समीप कहना चाहिये ॥ २५ ॥

अथ पितृमातृगृहवर्गे तत्स्वगृहेषु बलयोगात् पितृमातृग्रहौ प्रयुक्तौ तद्बलौ पितृमातृगृहेषु सूतिर्वक्तव्या । तत्रार्कशन्योरन्यतरोऽपरो यदि बलवान् भवति तदा पितृगृहे पितृष्वसृपितृव्यादिगृहे प्रसूतिः । यदि चन्द्रशुक्रयोरन्यतरो बलवान् वा भवति तदा मातृगृहे वा मातृष्वसृगृहे मातुलादिगृहे प्रसूतिरिति वक्तव्यम् । प्रकारान्तरं तरुनदीषु च प्रसवो नीचाश्रितैः सौम्यैः तदा साधुभिः ॥

अथ द्विशालादिगेहे जन्म ।

चेत्तुंगादधिकोनकेऽथ परमोच्चांशस्थिते वा गुरुः
खस्थे द्वित्रिचतुर्थभूमिकमदः कुर्यात्तदा मंदिरम् ।
एवं वीर्ययुते शरासनगते तद्वत्रिशालं गृहं
चेदन्येषु समर्थकेषु सुधिया वाच्यं द्विशालं गृहम् ॥ २६ ॥

जन्मलग्नसे दशमस्थानमें बृहस्पति कर्कराशिमें स्थित अपने परमोच्च भागमें बैठा हो अर्थात् दो वा तीन अंशके भीतर बृहस्पति हो तो उस बालककी उत्पत्ति दुमजले मकानमें कहनी चाहिये, और जो दशमस्थान स्थित कर्कराशिवर्ती बृहस्पति तीन अंशके ऊपर और चार अंशके भीतर स्थित हो तो तिखने मकानमें संतानोत्पत्ति कहनी और पूर्वोक्त बृहस्पति चार अंशसे ऊपर और पांच अंशके मध्यवर्ती स्थित हो तो चार खनके

मकानमें संतानोत्पत्ति कहनी चाहिये और जो बृहस्पति धनराशिवर्ती दशम स्थानमें स्थित हो तो उस बालककी उत्पत्ति तीन खनके मकानमें होनी चाहिये और पूर्वोक्त बृहस्पति मीन, मिथुन, कन्याराशिवर्ती दशम स्थानमें स्थित हो तो भी उस बालककी उत्पत्ति दुमजले मकानमें होनी चाहिये परंतु ये योग बड़े शहरोंमें वा राजा रईसोंके यहां विचारकर कहना चाहिये॥२६॥

अथांधकारे जन्मज्ञानम् ।

मंदर्क्षांशे शशिनि हिबुके मंददृष्टेऽब्जगे वा तद्युक्ते वा तमसि शमनं नीचसंस्थैश्च भूमौ । यद्वद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोकस्तुतद्वत्पापैश्चंद्रात्स्मरसुखगतैः क्लेशमाहुर्जनन्यः ॥ २७ ॥

जिस प्राणीके जन्मकालमें चंद्रमा चाहे जिस किसी राशिमें स्थित हो परंतु शनैश्चर नवांशोंमें हो तो बालकके माताकी खाट अंधेरेमें कहना चाहिये(एको योगः) अथवा लग्नसे चतुर्थ स्थानमें चंद्रमा स्थित हो तो भी बालकका जन्म अंधेरेमें कहना(द्वितीयो योगः) अथवा किसी स्थानमें स्थित चंद्रमाको शनैश्चर देखता हो तोभी पूर्वोक्त फल कहना(तृतीयो योगः)अथवा किसी राशिमें स्थित चंद्रमा कर्क वा मीनके नवांशमें स्थित हो तो भी अंधकारमें जन्म कहना (चतुर्थो योगः) अथवा शनैश्चर संयुक्त चंद्रमा किसी राशिमें स्थित हो तो भी अंधकारमें जन्म कहना चाहिये और इन पूर्वोक्त योगोंमें चंद्रमाको सूर्य देखता हो या सूर्यसहित हो तो दीपकादिके प्रकाशमें जन्म कहना चाहिये और इसी तरह गर्भाधानकालमें भी विचार कर लेना और जो पहिले अंधकारके योग कह आये हैं जो प्रसवकालके समय अंधकार न हो तो ये जान लेना कि बालककी उत्पत्तिके समय घबराहटसे दीपक उठाया था सो दीपक बुझ गया होगा, दूसरा एक दीप बाल लिया होगा॥

अथ भूमिशयनज्ञानम् ।

और जो तीन ग्रहोंसे अधिक ग्रह अपने नीचस्थानमें स्थित अथवा नीचके नवांशमें स्थित हों तो बालककी उत्पत्ति चटाई बिछी हुई भूमि अथवा

तृणादिके ऊपर होनी चाहिये और उसीपर माता और प्रसवका शयन भी होना चाहिये। जन्मलग्नमें जो राशि स्थित हो उसको जिस प्रकारकी पृथ्वी मिली हो तैसी ही भूमिमें बालककी उत्पत्ति कहनी चाहिये, केवल आकाशसंबंधी भूमिको त्याग देना चाहिये ॥

अथ मातृकष्टज्ञानम् ।

और जो चंद्रमा पापग्रहसहित होकर लग्नसे चतुर्थ वा सप्तम स्थित हो तो प्रसवकालमें माताको क्लेश कहना चाहिये ॥ २७ ॥

तथा च यवनेश्वरः–सौरांशकस्थे शशिनि प्रलग्ने जलर्क्षांशिक्रमित्रश्रिते वा । स्वांशस्थिते सौरविलोकिते वा जातस्तमसि च दिवार्कदृष्टः ॥ सौरांशे जलजांशे चन्द्रार्कजसंयुतोऽथवा हिबुके । तद्दृष्टे वा कुर्यात्तमसि प्रसवं न सन्देहः ॥

अथ कष्टकालज्ञानम् ।

पापाधिकारे तु घटी मुहूर्तः स्याद्दृष्टिपातेऽथ युतौ तु पापौ ।
द्यूने चतुर्थे प्रविचार्य सम्यग्वाच्यातिपीडा जनने जनन्यः॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें जो पापग्रहोंने अधिकार पाया हो तो प्रसवसे पहिले दो घटी माताने कष्ट पाया है और पापग्रह उसी चतुर्थ सप्तम स्थानको देखते हों और पापग्रहोंने अधिकार भी पाया हो तो प्रसवकालके एक प्रहर पहिले माताको कष्ट हुआ और जितने पापग्रहोंने अधिकार पाया हो उतने प्रहर वा दिन प्रथम माताको कष्ट कहना चाहिये ॥ २८ ॥

अथ बहुदीपज्ञानम् ।

बलान्वितेऽर्के कुजवीक्षिते चेत्सौरेण वा स्युर्बहवः प्रदीपाः ।
व्ययस्थितैरन्यखगैः सवीर्यैर्ज्योतिस्तृणैः स्याद्वदतीति गर्गः ॥२९॥

जिस बालकके जन्मकालमें बलवान् सूर्य हो और उसको मंगल वा शनैश्चर देखता हो तो प्राणीकी उत्पत्तिके समय बहुतसे दीपक कहना चाहिये ॥

अथ तृणज्योतिर्ज्ञानम् ।

और जो अन्यग्रह बारहवें स्थानमें स्थित हों और पूर्वोक्त योग भी हो तो कहना कि बालकके प्रसवके समय तृण वा काष्ठादिककी ज्योति करी है ॥ २९ ॥

सारावल्याम्--बलवति सूर्ये दृष्टे बहुप्रदीपान् वदेत् कुपुत्रेण । अन्ये व्ययगतवीर्यैः सूतौ ज्योतिस्तृणैर्भवति ॥ भौमार्कजरहितैरन्यग्रहैर्बलहीनैः सूतौ तृणैर्ज्योतिरिति ॥

अथ मातृत्यक्तपुत्रज्ञानम् ।

आराकजयोस्त्रिकोणगे चंद्रेऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया ।
दृष्टे सुरराजमंत्रिणा दीर्घायुः सुखभाक् च संम्मृतः ॥ ३० ॥

जिस बालकके जन्मकालमें मंगल, शनैश्चर एक राशिमें स्थित होकर किसी स्थानमें स्थित हों उनसे पंचम वा नवम या सप्तम स्थानमें चंद्रमा स्थित हो तो उस पैदा हुई संतानको माता त्याग देती है और जो पूर्वोक्त योग हो चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो तो वह माता करके त्याग करी हुई संतान दीर्घायु सुखी बहुतकालतक रहती है ॥ ३० ॥

कुजसौरयोस्त्रिकोणे चन्द्रेऽस्तगते विसृज्यते मात्रा । दृष्टे सुरेन्द्रगुरुणा सुखान्वितो दीर्घजीवी च ॥ अत्रैकराशिगयोर्भौमशन्योर्योगो ज्ञेयः । उक्तं च समुद्रजातके--एकस्थार्क्यारयोः कोणस्थे त्यज्यन्तेऽम्बया इति ॥

अथ मातृत्यक्तमृत्युयोगः ।

पापेक्षिते तुहिनगावुदये कुजेऽस्ते त्यक्तो विनश्यति कुजार्कजयोस्तथाये । सौम्येऽपि पश्यति तथाविधहस्तमेति सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽप्यनायुः ॥ ३१ ॥

पापग्रहोंसे दृष्ट चंद्रमा लग्नमें स्थित हो और सप्तम स्थानमें मंगल स्थित हो तो मौताकरके त्याग किया हुआ बालक मृत्युको प्राप्त होता है। अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट चंद्रमा जन्मलग्नमें स्थित हो और बारहवें स्थानमें मंगल शनैश्चर स्थित हों तो भी माताकरके त्याग करा हुआ बालक मृत्युको प्राप्त होता है अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट चंद्रमा लग्नमें स्थित हो और उसे शुभग्रह भी

देखते हों तो माताकरके त्याग करी हुई संतानको जैसे शुभग्रहोंकरके दृष्ट हो तैसे ही सदृश ब्राह्मणादि वर्णके किसी मनुष्यके हाथ प्राप्त होता है अर्थात् चंद्रमाको देखनेवाले शुभग्रह वा पापग्रह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चारों वर्णोंमें जिसका ईश हो उसी वर्णके मनुष्यके हाथ लगता है और नाशको प्राप्त होता है और जो चंद्रमाको बहुतसे ग्रह देखते हों उनमें जो बलवान् हों तैसे ही वर्णके मनुष्यके हाथ लगता है, इन पूर्वोक्त योगमें चंद्रमाको पापग्रह देखते हों और बृहस्पति न देखता हो तो माताकरके त्याग किया हुआ बालक मृत्युको प्राप्त होता है, अगर बृहस्पति देखता हो तो माताकरके त्याग किया हुआ बालक दीर्घायु सुखी होता है ॥ ३१ ॥

शशिनि विलग्ने कुजेऽस्तगे त्यक्तः लग्नेऽस्तलाभगतवसुधासुतमंदयोरेवम् । अत्र लग्नस्थचंद्रे पापैर्दृष्टे सप्तमैकादशे स्थितयोः भौमशन्योर्मात्रा त्यक्तो म्रियते । उक्तं च सूर्यजातके लग्नेऽब्जे पापसंदृष्टे वसुधासुतमंदयोः । लाभास्तस्थितयोर्बालो मात्रा त्यक्तो विनश्यति । पश्यति सोमे बलवति बालं गृह्णाति तादृशो जातः । शुभपापग्रहदृष्टैः परैर्गृहीतोऽपि स म्रियते ॥ पूर्वोक्तयोगद्वये चन्द्रे सबलशुभग्रहदृष्टे तादृग्ब्राह्मणादिवर्णो मात्रा त्यक्तं बालं गृह्णाति । उक्तं च सोमजातके-मातृसंत्यक्तयोगेषु चन्द्रे पश्यति यः शुभः । ग्रहवर्णसमो बालं गृह्णाति नियतं नरः ॥ शुभपापदृष्टे चन्द्रे परहस्तगतोऽपि बालो म्रियते । एकांशावस्थितयोर्यमारयोस्त्यज्यते मात्रा ॥ सर्वेष्वेतेषु योगेषु यदा शशी सुरेज्यसंदृष्टो भवति तदा दीर्घायुः परहस्तगतः ॥

अथ पितृपरोक्षजन्मज्ञानम् ।

न प्राग्विलग्नं यदि पश्यतींदुर्ज्ञशुक्रयोर्मध्यगतेऽथ वाब्जे ।
यमोदये वा कुसुतेऽस्तसंस्थे पितुः परोक्षस्य तदा हि जन्म ॥ ३२ ॥

जन्मलग्नको चंद्रमा नहीं देखता हो तो पिताके परोक्षमें बालककी उत्पत्ति कहनी चाहिये (एको योगः) अथवा बुध और शुक्रके बीचमें चंद्रमा स्थित हो (द्वि० योगः) अथवा लग्नमें शनैश्चर स्थित हो, लग्नको चंद्रमा न देखता हो (तृतीयो योगः) अथवा मंगल सप्तम स्थित हो और चंद्रमा लग्नको न देखता हो (चतुर्थो योगः) इन योगोंमें उत्पन्न हुए बालकका पिताके परोक्षमें रहते जन्म कहना चाहिये ॥ ३२ ॥

चरराशिस्थितेऽर्के नवमाष्टमस्थे पितरि जन्म वाच्यम् । अस्मिन् योगेऽपि लग्ने चन्द्रदृष्टिवर्जितमित्युक्तं श्रीशुकेन—"चरराशिस्थिते भानोर्नवमाष्टमसंस्थितः । शिशोः पिता विदेशस्थो लग्ने चन्द्रेण नेक्षिते" इति ॥ लग्नस्थिते वासरनाथपुत्रे यामित्रसंस्थेऽप्यथवा महीजे । चन्द्रेऽथवा सूर्यमहीजमध्ये विदेशसंस्थे जनके बभूव ॥ दिनेर्कः कुजसंदृष्टो रात्रौ चन्द्रकुजेक्षितः । पितुः परोक्षे वक्तव्यं जननं जातकस्य च ॥

तनुर्न वीक्षिते विधौ चरर्क्षकांशसंधिगे ।
परोक्षसंस्थितस्य वा पितुर्जनुस्तदा भवेत् ॥ ३३ ॥

जन्मलग्नको चंद्रमा नहीं देखता हो और चरराशियोंके संधिगत हो अर्थात् अंतिम नवांशमें स्थित हो तो उस बालककी उत्पत्ति पिताके परोक्षमें कहनी चाहिये ॥ ३३ ॥

अथ पितृमृत्युज्ञानम् ।

भौमेक्षितावर्कसितौ द्युरात्रौ तदा वदेत्तत्पितरं व्यतीतम् ।
चरर्क्षगौ भौमयुतेक्षितौ वा तदान्यदेशे जनकस्य मृत्युः॥ ३४ ॥
भौमान्वितः सूर्यसुतश्चरर्क्षे भवेन्निशाजन्म हि मानवस्य ।
तदा व्यतीतं पितरं च वाच्यमशंकितं तद्विषयांतरे च ॥ ३५ ॥

मंगलकरके दृष्ट सूर्य शुक्र हों दिन अथवा रात्रिका जन्म हो तो उस बालकका पिता मृत्युको प्राप्त कहना चाहिये अर्थात् दिनमें जन्म हो और सूर्यको मंगल देखता हो तदा एको योगः, अथवा रात्रिका जन्म हो और शुक्रको मंगल देखता हो तो उस बालकका जन्म पिताके परोक्ष अर्थात् मृत्युको प्राप्त कहना चाहिये और वेही सूर्य शुक्र चरराशिमें स्थित हों और दिन वा रात्रिका जन्म हो, पूर्वोक्त मंगल देखता हो तो उस बालकका पिता परदेशमें मृत्युको प्राप्त कहना चाहिये ॥३४॥ मंगलकरके सहित शनैश्चर चरराशिमें प्राप्त हो और रात्रिका जन्म हो तो उस बालकका पिता विदेशमें मृत्युको प्राप्त हो गया ऐसा निःसंदेह कहना चाहिये ॥३५॥

तथाच—वाच्यं शिशोर्जन्म पितुः परोक्षे क्षपाकरः पश्यति चेन्न लग्नम् । चरस्थितेऽर्केऽष्टमधर्मगे वा विदेशसंस्थे पितरीह वाच्यम् ॥ सूर्यमन्दौ चरर्क्षस्थौ भौमेन युवतीक्षितौ । परदेशे पिता तस्य मृतो वाच्यो विनिश्चयात् ॥

अथ जन्मकाले पितृरोगज्ञानम् ।

व्ययाष्टसंस्थितौ खलौ विलग्नपे बलोज्झिते । तुरीयधर्मगौ हि वा पिता रुगर्दितः स वै ॥ ३६ ॥ तनौ रवौ बलस्थिते शनौ तदीक्षिते यदा । पिता रुगर्दितस्तदा कुजेक्षितेऽथवा भवेत् ॥३७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें वा अष्टम स्थानमें पापग्रह स्थित हों और लग्नपति बलवान् होकर चतुर्थ वा नवम स्थित हो उस बालकके जन्मकालमें उसका पिता रोगी कहना चाहिये ॥३६॥ लग्नमें सूर्य बलवान् होकर स्थित हो और जो शनैश्चर उसको देखता हो तो संतानके उत्पत्ति-कालमें उसका पिता रोगी कहना चाहिये अथवा उसी लग्नस्थ सूर्यको मंगल देखता हो तो भी उस बालकके पिताको रोगी कहना चाहिये ॥ ३७ ॥

भाग्यबंधुगतौ पापौ लग्नेशे बलवर्जिते । जन्मकाले पिता दुःखी शिशोरंगाष्टरिष्टगे ॥ अर्कांशकस्थिते मंदे शुक्रेणैव निरीक्षिते । जन्मकाले पिता रोगी कुजे दृष्टेऽथवा युते ॥

अथ जन्मतः पूर्वं पितृमृत्युज्ञानम् ।

यत्र यत्र स्थितो भानुर्मंदाराभ्यां समन्वितः ।
पितरं जन्मतः पूर्वं निर्वृत्तं नात्र संशयः ॥ ३८ ॥

जन्मकालमें चाहे किसी स्थानमें शनैश्चर मंगलकरके सहित सूर्य कहीं स्थित हो तो संतानके जन्मसे पहिले बालकका पिता मृत्युको प्राप्त हो गया है ॥ ३८ ॥

अथ मातृपितृमृत्युज्ञानम् ।

मंदस्त्रिकोणगश्चंद्रात्कुर्यान्मातृवधं निशि ।
दिवसे पापसंयुक्तौ दानवेज्यस्तथा कुजः ॥ ३९ ॥
सुखास्तसंस्थैर्यदि पापखेटैर्मातुः कलिर्वेंदुयुतैश्च मृत्युः ।
सूर्याद्यमारौ प्रसवेऽस्तसंस्थौ शुभैरदृष्टौ जनकस्य रिष्टम् ॥४०॥

चंद्रमासे नवम अथवा पंचम शनैश्चर स्थित हो और रात्रिका जन्म हो तो उस बालककी माता मृत्युको प्राप्त हो और दिनका जन्म हो

और पापग्रहोंसे संयुक्त शुक्र और मंगल हों चंद्रमासे नवम वा पंचम स्थित हों तो पिताका नाश करे ॥ ३९ ॥ जिस बालकके जन्मकालमें चतुर्थ सप्तम पापग्रह स्थित हों चंद्रमा करके सहित हो तो माताको मृत्यु देता है और चंद्रमा सहित न हो तो माताको रोग देता है और सूर्य, शनैश्चर, मंगल जिसके जन्मकालमें सप्तममें स्थित हों और शुभग्रह नहीं देखते हों तो पिताको रोग देते हैं ॥ ४० ॥

इंदुतो नवमे द्यूने नैधने पापखेचराः ।
अखिलाः पितरं हन्युर्बालं जातं समातृकम् ॥ ४१ ॥

चंद्रमासे नवम सप्तम अष्टम जो पापग्रह स्थित हों तो वह संतान अपने पिताको नाश करता है और अपनी माताको भी नाश करता है॥४१॥

द्वादशाष्टमगे पापे लग्नेशे बलवर्जिते ॥ जन्मकाले शिशोर्दुःखी स बालो मातृनाशकः॥

अथ विदेशस्थपितृबंधनज्ञानम् ।

क्रूरर्क्षगा क्रूरखगा यदि स्युर्दिवामणेर्धर्मसुतास्तमस्थाः ।
स्थिरादिभेऽर्के जनकोऽन्यदेशे बद्धः स्वभावाद्विषयादिकेषु॥४२॥

जिस बालकके जन्मकालमें क्रूरराशियोंमें पापग्रह स्थित हों और सूर्यसे नवम पंचम सप्तम स्थित हों तो उस बालकका पिता बंधनमें कहना चाहिये। जो सूर्य स्थिर राशिमें स्थित हो तो स्वदेशमें बंधन कहना और जो सूर्य चरराशिमें स्थित हो तो विदेशमें बंधन कहना चाहिये और द्विस्वभावराशिमें हो तो मार्गमें बंधन कहना चाहिये ॥ ४२ ॥

सूर्याच्च पञ्चमे द्यूने नवमे क्रूरखेचराः । क्रूरर्क्षस्थाः स्थिरे राशौ स्वदेशे बंधनं पितुः॥ चरेऽन्यदेशे मार्गे च द्विस्वभावे च बंधनम् । अस्मिन्नपि योगे सूर्यात्पञ्चमनवमस्थानां पापानां पापर्क्षगतत्वमपि प्रयोजकं पापदृष्टिश्च प्रयोजिकेत्याह वराहः—क्रूरगतावशोभनौ सूर्याद् द्यूननवात्मजे स्थितौ । बद्धस्तु पिता विदेशग इति ॥

अथ पितृमातृसमबलज्ञानम् ।

बलान्वितेऽर्के सदृशश्च पित्रा मात्रा समः शीतरुचौ सवीर्ये ।
त्रिंशांशके यस्य गतो विवस्वान् वाच्यो गुणस्तत्खचरस्य नूनम्४३

जिस बालकके जन्मसमयमें सूर्य बलवान् हो तो वह बालक पिताके गुणके सदृश होता है और जो चंद्रमा बली हो तो वह संतान माताके समान होती है और जो सूर्य जिस ग्रहके त्रिंशांशमें स्थित हो तो वह बालक उसी ग्रहके गुणोंकी माफिक होता है और चंद्रमा जिस ग्रहके त्रिंशांशमें स्थित हो उसी ग्रहके समान लड़कीका स्वभाव कहना चाहिये अर्थात् सूर्य चंद्रमा जो सात्त्विक ग्रहके त्रिंशांशमें स्थित हों तो बालक सात्त्विक स्वभाववाला होता है सतोगुणीके लक्षण ये हैं कि परजनोंपर कृपा करनेवाला, दीनोंपर दया करनेवाला, ब्राह्मण, देवता, शास्त्र, पिता, मातादिकोंमें भक्ति रखनेवाला, सत्यवादी, विनयविद्यावान्, शांतप्रकृतिवाला सत्त्वगुणी पुरुष होता है और जो सूर्य चंद्रमा राजसी ग्रहके त्रिंशांशमें स्थित हो तो वह बालक राजसी होता है अर्थात् काव्य, कला, नृत्य, गान, द्रव्य, सवारी, भृत्य, स्त्रियोंमें प्रवृत्त, विषयी, अभिमानी होता है और अपनी बड़ी कीर्ति को सुनकर प्रसन्न होनेवाला राजसीप्रकृत युक्त राजसी पुरुष होता है और जो सूर्य, चंद्रमा तामसी ग्रहके त्रिंशांशमें स्थित हों तो वह बालक तामसी स्वभाववाला होता है, तामसीके लक्षण क्रोधयुक्त सदैव रहे, पराये धन वा स्त्रियोंका हरण करनेवाला, पराये वैभवको देखकर जलनेवाला, आलसी, अभिमानी, दुष्टवचनको बोलनेवाला, सबको दुःख देनेवाला, मद्य मांसका आहारी तामसी पुरुष होता है परंतु सूर्यसे पुत्रका स्वभाव कहना और चंद्रसे कन्याका स्वभाव कहना चाहिये ॥ ४३ ॥

अथ सर्ववर्णेषु लग्नात्सप्तमभवने भौमे रविपुत्रवीक्षिते निजभम्। यादृक् पश्यति सौम्यस्ततुल्यगुणं शुभं समाधत्ते पितृजननीसादृश्यं रवेः शशांकस्य बलयोगात् वाच्यम् ॥

अथ बालकस्य ह्रस्वदीर्घाङ्गज्ञानम् ।

लग्नस्थनंदलवपेन समस्तमूर्त्या पादग्रहो बलयुतस्तु तथैव यद्वा । वर्णौ विधोर्नवलवेशसमस्तु बुद्ध्वा जातिं कुलं च विषयान् प्रवदेच्च वर्णम् ॥ ४४ ॥

जन्मलग्नमें जो नवांश हो तिसको स्वामीके सदृश मनुष्यके शरीरका आकार कहना चाहिये 'पूर्वार्द्धे विषयादयः कृतगुणा ' इत्यादि करके ह्रस्व दीर्घांगज्ञान करना चाहिये और जिस राशिमें पापग्रह स्थित हों बली होकर शरीरके जिस अंगमें हों उसी अंगको निर्बल कहना चाहिये और जिस अंगमें शुभग्रह बली होकर स्थित हो उसी अंगको पुष्ट कहना चाहिये,कालपुरुषके अंग मेषादिराशि स्थित हो उनके हिसाबसे अंगको बड़ा छोटा कहना चाहिये। तहां लग्न तो शिर है,द्वितिय मुख,तृतीय छाती,चतुर्थ हृदय, पंचम वक्षस्थल है,छठा स्थान कमर,सातवां स्थान लिंग-नाभिका मध्यभाग बस्ति है,आठवां स्थान लिंग,नवम अंडकोश है,दशम स्थान ऊरु है, एकादशस्थान जानु अर्थात् पैरके बीचकी गांठें हैं,बारहवां स्थान जंघा और दोनों पैर हैं इन अंगोंको बड़ा छोटा कालपुरुषके बड़ी छोटी राशिसे कहना.पापग्रहयुक्त राशियोंको बलहीन अंग कहना,शुभग्रह युक्त राशियोंसे बली पुष्ट अंग कहना चाहिये और चंद्रमा जिस नवांशमें स्थित हो तिसके स्वामीके समान वर्ण स्वरूप कहना चाहिये.जैसे पहिले ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायमें कह आये हैं "शूरास्थिरस्थूलसाररक्तगौर" इत्यादि वाक्योंसे कहा है उसी माफिक कहना चाहिये। सम्पूर्ण फल बुद्धिमान् पुरुष कुल,जाति,देशोंको विचारकरके कहे यथा निषादजाति कोल भील इत्यादि जातिके मनुष्योंका श्याम रंग होता है तो उनको वैसाही कहना चाहिये,यथा क्षत्रियोंके कुलके मनुष्य गौरवर्ण होते हैं उनको गौरही कहना और देश काल विचारकरके भी फल कहना चाहिये जैसे कर्नाटक तैलंग विदेह इत्यादि देशोंके मनुष्य श्यामवर्ण होते हैं। गौरवर्णके मनुष्य इन देशोंमें कम होतेहैं;तैसेही पांचाल कश्मीर गुरुंड देश अर्थात् विलायत गुर्जर,सिंध इत्यादि देशोंके मनुष्य गौरवर्ण होते हैं क्षत्री वा नागर वा काश्मीरी अंगरेज इन मनुष्योंका जातिस्वभाव गौरवर्णका है, यथा मध्यदेशके मनुष्य गौर श्यामवर्ण मिश्रित अथवा दोनों प्रकारके होते हैं तैसे नेपाल वा खस देशके मनुष्योंका चपटा मुँह और कंजी आंख ठिंगना कद होता है और

मारवाड़देशी स्त्रियोंका स्वरूप मध्यमवर्ण और पेट बडा होता है इसी तरह अन्यदेश वा जातियोंकी माफिक बुद्धिमान् पुरुष विचार कर फल कहे॥ ४४॥

अथ मात्रा सह मृत्युयोगः ।

लग्नाष्टरिपुजामित्ररिःफस्थैः पापखेचरैः ।
सुतेन सार्द्धं जननी म्रियते नात्र संशयः ॥ ४५ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्न अष्टम छठे सप्तम बारहवें स्थानमें जो पापग्रह स्थित हों तो वह स्त्री अपने पुत्रकरके सहित शीघ्र मरणको प्राप्त होती है ॥ ४५ ॥

अथ पुत्रनष्टयोगः ।

षष्ठांत्यगेषु पापेषु माता जीवेन्न वै सुतः ।
लग्नाष्टसप्तमस्थेषु माता नश्येन्न वै सुतः ॥ ४६ ॥

छठे बारहवें जिस बालकके जन्मकालमें पापग्रह स्थित हों तो उस बालककी माता जीती रहती है और पुत्र मर जाता है ॥

अथ मातृनष्टयोगः ।

और जिस बालकके जन्मकालमें लग्न, अष्टम, सप्तम स्थानोंमें पापग्रह स्थित हों तो उस बालककी माता मर जाती है और बालक जीता रहता है ॥ ४६ ॥

अथोपसूतिकासंख्याज्ञानम् ।

लग्नाऽब्जान्तरसंस्थितैर्दिविचरैस्तुल्या वदेत्सूतिका
बाह्याभ्यंतरदृश्यकोदितलेऽप्येवं तु मध्यस्थिताः ।
पूर्वादृश्यदलेऽपि बाह्यनुदिते चक्रस्य सौम्यैः शुभा
रूपाढ्याः कलखेचरैस्तु बलिना मिश्रैर्विमिश्रा बुधैः॥ ४७ ॥

लग्नसे लेकर जिस स्थानमें चंद्रमा स्थित हो उतने बीचमें जितने ग्रह स्थित हों उतनी ही स्त्रियां उस संतान उत्पन्न करनेवाली स्त्रीके पास

कहना चाहिये जितने ग्रह दृश्य चक्रार्द्ध अर्थात् सप्तमस्थानसे लेकर लग्न पर्यंत स्थित हों उतनी ही स्त्रियां सूतिप्रसवस्थानसे बाहर कहनी चाहिये और जितने ग्रह अदृश्य चक्रार्द्ध अर्थात् लग्नसे लेकर सप्तमभागपर्यंत स्थित हों उतनी ही औरतें प्रसवस्थानके भीतर कहनी चाहिये और जो अदृश्य चक्रार्द्धमें वा दृश्यचक्रार्द्धमें शुभ ग्रह स्थित हों तो वे औरतें शुभ रूपवान् भूषणयुक्त कहनी चाहिये और उन ग्रहोंके समान गुण, वर्ण, रंग, भूषण, वस्त्र, अवस्था, विधवा सौभाग्यवती कहनी चाहिये और पापग्रह बलवान् होकर चक्रमें स्थित हों तो उसी सदृश कहना योग्य है और जो शुभग्रह पापग्रह दोनों स्थित हों तो मिश्रित फल कहना चाहिये ॥ ४७ ॥

शशिलग्नविवरयुक्ता ग्रहतुल्याः सूतिकाश्च वक्तव्याः । अनुदितचक्रार्द्धयुतैरंतरबहिरन्यथा त्वेके ॥ लक्षणरूपविभूषणयोगास्तासां शुभैर्योगात् । क्रूरैर्विरूपदेहा लक्षणहीनाश्च रौद्रमालिनाश्च । मिश्रैर्मध्यमरूपा बलमाहितैः सर्वमेतदवधार्यम् । अथ लग्नमारभ्य राशिपर्यंतं गणना कर्तव्या तन्मध्ये बलिनो ग्रहाश्च अनुदितेऽदृश्ये चक्रार्द्धे यदि भवंति तत्तुल्या उपसूतिका गृहमध्ये वक्तव्याः । अन्यथा दृश्यचक्रार्द्धे यदि भवंति तदा गृहाद्बहिर्वाच्याः। लग्नादारभ्य सप्तमपर्यंतं अदृश्यं चक्रार्धं अपरं दृश्यम्। यदाह वराहः–यावंतः शशिलग्नांतर्ग्रहास्तत्संख्यकाः सूतिकाः । उत्तरमध्यगा बाह्यास्तत्समलक्षणा बहुसंमतत्वादयमेव मुख्यपक्षः । लग्नगे च विशेषश्चंद्रिकायाम–योषितो लग्नगे चंद्रे ग्रहाः स्युः सूतिकोद्भवा इति । अन्ये तु–उदगर्धस्थितैर्ग्रहैर्बाह्यः पूर्वार्द्धे ग्रहमध्ये मतः । आह जीवशर्मा–उदयशशिमध्यस्थैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकास्तत्र उदगर्धस्थैर्बाह्या दक्षिणे ज्ञेया इति । लग्ने तदीशपार्श्वे वाथवांतः स्युः खपापिनः । धनस्था व्ययगा ये च तावंतः सूतिका वदेदिति । गृहस्थाविरसूतिकायोगाविशेषोक्तम् । तुर्ये दृष्टाः सूतिकाः खेटतुल्याः स्वांशे स्ववर्गे द्विगुणादि ज्ञेयम् । अत्र चंद्रलग्नयोर्मध्ये ग्रहास्तिष्ठंति तत्तुल्याः सूतिका ज्ञेयाः । अथ जन्मलग्नवशादुपसूतिकाज्ञानमुक्तं ग्रंथांतरे–मीने मेषे वदेदेकः चत्वारि वृषकुंभयोः । सप्त बाणाश्च धनुषि कर्कटे द्वादश स्मृताः ॥ अन्यलग्ने भवेत् त्रीणि सूतिकाया विनिश्चितम् । अथ नृपादिगृहे बहुस्त्रीसंभवे लग्नवशेन उपसूतिकाज्ञानम् । खनंदा ९० मेषतुलयोस्त्रिनंदा ९३ वृषकन्ययोः । सप्तनागा ८७ त्रिनंदा ९३ श्च प्रोक्ताश्च मिथुने स्मृताः ॥ नंदांकाः ९९ कर्कमृगयोर्विज्ञेयाः सूतिकाः स्त्रियः । बहुस्त्रीसंभवो वाच्यो नृपादीनां गृहे बुधैरिति । अत्र विशेषोक्तो जातकोत्तमे । युग्मायुग्मविलग्नस्य वश्यात्प्रसवकारिणी । विधवाः सधवा ज्ञेयाः क्रमाद्धर्लविचक्षणैः ॥ लग्नादष्टमगः पापः पापादष्टमगः शशी । उपसूती भवेद्रंडा विज्ञेया उपसूतिका ॥

पंचमे सूर्यपुत्रश्च शशिशुक्रौ च कर्मगौ । तत्रैव कन्यका ज्ञेया शिशोर्जन्म विनिश्चितम् ॥ इति ।

अथ द्विगुणत्रिगुणोपसूतिका ।

वक्रोच्चसंस्थैस्त्रिगुणः स्वराशौ दृक्के नवांशे द्विगुणाः स्वबुद्ध्या ।
नीचेऽस्तगेऽर्द्धं ह्युपसूतिकाख्या होराविदैर्द्वित्रिगुणे सकृद्वा ४८॥

जो ग्रह अपने उच्चस्थानमें स्थित हो अथवा वक्री हो चक्रमें स्थित हो तो त्रिगुण स्त्रियां सुतिका गृहके बारह वा भीतर कहनी चाहिये और जो ग्रह अपनी राशिमें वा अपने द्रेष्काण नवांशमें स्थित हो तो उपसूतिका द्विगुण कहनी चाहिये अपनी बुद्धि करके और जो ग्रह अपनी नीच राशिमें अथवा नीच नवांशमें वा अस्तंगत हो तो चक्रमें स्थित ग्रहोंसे उपसूतिका आधी कहनी चाहिये, क्योंकि ज्योतिषी लोगोंने ऐसा कहा है कि जहां बहुतबार द्विगुण पाया जाय तहां एक ही बार द्विगुण करना चाहिये और जहां बहुतवार त्रिगुण पाया जाय वहां एक ही बार त्रिगुण करना क्योंकि ऐसा लिखा है 'एकं तु यद्भूरि तदैव कार्यम् । सकृच्च द्विगुणं पदम्' ॥ ४८ ॥

अथ गृहमध्ये गृहज्ञानम् ।

तुलालिकर्काजघटे स्थितिः स्यात्स्थितिर्भवेच्छक्रककुप्क्रमेण ।
मृगास्यहर्योर्वृषभेण चापि कन्यानृयुग्मांत्यशरासनाख्यैः ॥४९॥

तुला, वृश्चिक, कर्क, मेष, कुंभ इन राशियोंमेसे कोई राशि भी लग्नमें स्थित हो अथवा इन राशियोंके नवांश लग्नमें स्थित हो तो घरमें पूर्वकी तरफ सूतिकागृह कहना चाहिये मकर, सिंह इनमें कोई राशि लग्नमें स्थित हो अथवा इन राशियोंका नवांश लग्नमें हो तो दक्षिणकी तरफ स्थानमें सूतिकागृह कहना योग्य है और वृष लग्न वा वृषका नवांश लग्नमें हो तो घरमें पश्चिमकी तरफ सूतिकागृह कहना चाहिये और जो कन्या, मिथुन, मीन, धन इन राशियोंमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित अथवा इनका नवांश लग्नमें स्थित हो तो उत्तरकी तरफ मकानमें सूतिकागृह कहे ॥ ४९ ॥

अथ सूतिकागृहचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि.
पूर्वभाग.	पश्चिमभाग.	उत्तरभाग.	पूर्वभाग.	दक्षिणभाग.	उत्तरभाग.	पूर्वभाग.	पूर्वभाग.	उत्तरभाग.	दक्षिणभाग.	पूर्वभाग.	उत्तरभाग.	स्थान. भाग. दिशा.

तथाच वराहः—मेषकुलीरतुलालिघटैः प्रागुत्तरतो गुरुसौम्यगृहेषु । पश्चिमतश्च वृषेन निवासो दक्षिणभागकरौ मृगसिंहौ ॥

अथ सूतिकागृहद्वारज्ञानम् ।

द्वारं केंद्रस्थैर्ग्रहैर्वीर्ययुक्तैर्ज्ञेयं नैवं चेत्तदा लग्नगेहात् ।
दृश्यो भागो वाममंगं निरुक्तं यो वादृश्यो दक्षिणांगं मुनीन्द्रैः ५०

लग्नादि चारो केन्द्रोंमें स्थित ग्रहोंके क्रमसे सूतिकागृहका दरवाजा कहना चाहिये अर्थात् केन्द्रमें जो ग्रह स्थित हो उस ग्रहकी जो दिशा कही है उसी दिशाके सामने सूतिकागृहका द्वार कहना । यथा—सूर्य करके पूर्वको,शुक्रकरके अग्निकोण,मंगल करके दक्षिण,राहु करके नैर्ऋत्य, शनैश्चर करके पश्चिम, चंद्रमा करके वायव्य कोण, बुध करके उत्तर दिशा, बृहस्पति करके ईशान कोण कहना चाहिये। तथा—"रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः । बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशां चैव तथा ग्रहाः ॥ इत्यमरः ॥ अन्ये तु वराहः—प्रागाद्या रविशुक्रलोहिततमःशौरींदुवित्सूरयः ॥" और जो चारो केन्द्र अर्थात् लग्न, चतुर्थ,सप्तम, दशममें कोई ग्रह न स्थित हो तो जन्म लग्न जिस दिशाके स्वामी हो उसी दिशाकी तरफ मकानका दरवाजा कहना। अथवा लग्नादिकेंद्रोंमे बहुतसे ग्रह स्थित हों तो उनमें जो अधिक बली हो उसी ग्रहकी दिशाके सामने सूतिकागृहद्वार कहना चाहिये ।

अथ वामदक्षिणे द्वारज्ञानम् ।

पूर्वोक्तकेन्द्रमें स्थित ग्रह दृश्यचक्रार्द्धमें स्थित हों तो सूतिकागृहके बांई तरफको मकानका द्वार कहना और अदृश्यचक्रार्द्धमें स्थित हों तो सूतिकागृहसे दहनी तरफ मकानका दरवाजा कहना चाहिये ॥ ५० ॥

द्वारं केन्द्रगताद्वदंति बलिनो लग्नर्क्षतो वा वदेत् । विशेषः होरामकरंदे–एकद्वारं स्थिरांशे तु वंशद्वारं द्वयं वदेत् । चरांशे तु बहुद्वारं सूतिकासंभवं वदेत् ॥ रव्यादिग्रहमध्ये यः स पापेक्षया प्रबलस्तादृशं सूतिकागृहं वक्तव्यम् । तथाच यवनः–संवर्द्धिता चन्द्रमसोपलिप्तमिति । गृहद्वारनिर्णयमाह–जन्मकाले यः केन्द्रस्थो ग्रहो भवति तस्य या दिक् तदभिमुखं द्वारं वक्तव्यम्, यदि केंद्रे भूयांस्तदा तन्मध्ये योऽतिबली तदभिमुखद्वारम्, यदि च केंद्रे कोऽपि ग्रहो नास्ति तदा लग्नराशिवशेन दिग्भिमुखं द्वारं वक्तव्यम्, लग्ने यो द्विरसांशस्तदाभिमुखं सूतिकागृहद्वारं माणित्थोक्तेः संचारादिक्त्वेनानुभूतत्वाच्च लग्ने यद्राशिद्वादशांशाः तद्राशिद्वादशांशात् दिग्भिर्मुखं द्वारं वक्तव्यमिति ॥

अथ ग्रहस्वरूपज्ञानम् ।

संस्कारितं तु जरितं रविजे कुजे तु दग्धं च काष्ठसहितं न दृढं खरांशौ । रम्यं नवं भृगुसुते शशिजे विचित्रं सोमे नवं च धिषणे सुदृढं गृहं स्यात् ॥ ५१ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें सब ग्रहोंसे शनैश्चर बली हो तो सूतिकाघर मरम्मत किया हुआ पुराना कहना चाहिये और जो सब ग्रहोंसे मंगल बली हो तो जला हुआ सूतिकागृह कहना और सूर्य बली हो तो काष्ठकरके सहित कमजोर सूतिकागृह कहना चाहिये और जो शुक्र बलवान् हो तो रमणीक मनको प्रसन्न करनेवाला नवीन गृह कहना योग्य है और जो बुध बली हो तो विचित्र शोभायमान चित्रकारी किया हुआ अथवा बहुत तसबीरों सहित मकान कहना चाहिये और चंद्रमा बलवान् हो तो नया सूतिका घर कहना और जो बृहस्पति बलवान् हो तो बहुत मजबूत सूतिका घर कहना चाहिये और इन ग्रहोंके वामदक्षिण जो ग्रह स्थित हों तो पूर्वोक्त रीत्यनुसार सूतिकाघरके समीपके घरोंका फल कहना चाहिये, परंतु पूर्वोक्त ग्रह लग्नस्थ हों तो बहुत ठीक फलादेश मिलेगा ॥ ५१ ॥

जीर्णं काष्ठयुतं रवौ शशिधरे स्यान्नूतनं मंदिरं दग्धं वास्तुजि भूरिशिल्पविहितं सौम्ये दृढं वाक्पतौ । कांतं चित्रयुतं नवं भृगुसुते जीर्णं भवेत्सूर्यजे इति ॥ जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्पोद्भवम् ॥ रम्यं चित्रयुतं नवं च धिषणे शुक्रे दृढं मंदिरं चक्रस्थैश्च यथोपदेशरचनासामंतपूर्वा वदेत् ॥ इति वराहः ॥

अथ सूतिकाशय्याज्ञानम् ।

द्वौ द्वावजाद्याः किल राशयः स्युः प्राच्यादितो द्व्यंगगृहं विदिक्षु ।
शय्या प्रवाच्याप्यथवा यथा स्याद्राहुस्तथैवेति वदंति केचित् ५२

मेषादि दो दो राशियोंको क्रमसे सूतिकाघरमें पूर्वादि दिशाओंमें सूतिकाकी शय्या कहनी और द्विस्वभावराशिके क्रमसे आग्नेयादिकोणमें सूतिकाकी शय्या कहनी योग्य है। यथा मेष, वृष इनमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो तो पूर्व दिशामें शय्या कहनी और मिथुन राशि जन्मलग्नकी हो तो आग्नेयकोणमें शय्या कहनी चाहिये, कर्क सिंह इनमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो तो दक्षिण दिशामें शय्या कहनी, कन्या हो तो नैर्ऋत्य कोणमें कहना और तुला वृश्चिकराशि लग्नमें स्थित हो तो पश्चिम दिशामें शय्या कहनी, धनराशि लग्नमें हो तो वायव्य कोण कहना, मकर वा कुंभराशि लग्नमें स्थित हो तो उत्तरदिशामें शय्या कहनी, मीनराशि लग्नमें स्थित हो तो ईशानकोणमें शय्या कहनी चाहिये और कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं जिस स्थानमें राहु स्थित हो उसी स्थानमें सूतिकाकी शय्या कहनी चाहिये "यत्र राहुस्तत्र शय्याः स्युः" ॥ ५२ ॥

द्वौ द्वौ क्रमात् क्रियमुखाः खलु राशयः स्युः प्राच्यादितो द्वितनवश्च विदिक्षु गेहे । शय्यासु तद्वदिह पत्रिभवांत्यपादा भंगः खलैर्भवति० ॥ क्रियमुखा मेषादयो राशयः क्रमेण दिशासु ज्ञेयाः । तद्यथा—मेषवृषौ पूर्वस्यां, मिथुनश्चाग्नेय्यां, कर्कसिंहौ दाक्षिणस्यामिति । तथा च लग्नराशिर्यद्विभागे भवति तद्विभागे शयनं वक्तव्यम् । तद्वत् वास्तुवत् शय्यास्वपि वदेत् ॥

अथ खट्वाङ्गज्ञानम् ।
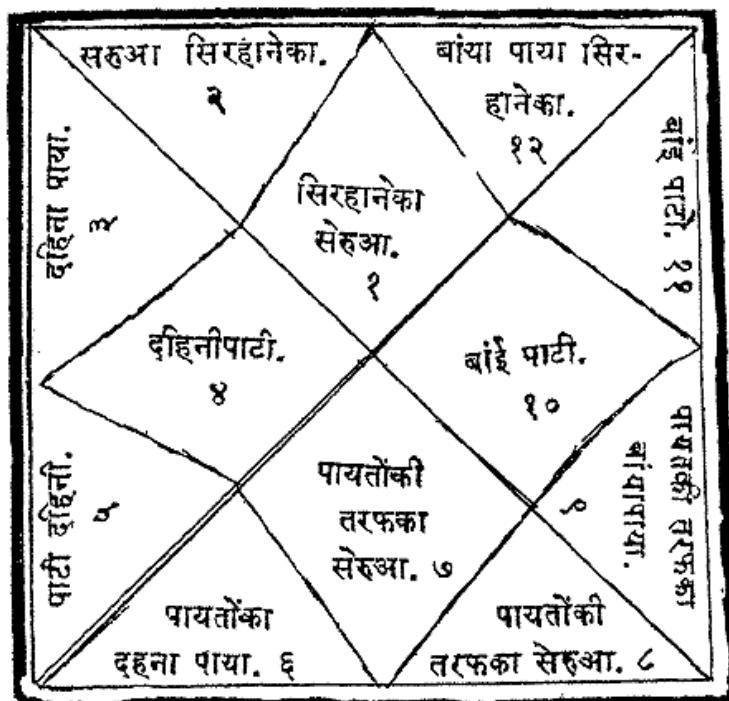
शीर्षस्यांघ्रिर्दक्षिणे विक्रमर्क्षं वामः पादो द्वादशर्क्षं विचिंत्यः ।
एवं षष्ठं धर्मभं दक्षवामौ खट्वाङ्गानां निर्णयोऽत्र स्वबुद्ध्या ॥५३॥

लग्नादि द्वादश भावोंमें क्रमसे शय्याके अंग जानने अर्थात् जिस लग्नमें जन्म हो उस राशिकी जो दिशा कह आये हैं उस दिशाको सूतिकाका सिरहाना कहना और लग्न द्वितीय ये दो भाव खाटके सिरहानेके हैं और

तीसरा स्थान सिरहानेका दाहिना पाया है और चतुर्थ पंचमस्थान दाहिनी पट्टी शय्याकी है और छठा स्थान शय्याका पांयतकी तरफका दहना पाया है और सातवां आठवां स्थान शय्याकी पांयत है और नवस्थान पायतकी तरफका बांया पाया है और दशम एकादश स्थान शय्याकी बांई पट्टी है और बारहवाँ स्थान शय्याके सिरहानकी तरफका बांया पाया है। ये खाटके अंग अपनी बुद्धि करके निर्णय इस जगह करने ॥ ५३ ॥

अथ खट्वाङ्गचक्रम् ।

येन लग्नेन प्रसवस्तत् शय्यायाः शिरः लग्नात्तृतीयभावः खट्वायाः दक्षिणपादः द्वादशो वामपदः षष्ठस्तु पश्चात् दक्षिणः नवमो वामपद इत्यर्थः ॥

अथ खट्वांगघातज्ञानम् ।

खट्वांगे यत्र पापिष्ठास्तत्र घातस्तु तत्समः ।
वक्तव्यो दैवविदुषा वित्ततत्त्वद्विरूपभैः ॥ ५४ ॥

शय्याके जिस अंगपर पापग्रह स्थित हों उसी स्थानको अर्थात् शय्या के उसी अंगको घात कहना चाहिये और शय्याके जिस अंगमें शुभग्रह

स्थित हों उसी अंगको पुष्ट अथवा मजबूत कहना उचित है, दैवविदुष अर्थात् ज्योतिषी लोग विचार कर कहें ॥ ५४ ॥

अथ शय्योपरि वस्त्रज्ञानम् ।

लग्नोक्ता दिशि खट्वायाः शिरोऽङ्गानि धिया ततः ।
लग्नं पश्यंति ये खेटास्तद्वस्त्रास्तरणं विदुः ॥ ५५ ॥

लग्न करके कहे गये शय्याकी दिशा शिरसे लेकर पायतपर्यंत अंगोंको लग्नके वास्ते जो ग्रह देखते हों उसी ग्रहका वस्त्र शय्यापर बिछा कहना चाहिये और जो बहुतसे ग्रह लग्नको देखते हों तो उसमें जो ग्रह बलवान् हो उसी ग्रहके वस्त्रका बिछौना कहना चाहिये ॥ ५५ ॥

खट्वाङ्गे यत्र पापग्रहस्तत्र तत्सदृश उपधातो वक्तव्यः । यत्र च द्विस्वभावराशयस्तत्र वितानत्वम् । तथाच सारावल्याम्--खट्वास्थितिभवनश्रुतिविहगसमानि तत्र चिह्नानि । आभरणानि च विद्या शुभदृष्टिकृतानि दैवज्ञः ॥ लग्नं ये खेटाः पश्यंति तद् वस्त्रास्तरणं ज्ञेयम् । इति ॥

अथ लग्नवशेन उपसूतिकाज्ञानम् ।

अजझषे द्विमिता वृषकुंभयोः श्रुतिमिता हयकर्कटके शराः ।
मकरयुग्मतुलाधरकन्याकास्त्वलिहरौ त्रिमिता ह्युपसूतिकाः ५६

जिस बालकके जन्मकालमें मीन अथवा मेष लग्न हो तो प्रसवकालके समय दो स्त्री कहनी चाहिये और वृष वा कुंभलग्नमें जन्म हो तो चार स्त्रियां कहनी चाहिये.कर्क वा धन लग्न होय तो पांच उपसूतिका कहनी. मकर, मिथुन, तुला, कन्या, वृश्चिक, सिंह ये जन्मलग्न हों तो तीन स्त्रियां प्रसवकालके समय कहनी चाहिये ॥ ५६ ॥

अथ मातृवस्त्रज्ञानम् ।

मातृवस्त्रं वदेत्तत्र वा विलग्ननवांशपात् ।
तुर्येशवशतो वाच्यं सूते प्राङ्मातृभोजनम् ॥ ५७ ॥

जिस लग्नमें बालकका जन्म हो उस लग्नेशके वस्त्रको अथवा जन्म-

लग्नमें जिस नवांशमें बालकका प्रसव हो उस नवांशपतिके समान वस्त्र-
को कहना चाहिये ॥

अथ मातृभोजनज्ञानम् ।

और जन्मलग्नमें चतुर्थस्थान जो है उसके स्वामीके समान प्रसव-
कालके पूर्व माताका भोजन कहना चाहिये ॥ ५७ ॥

कठिनं मधुरं रूक्षं लेह्यपेयादिकं मृदु । सावणाम्लं गुणं दुग्धं विचित्रं स्वल्पभोजनम् ॥५८॥ वटकाद्यं बहुरसं पेयादि मधुरं हिमम् । क्रोधादिना कदशनं सूयादेः श्लोकपादतः ॥ ५९ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें जो चतुर्थेश सूर्य हो तो प्रसवकालके
पूर्व कठोर, मिष्ट, रूखा भोजन माताने किया है और जो चन्द्रमा हो
तो लसदार कोमल दुग्धादिक माताका भोजन कहना योग्य है और जो
चतुर्थेश भौम हो तो सूखा हुआ अम्ल गुड वा दुग्धका भोजन कहना
चाहिये और बुधकरके विचित्र थोड़ासा भोजन कहना चाहिये ॥५८॥ और
जो चतुर्थेश बृहस्पति हो तो बहुत रसकरके संयुक्त पकौड़े वगैरेका भोजन
कहना चाहिये और शुक्रकरके दुग्धादिक मिष्ट पदार्थ शीतल भोजन
कहना और शनैश्चर करके खट्टे, चरपरे, मांसादि अथवा भुना अन्न
भोजन बालकके प्रतवकालके पहिले माताका भोजन कहना चाहिये॥५९॥

अथ प्रसवस्थाने धातुज्ञानम् ।

**ताम्रं मणिः स्वर्णमतश्च शुक्ती रौप्यं च मुक्ताफलकं च लोहम् ।
सूर्यादिभिर्वीर्ययुते प्रवाच्या जाबूनदं स्वर्क्षगते सुरेज्ये ॥ ६० ॥**

जिस बालकके जन्मकालमें सब ग्रहोंसे सूर्य अधिक बली हो तो
प्रसवस्थानके विषे तांबा ज्यादे कहना चाहिये और मंगल बली हो तो
सुवर्ण ज्यादे कहना और बुध बलवान् हो तो सीसा वा रांग वा कांसा ज्यादे
कहना और बृहस्पति अधिक बली हो तो चांदी ज्यादे कहना चाहिये और
शुक्र अधिक बली हो तो मोती ज्यादे कहना और शनैश्चर बलवान् हो तो

लोहा ज्यादे प्रसवस्थानमें कहना और जो बृहस्पति धन अथवा मीन-राशिका हो तो भी प्रसवस्थानमें सुवर्ण ज्यादे कहना चाहिये परंतु ये ग्रह लग्नवर्ती हों तो पूरा फल कहना ॥ ६० ॥

दीपः सूर्यादिंदुतः स्नेहमानं वर्तिर्लग्नादेवमुक्तं पुराणैः । ज्ञातुं शक्यं मंदधीभिर्न तस्मात्सच्छिष्याणां प्रीतये प्रोच्यतेऽत्र ६१॥

सूर्यकरके दीपक कहना चाहिये, चंद्रमाकरके दीपकका तैल कहना चाहिये और जन्मलग्नकरके बत्ती कहना योग्य है । इन फलोंको मंदबुद्धि शिष्य नहीं जान तकते हैं सत् शिष्योंके लिये ये फल इस जगह कहे हैं॥६१॥

अथ दीपज्ञानम् ।

खट्वांग स्याद्भास्करो यत्र तत्र वाच्यो दीपश्चालितं चंचलर्क्षे ।
वारं वारं द्व्यंगभे चैकवारं तत्रस्थो वै स्यात्स्थिरर्क्षे तु दीपः ॥६२॥

खाटके जिस अंगमें सूर्य स्थित हो उसी जगह दीप कहना चाहिये और जो सूर्य चरराशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर इन राशियोंमें स्थित हो तो प्रसवकालके समय दीप लिये किसी मनुष्यको घूमता जानो और जो सूर्य द्विस्वभाव राशि अर्थात् मिथुन,कन्या,धन, मीन इन राशियोंमें स्थित हो तो चलित और स्थापित दो प्रकार अर्थात् एक समय दीप उठाया फिर धर दिया जानना चाहिये और जो सूर्य स्थिरराशि अर्थात् वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभमें स्थित हो तो प्रसवकालके समय दीप स्थिर कहना चाहिये ॥६२॥

अथार्कलग्नद्वादशांशवशेन दीपकज्ञानमुक्तं गर्गेण—लग्नस्य प्रथमे भागे सूर्ये प्राच्यां प्रदीपकः । द्वितीये च तृतीये च भवदीशानकोणगः ॥ चतुर्थे चोत्तरे वायुकोणे पञ्चमषष्ठगे । सप्तमे पश्चिमायां च नैर्ऋत्यां नवमेऽष्टमे ॥ दशमेऽर्के दक्षिणस्यामग्निकोणे च दीपकः । द्वादशैकादशे प्रोक्तो दीपभावः स्वयंभुवा ॥ अन्यच्च तत्रैव—चरे लग्ने करे दीपः स्थिरे तत्रैव संस्थितः । द्विस्वभावे तथा वाच्यो करेण परिचालितः ॥ इति ॥

अथ दीपस्य तैलज्ञानम् ।

पूर्णं तैलं दीपकं पूर्वदृक्के चन्द्रे मध्येऽर्द्धं त्रिभागं तृतीये ।
वर्तिर्लग्नात्तद्वदेव प्रकल्प्य वाच्यं सम्यग्बुद्धिमद्भिः स्वबुद्ध्या ६३

जन्मकालमें जिस राशिमें चन्द्रमा स्थित हो उस राशिके पहिले द्रेष्काणमें चंद्रमा हो तो दीपक तैलकरके परिपूर्ण प्रसवकालके समय कहना और जो दूसरे द्रेष्काणमें चन्द्रमा स्थित हो तो दीपकमें आधा तैल कहना और जो चंद्रमा तीसरे द्रेष्काणमें स्थित हो तो दीपकमें थोड़ा तैल कहना चाहिये अर्थात् जितने अंश राशिके चन्द्रमा भोग कर चुका हो उतने ही अंश तैल दीपकमें कहना चाहिये ॥

द्रेष्काणे प्रथमे चद्रे दीपः पूर्णो द्वितीयके । अर्द्धपूर्णो हि विज्ञेयस्तैलहीनस्तृतीयके ॥ चंद्रस्य पूर्णत्वे दीपपूर्णत्वं सक्षीणत्वे तैलक्षयमुक्तं न तद्युतितद्पातो अमावस्यायां सर्वस्यांधकारे जन्मसंभवः स्यात् । तनुस्थानगतश्चंद्रोऽप्यष्टमस्थो यदा भवेत् । बालस्य जन्मसमये दीपस्य परिपूर्णता ॥

अथ दीपस्य वर्तिज्ञानम् ।

जन्मकालके समय लग्नके जितने अंश व्यतीत हो चुके हों उतने ही दीपककी बत्ती जली जानो अर्थात् जन्मलग्नके जितने अंश बीते हों प्रसव कालके समय उतनी ही अंश बत्ती जली भई कहना चाहिये ॥ ६३ ॥

लग्नभुक्तानुमानेन दग्धवर्तिं विनिर्दिशेत् । वर्तिपूर्णस्तु लग्नराशिवर्णसदृशो वाच्यः । लग्नस्य योऽत्र वर्णो निर्दिष्टस्तेन वर्तिरादिश्येति ॥

अथ बालकस्य अंगन्यासः ।
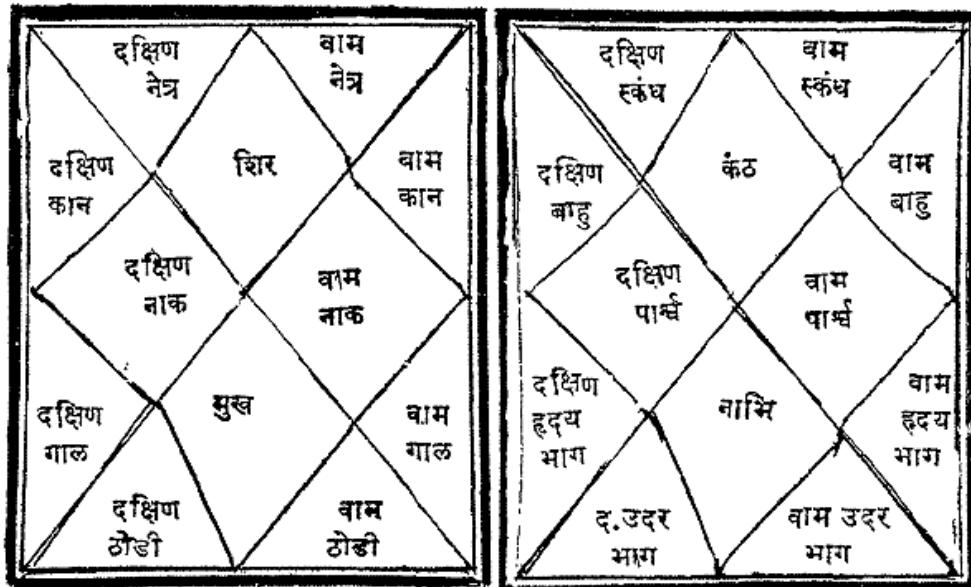
शीर्षदृशौ श्रुतियुगं च नसा कपोलौ तस्माद्धनुश्च वदनं प्रथमे दृकाणे । कंठांसकौ भुजयुगं किल पार्श्ववक्षः क्रोडं च नाभिरिति वा कथितं द्वितीये ॥६४॥ बस्तिश्च शिश्नगुदके वृषणावुरू च जानुद्वयं च जघने चरणौ तृतीये । चक्रस्य नामसुदितं सकलं नरस्य यामं तथा ह्यनुदितं गदितं ग्रहज्ञैः ॥ ६५ ॥

शरीर तीन हिस्से करना इस प्रकार कि जन्मसमयमें लग्नके पहिले द्रेष्काणका उदय हो तो शिरसे लेकर मुखपर्यंत द्वादश अंगोंका एक भाग जानना और जो द्वितीय द्रेष्काणका उदय हो तो कंठसे लेकर नाभिपर्यंत द्वादश अंगोंका दूसरा भाग जानना और जो तीसरे द्रेष्काणका उदय हो तो

बस्तिसे लेकर चरणपर्यंत द्वादश अंगोंका तीसरा भाग जानना चाहिये। इन तीनों द्रेष्काणोंमें जिसका उदय हो उसी भागके द्वादश अंगोंको लग्नादि भावोंमें न्यास करे अर्थात् पहिले द्रेष्काणका उदय हो तो लग्नादि शिर-चक्रमें देखो, वाम दक्षिण अंगोंको जानना चाहिये ॥ ६४ ॥

प्रथमद्रेष्काणांगविभाग.

द्वितीयद्रेष्काणांगविभाग.

तृतीयद्रेष्काणांगविभाग.

ये तीनों द्रेष्काणचक्र करके बताये हैं ज्योतिषशास्त्रवेत्ताओं करके चक्रका सम्पूर्ण मनुष्योंका वामभाग कहा तैसे दक्षिण भाग कहा है॥ ६५ ॥

अथ व्रणमशकादिज्ञानम् ।

व्रणो भवेत्पापयुतेऽत्र सौम्यैः संवीक्षिते लक्ष्मतिलस्तु सद्भिः ।
स्थिरे स्वभांशे सहजस्तदानीमागतुकस्तद्विपरीतसंस्थे ॥ ६६ ॥

कालपुरुषके जिस अंगराशिमें पापग्रह संयुक्त हों अथवा देखते हों तो उस अंगमें घाव इत्यादि कहना चाहिये। अथवा जिस अंगराशिमें शुभग्रह स्थित हों अथवा देखते हों उस अंगमें तिल मशकादि कहना और जो पूर्वोक्त ग्रह अपनी राशि अथवा अपने नवांशमें वा स्थिर राशि वा स्थिर राशिके नवांशमें स्थित हो तो घाव मशा तिल बालकके संग पैदा हुआ कहना चाहिये और जो पूर्वोक्त ग्रह उक्त स्थानसे विपरीत स्थित हों तो आगंतुक अर्थात् उस ग्रहकी दशामें पैदा होगा ॥ ६६ ॥

अथ व्रणमशकादिकारणम् ।

रवौ काष्ठतुर्यांघ्रिजः सूर्यपुत्रे दृषद्वायुजद्रुजे भूमयश्च ।
गराग्न्यस्त्रजोभूमिपुत्रे व्रणस्तत्समांगे विधौ शृंगिनीराब्जजःस्यात्

और जो अंग वा राशि सूर्यसे युक्त वा दृष्ट हो तो काष्ठके लगनेसे वा चतुष्पाद जीवोंके काटनेसे अथवा मारनेसे घाव कहना चाहिये और जो शनैश्चर जिस अंग वा राशिमें युक्त वा दृष्ट हो तो पत्थरके लगनेसे वा जलसे अथवा वातसे पैदा हुआ घाव कहना चाहिये और जो अंग बुधसे संयुक्त वा दृष्ट हो तो धरतीमें गिरनेंसे अथवा ईंट वा मिट्टीका ढेला लगनेसे घाव कहना चाहिये और जो अंगराशि मंगलसे संयुक्त वा दृष्ट हो तो अग्निसे अथवा विषकरके या हथियारसे पैदा हुआ घाव कहना चाहिये और जो अंग वा राशि चन्द्रमासे संयुक्त वा दृष्ट हो तो सींगवाले जीव अथवा जलमें रहनेवाले जंतुओंसे घाव कहना चाहिये और किसी शुभग्रहसे संयुक्त वा दृष्ट हो तो घाव नहीं होता है ॥ ६७ ॥

अथ व्रणमशकादिनिश्चयज्ञानम् ।

यत्र त्रयः सौम्ययुता ग्रहाः स्युस्तत्र व्रणस्तत्समराशिदेशे ।
तद्वद्रिपुस्थो व्रणकृत्खलो वा सदृष्टियुक्तस्तिललक्ष्मकृत्स्यात् ६८

मनुष्योंके जन्मकालमें बांये अथवा दहिने जिस अंग राशिमें तीन ग्रह बुधसहित स्थित हों तो उस अंगमें जरूर घाव इत्यादि कहना चाहिये फिर वे बुधसहित तीनों ग्रह चाहे पापग्रह अथवा शुभग्रह हों इसका कुछ विचार नहीं करना और उस योगमें जो ग्रह बली हो उसी ग्रहकी दिशामें घाव कहना चाहिये और जो पापग्रह लग्नसे छठे स्थानमें स्थित हों और वह छठे स्थानमें जो राशि स्थित हो कालपुरुषके जिस अंगप्रत्यंगमें स्थित हो उसी अंगमें घाव कहना चाहिये और जो छठे स्थानमें स्थित पापग्रह शुभग्रहोंकरके दृष्ट वा संयुक्त हो तो घाव नहीं करते हैं किंतु तिल-मशकादि चिह्न कारक होते हैं और जो उसी छठे स्थानमें स्थित पापग्रह अपनी राशि नवांशमें अथवा स्थिर राशि अथवा स्थिर राशिके नवांशमें स्थित हो तो वह घाव या लक्षण स्वाभाविक अर्थात् संग पैदा हुआ कहना चाहिये और अन्यराशि चर वा द्विस्वभावमें स्थित हो तो व्रण-कारक ग्रहकी दशामें घाव या लक्षण इत्यादि कहना चाहिये ॥ ६८ ॥

अथांतरिक्षे जन्मज्ञानम् ।

धनुर्मीने च कन्यायां मिथुने च विशेषतः ।
अंतरिक्षे भवेज्जन्म शेष भूमीति निर्दिशेत् ॥ ६९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन वा मीन या कन्या अथवा मिथुन राशिमें विशेषकरके हो तो उस बालकका जन्म अंतरिक्ष अर्थात् धरतीसे ऊंचे स्थानपर कहना चाहिये और शेष राशियोंमें पृथ्वीमें जन्म कहना ॥ ६९ ॥

अथ बालकस्य रोदनज्ञानम् ।

मेषात्त्रयो धनुः सिंहे बालकः खलु रोदिति । अर्द्धशब्देन मकरे

कन्यायां कुंभभे तथा ॥ ७० ॥ तुलालिमीनसदने अल्पं च चिरकालतः । लग्नचंद्रवशात्सोऽपि वाच्यं बलविवेकतः ॥७१॥

मेष,वृष,मिथुन, धन, सिंह ये राशि लग्नवर्ती हों तो बालक निश्चयकरके पैदा होते ही रोता है और मकर, कन्या, कुंभ इनमें जन्म हो तो अर्द्धशब्द अर्थात् पहिले थोड़ा थोड़ा पीछेसे ज्यादे रोता है ॥ ७० ॥ तुला, वृश्चिक, मीन इन राशियोंमें जन्म हो तो पैदा होते ही चुपचाप रहे पश्चात् बहुत कालतक रोता रहे। ये फल विचार करके लग्न अथवा चंद्रमाके विचारसे हैं इन दोनोंमें जो बलवान् हो उसी करके फल कहना उचित है ॥ ७१ ॥

अथ बालकस्य छिक्काज्ञानम् ।

चतुर्थस्थानगश्चन्द्रश्चंद्रजेन समन्वितः ।
तत्कालजातबालस्तु छिक्कां प्रकुरुते सदा ॥ ७२ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें चतुर्थ स्थानमें चंद्रमा बुधकरके सहित स्थित हो तो कहना चाहिये कि पैदा होते ही बालकने छींका है ॥ ७२ ॥

अथ मातुलमृत्युज्ञानम् ।

चंद्रात्रिकोणगे सूर्ये मातुलो म्रियते ध्रुवम् ।
कुजस्त्रिकोणगे शुक्रान्मातृमाता विनश्यति ॥ ७३ ॥
प्रोक्तं प्रसवाध्यायं बालकानां शुभाशुभम् ।
बहुभिर्जातकैर्दृष्ट्वा श्यामलालेन धीमता ॥ ७४ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे प्रसववर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें चंद्रसे त्रिकोण अर्थात् नवम पंचम स्थानमें सूर्य स्थित हो तो प्रसवकालके समय बालकका मामा मृत्युको प्राप्त होता है ॥

अथ मातृमातामृत्युज्ञानम् ।

और शुक्रसे नवम वा पंचम स्थानमें मंगल स्थित हो तो बालककी मातामही अर्थात् नानी मृत्युको प्राप्त होती है ॥ ७३ ॥ इस प्रसवाध्यायमें बहुतसे जातकग्रंथ देखकरके बुद्धिमान् श्यामलाल करके बालकोंका अच्छा बुरा फल कहा ॥ ७४ ॥

इति श्रीवंशबेरलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां प्रसवभेदवर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथाष्टकवर्गाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्याष्टकम् ।

केंद्राया १ । ४ । ७ । १० । ११ ष्ट ८ द्वि २ नव ९
स्वर्कः स्वादार्किभौमयोश्च शुभः । षट् ६ सप्तां ७ त्ये १२
षु सितात्षडाय ६ । ११ धी ५ धर्म ९ गो जीवात् ॥ १ ॥
उपचय ३ । ६ । १०।११ गोर्कश्चंद्रादुपचय ३ । ६ । १० ।
११ नव ९ धी ५ युतः सौम्यात् । लग्नादुपचय ३ । ६ ।
१०।११ बंधु ४ व्यय १२ स्थितः शोभनः प्रोक्तम् ॥ २ ॥

इस सूर्याष्टकवर्गमें जन्मकालिक लग्नसहित ग्रहोंके स्थानोंसे गोचरकालिक स्थानद्वारा हरएक ग्रहका अच्छा बुरा फलका विचार किया जाता है, जन्मकालमें जो ग्रह जिस राशिपर स्थित हो वही राशि उसका अपना स्थान प्रामाणिक किया जाता है, जैसे सूर्य व मंगल व शनैश्चर अपने स्थानसे ग्यारहवें, चौथे, आठवें, दूसरे, दशवें, नववें, सातवें स्थानमें रेखा देते हैं और तैसे ही शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे छठे, सातवें रहे शुभ रेखा देता है । इसी तरह बृहस्पति अपने स्थानसे पंचम, छठे, नवम, एकादश

स्थानोंमें रेखाको देता है। ऐसे ही चन्द्रमा अपने स्थानसे दशवें, तीसरे, छठे, ग्यारहवें रेखा देता है। तैसे ही बुध अपने स्थानसे दशवें, तीसरे, ग्यारहवें,छठे, बारहवें, नवम, पंचमस्थानमें रेखाको देता है। तैसे ही लग्न अपने स्थानसे दशवें, तीसरे, ग्यारहवें, छठें, चौथे, बारहवें स्थानोंमें शुभ रेखा देती है अन्य स्थानोंमें अशुभ फल देती है ॥ १ ॥ २ ॥

अथ सूर्यशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	८	१२	४	६
७	११	७	८	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

अथ सूर्यानिष्टाष्टवर्गांकचक्रम् ।

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	१	३	२	१	१	३	१
५	२	५	४	२	२	५	२
६	४	६	७	३	३	६	५
१२	५	१२	८	४	४	१२	७
	७			७	५		८
	८			८	८		९
	९			१०	९		
	१२			११	१०		
					११		

अथ चन्द्राष्टकवर्गः ।

शश्युपचये ३ । ६ । १० । ११ षु लग्नात्साद्य १ मुनि ७॰ स्वात्कुजा ३ । ५ । १०। ११ त्स्व २ नव ९ धी ५ स्थः । सूर्यात्सा ३ । ६ । १० । ११ साष्ट ८ स्मारगः ७ त्रिषडा-३ । ६ य ११ सुतेषु ५ सूर्यसुतात् ॥ ३ ॥ ज्ञातकेंद्र १ ४ । ७ । १० त्रि ३ सुता ५ या ११ ष्टम ८ गो गुरोर्व्यया-१२ या ११ मृत्यु ८ केंद्रे १ । ४ । ७ । १० षु ॥ त्रि ३ चतुः ४ सुत ५ नव ९ दशम १० सप्त ७ माया ११ गश्चंद्रात् ॥ ४ ॥

अब चन्द्राष्टक वर्ग कहते हैं ॥ चन्द्रमा जन्मलग्नस्थान अथवा गोचर राशिसे तीसरे, छठे, दशवें १०,ग्यारहवें ११, पाहिले, सातवें रेखा शुभ देता है और जन्मकालिक लग्नमें मंगल जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, छठे,

दशवें,ग्यारहवें, दूसरे, नवम, पंचम इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है, तैसे ही सूर्य तीसरे,छठे;दशवें, ग्यारहवें, अष्टम, सप्तम स्थानोंमें शुभ रेखा देता है। तैसे ही शनैश्वर जन्मकालमें जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, पंचम,छठे, ग्यारहवें चन्द्राष्टकवर्गमें रेखा शुभ देता है ॥ ३ ॥ जन्मलग्नमें अथवा गोचरमें बुध जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले,चौथे, सप्तम, दशम,तृतीय,पंचम,एकादश,अष्टम इन स्थानोंमें रेखा शुभ फलको देता है और तैसे ही बृहस्पति अपने स्थानसे बारहवें, ग्यारवें, आठवें, पहिले, चतुर्थ,सप्तम,दशम इन स्थानोंमें रेखा शुभ देता है और शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, चौथे, पंचम, नवम, दशम, सातवें, ग्यारहवें इन स्थानोंमें रेखा शुभ देता है अन्यत्र अशुभ जानो ॥ ४ ॥

अथ चन्द्रशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	१०	७
७	६	५	८	७	११	११	८
१०	९	७	१०	८			१०
११	१०	८	११	१०			११
	११	१०	१२	११			
		११					

अथ चंद्रानिष्टाष्टवर्गांकचक्रम् ।

चं.	मं	बु.	बृ.	शु.	श.	ल	सू.
२	१	२	२	१	१	१	१
४	४	६	३	२	२	२	२
५	७	८	५	६	४	४	४
८	८	१२	६	८	[illegible]	५	५
९	१२		९	१२	८	७	८
१२					९	८	१२
					१०	९	
					१२	१२	

अथ भौमाष्टकवर्गमाह ।

भौमात्स्वादाय ११ स्वा २ ष्ट ८ केन्द्रे १ । ४ । ७ । १० गतस्त्र्या ३ य ११ पट् ६ सुते ५ षु बुधात् । जीवो दशा १० य ११ शत्रु ६ व्यये १२ ष्विनादुपचय ३ । ६ । १० । ११ सुते ५ षु ॥ ५ ॥ उदयादुपचय ३ । ६ । १० । ११ तनु- १ पु त्रि ३ षडा ६ ये ११ ष्विदुतः । समो दश १० म भृगुसुतादंत्य १२ षडा ६ ये ११ ष्ट ८ थ सितात्केन्द्रा १ । ४ । ७ । १० या ११ नव ९ वसु ८ षु ॥ ६ ॥

मंगल जन्मकालमें अथवा गोचरमें जिस राशिमें स्थित हो वहांसे ग्यारहवें, दूसरे, आठवें, पहिले, चौथे, सातवें, दशवें स्थानोंमें मंगल शुभ फलको देनेवाली रेखा देता है, तैसे ही बुध तीसरे, ग्यारहवें, छठे, पांचवें शुभ रेखाओंको देता है; तैसेही बृहस्पति दशवें, ग्यारहवें, छठे, बारहवें शुभ रेखा देता है, तैसेही सूर्य अपने स्थानसे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, पंचम शुभ फलको देता है ॥५॥ और जन्मलग्न अपने स्थानसे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, पहिले इन स्थानोंके विषे शुभ रेखाओंको देता है और चंद्रमा अपने स्थानसे तीसरे, छठे, ग्यारहवें शुभरेखाओंको देता है और तैसे ही शुक्र अपने स्थानसे बारहवें, छठे, ग्यारहवें, अष्टम शुभ रेखाओंको देता है और शनैश्चर अपने स्थानसे पहिले, चौथे, सातवें, दशवें, अष्टम, नवम, एकादश इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और अन्यत्र अशुभ जानना ॥ ६ ॥

अथ भौमशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	११	१२	१२	८	१०	१०	
८				९	११	११	
१०				१०			
११				११			

अथ भौमानिष्टाष्टवर्गांकचक्रम् ।

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.
३	१	१	१	२	२	१	१
५	२	२	२	३	४	२	२
६	४	३	३	५	५		४
९	७	४	४	६	७	७	५
१२	८	५	५	१२	८	८	७ ८
	९	७	७		९	९	९
	१०	८	९		१२	१२	१०
	१२	९	१०				१२

अथ बुधाष्टकवर्गमाह ।

सौम्योंत्य १२ षण् ६ नवा ९ या ११ त्मजे ५ ष्विनात्स्वात्स १२ । ६ । ९ । ११ त्रि ३ तनु १ दश १० युतेषु । चंद्रो द्वि- २ रिपु ६ दशा १० या ११ ष्ट ८ सुखगतः सा २ । १० ११ । ८ । ४ दि १ षु लग्नात् ॥ ७ ॥ प्रथम १ सुखाय ४ ।

११ द्वि २ निधन ८ धर्मे ९ सितात्रि ३ धी ५ समेतेषु ।
दश १० स्मरे ८ । १ । ४ । ११ । २ । ९ षु शौरा १० ।
७ । १ । ४ । ११ । २ । ८ । ९ रयोर्व्यया १२या ११ रि ६
वसु ८ षु गुरोः ॥ ८ ॥

जन्मकालमें अथवा गोचरकालमें जिस स्थानमें सूर्य स्थित हो वहांसे बारहवें, छठे, नवम, ग्यारहवें इन स्थानोंमें सूर्य श्रेष्ठ रेखाओंको देता है और जिस स्थानमें बुध स्थित हो वहांसे पहिले, बारहवें, छठे, नवम, एकादश, तीसरे, दशम, पंचम इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको बुध देता है और जिस घरमें चंद्रमा स्थित हो वहांसे दूसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवे, आठवें, चतुर्थ स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और जन्मलग्न अपने स्थानसे दूसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, आठवें, चौथे लग्नमें शुभ रेखाओंको देता है॥७॥ और शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, चौथे, ग्यारहवें, दूसरे, अष्टम, नवम, तीसरे, पंचम स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और शनैश्चर जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे दशवें, सातवें, पाहिले, चौथे, ग्यारहवें, दूसरे, नवम, अष्टम स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और मंगल जिस घरमें स्थित हो वहांसे दशवें, सातवें, पहिले, चौथे, ग्यारहवें, दूसरे, आठवें, नवम इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और बृहस्पति जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे बारहवें, ग्यारहवें, छठे, आठवें शुभ रेखाओंको देता है ॥ ८ ॥

अथ बुधशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

बु.	बृ.	श.	श.	ल.	सू.	चं	म.
१	६	१	१	१	५	२	१
३	८	२	२	२	६	४	२
५	११	३	४	४	९	६	४
९	१२	४	७	६	११	८	७
१०		५	८	८	१२	१०	८
११		८	९	१०		११	९
१२			१०	११			१०
		११	११				११

अथ बुधानिष्टाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

बु.	बृ.	श.	श.	ल	सू.	च.	म.
२	१	६	३	३	१	१	३
४	२	७	५	५	२	३	५
७	३	१०	६	७	३	५	६
८	४	१२	१२	९	४	७	१२
	५			१२	७	४	
	६				८	१२	
					१०		
	१०						

अथ गुरोरष्टकवर्गमाह ।

जीवो भौमात्स्वा २ या ११ ष्ट ८ केन्द्रे १ । ४ । ७ । १०
गोर्कात्स २ । ११ । ८ । १ । ४ । ७ । १० धर्म ९ सहजे ३
षु । स्वात्स २ । ११ । ८ । १ । ४ । ७ । १० त्रिकेषु ३
शुक्रान्नव ९ दश १० लाभ ११ स्व २ धी ५ रिपु ६ षु ॥९॥
शशिनः स्मरे ७ त्रिकोणा ५ । ९ थ लाभ ११ गस्त्रि ३
रिपु ६ धी ५ व्यये १२ षु यमात् । नव ९ दिक् १० सुखा ४
द्य १ शर ५ स्वा २ य ११ शत्रु ६ षु ज्ञात्स ९ । १० ।
४ । १ । ५ । २ । ११ । ६ काम ७ गो लग्नात ॥ १० ॥

मंगल जिस स्थानमें जन्मकाल वा गोचरमें स्थित हो वहांसे दूसरे, ग्यारहवें, अष्टम, पहिले, सप्तम, चतुर्थ, दशम स्थानमें मंगल शुभ रेखाओंको देता है और सूर्य जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे दूसरे, ग्यारहवें, आठवें, पाहिले, चौथे, सप्तम, दशम, नवम, तृतीय स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और बृहस्पति जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे दूसरे, ग्यारहवें, आठवें, पहिले, चौथे, सातवें, दशम, तीसरे शुभ रेखाओंको देता है और शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे नवम, दशम, ग्यारहवें, दूसरे, पंचम, छठे स्थानोंमें शुक्र शुभ रेखाओंको देता है अन्यत्र अशुभ देता है ॥ ९ ॥ जन्मकाल वा गोचरमें चन्द्रमा जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे सातवें, पंचम, नवम, द्वितीय, ग्यारहवें स्थानोमें शुभ रेखाओंको चन्द्रमा देता है और शनैश्चर अपने स्थानसे तीसरे, छठे, पंचम, बारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और बुध जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे नववें, दशवें, चौथे, पाहिले, पंचम, दूसरे, ग्यारहवें, छठे स्थानोंमें बुध शुभ रेखाओंको देता है और जन्मलग्न अपने स्थानसे नवम, दशम, पहिले, पांचवे, दूसरे, ग्यारहवें, छठे, सातवें स्थानोंमें जन्मलग्न शुभ रेखाओंको देता है ॥ १० ॥

अथ बृहस्पतिशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

बृ.	शु	श	ल.	सू	चं.	म	बु.
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०		६	७	११	८	६
८	११		७	८		१०	९
१०			९	९		११	१०
११			१०	१०			११
			११	११			

अथ गुरोः अनिष्टाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	बु.
५	१	१	३	५	१	३	३
६	३	२	८	६	३	५	७
९	४	४	१२	१२	४	६	८
१२	७	७			६	९	१२
	८	८			८	१२	
	१२	९			१०		
		१०			१२		
		११					

अथ शुक्राष्टकवर्गमाह ।

शुक्रो लग्नादा १ । २ ।३।४ सुत ५ नवा ९ ष्ट ८ लाभे ११ षु स १ । २ । ३ । ४ । ५ । ९ । ८ । ११ । १२ व्ययश्चं- द्रात् । स्वात्सा १ । २ । ३ । ४ । ५ । ९ । ८ । ११ । ज्ञे- १० षु रविसुतात्त्रि ३ धी ५ सुखा ४ त्ति ११ नव ९ कर्म- १० रंध्रे ८ षु ॥ ११ ॥ वस्वं ८ त्या १२ ये ११ ष्वर्कान्नव- ९ कर्म १० लाभा ११ ष्ट८धी ५ स्थितो जीवात् । ज्ञात्रि- सुत ५ नवा ९ या ११ रि ६ षु लाभ ११ सुता ५ पोक्तिमे ३ । ६ । ९ । १२ षु कुजात् ॥ १२ ॥

जिस लग्नमें जन्म हो उस स्थानसे प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, नवम, अष्टम, लाभ स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है अर्थात् इन स्थानोंमें शुक्र शुभ फल देता है और तैसे ही चंद्रमा जन्मकालिक स्थानमें जहां स्थित हो अथवा गोचरमें जहां स्थित हो वहांसे प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ। पंचम, नवम, अष्टम, ग्यारहवें, बारहवें इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है, तैसे ही शुक्र अपने स्थानसे पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, नवम, आठवें, ग्यारहवें, दशम स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है। तैसे ही

शनैश्चर तीसरे, पांचवें, चौथे, ग्यारहवें, नवम, दशम, अष्टम स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है ॥ ११ ॥ इसी प्रकार सूर्य जन्मकालमें जहां स्थित हो वहांसे अष्टम, बारहवें, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और बृहस्पति जन्मकालमें अथवा गोचर राशिमें जहां स्थित हो वहांसे नवम, दशम, ग्यारहवें, आठवें, पंचम इन स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और जन्मकाल वा गोचरमें जिस स्थानमें बुध स्थित हो वहांसे तीसरे, पंचम, नवम, ग्यारहवें, छठे स्थानोंमें शुभ रेखाओंका देता है और मंगल अपने स्थानसे ग्यारहवें, पंचम, तीसरे, छठे, नवम, बारहवें स्थानोंमें शुभं रेखाओंको देता है अन्यत्र अशुभ जानना चाहिये ॥ १२ ॥

अथ शुक्रशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

शु.	श.	ल.	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४		४	९	९	१०
५	९	५		५	११	११	११
८	१०	८		९	१२		
९	११	९		११			
१०		११		१२			
११							

अथ शुक्रानिष्टाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.
६	१	६	१	६	१	१	१
७	२	७	२	७	२	२	२
१२	६	१०	३	१०	४	४	३
	७	१२	४		७	७	४
	१२		५		८	८	६
			६		१०	१०	
			७			१२	१२
			९				
			१०				

अथ शनेरष्टकवर्गमाह ।

स्वाच्छौरिस्त्रि ३ सुता ५ या ११रि ६ गः कुजादंत्य १२ कर्म १० स ३ । ५ । ११ । ६ हितेषु । स्वा २ या ११ ष्ट ८ केन्द्र १। ४ । ७ । १० गोर्कात शुक्रात्पष्ठां ६ त्य १२ लाभे ११ षु ॥ १३ ॥ त्रि ३ षडा ६ य ११ गः शशांकादुदयात्स ३ । ६ । ११ सुखा ४ थं २ कर्म १० गतो गुरोः । सुत ५ षडं ६ त्या १२ या ११ गतो ज्ञाद्व्य-

या १२ य ११ रिपु ६ दिङ् १० नवा ९ ष्ट ८ स्थः ॥ १४ ॥

जन्मकालिक लग्नमें अथवा गोचरमें जिस स्थानमें शनैश्चर स्थित हो वहांसे तीसरे, पांचवें, ग्यारहवें, छठे स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और जिस स्थानमें मंगल स्थित हो वहांसे दशवें, तीसरे, पांचवें, ग्यारहवें, छठे स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और सूर्य जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे दूसरें, ग्यारहवें, आठवें, पहिले, चौथे, सातवें, दशवें शुभ रेखाओंको देता है और शुक्र अपने स्थानसे छठे, बारहवें, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है ॥ १३ ॥ इसी तरह चंद्रमा जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और इसी तरह जन्म लग्न अपने स्थानसे तीसरे, छठे, ग्यारहवें, चौथे, दूसरे, दशवें स्थानोंमें शुभ फलको देता है और इसी तरह बृहस्पति जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पंचम, छठे, बारहवें, ग्यारहवे शुभ रेखाओंको देता है और इसी तरह बुध जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे बारहवें, ग्यारहवें, छठे, दशवें, नवम, आठवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है; अन्यत्र किसी भी स्थानमें अशुभ जानना चाहिये ॥ १४ ॥

अथ शनिशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
३	२	१	३	३	६	५	६
५	३	२	६	५	८	६	११
६	४	४	११	६	९	११	१२
११	६	७		१०	१०	१२	
	१०	८		११	११		
	११	१०		१२	१२		
		११					

अथ शन्यनिष्टाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
१	१	३	१	१	१	१	१
२	५	५	२	२	२	२	२
४	७	६	४	४	३	३	३
७	८	८	५	७	४	४	४
८	९	१२	७	८	५	७	५
९	१२		८	९	७	८	७
१०			९			९	८
१२			१०			१०	९
			१२				१०

अथ लग्नाष्टकवर्गमाह ।

सूर्याद्दोवितनात्परं ३ । ४ । ६ । १० । ११ । १२ रविसुता-
द्योगो वितानस्य १ । ३ । ४ । ६ । १० । ११ शक्रेज्यात्कौर-

वशेषसाधनकाः १।२।४।५।६।७।९।१०।११ भूपुत्रात्कलातानयम् १।३।६।१०।११। शुक्रात्कारुगवोमुदांधस्य १।२।३।४।५।८।९।११। तनोश्चंद्राच्च गीतज्ञयं ३।६।१०।११ सौम्यात्कौरवचंद्रेनाब्धः १।२।४।६।८।१०।११ लग्नाष्टकवर्गे ध्रुवः ॥१५॥

जन्मकालिक लग्नमें अथवा गोचरमें जिस स्थानमें सूर्य स्थित हो वहांसे तीसरे, चौथे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, बारहवें स्थानोंमें सूर्य शुभ रेखा देता है और तैसे ही शनैश्चर जिस स्थानमें स्थित हो वहांस पहिले, तीसरे, चौथे, छठे, दशवें, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और इसी तरह बृहस्पति जहां स्थित हो वहांसे पहिले, दूसरे, चौथे, पांचवें, छठे, सातवें, नवम, दशम, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और और इसी तरह मंगल जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है और इसी तरह शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, दूसरे, तीसरे, चतुर्थ, पंचम, अष्टम, नवम, एकादश स्थानोंमें शुभ रेखा देता है। तैसे ही चंद्रमा जहां स्थित हो वहांसे तीसरे, छठ, दशवें, ग्यारहवें स्थानोंमें शुभ रेखाओंको देता है। ऐसे ही जन्मलग्न अपने स्थानसे तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें शुभ रेखाओंको देता है। इसी प्रकार बुध जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, दूसरे, चौथे, छठे, आठवें, दशव, ग्यारहवें शुभ रेखाओंको देता है यह लग्नाष्टकवर्गका ध्रुव है ॥ १५ ॥

अथ लग्नशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
	११		११	८	६	५	१०
	१२			१०	७	८	११
				११	९	९	
					१०	११	
					११		

अथ लग्नानिष्टाष्टकवर्गचक्रम् ।

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	१	१	२	३	३	६	२
२	२	२	४	५	८	७	५
४	५	४	५	७	१२	१०	७
५	७	५	७	८		१२	८
७	८	७	८	१२			९
८	९	८	९				१२
९		९	१२				
१२		१२					

अथ राहोरष्टकवर्गमाह ।

सूर्यात्पुत्रगमः सदान १।२।३।५।७।८।१० हिमगोः पूगं मसादेर्धनं १।३।५।७।८।९।१० भौमात्खङ्ग-गमः पुरं १।३।५।१२ बुधाद्द्रुसस्सदाः २।४।७।८।१२ सूर्यपुत्रादपि। गोमेसन्तुयरो ३।५।७।१०।११।१२ भृगोस्तिथिपरं ६।७।११।१२ जीवात्युगा-वस्तदा १।३।४।६।८ लग्नाद्रोविमधीर इत्यथ गुणाः ३।४।५।९।१२ संख्या त्रिभा ४३ कुत्रचित् ॥ १६ ॥

जन्मकालिक लग्न अथवा गोचर राशिमें जहां सूर्य स्थित हो वहांसे पहिले, दूसरे, तीसरे, पांचवें, सातवें, दशम राहु अष्टकवर्गमें सूर्य शुभ रेखाओंको देता है और चंद्रमा जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे पहिले, तीसरे, पांचवें, सातवें, आठवें, नवम, दशम स्थानोंमें शुभ रेखा देता है और तैसे ही मंगल जिस स्थानमें स्थित हो वहाँसे पहिले, तीसरे, पांचवें, बारहवें राहु अष्टकवर्गमें शुभ रेखा देता है और इसी तरह बुध जिस स्था-नमें स्थित हो वहांसे दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, बारहवें स्थानोंमें शुभ रेखा देता है और तैसे ही शनैश्चर जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे तीसरे, पाँचवें, सातवें, दशम, ग्यारहवें, बारहवें स्थानोंमें शनैश्चर शुभ रेखा देता है और तैसे ही शुक्र जिस स्थानमें स्थित हो वहांसे छठे, सातवें, ग्यारहवें, बारहवें स्थानोंमें शुभ रेखा देता है और इसी प्रकार बृहस्पति जिस स्थान-में स्थित हो वहांसे पहिले, तीसरे, चौथे, छठे, आठवें राहु अष्टकवर्गमें शुभ है और तैसे ही जन्मलग्न अपने स्थानसे तीसरे, चौथे, पांचवें, नवम, बारहवें स्थानोंमें राहु अष्टकवर्गमें शुभ रेखा देता है; अन्यत्र अशुभ जानना और केतु भी राहुके सदृश जानना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ राहुशुभाष्टकवर्गांकचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	१	१	२	१	६	३	३
२	३	३	४	३	७	५	४
३	५	५	७	४	११	७	५
५	७	१२	८	६	१२	१०	९
७	८		१२	८		११	१२
८	९					१२	
१०	१०						

अथ राह्वनिष्टाष्टकवर्गचक्रम् ।

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
४	२	२	१	२	१	१	१
६	४	४	३	५	२	२	२
८	६	६	५	७	३	४	६
११	११	७	६	९	४	६	७
१२	१२	८	९	१०	५	८	८
		९	१०	११	८	९	१०
		१०	११	१२	९		११
		११			१०		

अथाष्टवर्गांकयोगः ।

देवो ४८ धवो ४९ धिगो ३९ विष्णु ५४ श्वेशो ५६ रामो ५३ धिगो ३९ धवः ४९ । अष्टवर्गमिदं वक्ष्ये संसारहितकाम्यया ॥ १७ ॥

सूर्याष्टकवर्गमें रेखाओंके योग अडतालीस हैं, चंद्राष्टकवर्गमें रेखाओंके योग उनंचास हैं, भौमाष्टकवर्गमें उंतालीस हैं, बुधाष्टकमें चौपन हैं, बृहस्पत्यष्टकवर्गमें छप्पन हैं, शुक्राष्टकवर्गमें त्रेपन हैं, शन्यष्टकवर्गमें उंतालीस हैं, लग्नाष्टकवर्गमें समग्र रेखाओंके योग उनंचालीस होते हैं और राह्वष्टकवर्गमें तेंतालीस रेखाओंके योग हैं, ये अष्टवर्ग संसारके हितके अर्थ कहे गये हैं ॥ १७ ॥

अथाष्टवर्गांकफलम् ।

इति निगदितमिष्टं नेष्टमन्यद्विशेषादधिकफलविपाकं जन्मभात्तत्र दद्युः । उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैः पुष्टमिष्टं त्वपचयगृहनीचारातिगैर्नेष्टसंपत् ॥ १८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे अष्टकवर्गवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

इस तरह प्रत्येक ग्रहोंके कहे हुए स्थान शुभ अशुभ फल कहे हैं। जैसे जन्मकाल अथवा गोचरमें जिस स्थानमें जो ग्रह स्थित हों उन स्थानोंसे जो विद्वानोंने कहा है सो शुभ है और जो नहीं कहे स्थान हैं वे अशुभ हैं सो अशुभकी जगह रेखा धरनी चाहिये और शुभकी जगह बिंदु धरना चाहिये, उन्हीं शुभ अशुभ स्थानोंका अंतर करना चाहिये, उस अंतरकरके जो विशेष अथवा शेष रहे उसके अनुसार शुभ वा अशुभ फलको कहना चाहिये। जो अंतर करनेसे आठों स्थानोंमें बिंदु ही हो तो पूर्ण शुभफल कहना और छः बचें तो शुभ फल कहना और चार शेष रहें तो मध्यम फल और दो शेष रहें तो अधम फल कहना। आठों जगह रेखा ही हों तो पूर्ण नेष्ट फल जानना चाहिये और जो गोचरकाल अथवा जन्मकालमें लग्न अथवा चन्द्रमासे उपचयस्थानमें अर्थात् तीसरा, छठा, दशवां, ग्यारहवां इन स्थानोंमें कहीं अथवा मित्रके स्थानमें वा स्वस्थानमें या अपने उच्च स्थानमें स्थित हो तो सम्पूर्ण शुभ फल देता है, उसीको पूर्ण फल कहते हैं। और अपचय अर्थात् प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, द्वादश स्थानोंमें स्थित हो अथवा अपने नीच स्थानमें वा शत्रुके स्थानमें स्थित हो तो पूर्ण शुभफल नहीं देता है अर्थात् शुभ-स्थानमें स्थित ग्रह थोड़ा अशुभ फल देते हैं और अशुभ स्थानमें स्थित ग्रह थोड़ा शुभ फल देते हैं ॥ १८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायामष्टवर्गवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ द्विग्रहयोगाध्यायप्रारंभः।

अथ चंद्रादित्ययोगफलम्।

क्रूरक्रियायां निपुणः सगर्वः पाषाणयंत्रक्रयविक्रयेषु।
कामी नितांत च भवेन्मनुष्यो विकर्तने चंद्रमसा समेते ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमासहित होता है वह मनुष्य दुष्ट-क्रियाओंमें चतुर, अभिमानी, पत्थरकी वस्तुओंका क्रयविक्रय करनेवाला तथा सदैवकाल विषयमें आसक्त होता है ॥ १ ॥

अथ भौमादित्ययोगफलम् ।

सद्धर्मकर्मद्रविणेन हीनः क्लेशानुरक्तः सततं सकोपः ।
भवेन्मनुष्यो दिवसाधिनाथे यदा धरित्रीतनयेन युक्ते ॥ २ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य मंगलसे युक्त हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म, धर्म और धनसे हीन, सदैव क्लेशयुक्त, सर्वदा क्रोधसहित होता है ॥ २ ॥

अथ बुधादित्ययोगफलम् ।

प्रियंवदः स्यात्सचिवो नृपाणां सेवार्जितार्थः श्रुतितत्परश्च ।
कलाकलापे कुशलो मनुष्यो दिनाधिपे चंद्रसुतेन युक्ते ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य चन्द्रपुत्रसे युक्त हो वह मनुष्य प्यारी वाणीका बोलनेवाला, मंत्री, राजाओंकी सेवा करके धन पैदा करनेवाला, वेदमें तत्पर तथा गीत वाद्य काव्यादि कलाओंमें कुशल होता है ॥ ३ ॥

अथ गुर्वादित्ययोगफलम् ।

पौरोहित्ये नैपुणो भूमिपानां मंत्री सन्मित्रात्तवित्तः समृद्धः ।
चातुर्याढ्यः पूरुषश्चोपकारी घस्राधीशे जीवयुक्ते प्रसूतौ ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें घस्राधीश अर्थात् सूर्य बृहस्पतिकरके युक्त होता है वह मनुष्य पुरोहितकर्ममें कुशल, राजाओंका मंत्री, अच्छे मित्रोंसहित, धनसे समृद्धः, चतुराईसहित तथा पराये उपकारका करनेवाला होता है ॥४॥

अथ भृग्वादित्ययोगफलम् ।

सुबुद्धिश्च संगीतवाद्यायुधेषु भवेन्मानवो नेत्रवीर्येण हीनः ।
सुनेत्रानिमित्तात्तसुहृत्समाजो दिवानायके दानवेज्येन युक्ते ॥५॥

जिसके जन्मकालमें शुक्रकरके सूर्य युक्त होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धियुक्त, संगीत वाद्य और आयुधोंमें कुशल, नेत्रवीर्यकरके हीन, स्त्रियों-करके आप्त और मित्रोंके समाजकरके सहित होता है ॥ ५ ॥

अथ मन्दादित्ययोगफलम् ।

धर्मप्रीतिः पुण्यबुद्धिर्गुणज्ञो जायापुत्रप्राप्तसौख्यः समृद्धः ।
सूतौ मर्त्योऽत्यंतधातुक्रियाढ्यस्तिग्मांशौ चेद्भानुपुत्रेण युक्ते ६

जिसके सूतिकालमें सूर्य शनैश्चरकरके युक्त हो वह मनुष्य धर्ममें प्रीति करनेवाला, श्रेष्ठबुद्धियुक्त, गुणका जाननेवाला, स्त्रीपुत्रोंकरके प्राप्त सुख, धातुकी क्रियाओंकरके समृद्ध, अर्थात् धातुका बनानेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ चन्द्रारयोगफलम् ।

पण्यानुजीवी कुटिलः प्रतापी स्वाचारहीनः कलहानुरक्तः ।
रोगार्दितः स्यात् किल मातृशत्रुः कलानिधौ वक्रयुते मनुष्यः ७

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा मंगलके सहित होता है वह मनुष्य व्यापार करके अजीविका करनेवाला, कुटिल, प्रतापवान्, अपने आचार-करके रहित, कलहमें आसक्त, रोगकरके दुःखी तथा माताका शत्रु हो ॥७॥

अथ चन्द्रेन्दुजयोगफलम् ।

सद्रूपसद्धर्मधनेन युक्तः कांतापरप्रीतिरतीव वक्ता ।
सद्वाग्विलासश्च कृपार्द्रचेता हीनो नरः सौम्ययुते निशीशे ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा बुधकरके सहित हो वह मनुष्य अच्छा स्वरूप और अच्छा धर्म और धनकरके युक्त, स्त्रियोंपर श्रेष्ठ प्रीतिका करनेवाला, बहुत बोलनेवाला, श्रेष्ठ वाणीका बोलनेवाला, दयायुक्त चित्त-वाला तथा हीन होता है ॥ ८ ॥

अथ जीवेन्दुयोगफलम् ।

विनीतो सदा गाढगूढोऽतिमंत्रो भवेन्मानवश्चोपकारी परेषाम् ।
समेतः सदा धर्मकर्मादिकैश्च तमिस्राधिपे शक्रपूज्येन युक्ते ॥९॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा गुरुकरके युक्त हो वह मनुष्य नम्रता-करके सहित, सदैवकाल अत्यंत छिपा हुआ मंत्र जिसका ऐसा, पराये उपकारका करनेवाला तथा धर्मकर्मोंकरके सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रेन्दुयोगफलम् ।

सद्गंधपुष्पोत्तमवस्तुचित्तो वस्त्रादिकानां क्रयविक्रयेषु ।
दक्षो नरः स्याद्व्यसनी विधिज्ञः प्रालेयरश्मौ कविना समेते १०

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा शुक्र सहित हो वह मनुष्य श्रेष्ठ गंधवाले अच्छे पुष्पोंमें और उत्तम वस्तुओंमें चित्त रखनेवाला, वस्त्रोंको आदि लेकर अनेक वस्तुओंका क्रय विक्रय करनेमें चतुर और अनेक प्रकारके व्यसनों-करके सहित तथा विधियोंका जाननेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ मन्देन्दुयोगफलम् ।

परस्त्रीरतो वैश्यवृत्त्यानुजीवी सदाचारहीनः परस्यात्मजश्च ।
भवन्मानवः पूरुषार्थेन हीनः प्रसूतौ यदा मंदशीतांशुयोगः ११॥

जिसके जन्मकालमें शनैश्वर चंद्रमाका योग होता है वह मनुष्य परायी स्त्रियोंसे प्रीति करनेवाला, वैश्यवृत्तिकरके आजीविका करनेवाला, सदैव आचारकरके हीन, दूसरेका पुत्र तथा पुरुषार्थ करके हीन हो॥११॥

अथ भौमेन्दुजयोगफलम् ।

सद्बाहुयुद्धकुशलो विपुलांगनानां सल्लालसो विविधभेषज-
पुण्यशीलः। स्याद्धेमलोहविधिबुद्धिविभावको ना धात्रीसुते
शशिसुतेन युते प्रसूतौ ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल बुधकरक सहित हो वह मनुष्य बाहु-युद्धमें कुशल, बहुतसी स्त्रियोंमें लालसा करनेवाला, अनेक औषधीसहित-पुण्यशीलवाला, सुवर्ण और लोहेकी विधिमें बुद्धिविभावक होता है ॥ १२ ॥

अथ भौमजीवयोगफलम् ।

मंत्रास्त्रशास्त्रपरिबोधविधौ मनुष्योऽत्यर्थं भवेद्धि निपुणश्च
विवेकशीलः । सेनापतिस्तु नृपतिस्त्वथवा पुरेशो ग्रामेश्वरो
धरणिजे धिषणेन युक्ते ॥ १३ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल बृहस्पतियुक्त हो वह मनुष्य मंत्र अस्त्र शास्त्र इनके समझनेमें चतुर, अर्थसाधनमें निपुण, चतुर, शीलवान्, फौजका पति वा नृपति वा नगरका स्वामी वा ग्रामका अधिपति हो ॥१३॥

अथ शुक्रारयोगफलम् ।

प्रपंचानृतद्यूतकर्मप्रियः स्यादनेकांगनाभोगचित्तः सगर्वः ।
प्रसूतौ नरः सर्ववैरानुकर्ता यदा भूसुते दानवेज्येन युक्ते ॥ १४ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल शुक्रकरके सहित हो वह मनुष्य प्रपंच, अनृत और जुआ कर्मका प्रेमी, अनेक स्त्रियोंके भोगमें चित्त रखनेवाला, अभिमानी तथा सबसे वैर करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ मंदारयोगफलम् ।

शस्त्रास्त्रवित्समरकर्मरतो नितांतं स्तेयानृतप्रियकरः पुरुषोऽल्पवित्तः । सौजन्यताविरहितः खलु सौख्यहीनः स्याद्भूसुतेऽर्कतनयेन युतेऽतिनिंद्यः ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल शनिसे युक्त हो वह मनुष्य शस्त्र और शास्त्रका जाननेवाला, संग्रामकर्ममें सदैव तत्पर, चोरी, झूठका प्रेमी, थोडे धनवाला, मित्रतासे रहित, सुखसे हीन तथा निंद्य होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधजीवयोगः ।

संगीतज्ञो नीतिनाथो विनीतः सौख्याधिक्यः सद्गुणैः स्यात्प्रपूर्णः । धीरः सौगन्ध्यप्रियः स्यादुदारः सूतौ जीवे सौम्ययुक्ते मनुष्यः ॥ १६ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति बुधकरके संयुक्त होता है वह मनुष्य संगीतशास्त्रका जाननेवाला, नीतिमें चतुर, विनयकरके सहित, अधिकसौख्य युक्त, श्रेष्ठ गुणोंकरके पूर्ण, धीरजयुक्त, सुगंधि है प्रिय जिसको तथा उदार स्वभाववाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधशुक्रयोगफलम् ।

सद्वाग्विलासो गुणवान्विवेकी सदा सहर्षः स्वकुलाधिशाली ।
नरः सुवेशो बहुनायकः स्याच्छुक्रान्विते सोमसुते प्रसूतौ ॥१७॥

जिसके जन्मकालमें शुक्रसहित बुध होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला, गुणोंकरके युक्त, चतुर, सदैव काल आनंदयुक्त, अपने कुलमें प्रतापी, अच्छे स्वरूपवाला तथा बहुत मनुष्योंका पति होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधार्कियोगः ।

कलिप्रियश्चंचलचित्तवृत्तिः कलाकलापे कुशलो नरः स्यात् ।
भर्त्ता बहूनां परमः सुशीलः प्रसूतिकाले बुधमंदयुक्ते ॥ १८ ॥

जिसके जन्मकालमें बुध शनैश्चरके सहित होता है वह मनुष्य कलह प्रिय जिसको, चंचल चित्तकी प्रकृति जिसकी, संपूर्ण कला अर्थात् गान काव्य कलामें कुशल, बहुतसे मनुष्योंका स्वामी तथा बहुत अच्छे स्वभाववाला होता है ॥ १८ ॥

अथ जीवदैत्येज्ययोगः ।

नित्यं कांतावित्तमित्रात्मजाद्यैः सौख्यं मर्त्यो विद्यया पंडितः स्यात् ।
वादात्यर्थं पंडिताद्यैः करोति गीर्वाणेज्ये दानवेज्येन युक्ते ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति शुक्रकरके सहित होता है वह मनुष्य नित्य ही कांता, धन, मित्र, पुत्रादिकोंसे युक्त, सौख्यसहित, विद्याकरके पंडित और पंडितोंसे नित्य ही विवादका करनेवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ जीवार्कियोगः ।

यशोऽधिको ग्रामपुराधिनाथः स्त्रीसंशयप्राप्तमनोरथः स्यात् ।
शूरो धनाढ्यः कुशलः कलासु जीवे समंदे मनुजः प्रसूतौ ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति शनैश्चरकरके युक्त होता है वह मनुष्य अधिक यशस्वी, ग्राम अथवा नगरका स्वामी, स्त्रीसंशयसे मनोवांछित फल प्राप्त, शूर, धनवान् तथा संपूर्ण कलाओंमें कुशल होता है ॥ २० ॥

अथ सितासितयोगः ।

सच्छिल्पलेखविधिजातकुतूहलाढ्यः पाषाणकर्मकुशलश्चल- बुद्धियुक्तः । स्याद्दारुणो रणकरो मनुजः प्रसूतौ पूर्वासुरेज्य- सहिते तरणेस्तनूजे ॥ २१ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज- राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम- संग्रहे द्विग्रहयोगवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र शनैश्चर करके सहित होता है वह मनुष्य अच्छी तरहसे शिल्पलेख अर्थात् मकानोंपर चित्रकारी करनेमें चतुर, आनंदसहित; पत्थरकी चीजोंके बनानेम कुशल, चंचलबुद्धि सहित तथा दारुण संग्राम करनेवाला होता है ॥ २१ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि- पंडितश्यामलालविरचितायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां ज्योतिषश्याम- संग्रहे द्विग्रहयोगवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ त्रिग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्यचंद्रभौमयोगफलम् ।

सद्यंत्रपाषाणविधौ प्रवीणः नारीकृपाभ्यां रहितश्च शूरः ॥
एकत्रसंस्थैर्जनने मनुष्यो भवेदशीतद्युतिरक्तचंद्रैः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें एकस्थानमें सूर्य चन्द्रमा मंगल युक्त हों वह मनुष्य पत्थरके यंत्र बनानेमें चतुर, स्त्रियोंसे तथा दयासे रहित तथा शूर होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यचंद्रबुधयोगफलम् ।

सत्कार्यकृन्नरपतेश्च भवेन्महौजा वार्ताविधौ सकलशास्त्रकलासु दक्षः।
प्रद्योतनामृतकरामृतरश्मिजानां चेन्मानवश्च खलु संमिलने प्रसूतौ २

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य चन्द्रमा बुधसहित स्थित हो वह मनुष्य राजाओंके अच्छे कामोंका करनेवाला, प्रतापी, वार्ता करनेमें चतुर तथा सम्पूर्ण शास्त्रोंकी कलामें प्रवीण होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यचन्द्रजीवयोगः ।

प्राज्ञो धूर्तश्चंचलः स्यात्प्रवीणः सेवाभिज्ञस्त्वन्यदेशाभिगामी ।
ताराधीशादित्यवाचस्पतीनां योगे नूनं भूतिकाले मनुष्यः ॥३॥

जिसके जन्मकालमें चंद्र, सूर्य, बृहस्पति एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य पंडित, धूर्तता करनेवाला, चंचल, चतुर, सेवाका जाननेवाला तथा अन्य देशोंमें गमन करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सूर्यचन्द्रशुक्रयोगः ।

सद्धर्मकर्मण्यरुचिर्नरः स्यात्परार्थहर्ता व्यसनानुरक्तः ।
सरोजिनीशोशनशीतभासश्चैकत्र भावे यदि संयुताः स्युः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य, चंद्र, शुक्र संयुक्त स्थित हों वह मनुष्य अच्छे धर्म और कर्मोंमें प्रीति न करनेवाला, पराये धनका हरनेवाला तथा व्यसनोंमें आसक्त होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यचन्द्रशनियोगफलम् ।

वेश्यानुरक्तो द्विजदेवभक्तो धातुक्रियायां निरतोऽतिधूर्तः ।
व्यर्थप्रयासप्रकरो नरः स्यादेकर्क्षगाः सूर्यसुधांशुमन्दाः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य चंद्रमा, शनैश्चर सहित स्थित हों वह मनुष्य वेश्यामें आसक्त, ब्राह्मण और देवताओंका भक्त, धातुक्रियामें तत्पर, अत्यन्त धूर्त तथा वृथा ही मेहनतका करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यभौमबुधयोगः ।

लज्जात्मजार्थवनिताजनमित्रवर्गैर्युक्तो भवेन्मनुषि निष्ठुरचित्त-
वृत्तिः ॥ ख्यातः सुसाहसकमंत्रविधौ प्रवीणो युक्तैर्दिनाधिप-
कुजेंदुसुतैर्मनुष्यः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बुध एक स्थानमें स्थित हो वह मनुष्य लज्जा, पुत्र, धन, स्त्री और मित्रजनोंके सहित, कठोर चित्तवृत्तिवाला हो, पराक्रमसे विख्यात तथा सलाह करनेमें चतुर होता है ॥ ६ ॥

अथ सूर्यभौमजीवयोगः ।

वक्ता धनाढ्यः सचिवो नृपाणां चमूपतिर्नीतिविधौ समर्थः ।
उदारहृत्सत्यवचोविलासः सूर्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ॥७॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बृहस्पति एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य वक्ता और धनवान्, राजाओंका मंत्री, सेनाका पति, नीतिशास्त्रमें कुशल, उदारचित्त तथा सच बोलनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ सूर्यभौमशुक्रयोगः ।

भाग्यान्वितोऽतिधिषणः सधनो विनीतो वंशाधिकः सुचतुरो बहुजल्पकः स्यात् । सच्छीलसद्गुणयुतो मनुजः प्रसूतौ चैकर्क्षगैस्तरणिभूसुतदानवेज्यैः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य मंगल, शुक्र सहित स्थित हो वह मनुष्य भाग्यकरके सहित, विद्वान्, धनकरके युक्त, नम्रताकरके सहित,वंशमें श्रेष्ठ, अत्यंत चतुर, बहुत बोलनेवाला, उत्तम शीलवाला और श्रेष्ठ गुणोंकरके संयुक्त होता है ॥ ८ ॥

अथ सूर्यभौमशनियोगः ।

विवेकहीनः पितृबंधुवर्गैर्धनैर्विहीनः कलहानुरक्तः ।
रोमान्वितः स्यान्मनुजः प्रसूतौ चेदर्कवक्रार्कसुता हि योगे ॥९॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, शनैश्चर एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य चतुरता और पिता भाई इत्यादि और धन इन करके हीन, कलहमें तत्पर तथा रोमसहित होता है ॥ ९ ॥

अथ सूर्यबुधजीवयोगः ।

हग्योगयुक् शास्त्रकलाकलापे विचक्षणः स्यान्मनुजः सुशीलः ।
सुसंग्रहार्थः प्रबलः प्रसूतौ योगे रविज्ञामरपूजितानाम् ॥ १० ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, बृहस्पति एक स्थानम स्थित हों वह मनुष्य नेत्रोंके रोगकरके युक्त, शास्त्रकी कलामें चतुर तथा अच्छी तरह संग्रह करनेमें तत्पर होता है ॥ १० ॥

अथ सूर्यबुधशुक्रयोगः ।

कांतानिमित्तं परितप्तचित्तमाचारहीनश्च विदेशवासी ।
द्वेषी सतां निंद्यमतिर्नरः स्याद्योगे विवस्वद्बुधभार्गवानाम् ११॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, शुक्र एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य स्त्रीके निमित्तकरके जला हुआ चित्त जिसका, आचारकरके हीन, बिदेशका वास करनेवाला, सर्वकाल सबसे वैर करनेवाला तथा खोटी-बुद्धिवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ सूर्यबुधमंदयोगः ।

षंढाकृतिश्चात्मजनैर्विहीनो लोके महाद्वेषकरोऽतिदुष्टः ।
भवेन्नरो नीचजनानुयातः सूतौ रविज्ञार्कसुतैः समेतैः ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध और शनैश्चर एकत्रित हों वह मनुष्य नपुंसकोंकेसा स्वभाव, अपने भाई बंधुओंकरके हीन, संसारमें अत्यंत वैर करनेवाला, बड़ा दुष्ट तथा नीच मनुष्योंका संग करनेवाला होता है॥१२॥

अथ सूर्यबृहस्पतिशुक्रयोगः ।

परस्य कार्येऽप्यतिसादरो नाऽप्रगल्भवाक्यो द्रविणेन हीनः ।
भूपाश्रितः क्रूरतरस्वभावो योगे रवीज्यासुरपूजितानाम् ॥१३॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बृहस्पति और शुक्रका योग होता है वह मनुष्य पराये कामको अधिक प्रीतिसे नहीं करनेवाला, बहुत न बोलनेवाला, द्रव्यकरके हीन, राजाका आश्रय करनेवाला तथा दुष्ट स्वभाववाला होता है ॥ १३ ॥

अथ सूर्यमंदजीवयोगः ।

नृपश्रिया मित्रकलत्रपुत्रैर्नित्यं युतः कांतवपुर्नरः स्यात् ।
शनैश्चराचार्यदिवामणीनां योगे सुनीत्या व्ययकृत्प्रगल्भः॥१४॥

जिसके जन्मकालमें शनैश्चर, बृहस्पति और सूर्यका योग हो सो मनुष्य राजाओंको प्यारा, मित्र, स्त्री और पुत्रोंकरके सदैव संयुक्त शोभायमान शरीरवाला, अच्छी तरह नीतिकरके खर्चका करनेवाला तथा प्रगल्भ होता है ॥ १४ ॥

अथ सूर्यशुक्रार्कियोगः ।

द्रविणकाव्यकथास्वजनोज्झितः कुचरिताभिरुचिस्त्वतिभीतियुक् ।
भवति कंडुरुजार्तियुतः सदा रविसितार्कसुतैः सहितैर्नरः ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य धन, काव्य, कथा तथा अपने भाई बंधुओंकरके रहित, बुरे कामोंमें प्रीति करनेवाला, भयकरके सहित तथा कंडुदोषयुक्त सदैवकाल रहे ॥ १५ ॥

अथ चन्द्रभौमबुधयोगः ।

दीनोऽत्यन्तं स्वीयवर्गापमानो नूनं मर्त्यो वित्तधान्येन हीनः ।
स्यादुत्पत्तौ हीनलोकानुयातो योगे दोषाधीशभौमेंदुजानाम् १६

जिसके जन्मकालमें मंगल, चंद्रमा, बुधका योग होता है वह मनुष्य अत्यंत दीन, अपने कुटुंबियोंकरके अपमान किया हुआ, निश्चयकरके धन और अन्नकरके हीन तथा नीच जनोंका संग करनेवाला हो ॥ १६ ॥

अथ चन्द्रभौमजीवयोगः ।

व्रणांकितः कोपयुतश्च हर्ता कांतारतः कांतवपुर्नरः स्यात् ।
प्रसूतिकाले मिलिता भवन्ति चेदारनीहारकरामरेज्याः ॥ १७ ॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें मंगल, चंद्रमा, बृहस्पति स्थित हों वह मनुष्य फोड़ा फुडियाओंकरके अंकित देह जिसकी, क्रोधसहित, हरण करनेवाला, स्त्रीमें आसक्त तथा शोभायमान शरीरवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ भौमचन्द्रशुक्रयोगः ।

दुःशीलः स्त्रीनायकश्चंचलो ना दुःशीलः स्यात्तत्सुतः शीलयुक्तः ।
मर्त्यो नूनं चैकभावे यदा स्यात्सूतौ ताराधीशभौमासुरेज्याः ॥ १८ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल और शुक्र एकत्र स्थित हों वह मनुष्य निश्चयसे खोटे स्वभाववाली स्त्रीका पति, चंचलस्वभाववाला, खोटा शीलवाला होता है तथा उसका पुत्र शीलवान् होता है ॥ १८ ॥

अथ चन्द्रभौमशनियोगः ।

मृतिप्रदः शैशवके जनन्याः सदा मनुष्यः कलहाभितप्तः ।
स्याद्गर्हितश्चंद्रकुजार्कपुत्राः प्रसूतिकाले मिलिता यदि स्युः १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल, शनैश्वर करके युक्त हो उस मनुष्यकी बालकपनेमें माता मृत्युको प्राप्त होती और सर्वकाल वह मनुष्य कलहकरके दुःखी रहता है ॥ १९ ॥

अथ चन्द्रबुधजीवयोगः ।

धीमान्महौजा बहुभाग्ययुक्तः सद्वृत्तविद्योऽतिविचित्रमित्रः ।
विख्यातकीर्तिश्च भवेन्मनुष्य एकत्र संस्थैः शशिसौम्यजीवैः२०॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें चंद्रमा, बुध, बृहस्पति होते हैं वह मनुष्य बुद्धिमान्, राजतुल्य, बहुत भाग्यकरके युक्त, अच्छी वृत्ति, प्रकाशवान, विचित्र हैं मित्र जिसके तथा संसारमें कीर्ति जिसकी विख्यात ऐसा होता है ॥ २० ॥

अथ चन्द्रबुधशुक्रयोगः ।

श्राद्धे श्रद्धायुक् सुविद्याप्रवीणो मर्त्यो नूनं नीचवृत्त्यानुजीवी ।
चेदेकत्रस्थानसंस्थाः प्रसूतौ ताराधीशज्ञौ सुराचार्ययुक्तौ ॥२१॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें चंद्रमा, बुध, शुक्रकरके सहित स्थित हों वह मनुष्य श्राद्धके विषे श्रद्धायुक्त, अच्छी विद्यामें प्रवीण तथा निश्चयकरके नीच वृत्तिकरके आजीविका करनेवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ चन्द्रबुधमन्दयोगः ।

ख्यातो विनीतोऽभिमतो नृपाणां नरः पुरग्रामकृताधिकारः ।
कलाकलापेऽमलबुद्धिशाली चंद्रज्ञमंदाः सहिता यदि स्युः ॥२२॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा बुध शनैश्वरसे युक्त होता है वह मनुष्य संसारमें विख्यात, नम्रतासहित, राजाओंको प्रिय, नगर वा ग्राममें अधिकार करनेवाला, सम्पूर्ण कलाओंमें कुशल तथा श्रेष्ठ बुद्धियुक्त होता है ॥ २२ ॥

अथ शुक्रचंद्रजीवयोगः ।

भाग्याधिकः सद्गुणकीर्तियुक्तः सद्बुद्धिविद्यासहितो नरः स्यात्।
प्रसूतिकाले हिमरश्मिजीवपूर्वासुरेज्याः सहिता यदि स्युः ॥२३॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा बृहस्पति, शुक्र सहित हों वह मनुष्य अधिक भाग्यवान्, अच्छे गुण और कीर्तिकरके युक्त, श्रेष्ठ बुद्धि और विद्याकरके सहित होता है ॥ २३ ॥

अथ चंद्रजीवशनियोगः ।

सन्मंत्रशास्त्राधिकृतः सुवेशो भूपप्रियोऽत्यंतविचक्षणश्च ।
भवेन्महौजा मनुजः प्रसूतौ योगे निशीशेज्यशनैश्वराणाम् ॥२४॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बृहस्पति, शनैश्चर एक स्थानमें स्थित होते हैं वह मनुष्य अच्छे मंत्र और शास्त्र इनका जाननेवाला, अच्छा स्वरूप-वाला, राजाओंको प्यारा तथा अत्यंत चतुर होता है ॥ २४ ॥

अथ चंद्रसितार्कियोगः ।

अभिमतोत्तमपुस्तकवीक्षणे सुललितो धनधर्मपरायणः ।
श्रुतिविदां प्रवरश्च पुरोधसां शशिसितार्कभुवां मिलने नरः॥२५॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य मन चाहती पुस्तकोंका देखनेवाला, शोभायमान शरीरवाला, धन और धर्ममें तत्पर तथा वेदके जाननेवाले पुरोहितोंमें श्रेष्ठ होता है ॥ २५ ॥

अथ मंगलबुधजीवयोगः ।

निजकुले नृपतिर्मनुजो भवेद्वरकवित्वकगीतकलादरः ।
अतिपरार्थकसाधनमानसः कुजबुधांगिरसां जनने युतौ ॥ २६ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, बुध, बृहस्पति एक स्थानमें स्थित हों तो वह मनुष्य अपने कुलमें राजाके समान, श्रेष्ठ काव्य और गीतकलाओंमें चतुर तथा पराये अर्थसाधनमें विशेषकरके मन रखनेवाला होता है ॥२६॥

अथ भौमबुधशुक्रयोगः ।

वाचालः स्याच्चंचलः क्षीणदेहो नित्योत्साही मानवो वित्तयुक्तः।
धृष्टोऽत्यंतं तारकेशावनीजदैत्येज्यानां संभवे संयुतिश्चेत् ॥२७॥

जिसके जन्मकालमें बुध, मंगल, शुक्र एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला, दुर्बल देहवाला, सदैव उत्साही, धनकरके युक्त तथा अत्यंत धृष्ट होता है ॥ २७ ॥

अथ भौमबुधार्कियोगः ।

भयान्वितः क्षीणवपुर्वनेच्छः प्रेष्यः प्रवासी कुविलोचनश्च ।
न स्यात्सहिष्णुर्बहुक्लेशभोक्ता योगे कुजज्ञार्कभुवां प्रसूतौ ॥२८॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, बुध, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य भयकरके सहित, हीनदेह, वनकी कांक्षा करनेवाला, दूत, परदेशमें रहनेवाला, बुरे नेत्रोंवाला, सहिष्णु तथा अतिक्लेशका भोगनेवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ भौमजीवशुक्रयोगः ।

कलत्रपुत्रादिसुखैः समेतो भूपालमान्यः सुजनानुयातः ।
भवेन्मनुष्योऽवनिजामरेज्यपूर्वासुरेज्यैः सहितैः प्रसूतौ ॥ २९ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, बृहस्पति, शुक्र एकत्र होते हैं वह मनुष्य स्त्री पुत्रादिकोंके सुखसहित, राजाओंकरके मान्य तथा श्रेष्ठ जनोंकरके युक्त होता है ॥ २९ ॥

अथ भौमजीवार्कियोगः ।

भूपाप्तमानः कृपया विहीनः कृशः कुवृत्तौ गतमित्रसौख्यः ।
भवेन्नरः श्रेष्ठग्रहं प्रयातैः क्षोणीतनूजांगिरसार्कपुत्रैः ॥ ३० ॥

जिसके जन्मकालमें एक स्थानमें मंगल, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य राजाओंकरके आप्त मान, कृपाकरके हीन, दुर्बल देह, खोटी वृत्तिका करनेवाला तथा मित्रोंके सुखसे रहित होता है ॥ ३० ॥

अथ भौमशुक्रार्कियोगः ।

विदेशवासी जननी त्वनार्या कुरंगनेत्रोपहतिः सुखान्तम् ।
प्रसूतिकाले यदि संयुताः स्युर्माहेयदैत्यार्चितभानुपुत्राः ॥३१॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, शुक्र, शनैश्चर एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य परदेशका वास करनेवाला, अनार्य जननीवाला, स्त्रीकरके सुख रहित होता है ॥ ३१ ॥

अथ बुधजीवशुक्रयोगः ।

सत्यान्वितः स्याद्बहुगीतकीर्तिर्भूपानुकंपाविजितारिपक्षः ।
प्रसन्नमूर्तिर्बुधजीवशुक्रैरेकर्क्षसंस्थैर्जनने नरः स्यात् ॥ ३२ ॥

जिसके जन्मकालमें बुध, बृहस्पति, शुक्र एक स्थानमें स्थित होते हैं वह मनुष्य सत्यकरके सहित, बहुत दूरतक गायी गई है कीर्ति जिसकी, राजाकी दयाकरके शत्रुओंको जीतनेवाला और प्रसन्न मूर्तिवाला ऐसा होता है ३२

अथ बुधजीवार्कियोगः ।

सद्वित्तसद्वाहनशीलयुक्तः सद्वस्त्रभूषः सुभगः सुभृत्यः ।
शनैश्चराचार्यशशांकपुत्राः क्षेत्रे यदैकत्र युता भवन्ति ॥ ३३ ॥

जिसके जन्मकालमें शनैश्चर, बृहस्पति, बुध एक स्थानमें संयुक्त हों वह मनुष्य श्रेष्ठ धन, श्रेष्ठ वाहन और श्रेष्ठ शीलकरके सहित, अच्छे वस्त्र और भूषणकरके युक्त, सुंदर है भाग्य जिसका, श्रेष्ठ है भृत्य जिसका ऐसा होता है ॥ ३३ ॥

अथ बुधशुक्रार्कियोगः ।

असत्यभाषी बहुदारगामी धूर्तः सदाचारविवर्जितः स्यात ।
दूरप्रयाणानुरतः कलाज्ञो धीरो ज्ञशुक्रार्कभुवां प्रसूतौ ॥ ३४ ॥

जिसके जन्मकालमें बुध,शुक्र, शनैश्चर एक स्थानमें स्थित होते हैं वह मनुष्य झूँठका बोलनेवाला, बहुत स्त्रियोंमें गमन करनेवाला, धूत, सदैवकाल आचारकरके रहित, दूर यात्रामें रति जिसकी, सम्पूर्ण कलाओंका जाननेवाला तथा धीर होता है ॥ ३४ ॥

अथ जीवशुक्रार्कियोगः ।

यदपि नीचकुलोद्भवमानुषो विशदकीर्तियुतः पृथिवीपतिः ।
अमलवृत्तियुतो जनने भवेद्धिषणभार्गवभानुभुवां युतौ ॥३५॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य चाहे नीच कुलमें क्यों न पैदा हुआ हो, परंतु बडी कीर्तिकरके युक्त, पृथिवीका पति तथा निर्मल वृत्तियोंकरके युक्त होता है ॥ ३५ ॥

पापखेटसहिते कलानिधौ कीर्तयंति जननीविनाशनम् । तादृशेऽम्बरमणौ जनकस्य मिश्रित च खलु मिश्रितं फलम् ॥३६॥
सद्युतः कुमुदिनीपतिर्जनौ भूयशोऽर्थवरकीर्तिसंयुतम् । गौरवेण नृपतेर्वरेण्यकं मानवं प्रकुरुते कुलोत्तमम् ॥ ३७ ॥
एकालये चेत्खलखेचराणां त्रयं करोत्येव नरं कुरूपम् ।
दारिद्र्यदुःखैः परितप्तदेहं कदापि गेहं न समाश्रयेत्सः ॥ ३८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे त्रिग्रहयोगवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८ ॥

पापग्रहोंकरके सहित चंद्रमा पीडाकारक हो तो माताका नाश करता है, इसी तरह सूर्य पापग्रहोंकरके सहित हो तो पिताको रोगी करता है और जो पापग्रह शुभग्रह दोनोंकरके युक्त हो तो मिश्रित फल कहना चाहिये ॥ ३६ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रहोंकरके युक्त चंद्रमा हो तो धरती, यश और धन करके संयुक्त होता है, गौरवताकरके श्रेष्ठ कुलमें उत्तम मनुष्यको करता है ॥३७॥ जो एक स्थानमें तीन पापग्रहोंका

योग हो तो उस मनुष्यको कुरूप करते हैं, दरिद्र और दुःखकरके परितप्त देह हो जिसके कभी घरमें कल्याण नहीं होता है ॥ ३८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां त्रिग्रहयोगवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथ चतुर्ग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्यचन्द्रभौमबुधयोगः ।

सूर्येंदुभौमसौम्यानां योगे लेखकरो नरः ।
मुखरोगयुतश्चौरो भाषायां निपुणो भवेत् ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्र, मंगल, बुधका योग होता है वह मनुष्य लेखक, मुखका रोगी, चोर तथा भाषामें निपुण होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यचन्द्रभौमजीवयोगः ।

सूर्यश्चंद्रः कुजो जीव एकस्थाने धनी नरः ।
शिल्पज्ञो दीर्घनेत्रश्च स्वर्णाभो वीर्यवान्भवेत् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक स्थानमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बृहस्पतिका योग हो तो वह मनुष्य शिल्पशास्त्रका जाननेवाला, बडे नेत्रवाला, सुवर्णकीसी कांतिवाला तथा बलवान् होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यचंद्रभौमभृगुयोगः ।

रवींदुभौमशुक्राणां योगे शास्त्रार्थयुङ्नरः ।
सौख्यपुत्रयुतः स्त्रीणां वाचालो मनुजो भवेत् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा, भौम, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य शास्त्रके अर्थको जाननेवाला, पुत्र और स्त्रीकरके सुखी तथा बहुत बोलनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सूर्यचन्द्रभौमशनियोगः ।

सूर्येंदुभौममंदानां योगे दारिद्र्यसंयुतः ।
मूर्खो विषमदेहश्च द्रव्यहीनो भवेन्नरः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा, भौम, शनैश्चरका योग हो सो मनुष्य दारिद्रकरके सहित, मूर्ख, दुर्बलदेह तथा धनहीन होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यचन्द्रबुधजीवयोगः ।

सूर्येंदुबुधजीवानां योगे बहुधनी भवेत् ।
हीनशोकश्च तेजस्वी नीतिशास्त्रविशारदः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बुध, गुरुका योग हो सो मनुष्य बहुत धनी, शोकरहित तेजयुक्त, नीतिशास्त्रमें कुशल होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यचन्द्रबुधशुक्रयोगः ।

अर्केंदुज्ञकवीनां च योगे कांतियुतो नरः ।
लघुदेहो भूपमान्यो वाचालो विकलो भवेत् ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्रका योग हो सो मनुष्य कांतिकरके सहित, छोटा शरीर, राजाकरके मान्य, बोलनेवाला तथा विकल होता है ॥ ६ ॥

अथ सूर्यचन्द्रबुधशनियोगः ।

सूर्यचन्द्रज्ञमंदानां योगे जातोऽतिनिर्धनः ।
भिक्षाशी नेत्ररोगी च कुटुंबरहितो नरः ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बुध, शनैश्चरका योग होता है सो मनुष्य धनकरके रहित, भिक्षाकरके भोजन करनेवाला, नेत्ररोगसहित तथा कुटुंबकरके हीन होता है ॥ ७ ॥

अथ सूर्यचन्द्रगुरुशुक्रयोगः ।

रवींदुगुरुशुक्राणां संयोगे नृपपूजितः ।
नीरे प्रीतिर्मृगेऽरण्ये रतिमान्निर्गुणः सुखी ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पति, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य राजाओंकरके पूजनीय, जल, मृग और वनमें प्रीति करनेवाला गुण करके रहित तथा सुखी होता है ॥ ८ ॥

अथ सूर्यचन्द्रगुरुशनियोगः ।

रवींदुगुरुमंदानां योगे वित्तसुतान्वितः ।
सुनेत्रो लोकमान्यश्च भार्याप्रीतिः प्रतापवान् ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्र, बृहस्पति, शनैश्चरका योग हो सो मनुष्य धन और पुत्रोंकरके सहित, अच्छे नेत्रवाला, संसारमें मानयुक्त, स्त्री-से प्रीति करनेवाला तथा प्रतापी होता है ॥ ९ ॥

अथ सूर्यचन्द्रशुक्रमंदयोगः ।

सूर्येंदुभृगुमंदानां संयोगे ह्यतिदुर्बलः ।
नारीतुल्यसदाचारो भयभीतश्च जायते ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र, शनैश्चरका योग हो सो मनुष्य अतिदुर्बल शरीरवाला, स्त्रियोंके तुल्य आचारवाला तथा भयभीत होता है ॥ १० ॥

अथ सूर्यबुधगुरुभौमयोगः ।

सूर्यभौमज्ञजीवानां संयोगे विजयी भवेत् ।
परदाररतो नित्यं देवताद्विजसेवकः ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, बृहस्पति, मंगलका योग हो सो प्राणी विजयी होता है, पराई स्त्रियोंमें सदैवकाल रत तथा देवता और ब्राह्मणोंका सेवक होता है ॥ ११ ॥

अथ सूर्येंदुभौमशुक्रयोगः ।

सूर्येंदुभौमशुक्राणां योगे दुर्जनमानसः ।
तस्करः स्त्रीरतो नित्यं निर्लज्जो निर्धनो भवेत् ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य खोटे चित्तवाला, चोर, स्त्रियोंमें प्रीति करनेवाला तथा लज्जा और धनकरके रहित होता है ॥ १२ ॥

अथ सूर्यभौमबुधार्कियोगः ।

सूर्यभौमज्ञमंदानां योगे नीचजनान्वितः ।
मंत्री सेनापतिर्वीरः काव्यशस्त्रास्त्रविन्नरः ॥ १३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बुध, शनैश्चरका योग होता है सो मनुष्य नीच मनुष्योंकरके युक्त, मंत्री, सेनाका मालिक, वीर, काव्य और अस्त्र–शस्त्रोंका जाननेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ सूर्यभौमजीवशुक्रयोगः ।

हंसभौमेज्यशुक्राणां संयोगे सुभगो जनः ।
भूपमान्यो धनी ख्यातो नीतिज्ञो नरपालकः ॥ १४ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य शोभायमान, राजाकरके मान्य, धनकरके विख्यात, नीतिका जाननेवाला तथा मनुष्योंका पालन करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ सूर्यभौमजीवार्कियोगः ।

सूर्यभूसुतजीवार्कियोगे सेनापतिर्भवेत् ।
मंत्रज्ञो भूपमान्यश्च धनधान्यदयान्वितः ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनैश्वरका योग होता है सो मनुष्य फौजका अफसर, मंत्रका जाननेवाला, राजाकरके मान्य, धन, अन्न और दयाकरके सहित होता है ॥ १५ ॥

अथ सूर्यभौमशुक्रमंदयोगः ।

रविभौमो भृगुर्मंदो नीचसंगपरो नरः ।
बहुद्वेषी दुराचारी मूर्खस्तु पलभक्षकः ॥ १६ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, शनैश्चर, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य नीचजातिके मनुष्योंसे संग रखनेवाला, बहुत वैर करनेवाला, दुष्ट आचारवाला, मूर्ख तथा मांसका खानेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ सूर्यबुधबृहस्पतिशुक्रयोगः ।

सूर्यविद्गुरुशुक्राणां संयोगे विनयान्वितः ।
धनी मानी भूमिपालः पुत्रदारसुखान्वितः ॥ १७ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, गुरु, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य विनयकरके सहित, धनवान्, मानी, राजाके समान, पुत्र और स्त्रीके सुखसहित होता है ॥ १७ ॥

अथ सूर्यबुधजीवमन्दयोगः ।

भास्करो बुधजीवार्किसंयोगे प्रभवो नरः ।
नपुंसको नरो मानी दुराचारी निरुद्यमः ॥ १८ ॥

सूर्य, बुध, बृहस्पति, शनैश्चरके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है सो नपुंसक, मानी, खोटे कर्म करने वाला तथा उद्यमरहित होता है ॥ १८ ॥

अथ सूर्यबुधशुक्रार्कियोगः ।

भास्करो बुधभृग्वार्किसंयोगे सुभगः शुचिः ।
बंधुमान्यो महाप्राज्ञः पुत्रदारसुखान्वितः ॥ १९ ॥

सूर्य, बुध, शुक्र, शनैश्चरके योगमें जो मनुष्य पैदा होता है सो श्रेष्ठ-भाग्यवाला, पवित्र, भाइयोंकरके पूज्य, बड़ा पंडित, पुत्र और स्त्रीके सुखसहित होता है ॥ १९ ॥

अथ सूर्यबृहस्पतिशुक्रार्कियोगः ।

हंसो जीवः कविर्मंदः संयोगे कृपणो महान् ।
काव्यकृत्करुणायुक्तो भूपमान्यो भवेन्नरः ॥ २० ॥

सूर्य, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है सो महाकृपण, काव्यका करनेवाला तथा करुणासे युक्त होता है ॥ २० ॥

अथ चन्द्रभौमबुधशुक्रयोगः ।

विधुभौमज्ञशुक्राणां संयोगे कलही भवेत् ।
बंधुद्वेषी नीचसेवी वेदब्राह्मणनिंदकः ॥ २१ ॥

चंद्र, मंगल, बुध, शुक्रके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है सो पुरुष कलह करनेवाला, भ्राताओंका द्रोही, नीच जनोंसे प्रीति करनेवाला तथा वेद और शास्त्रका निंदक होता है ॥ २१ ॥

अथ चन्द्रभौमबुधजीवयोगः ।

चंद्रभौमबुधेज्यानां योगे भूपदयान्वितः ।
सर्वशास्त्रार्थकुशलः सत्यवादी सुखी भवेत् ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पतिका योग हो सो राजाकी दया करके सहित, सम्पूर्ण शास्त्रमें कुशल, सच बोलनेवाला तथा सुखी होता है ॥ २२ ॥

अथ चन्द्रभौमशनिशुक्रयोगः ।

विधुभौमभृगोर्मंदसंयोगे कुलवंचकः ।
लोकद्वेषी दरिद्री च नरः शूरकुलोद्भवः ॥ २३ ॥

चंद्रमा, मंगल, शनैश्चर, शुक्रके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है सो पुरुष अपने कुलमें वंचक, संसारका वैरी, दरिद्री, शूरोंके कुलमें उत्पन्न होता है किंतु शूर नहीं होता ॥ २३ ॥

अथ चन्द्रभौमगुरुशुक्रयोगः ।

इंदुगोजेज्यशुक्राणां संयोगे विकलो नरः ।
धनपुत्रान्वितो मानी नीतिज्ञः साहसी भवेत् ॥ २४ ॥

चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, शुक्रके योगमें जो मनुष्य उत्पन्न होता है जो मनुष्य विकल, धन पुत्र करके सहित, मानी, नीतिको जाननेवाला तथा साहसी होता है ॥ २४ ॥

अथ चंद्रमंगलगुरुशनियोगः ।

चंद्रारजीवमंदानां संयोगे नृपपूजितः ।
सत्यवादी सदानंदो नीचसेवी दयान्वितः ॥ २५ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है सो पुरुष राजपूजित, सच बोलनेवाला, सदा आनंदयुक्त, नीचोंका सेवी तथा दयाकरके सहित होता है ॥ २५ ॥

अथ चन्द्रभौमशुक्रार्कियोगः ।

विधुभौमभृगोर्मन्दसंयोगे पुंश्चलीपतिः ।
द्यूतकर्मरतो नित्यं मद्यमांसप्रियः सदा ॥ २६ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल, शुक्र, शनैश्चरका संयोग हो सो प्राणी व्यभिचारिणी स्त्रीका पति, सदैव जुआ खेलनेवाला तथा मद्य, मांसको खानेवाला होता है ॥ २६ ॥

अथ चन्द्रबुधजीवशुक्रयोगः ।

चंद्रेंदुजेज्यशुक्राणां योगे दाता दयान्वितः ।
बुद्धिमान्धनसंपन्नो विद्यावादी विचक्षणः ॥ २७ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य दाता, दयाकरके सहित, बुद्धिमान्, धनयुक्त, विद्याका वाद करनेवाला तथा चतुर होता है ॥ २७ ॥

अथ चन्द्रबुधगुरुमंदयोगः ।

चन्द्रेन्दुजेज्यमंदानां योगे लोकप्रियो नरः ।
यशस्वी ज्ञानसंपन्नस्तेजस्वी विजितेन्द्रियः ॥ २८ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है सो पुरुष संसारको प्यारा, यशस्वी, ज्ञानसहित, तेजस्वी तथा इंद्रियोंका जीतनेवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ चन्द्रबुधशुक्रशनियोगः ।

चन्द्रविच्छुक्रसौरीणां संयोगे नृपपूजितः ।
नेत्ररोगी पुराधीशो बहुदारयुतो धनी ॥ २९ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बुध, शुक्र, शनिका योग हो सो पुरुष राजपूजित, नेत्ररोगी, बहुत स्त्रियोंसहित, धनी तथा ग्रामस्वामी हो ॥२९॥

अथ चन्द्रजीवशुक्रार्कियोगः ।

विधुजीवार्किशुक्राणां संयोगे ललनाप्रियः ।
धर्मज्ञो निर्धनः प्राज्ञः स्थूलदेहो विचक्षणः ॥ ३० ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, बृहस्पति, शनैश्वर, शुक्रका संयोग होता है सो मनुष्य स्त्रीको प्यारा, धर्मका जाननेवाला, धनरहित, पंडित, स्थूलशरीरवाला तथा चतुर होता है ॥ ३० ॥

अथ भौमगुरुबुधशुक्रयोगः ।

कुजेज्यबुधशुक्राणां संयोगे कलहप्रियः ।
सुशीलो धनसंपन्नो राजमान्यो दयान्वितः ॥ ३१ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, गुरु, बुध, शुक्रका योग होता है सो मनुष्य कलह करनेवाला,सुशील, धनी, राजमान्य तथा दयावान् होता है ॥३१॥

अथ भौमबुधजीवशनियोगः ।

भौमविज्जीवमंदानां संयोगे निर्धनो भवेत् ।
शुचिः सदा सत्ययुक्तः शूरश्च विनयान्वितः ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल, बुध, बृहस्पति, शनैश्वरका योग होता है सो मनुष्य धनरहित, पवित्र, हमेशा सच बोलनेवाला, शूर तथा नम्रताकरके सहित होता है ॥ ३२ ॥

अथ भौमजीवशुक्रार्कियोगः ।

भौमेज्यसितमंदानां संयोगे सुमुखो धनी ।
विद्याविनयसंपन्नः साहसी सुजनप्रियः ॥ ३३ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका संयोग होता है सो पुरुष सुंदरमुखवाला, धनवान्, विद्या और नम्रतासहित, साहसी तथा अच्छे मनुष्योंको प्यारा होता है ॥ ३३ ॥

अथ भौमबुधशुक्रार्कियोगः ।

विदिसितासितभौमानां संयोगे धनवर्जितः ।
पुष्टदेहो मिष्टभाषी मल्लविद्याविशारदः ॥ ३४ ॥

जिसके जन्मकालमें बुध, शुक्र, शनैश्चर, मंगलका संयोग होता है सो मनुष्य धनरहित, पुष्टशरीरवाला, मीठा बोलनेवाला तथा मल्लविद्यामें विशारद होता है ॥ ३४ ॥

अथ बुधगुरुशुक्रार्कियोगः ।

जीवज्ञभृगुसौरीणां योगे कामातुरो जनः ।
शस्त्रविद्यारतो नित्यं वेदवेदांगपारगः ॥ ३५ ॥

इति श्रीवंशबरेलि० ज्योतिषि पं० श्यामलालकृते ज्योतिषश्यामसंग्रहे चतुर्ग्रहयोगवर्णनं नाम एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति, बुध, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है सो मनुष्य कामातुर, शस्त्रविद्यामें प्रीति करनेवाला तथा वेद और वेदके अंगोंको जाननेवाला होता है ॥ ३५ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां चतुर्ग्रहवर्णनं नाम एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

अथ पंचग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्यचन्द्रमंगलबुधजीवयोगः ।

भार्याहीनः सदा दुःखी दुष्टः क्रोधी महाछली ।
हंसाद्यैर्गुरुपर्यंतैः संयोगे पंचभिर्ग्रहैः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य आदि बृहस्पति पर्यंत पांच ग्रहोंका योग हो वह मनुष्य स्त्रीहीन, सदैव दुःखयुक्त, दुष्ट, क्रोधी और बडा छली होता है ॥१॥

अथ सूर्यचन्द्रभौमबुधशुक्रयोगः ।

मिथ्यावादी भ्रातृहीनो दयालुः परसेवकः ।
क्लीबाकृतिर्द्वादशात्मचंद्रभौमज्ञभार्गवैः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्रका योग होता है वह मनुष्य झूंठ बोलनेवाला, भ्राताकरके हीन, दयावान्, पराई सेवा करनेवाला तथा हिजडाकीसी आकृतिवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यचन्द्रमंगलबुधशनियोगः ।

अल्पजीवी सदा दुःखी भार्यापुत्रविवर्जितः ।
सूर्येन्दुकुजज्ञार्कीणां संयोगे तस्करो भवेत् ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल,बुध,शनि, चंद्रका योग होता है वह थोडे काल जीनेवाला,सदैव दुःख भोगनेवाला, स्त्री पुत्र रहित और चोर होता है३

अथ सूर्यचन्द्रमंगलगुरुशुक्रयोगः ।

मातृपितृसुखैर्हीनो नेत्रदोषी च दुःखितः ।
गानविद्यारतो भौमभानुचन्द्रेज्यभार्गवैः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, गुरु, शुक्रका योग हो वह माता-पिताके सुखसे हीन,नेत्ररोगी, दुःखी तथा गानविद्यामें रत होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यचन्द्रभौमगुरुमंदयोगः ।

परस्वहर्ता व्यसनी साधुद्वेषी जडाकृतिः ।
कातरः सूर्यसंयोगे चन्द्रारगुरुसौरिभिः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, शनैश्वरका योग होता है वह मनुष्य पराये धनका हरनेवाला, व्यसनयुक्त, साधुओंका वैरी, वृक्षोंकीसी आकृतिवाला तथा डरपोक होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यचन्द्रमंगलशुक्रार्कियोगः ।

परदाररतो द्वेषी अर्थधर्मविवर्जितः ।
संयोगे जायते भानुचंद्रारभृगुसौरिभिः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शुक्र, शनिका योग होता है वह मनुष्य पराई स्त्रियोंमें रमण करनेवाला, सबसे द्वेषी तथा अर्थ धर्मसे रहित हो ॥ ६ ॥

अथ सूर्यचन्द्रबुधगुरुशुक्रयोगः ।

राजमान्यो धनी मानी न्यायाधीशो विचक्षणः ।
रवींदुज्ञेज्यशुक्राणां संयोगप्रभवो नरः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्रका योग हो वह मनुष्य राजा करके माननीय, धन-मानयुक्त, न्यायाधीश, अर्थात् हाकिम तथा बड़ा चतुर होता है ॥ ७ ॥

अथ सूर्यचंद्रबुधजीवार्कियोगः

वेश्यागामी ऋणग्रस्तो दुराचारी भयान्वितः ।
धर्मद्वेषी नरो भानुचंद्रज्ञगुरुसौरिभिः ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य वेश्याके साथ गमन करनेवाला, ऋणकरके ग्रसित, दुष्ट कामोंका करनेवाला, भयकरके युक्त तथा धर्मका द्वेष करनेवाला होता है॥८॥

अथ सूर्यचंद्रबुधशुक्रार्कियोगः ।

देहरोगी द्रव्यहीनः पुत्रमित्रविवर्जितः ।
बहुरोमान्वितो भानुचंद्रज्ञभृगुसौरिभिः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बुध, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य देहरोगी, धनकरके हीन; पुत्र और मित्रोंकरके रहित तथा बहुतसे रोमकरके सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ सूर्यचन्द्रगुरुशुक्रार्कियोगः ।

वाक्यजालरतः पापी चलवित्तोऽगनाप्रियः ।
शत्रुभिस्तप्त आदित्यचंद्रजीवसितासितैः ॥ १० ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य वाणीका जाल रचनेवाला, पापी, चलायमान चित्तवाला, स्त्रीका प्यारा तथा शत्रुओंकरके तपित होता है ॥ १० ॥

अथ सूर्यमंगलबुधगुरुशुक्रयोगः ।

सेनापतिर्नरः कामी यशस्वी बहुसेवकः ।
रव्यारज्ञेज्यशुक्राणां संयोगे नृपपूजितः ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, मंगल, बृहस्पति, शुक्रका संयोग होता है वह मनुष्य फौजका स्वामी, कामी, यशवान्, बहुतसे नौकरोंकरके सहित तथा राजपूजित होता है ॥ ११ ॥

अथ सूर्यमंगलबुधगुरुशनियोगः ।

भिक्षाशी च नरो रोगी स्वल्पवित्तः सुतान्वितः ।
वृद्धो जडो भानुभौमबुधजीवशनैश्चराः ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य भिक्षाकरके भोजन करनेवाला, रोगसहित, थोड़े धन करके युक्त, पुत्रवान्, वृद्ध तथा जड होता है ॥ १२ ॥

अथ सूर्यमंगलबुधशुक्रार्कियोगः ।

स्थानभ्रष्टो व्याधियुक्तः शत्रुग्रस्तो बुभुक्षितः ।
सूर्यशुक्रज्ञमन्दारसंयोगे विकलो नरः ॥ १३ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, शुक्र, बुध, शनैश्चर, मंगलका योग हो वह मनुष्य स्थानभ्रष्ट, व्याधियुक्त, शत्रुओंकरके ग्रसित, भूखकरके दुःखी तथा विकल होता है ॥ १३ ॥

अथ सूर्यगुरुमंगलशुक्रशनियोगः ।

प्राज्ञो धनी बन्धुयुक्तो धातुयन्त्रात्मकारकः ।
तपस्वी भानुभौमार्किभृगुजीवान्वितैर्भवेत् ॥ १४ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य मंगल, शनैश्चर, शुक्र और बृहस्पति करके सहित हो वह मनुष्य पंडित, धनवान्, भ्राताओंकरके युक्त, धातु और लोहेके यंत्रोंका बनानेवाला तथा तपस्वी होता है ॥ १४ ॥

अथ सूर्यबुधगुरुशुक्रार्कियोगः ।

दयालुर्धार्मिको वक्ता मित्रयुक्तो धनान्वितः ।
सामंतो भास्करश्चांद्रिजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ १५ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य दयावान्, धर्मात्मा, वक्ता, मित्रोंकरके सहित, धनकरके सहित तथा फौजका मालिक होता है ॥ १५ ॥

अथ चंद्रमंगलबुधजीवशुक्रयोगः ।

सुशीलः पापरहितो मित्रद्रव्यैः सुखान्वितः ।
बहुविद्यायुतश्चंद्रभौमज्ञगुरुभार्गवैः ॥ १६ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्रका योग होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ स्वभाववाला,पापकरके रहित,मित्र और धनकरके सुख तथा बहुत विद्या करके संयुक्त होता है ॥ १६ ॥

अथ चंद्रमंगलबृहस्पतिशुक्रार्कियोगः ।

परान्नभोगी मलिनः परसेवान्वितः सुधीः ।
योगे भवति चन्द्रारजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ १७ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य पराये अन्नका भोग करनेवाला, मलिन, परायी सेवामें तत्पर तथा पंडित होता है ॥ १७ ॥

अथ चंद्रभौमबुधशुक्रार्कियोगः ।

मित्रद्वेषी दुराचारी निष्ठुरः परनिंदकाः ।
चंद्रभौमज्ञशुक्रार्किसंयोगे प्रभवो नरः ॥ १८ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा, बुध, शुक्र, शनैश्चर, मंगलका योग होता है वह मनुष्य मित्रोंसे वैर करनेवाला, खोटे कर्म करनेवाला, कठोर हृदय तथा परायी निंदा करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रार्कियोगः ।

राजतुल्यो राजमान्यो लोकपूज्यो गणाधिपः ॥
चंद्रज्ञगुरुशुक्रार्किसंयोगे जायते नरः ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग होता है वह मनुष्य राजाके सदृश, राजमान्य, संसारपूजनीय तथा गणाधीश होता है ॥ १९ ॥

अथ भौमबुधगुरुशुक्रार्कियोगः ।

धनी मंत्री शुचिर्वक्ता दीर्घायुः स्वजनप्रियः ॥
भौमज्ञगुरुशुक्रार्किसंयोगे नृपवल्लभः ॥ २० ॥

इति वंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-
ज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे
पंचग्रहयोगवर्णनं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

जिसके जन्मकालमें मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चरका योग हो वह मनुष्य धनवान्, मंत्री, पवित्र, वक्ता, दीर्घायु, अपने मनुष्योंको प्यारा तथा राजाको प्यारा होता है ॥ २० ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-
पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां पंचग्रह-
योगवर्णनं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ षड्ग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सूर्यचन्द्रभौमबुधजीवशुक्रयोगः ।

अल्पभाषी धनैर्युक्तो विद्याधर्मसुखैर्युतः ।
हंसाद्यैर्भृगुपर्यंतैः संयोगे जायते नरः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्यको आदि लेकर शुक्रपर्यंतत छः ग्रहोंका योग हो वह मनुष्य थोड़ा बोलनेवाला, धनकरके युक्त, विद्या, धर्म और सुखकरके सहित होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यचन्द्रमंगलबुधजीवार्कियोगः ।

परोपकारी शुद्धात्मा दयालुश्चंचलो नरः ।
विपिने रमते नित्यं विना शुक्रं तु षड्ग्रहैः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकालमें शुक्रके विना छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य पराया उपकार करनेवाला, शुद्ध-अंतःकरण, दयावान्, चंचल तथा वनमें विचरनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यचन्द्रमंगलबुधशुक्रशनियोगः ।

चिंतायुक्तो नरो मानी संग्रामे विजयी भवेत् ।
वनाद्रौ रमते घाती विना जीवं तु षड्ग्रहैः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पतिके विना छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य चिन्ताकरके युक्त, मानी, संग्राममें जय पानेवाला तथा वन और पर्वतोंमें विचरनेवाला तथा घाती होता है ॥ ३ ॥

अथ सूर्यचन्द्रभौमजीवशुक्रार्कियोगः ।

क्रोधी.कृपणोऽर्थाढ्यो ग्रामपूज्यः सुखप्रियः ।
भूमिपालकृपापात्रं विना चन्द्रसुतं ग्रहैः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकालमें बुधके विना छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य क्रोधी, कृपण, धनयुक्त, ग्रामपूज्य, सुखसहित तथा राजाओंका कृपापात्र होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यचन्द्रबुधगुरुशुक्रशनियोगः ।

भार्यापुत्रधनैर्हीनो धर्मज्ञो वेदपारगः ।
भूपमान्यो दयायुक्तो विना भौमेन षड्ग्रहैः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकालमें मंगलके विना छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य स्त्री, पुत्र और धनकरके हीन, धर्मका जाननेवाला, वेदका पारग, राजाकरके मान्य तथा दयासहित होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यमंगलबुधगुरुशुक्रशनियोगः ।

भिक्षाशी च क्षमायुक्तो ब्रह्मविद्यारतो नरः ।
विना चंद्रे ग्रहैः सर्वैः संयोगे धनवर्जितः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमाके विना छः ग्रहोंका योग हो सो मनुष्य धनकरके रहित, भिक्षा मांगनेवाला, क्षमायुक्त तथा ब्रह्मविद्यामें तत्पर होता है ॥ ७ ॥

अथ चन्द्रमंगलबुधगुरुशुक्रशनियोगः ।

भूपमान्यो धनी ख्यातो बहुभार्यो गुणान्वितः ।
चंद्राद्यैः शनिपर्यंतैः संयोगे प्रभवो नरः ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकालमें चन्द्रमासे लेकर शनिपर्यंत छः ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य राजमान्य, धनवान्, संसारमें विख्यात तथा बहुत स्त्री और गुणोंकरके सहित होता है ॥ ७ ॥

अथ सप्तग्रहयोगः ।

दिवाकरनिभं तेजो भूपमान्यः शिवप्रियः ।
सूर्याद्यैः शनिपर्यन्तैर्योगे दानी धनान्वितः ॥ ८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंस श्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजजोतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे
षड्ग्रहयोगवर्णनं नाम एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

जो मनुष्य सूर्यसे लेकर शनिपर्यंत सात ग्रहोंके योगमें उत्पन्न हो सो सूर्य प्रकाशके समान तेजवाला, राजोंकरके मान्य, शिवका भक्त, दान करनेवाला तथा धनवान् होता है ॥ ८ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-पंडितश्यामलालविरचितायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां ज्योतिष-श्यामसंग्रहे षड्ग्रहयोगवर्णनं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ पाकाध्यायप्रारंभः ।

अथ विंशोत्तरीदशाक्रमः ।

अग्निभाज्जन्मभांतं च गणयेन्नवभिर्भजेत् ।
शेषं दशारचंभौराजीवज्ञार्किशिखीभृगुः ॥ १ ॥

कृत्तिकानक्षत्रसे लेकर जन्मनक्षत्रपर्यंत गणना करके उसमें नौका भाग दे, शेष बचे सो क्रमसे र. चं. भौ. रा. जी. ज्ञ. श. के. शुक्की दशा जाननी चाहिये ॥ १ ॥

अथ दशावर्षमाह ।

रसाशास्वरधृत्यब्दाः षोडशैकोनविंशतिः ।
सूर्यादिवत्सराः प्रोक्ताः सप्तचंद्रो मुनिर्नखाः ॥ २ ॥

छः, दश, सात, अठारह, सोलह, उन्नीस, सत्रह, बीस वर्ष ये क्रमसे सूर्यादि शुक्रपर्यंत ग्रहोंकी दशाके वर्ष होते हैं अर्थात् रविकी दशा छः वर्षकी होती है, इसी तरह चंद्रमाके दश, मंगलके सात, राहुके अठारह, बृहस्पतिके सोलह, शनैश्चरके उन्नीस, बुधके सत्रह, केतुके सात, शुक्रके बीस वर्ष होते हैं ॥ २ ॥ दशा बनानेकी रीति यह है कि—पहिले गतर्क्ष और सर्वर्क्ष बनाना चाहिये, उसकी रीति यह है गत नक्षत्रकी घड़ी पल साठमें घटाकर उसमें सूर्योदय इष्ट मिलाय देना उसको गतर्क्ष कहते हैं और वही जो गत

नक्षत्र साठमें घटाया है उसको शेषमें वर्तमान नक्षत्रकी घटी पल जोड देनेसे सर्वर्क्ष होता है । यथा उदाहरण—जैसे किसी मनुष्यका जन्म चैत्र सुदी पूर्णिमा २० घ.३० पलका है। जन्मसमय उस दिन हस्त नक्षत्र १४ दंड ५१पल है । यहां नक्षत्र इष्टकालसे न्यून है अतः हस्तनक्षत्र गत हुआ और चित्रा वर्तमान हुआ । गत नक्षत्रकी घटी पल६०में घटा दी६० साठमें गये चौदह तो रहे ४६ के रखे ४५ एक उतरे ६० गये ५१ बचे ९ तो अब)४५।९(में सूर्योदय इष्ट जोड दिया,

२०।३०

६५।३९ पैसठमेंसे गये साठ तो रहे)५।३९

(इसको गतर्क्ष कहते हैं अब उसी) ४५ । ९ (में वर्तमान नक्षत्रकी घटी पल मिलानेसे सर्वर्क्ष होता है सो वर्तमान चित्रानक्षत्र दूसरे दिन १२ दंड ४१ पल है इनमें पैतालीस जोड दिये)४५ ९ (

)५७ ५०(

तो)५७।५०(हुए, इसको सर्वर्क्ष कहते हैं।दशाका भुक्त भोग बनानेका

उदाहरण ।

कृत्तिका जन्मनक्षत्रपर्यंत गुणना करी तो चित्रानक्षत्र १२ हुआ, इसमें नौका भाग देनेसे शेष ३ रहे तीसरी दशा मंगलकीमें मनुष्यका जन्म हुआ । अब गतर्क्षके पल करना ॥

गतर्क्ष ५ । ३९ पांचको साठसे गुणा

एवं भमे गु. ६०) ३०० (इसमें पल जोड दिये

३९

३३९

अब सर्वर्क्ष पल करना (५७।५० (सर्वर्क्ष

गु. ६०)३४२०(इसमें पल जोड दिये

५०

) ३४७० (यह सर्वर्क्ष हुआ

दशा मंगलकी गु. ७) ३३८ (सर्वर्क्षको दशाके वर्षोंसे गुणना

वर्ष ७ २३७३

भुक्त सर्वर्क्षभा)३४७० (भागो नास्ति ल.०

व. ० १२ गु.) २३७३ (

मा. ८ २८४७६ इतने हुए

दि. ६ ८ गुणा) ३४७० भा. (ल. ८

घ. ११ २७७६० इनको घटाया

प. २४ इसको गुणा ३०) ७१६ (शेष

३१४८० इतने हुए

६ गुणा) ३४७० भा. (ल. ६

२०८२० इतने हुए

इसको ६० गुणा) ६६० (शेष रहा

३९६०० इतने हुए

इसको ११ गुणा) ३४७० भा. (ल. ११

इनको घटाया ३९६०० हुए

इसको ६० गुणा) १४३० (शेष रहे

८५८०० हुए

२ गुणा) ३४७० भा. (ल. २४

इनको घ. ६९४० इतने हुए

) १५४०० (शेष रहे

४ गुणा.) ३४७० (भा.

इनको घटाया १३८८० इतने हुए

२५२० शेष रहे यहां अब कुछ नहीं

करना जो लब्ध आया है सो दशाका भुक्त जानना चाहिये । इस लब्धको दशाके वर्षोंसे घटानेसे जो शेष रहे सो दशाका भोग जानना । यथा—मंगलकी दशा ७वर्षकी इसमें भुक्त घटाया भुक्त ० व. ८ मा. ६ दि. ११ घ. २४ पल है सातको रखे ६ उतरे १२ बारहमें गये ८ रहे ४ चारके धरे ३ उतरे ३० तीसमें गये ६ तो रहे २४ चौवीसके धरे २३ उतरे ६० गये ११ रहे ४९ उनंचासके धरे ४८ उतरे ६० गये २४ रहे ३६ सो सम्पूर्ण भोग ६ व. ३ मा. २३ दि. ४८ घ. ३६ पल होता है ॥ २ ॥

अथ विंशोत्तरीदशाचक्रम् ।

ग्रह.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
नक्षत्र.	कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आ. स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अ.	पू.फा. पू.षा. भ.

अथाष्टोत्तरीदशाक्रमः ।

रविश्चंद्रः कुजश्चांद्रिर्मंदो जीवस्तमो भृगुः ।
दशा अष्टोत्तरी ख्याता केतुहीना स्मृता बुधैः ॥ ३ ॥

सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, शनैश्चर, बृहस्पति, राहु और शुक्र यह अष्टोत्तरी दशाका क्रम केतुकरके रहित विद्वानोंने कहा है ॥ ३ ॥

अथ दशावर्षमाह ।

रसो बाणेंदुरष्टौ च सप्तचन्द्रो दिगीश्वरः ।
एकोनविंशदादित्या एकविंशत् क्रमात् स्मृताः ॥ ४ ॥

छः, बाणेंदु अर्थात् पंद्रह, आठ, सत्रह, दश, उन्नीस, बारह और इक्कीस वर्ष क्रमकरके कहे हैं अर्थात् सूर्यकी दशा ६ वर्षकी, चन्द्रमाकी पंद्रह वर्षकी, मंगलकी आठ वर्षकी, बुधकी सत्रह वर्षकी, शनैश्चरकी दश वर्षकी, बृहस्पतिकी उन्नीस वर्षकी, राहुकी बारह वर्षकी और शुक्रकी इक्कीस वर्षकी इस क्रमसे दशा कही है ॥ ४ ॥

अथ अष्टोत्तरीक्रमज्ञानम् ।

दशा अष्टोत्तरी प्रोक्ता शंभुना कृत्तिकादितः ।
चतुस्त्रयं पुनर्वेदा अग्निर्वेदास्त्रयं पुनः ॥ ५ ॥

कृत्तिका नक्षत्रको आदि लेकर शुक्रसे आर सूर्यसे चार नक्षत्र फिर तीन, फिर चार, फिर तीन, फिर चार, फिर तीन इस क्रमसे अष्टोत्तरी दशा शिवजीकरके कही गई है ॥ ५ ॥

अथ देशभदन दशामाह ।

गुर्जरे कच्छसौराष्ट्रे पांचाले सिंधुपर्वते ।
देशेष्वष्टोत्तरी ज्ञेया प्रत्यक्षफलदायिनी ॥ ६ ॥

गुर्जर, कच्छ, सौराष्ट्र, पांचाल और सिंधुपवत इन देशोंमे अष्टोत्तरी दशा प्रत्यक्ष फल देनेवाली जाननी चाहिये । गुर्जरकरके गुजरात, कच्छ करके कच्छभुज, काठियावाड, सौराष्ट्रकरके सूरत, पांचाल अर्थात् पंजाब और सिंधपर्वतकरके दुर्गत देश जानना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ अष्टोत्तरीदशाचक्रम् ।

ग्रह.	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	बृ.	रा.	शु.
वर्ष.	६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
नक्षत्र.	आ. पु. पु. आश्ले.	म. पू.फा. उ.फा. ०	ह. चि. स्वा. वि.	अनु. ज्ये. मू. ०	पू.षा. उ.षा. अभि. श्र.	ध. श. पू.भा. ०	उ.भा. रे. अ. भ.	कृ. रो. मृ. ०

अथ योगिनीदशाक्रमः ।

मंगला पिंगला चैव धान्या भ्रामरिभद्रिके ।
उल्का सिद्धा संकटा च योगिनी च दशाः स्मृताः ॥ ७ ॥

मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा यह योगिनीकी दशा विद्वानोंने कही है ॥ ७ ॥

अथ मंगलादिदशास्वामिनः ।

मंगलायाः शशी स्वामी पिंगलाया दिवापतिः ।

धान्याधिपो देवपूज्यो भूमिजो भ्रामरीपतिः ॥ ८ ॥
भद्रिकाया बुधः प्रोक्त उल्कास्वामी शनैश्वरः ।
सिद्धाधिपो दैत्यपूज्यस्तमस्तु संकटाधिपः ॥ ९ ॥

मंगलादशाका चंद्रमा स्वामी है, पिंगलाका सूर्य स्वामी है, धान्याका बृहस्पति स्वामी है, भ्रामरीका मंगल पति है ॥ ८ ॥ भद्रिकाका बुध स्वामी है, उल्काका शनैश्वर स्वामी है, सिद्धादशाका शुक्र स्वामी है और संकटा दशाका राहु मालिक है ॥ ९ ॥

अथ योगिनीदशाप्रकारमाह ।

जन्मनक्षत्रपर्यंत गणयेद्रामसंयुतम् ।
अष्टभिर्भाजितं शेषं मंगलाद्या दशा भवेत् ॥ १० ॥

अश्विनीसे लेकर जन्मनक्षत्रपर्यंत गणना करे,उसमें तीन और जोड दे आठका भाग दे शेष बचे सो जन्मदशा जाननी चाहिये । यथा—किसी मनुष्यका जन्मनक्षत्र हस्त है तो अश्विन्यादिगणनासे तेरहवां हुआ, उसमें तीन और जोडे तो सोलह हुए आठका भाग दिया बचा शून्य तो उसकी जन्मदशा संकटा हुई, भुक्तभोग विंशोत्तरीके समान बनाना चाहिये॥ १०॥

अथ मंगलादिवर्षक्रमः ।

चंद्रो नेत्रे त्रयो वेदा बाणाः षड् गिरयो गजाः ।
योगिनीवत्सराः ख्याता हिमे गौर्य्यै शिवेन हि ॥ ११ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्याम-
संग्रहे दशावर्णनं नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

मंगलाकी एक वर्षकी, पिंगलाकी दो वर्षकी, धान्याकी तीन वर्षकी, भ्रामरीकी चार वर्षकी, भद्रिकाकी पांच वर्षकी; उल्काकी छः वर्षकी, सिद्धाकी सात वर्षकी और संकटाकी आठ वर्षकी दशा होती है ॥ ११॥

अथ योगिनीदशाचक्रम् ।

दशापति.	चंद्र.	सूर्य.	बृ.	मंगल.	बुध.	शनि.	शुक्र.	रा.
दशा.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	स.
वर्ष.	१	२	३	४	५	६	७	८
नक्षत्राणि.	आ. चि. श्र. कृ.	पुन. स्वा. ध. रो.	पु. वि. श. मृ.	आश्ले. अनु. पू.भा.	म. ज्ये. उ.भा.	पू.फा. मू. रे.	उ.फा. पू.षा. अ.	ह. उ.षा. भ.

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज्योतिषि-पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां दशा-वर्णनं नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथ अंतर्दशाध्यायप्रारंभः ।

तत्रादौ विंशोत्तरीदशांतराणि लिख्यंते ।

ये जो तीन प्रकारकी विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी इसी तरह योगिनी दशा-ओंके जो चक्र गणित करके स्पष्ट बनाये हैं इन चक्रके अंकोंमें दशाका संवत् और सूर्यस्पष्ट जोड देनेसे अंतरका चक्र बन जाता है ॥

अथ सूर्यदशांतराणि ।

सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्र.
०	०	०	०	०	०	०	०	१	व.
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	मा.
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	दि.

अथ चन्द्रदशांतराणि ।

चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्र.
०	०	१	१	१	१	०	१	०	व.
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.

अथ भौमदशांतराणि ।

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	श.	सू.	चं.	ग्र.
०	१	०	१	०	०	१	०	०	व.
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मा.
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	

अथ राहुदशांतराणि ।

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	ग्र.
२	२	२	२	१	३	०	१	१	व.
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	मा.
१२	२४	६	१८	८	०	२४	०	१८	दि.

अथ शनिदशांतराणि व० १० ।

ग्रह	श.	बृ.	रा.	शु.	सू.	चं.	मं.	बु.
व.	०	१	१	१	०	१	०	१
मा.	११	९	१	११	६	४	८	६
दि.	३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६
घ.	२०	२०	०	०	०	०	४०	४०

अथ.गुरुदशांतराणि व० १९ ।

ग्रह	बृ.	रा.	शु.	सू.	चं.	मं.	बु.	श.
व.	३	२	३	१	२	१	२	१
मा.	४	१	८	०	७	४	११	९
दि.	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३
घ.	२०	०	०	०	०	४०	४०	२०

अथ राहुदशांतराणि व० १२ ।

ग्रह	रा.	शु.	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	बृ.
वं.	१	२	०	१	०	१	१	२
मा.	४	४	८	८	१०	१०	१	१
दि.	०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शुक्रदशांतराणि व० २१ ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	बृ.	रा.
व.	४	१	२	१	३	१	३	२
मा.	१०	२	११	६	३	११	८	४
दि.	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०

अब मंगलादि योगिनीदशाके चक्र सहित अंतर लिखते हैं ।

अथ मंगलादशांतराणि व० १ ।

ग्रहद.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	०	०	१	१	१	२	२	२
दि.	१०	२०		१०	२०	०	१०	२०

अथ पिंगलांतराणि व० २ ।

ग्रहद.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	१	२	२	३	४	४	५	०
दि.	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०

अथ धान्यकादशांतराणि व० ३ ।

दशा.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	स.	मं.	पिं.
व.	५	०	०	०	०	०	०	०
मा.	३	४	५	६	७	८	१०	२
दि.	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भ्रामरीदशांतराणि व० ४ ।

दशा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	५	६	८	९	१०	१	२	४
दि.	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०

इन अंतर्दशाकि अंकोंमें जन्मकी दशका संवत् और सूर्य स्पष्ट जोड देनेसे हरएक जन्मपत्रीमें अंतर्दशाका चक्र पूरा हो जाता है ॥

अथ भद्रिकांतर्दशाचक्रम् व० ५ ।

दशा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.
व.	०	०	०	१	०	०	०	०
मा.	८	१०	११	१	१	३	५	६
दि.	१०	०	०	१०	२०	१०	०	१०

अथ उल्कादशांतराणि व० ६ ।

दशा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.
व.	१	१	१	०	०	०	०	०
मा.	०	२	४	२	४	६	८	१०
दि.	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सिद्धादशांतराणि व० ७ ।

दशा.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
व.	१	१	०	०	०	०	०	१
मा.	४	६	२	४	७	९	११	२
दि.	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०

अथ संकटादशांतराणि व० ८ ।

दशा.	स.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
व.	१	०	०	०	०	१	१	१
मा.	९	२	५	८	१०	१	४	६
दि.	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०

तिस्रो दशा ह्यतरसंयुताश्च या वर्णिता ज्योतिषशास्त्रविज्ञैः ।
लिखामि चक्रेषु विविच्य सर्वाः फलार्थसिद्ध्यै विदुषां सुखेन॥१॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालविरचिते ज्योतिषश्यामसंग्रहे अंतर्दशावर्णनं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां अंतर्दशावर्णनं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ।

अब इस सूक्ष्मांतर्दशाध्यायमें इक्यासी चक्र गणित करके स्पष्ट किये हैं, इन चक्रोंके अंकोंमें अंतर्दशाके चक्रका संवत् सूर्य स्पष्ट जोड देनेसे सूक्ष्मांतरका चक्र तैयार होता है ॥

अथ रविदशामध्ये रव्यन्तरं तन्मध्ये प्रत्यन्तराणि ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घ.	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशामध्ये चंद्रान्तरं तन्मध्ये प्रत्यन्तराणि ।

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दि.	१५	१०	२७	२	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशाभौमांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	७	१८	१६	१८	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशामध्ये गुरोरंतरं तन्मध्ये सर्वप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मा.	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि.	८	१५	१०	१४	१८	१३	२४	१६	१३
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशामध्ये बुधांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा	बृ.	श.
मा.	१	०	१	०	३	०	१	१	१
दि.	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२९	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशाभृगोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	२	०	१	०	१	०	१	१	०
दि.	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रदशाभौमांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दि.	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	२५	४५	१५	०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशाराहोरंतरं तन्मध्ये सर्वप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दि.	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४
प.	०	०	०	७	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशामध्ये शन्यंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दि.	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशाकेत्वंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१
पं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रदशाचंद्रांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दि.	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
पं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रदशाराहोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु	सू.	चं.	मं.
मा.	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दि.	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ.	०	०	३०	३	३०	०	०	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रदशामध्येगुर्वंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं	मं.	रा.
मा.	२	२	०	०	२	०	१	०	२
दि.	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रदशाशन्यंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दि.	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

अथ चंद्रदशाबुधांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दि.	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

अथ चंद्रदशाकेत्वंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दि.	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

अथ चंद्रदशाभृग्वंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दि.	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रदशारव्यंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

अथ भौमदशाभौमांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	१९	२३	२०	८	२	७	१२
घ.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

अथ भौमदशाराह्वोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमदशागुरोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मा.	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि.	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमदशाशन्यंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दि.	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

अथ भौमदशाबुधांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दि.	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

अथ भौमदशाभृगोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	२	०	१	०	२	२	२	१	०
दि.	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमदशाचंद्रांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
व.	०	०	१	०	१	०	०	१	०
मा.	१७	१२	१	२९	३	२८	१२	५	१०
दि.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशागुरोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मा.	३	४	४	०	४	१	२	१	४
दि.	१५	१६	२	२०	२७	१३	१२	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाबुधांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दि.	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१
प.	०	०	०	०	७	०	०	०	०

अथ भौमदशाकेतोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	१६	२०
घ.	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	३०	४९
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	०	३०

अथ भौमदशारवेरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मा.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
दि.	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाराहोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दि.	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाशनेरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.
मा.	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दि.	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८
प.	०	-	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाकेत्वंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दि.	२२	३	१०	१	२२	२६	२०	२८	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाभृगोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दि.	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाचंद्रान्तरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दि.	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोर्दशागुरोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मा.	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दि.	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोर्दशाबुधांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दि.	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घ.	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोर्दशाभृगोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दि.	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशारवेरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ राहोर्दशाभौमांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दि.	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोर्दशाशनेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दि.	२४	९	२३	२	१५	१६	१०	१६	१
घ.	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोर्दशाकेत्वंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दि.	१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७
घ.	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोर्दशारवेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	२४	२	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घ.	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोर्दशाचंद्रांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दि.	१०	२८	१२	४	१६	८	२४	२०	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोर्दशाराहोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	४	२	४	४	१	४	१	२	१
दि.	९	३५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशाबुधांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.
मा.	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दि.	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३
घ.	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

अथ शनिदशाभृगोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	६	१	३	२	५	५	६	४	२
दि.	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशाचंद्रांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दि.	१७	३	२५	१६	०	२०	३०	५	२८
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुरोर्दशाभौमांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दि.	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२४
घ.	३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशाशन्यंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दि.	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

अथ शनिदशाकेत्वंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दि.	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

अथ शनिदशारवेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घ.	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशाभौमांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दि	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घ.	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

अथ शनिदशाराहोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दि.	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घ.	५४	४८	५७	२१	५१	०	१८	३०	५१
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाबुधांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराण ।

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा	४	१	४	१	२	.	४	३	४
दि.	२	२०	२	१३	१२	२०	१०	२५	१५
घ.	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	२६	१६
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

अथ बुधदशाभृगोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दि.	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाचंद्रांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दि.	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घ.	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाराहोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	४	२	४	४	१	५	१	२	१
दि.	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घ.	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शनिदशागुरोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.
मा.	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दि.	१६	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घ.	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाकेत्वंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	के.	शु	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श	बु.
मा.	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दि.	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घ.	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

अथ बुधदशारवेरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	शं.	बु.	के.	शु.
मा.	७	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घ.	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाभौमांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	मं.	रा.	बृ	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दि.	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घ.	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५
प	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

अथ बुधदशागुरोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.
मा.	३	४	३	५	४	१	२	१	४
दि.	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशाशनेरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दि.	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घ.	२५	१६	३१	३०	१७	४५	३१	२१	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

अथ केतुदशाकेतोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

अथ केतुदशाभृगोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दि.	१०	२०	५	२४	३	२९	६	२८	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशारवेरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशाचंद्रांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दि.	१७	१२	१	२८	३	१९	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशाभौमांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

अथ केतुदशाराहोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशागुरोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.
मा.	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि.	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ केतुदशाशनेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दि.	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

अथ केतुदशाबुधांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ	श.
मा.	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दि.	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
प.	३०	३०	०	०	०	०	०	०	३०

अथ शुक्रदशाशुक्रांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मा.	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दि.	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ शुक्रदशारवेरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मा.	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दि.	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भृगुदशाचंद्रांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मा.	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दि.	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भृगुदशाभौमांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मा.	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दि.	२४	३	२६	६	२९	२४	१६	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भृगुदशाराहोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मा.	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दि.	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भृगुदशागुरोरंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि ।

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मा.	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दि.	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भृगुदशाशनेरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि ।

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.
मा.	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दि.	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भृगुदशाबुधांतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
मा.	४	५	५	१	२	१	५	४	५
दि.	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भृगुदशाकेतोरंतरंतन्मध्येप्रत्यंतराणि

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
मा.	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दि.	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

दशा चांतर्दशा चैव प्रत्यंतरमुदीरितम् ।
एकाशीतिमिदं चक्रं श्यामलालेन धीमता ॥ १ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि-पंडितश्यामलालविरचितायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां ज्योतिषश्याम-संग्रहे प्रत्यंतर्दशावर्णनं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

अथ भावाध्यायप्रारम्भः ।

तनुभावः ।

स्वोच्चे स्वोच्चनवांशे च शुभवर्गेऽथ नीचगे । नीचांशे क्रूरषड्वर्गे मित्रभे सुहृदंशके ॥ १ ॥ वर्गोत्तमेऽरिभेय्यंशे स्वर्क्षे द्वादशधा क्रमात् । फलं च तनुभावोत्थं कथ्यते यवनादिभिः ॥ २ ॥ सकलं च फलं तच्च भावेशस्य बलाबलात् । क्रूरेण युज्यमानस्य विशेषाद्विफलं भवेत् ॥ ३ ॥

अपने उच्चमें या उच्चके नवांशमें, शुभग्रहके वर्गमें अथवा नीचमें, नीचके नवांशमें, पापग्रहके वर्गमें, मित्रकी राशिमें, मित्रके नवांशमें, पापग्रहके नवांशमें ॥ १ ॥ वर्गोत्तम नवांशमें, शत्रुके नवांशमें, स्वक्षेत्रमें, ऐसा बारहप्रकार-करके क्रमसे तनुभावका फल यवनादि आचार्योंने कहा है ॥ २ ॥ सम्पूर्ण फल उस भावके स्वामीके बलाबलसे कहना चाहिये, जो भावेश पापग्रहयुत हो अथवा युद्धमें हारा हो, या सुप्त अवस्थामें स्थित हो, या अस्त हो तो वह ग्रह विशेषकरके निष्फल होता है ॥ ३ ॥

एवं शुभफलस्योक्तो निर्णयो भावनाथतः । अशुभस्य क्षय-स्तस्मिन्सबले विबलेऽथवा ॥ ४ ॥ तीव्रो १ दृढांगः २ सुभगो ३ रागी ४ लावण्यवर्जितः ५ । अंधो ६ दीर्घो ७ ऽथ

जटिलो ८ ऽधिकांगो ९ हीनकांगकः १०॥ ५ ॥ दीनः ११ स्या-न्नीतिरहितः १२ सूर्ये तनुगते क्रमात् ।

इस प्रकार उत्तम फल कहा गया, यह भावके स्वामी करके निर्णय किया । अशुभ क्षय फल उससे सबल वा निर्बल ग्रहकरके करे ॥ ४ ॥ तीव्र १, दृढांग २, सुभग ३, रागी ४, लावण्यरहित ५, अंध ६, दीर्घ ७, जटिल ८, अधिकांग ९, हीनांग १० ॥ ५ ॥ दीन ११, नीतिरहित १२; जो सूर्य तनुभावमें स्थित हो तो पूर्वोक्त बलाबलसे फल कहना चाहिये ॥

पूर्णो १ मनोहरः २ स्वच्छः ३ क्षीणो ४ रात्र्यं ५ धतान्वितः ६ ॥ ६ ॥ अतिस्वरूपे नियुतः ७ सुमुखो ८ रम्यकेशकः ९ ॥ स्थूलोष्ठो १० दीर्घपीनांसः ११ शुभोष्ठो १२ ऽब्जे तनुस्थिते ॥ ७ ॥ रक्तनेत्र १ श्चिपिटदृक् कर्कशाक्षो ३ऽन्धतायुतः ४ । नक्तांध ५ स्तिमिरोपेतो ६ वक्रदृक् ७ स्थूललोचनः ८ ॥ ८ ॥ नेत्ररोगी ९ दूरदर्शी १० कुदृष्टिः ११ सविचक्षणः १२। जन्मनीदं फलं भौमे तनुभावस्थिते क्रमात् ॥ ९ ॥

पूर्ण १, मनोहर २, स्वच्छ ३, क्षीण ४, रात्रि ५, अंधता ६ ॥ ६ ॥ अतिरूपवान् ७, श्रेष्ठ मुख ८, शोभायमान केश ९, मोटे होंठ १०, बडा भारी कंधा ११, सुंदर होंठवाला १२, जो चन्द्रमा लग्नमें स्थित हो तो पूर्वोक्त बलाबलक अनुसार फल कहे ॥ ७ ॥ रक्तनेत्र १, चुंदा २, कर्कशनेत्र ३, अंध ४, रात्रीका अंधा ५, तिमिरदृष्टि ६, टेडी दृष्टि ७ मोटे नेत्र ८ ॥ ८ ॥ नेत्ररोगी ९, दूरदशा १०, बुरी दृष्टि ११, श्रेष्ठ दृष्टि १२ जन्मकालके विषे मंगल तनुभावमें स्थित हो तो पूर्वोक्त क्रमसे फल जानना चाहिये ॥ ९ ॥

सुवक्रनासिकायुक्तः १ सुलंबोष्ठो २ ऽतिकांतिमान् ३ । दुर्गंधास्यो ४ दीर्घजिह्वो ५ दीर्घकर्णः ६ सितालकः ७ ॥ १० ॥

शुभकंठो ८ ऽतिशुभगः ९ कराल १० श्चपल ११ स्तथा।
मेदोवृद्ध्यातिपुष्टांगो १२ बुधे स्यात्तनुभावगे ॥ ११ ॥

अच्छा मुखारविंद शुभनासिका सहित १, अच्छे लंबे होंठ २, अतिस्वरूपवान् ३, दुर्गंधिवाला मुख ४, दीर्घ जिह्वा ५, दीर्घ कर्ण ६, श्वेत केश ७ ॥१०॥ शुभकंठ ८, अतिशोभायमान ९, कराल १०, चपल ११, मेदोवृद्धिसे पुष्टांग १२ जो बुध लग्नभावमें स्थित हो तो पूर्वोक्त फल क्रमसे कहना चाहिये ॥ ११ ॥

सुंदरः १ सुंदरकर्णः २ सुमुखो ३ रोगवर्जितः ४ । सुज्ञः ५ सुभूषः ६ सद्वस्त्रः ७ सुनाभिकटिसंयुतः ८ ॥ १२ ॥ शुभोदरः ९ क्रोडरोगी १० पांडुरोगसमन्वितः । सुलिंगता ११ऽतिसौभाग्यसंयुत १२ स्तनुगे गुरौ ॥ १३ ॥

सुंदर १, सुंदर कर्ण २, सुमुख ३, रोगरहित ४, श्रेष्ठ बुद्धि ५, श्रेष्ठ आभूषण ६, श्रेष्ठ वस्त्र ७, सुंदर नाभि कमर ८॥ १२ ॥ सुंदर उदर ९, कमरमें रोग १० अथवा पांडुरोग सहित, सुंदर लिंग ११, सौभाग्यसहित १२ जो बृहस्पति तनुभावमें प्राप्त हो तो पूर्वोक्त क्रमसे फल बलाबलसे कहने ॥ १३ ॥

स्वास्यजानुः १ सुकरपाद् २ विभक्तांगो ३ ऽल्पकेशकः । खल्वाटो ५ बहुरामाढ्यः ६ कांतिसौभाग्यसंयुतः ७ ॥ १४ ॥ सुमुखश्च ८ सुरूपश्च ९ कुब्जो १० विकृतगंधवान् ११ । नेत्राभिरामो १२ भृगुजे क्रमेण तनुभावगे ॥ १५ ॥

सुंदर मुख जानु १, सुंदर हाथ २, विभक्तांग ३, थोडे बाल ४, खल्वाट अर्थात् गंजा ५, बहुत रामादि ६, कांति सौभाग्य-

सहित ७ ॥१४॥ सुंदर मुख ८, सुंदर रूप९, कुबडा १०, बुरी गंधसहित ११, मध्यम नेत्र १२ जो शुक्र लग्नमें स्थित हो तो पूर्वोक्त बलाबलानुसार क्रमसे फल कहना चाहिये ॥ १५ ॥

श्यामवर्णो १ भिन्नवर्णो २ भिन्नांगो ३ भ्रमकासवान् ४। कफानिलाढ्यः ५ पित्ताढ्यो ६ गौरः ७ संततमस्थिमान् ८. ॥१६॥
स्थूलनखता तु ९ सूक्ष्मनेत्र १० स्ताभ्यां समन्वितः । स्थूलदेहो ११ दीर्घजानुः १२ शनौ स्यात्तनुभावगे ॥ १७ ॥

श्यामवर्ण १, भिन्न वर्ण २, भिन्नांग ३, भ्रम कांस ४, कफवातसहित ५, पित्ताढ्य ६, गौर ७, निरन्तर अस्थिसहित ८ ॥ १६ ॥ मोटे नख ९, सूक्ष्मनेत्र १०, मोटे दांत ११ दीर्घ जानु १२, जो शनैश्चर तनुभावमें स्थित हो तो क्रमसे पूर्वोक्त बलाबलके अनुसार फल कहना चाहिये ॥ १७ ॥

अथ तनुभावस्थितराशिफलम् ।

मेषोदये रक्ततनुर्मनुष्यः सदाल्पबुद्धिः परनिर्जितश्च ।
पित्ताधिकः सर्वजनोपसेव्यः सर्वाशनो बुद्धिविचक्षणश्च ॥१८॥

मेष लग्नमें जो मनुष्य हो सो लाल देह, सदा अल्पबुद्धि, परनिर्जित, अधिक पित्तवाला, सम्पूर्ण मनुष्योंकरके सेवनीय, सर्व भोजन करनेवाला तथा बडा चतुर होता है ॥ १८ ॥

वृषोदये श्वेततनुर्मनुष्यः श्लेष्माधिकः क्रोधयुतः कृतघ्नः ।
सुमंदबुद्धिः स्थिरतासमेतः पराजितः स्त्रीभृतकैः सदैव ॥१९॥
तृतीयलग्ने पुरुषोऽतिगौरः स्त्रीरक्तचित्तो नृपपीडीतश्च ।
जनप्रियो वाग्विभवेन युक्तः सुशीलयोगी सविक्षणः स्यात् २०

वृषलग्नमें जिस मनुष्यका जन्म हो सो मनुष्य गौर शरीरवाला-कफकी प्रकृतियुक्त,क्रोधसहित,कृतघ्न अर्थात् उपकारको न माननेवाला-

मंदबुद्धि, स्थिरतायुक्त स्त्री और नौकरोंकरके सदैव पराजित होता है॥ १९॥ जिस मनुष्यका मिथुन लग्नमें जन्म हो सो अतिगौर, स्त्रियोंमें रक्त चित्त जिसका, राजाकरके पीडित, मनुष्योंको प्यारा, वाणी और विनयकरके सहित, सुंदर शीलवान्, योगी तथा चतुर होता है ॥ २० ॥

कर्कोदये गौरवपुर्मनुष्यः पित्ताधिकः कल्पतरुप्रगल्भः ।
जलावगाहानुरतोऽतिबुद्धिः शुचिः क्षमी धर्मरुचिः सुसेव्यः॥२१॥
सिंहोदये पांडुतनुर्मनुष्यः पित्तानिलाभ्यां परिपीडितांगः ।
प्रियामिषो मूर्खजनः सुतीक्ष्णः शूरः प्रगल्भः सुरतो निरीहः २२॥

कर्कलग्नमें जिस मनुष्यका जन्म होता है सो मनुष्य गौर शरीरवाला, अधिकपित्तवाला, दाता, प्रगल्भ, जलक्रीडामें रत, अतिबुद्धिमान्, पवित्र, दयावान्, धर्ममें रुचि, श्रेष्ठ मनुष्यकरके सेव्य होता है ॥२१॥ सिंहलग्नमें जिसका जन्म होता है सो मनुष्य पांडुशरीरवाला, पित्त और अनिल-करके परिपीडित अंग जिसका, मांस प्रिय जिसको, मूर्ख, तीक्ष्ण, शूर, प्रगल्भ, सुरत तथा निरीह होता है ॥ २२ ॥

कन्याविलग्ने कफपित्तयुक्तो भवेन्मनुष्यः शुभकांतियुक्तः ।
श्लेष्मप्रजःस्त्रीविजितोऽतिभीरुःकर्माधिकः शीलयुतो नरः स्यात्२३
तुलाविलग्ने च भवेन्मनुष्यः श्लेष्मायुतः सत्यरतः सदैव ।
धने रतिर्धर्मसुकर्मयुक्तः सुरार्चने प्रीतियुतः सदैव ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यका जन्म कन्यालग्नमें हो सो मनुष्य कफपित्तकरके सहित श्रेष्ठकांतियुक्त, श्लेष्माकरके कन्याकी संतान जिसके, स्त्रियोंकरके जीता हुआ, अधिक कर्मवान् तथा शीलवान् होता है॥ २३ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुला हो सो मनुष्य कफकरके सहित, सत्यमें प्रीति सदा जिसकी, धनमें रत, धर्मकर्मकरके युक्त तथा सदैव काल देवताओंके पूज-नमें प्रीति करनेवाला हो ॥ २४ ॥

लग्नेऽष्टमे कोपरतो न सह्यो भवेन्मनुष्यो नृपपूजितांगः ।
गुणान्वितः शास्त्रकथानुरक्तः प्रमर्दकः शत्रुगणस्य नित्यम्॥२५॥

जिस मनुष्यका जन्म वृश्चिकलग्नमें होता है सो मनुष्य क्रोधयुक्त, असहनशील, राजोंकरके पूजित, गुणोंकरके सहित, शास्त्रकी कथामें प्रीति करनेवाला तथा सदैवकाल शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ २५ ॥

धनोदये राजयुतो मनुष्यः कार्ये सुतीव्रो द्विजदेवरक्तः ।
तुरंगयुक्तः सुहृदाः प्रयुक्तस्तुरंगजंघश्च भवेत्सदैव ॥ २६ ॥
मृगोदये तोषरतः सुतीव्रो भीरुः सदा पण्यनिषेवकश्च ।
श्लेष्मानिलाभ्यां परिपीडितांगः सुदीर्घनेत्रः परवंचकश्च॥२७॥

धनलग्नमें जिस मनुष्यका जन्म हो वह मनुष्य राजासे संयुक्त, कार्यके विषे तीव्र, ब्राह्मण और देवताओंमें तत्पर, घोडेकरके सहित, मित्रोंकरके युक्त, घोडेकीसी जांघवाला सदैव होता है ॥ २६ ॥ जिस मनुष्यकी मकरलग्नमें उत्पत्ति होती है सो मनुष्य संतोषकरके संयुक्त, तीव्र, डरपोक, सदैव रोजगारका सेवन करनेवाला, कफ और अनिलसे परिपीडित अंगवाला, अच्छे बडे नेत्रवाला तथा परपुरुषोंका वंचक होता है ॥ २७ ॥

घटोदये सुस्थिरतासमेतो वाताधिकस्तोयनिषेवणोक्तः ।
सुहृत्स्वगात्रः प्रमदास्वभीष्टः शिष्टानुरक्तो जनवल्लभश्च ॥ २८॥
मीनोदये तोयरतो मनुष्यो भवेद्विनीतः सुरतानुकूले ।
सुपंडितः स्त्रीदयितः प्रचंडः पित्ताधिकः कीर्तिसमन्वितश्च॥२९॥

कुंभलग्नमें जिसकी उत्पत्ति हो सो मनुष्य सुस्थिरतायुक्त, अधिक वातवाला, जलका सेवन करनेवाला, उत्तम शरीर और स्त्रीभी जिसकी स्वरूपवती, अच्छे मनुष्योंकरके युक्त तथा पुरुषोंको प्यारा होता है ॥ २८ ॥ मीनलग्नमें जिसका जन्म हो सो मनुष्य जलम रत, नम्रतासहित, अच्छी रतिके अनुकूल, श्रेष्ठपंडित, स्त्रीप्रिय, प्रंचड, पित्ताधिक तथा कीर्तियुक्त होताहै ॥२९॥

अथ तनुस्वामिनो द्वादशभावस्थफलम् ।

तत्र वृद्धयवनः ।

लग्नाधिपे लग्नगते नीरोगं दीर्घजीवनं कुरुते । अतिबलं भवति पतिं वा भूत्वा लाभसमन्वितम् ॥ ३० ॥ जातो लग्नपतिर्धन-

भवने धनवंतं विपुलजीवितम् । स्थूलं स्थानप्रधानमहर्निशं सत्कर्मरतं नरं कुरुते ॥ ३१ ॥ सहजगतो लग्नपतिः सुबंधुप्रवरमित्रपरिकलितम् । दातारं शूरं सबलं करोति नरं सदा ॥ ३२ ॥ लग्नेशस्तुर्यगतो नृपप्रियं प्रचुरजीवितं पुरुषम् । सल्लब्धियुतं पित्रोर्भक्तं तु बहुभोजनं कुरुते ॥ ३३ ॥

जन्मलग्नपति जो लग्नमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य रोगरहित, दीर्घ जीवनवाला, अत्यंत बलयुक्त, पति तथा लाभसहित होता है॥ ३०॥ जिसके लग्नपति धनभवनमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य धनवान्, बहुत जीनेवाला, स्थूल, स्थानमें प्रधान तथा रातदिन अच्छे कर्मोंमें रत होता है ॥ ३१ ॥ जिसके जन्मलग्नपति तीसरे स्थानमें प्राप्त हो उस मनुष्यके अच्छे भाई, बलवान् मित्र होते हैं और वह मनुष्य दाता, शूर तथा सदैव बलवान् होता है॥३२॥ जिस मनुष्यके लग्नेश चतुर्थस्थानमें स्थित हो वह मनुष्य राजाको प्यारा, दीर्घ अवस्थातक जीता है, अच्छी प्राप्तिसहित, पिताका भक्त तथा बहुत भोजन करनेवाला होता है ॥ ३३ ॥

पंचमगो लग्नपतिः ससुतं सत्यागमीश्वरं विदितम् । बहुजीवितं सुशील सुकर्मनिरतं तनुते ॥ ३४ ॥ रिपुभवने लग्नेशो नीरोगं भूमिलाभदं सबलम् । कृपणंधनिनमरिघ्नंस्वकर्मपक्षान्वितं कुरुते ॥३५॥ प्रथमपतौ सप्तमगे तेजस्वी शीलवान्भवेत्पुरुषः । तद्भार्यापि सुशीला तेजोयुक्ता तथा सुरूपा च३६

जिसके जन्मकालमें जन्मलग्नपति पंचमभावमें स्थित हो वह पुरुष पुत्रवान्, त्यागीकरके विदित, बहुतकाल जीनेवाला, सुशील, अच्छे कर्मोंमें तत्पर होता है ॥३४॥ जिसके छठे स्थानमें लग्नपति हो वह मनुष्य रोगी, पृथिवीका लाभदायक, बलवान्, कृपण, धनवान्, वैरियोंका नाश करनेवाला तथा अपने पक्षकरके सहित होता है ॥ ३५ ॥ जन्मलग्नपति सातवें भावमें स्थित हो तो वह मनुष्य तेजस्वी तथा शीलवान् होता

है और उस मनुष्यकी स्त्री भी अच्छे स्वभावाली, तेजस्विनी तथा रूपवती होती है ॥ ३६ ॥

प्रथमपतौ चाष्टमगे कृपणे धनसंचयकः सुदीर्घायुः। क्रूरे खचरे कटुजल्पकश्च वपुषा भवेत्पीतः॥३७॥ मूर्तिपतिर्यदि नवमस्तदा भवेत्प्रवरबांधवः सुकृती । सर्वसौख्यश्च सुशीलः सुकृतः ख्यातः स्वतेजस्वी ॥ ३८ ॥ प्रथमपतौ दशमस्थे नृपपूज्यः पंडितः सुशीलश्च । गुरुमातृपितृपूजनमतिर्नृपः समृद्धः पुमान् भवति ॥ ३९ ॥

जन्मलग्नपति अष्टमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य कृपण, धनका संचय करनेवाला, बडी आयुष्यवाला हो और जो पापग्रह हो तो दुष्ट वचन बोलनेवाला तथा पापी हो॥३७॥जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नपति नवम भावमें स्थित हो वह मनुष्य बलवान्, भाईयोंकरके सहित अच्छे कर्म करनेवाला,संपूर्ण सौख्यकरके सहित, श्रेष्ठस्वभावयुक्त, श्रेष्ठकरके विख्यात तथा आप तेजस्वी होता है ॥३८॥ जन्मलग्नपति दशमस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य राजपूज्य, पंडित, सुशीलयुक्त, गुरु और मातापिताके पूजनमें मति जिसकी, ऋद्धियोंकरके सहित तथा राजा होताहै ३९

एकादशगतस्तनुपतिः सुजीवितं सुतसमन्वितं विदितम् ।
तेजस्कलितं कुरुते पुरुषं बलिनं वाहनसंयुतम् ॥ ४० ॥
द्वादशगे मूर्तिपतौ पटुवाग्वादं करोति मतिमांश्च ।
सह गोत्रकैर्मिलनभे विदेशगो दत्तभुक्तनरः ॥ ४१ ॥

जन्मलग्नपति ग्यारहवें स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य अच्छी तरहसे जीनेवाला, पुत्रसहित, विख्यात, अधिक तेजकरके शोभायमान, बलवान् तथा वाहनकरके संयुक्त होता है ॥४०॥ जिसके जन्मलग्नपति बारहवें स्थानमें स्थित हो सो पुरुष चतुर वाणीके वादका करनेवाला, बुद्धिमान् अपने कुटुंबियोंसे मिलनेवाला, परदेशमें रहनेवाला तथा दत्तभुक्त होताहै ४१

अथ धनभावविचारः ।

अथ धनभावे किंचित्फलमित्युक्तं जातकाभरणे–स्वर्णादि-धातुक्रयविक्रयाश्च रत्नादिकोशादिकसंग्रहश्च । एतत्समस्तं परिचिंतनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ ४२ ॥ अथ जातकसारे–धनस्वामी सुखे खेटैर्युग्दृष्टो धनवृद्धिदः । क्षीणें दुपापयुक् दृष्टो विना स्वर्क्षं धनापहः ॥४३॥ सारावल्याम्–रवितनयो भौमरवी कुटुंबसंस्था विलोकनाद्वापि । कुर्वंति धनविनाशं क्षीणेन्दुनिरीक्षिता विशेषेण ॥ ४४ ॥

स्वर्णको आदि लेकर जो धातु हैं उनके क्रय विक्रय करना, रत्नोंको आदि लेकर खजानेका संग्रह करना ये समस्त बातें धनस्थान करके विचारने योग्य हैं ऐसा पंडितोंने कहा है ॥४२॥ जो धनभवनका स्वामी शुभग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट हो तो धनकी वृद्धि देनेवाला होता है । क्षीण चंद्रमा और पापग्रहकरके धनभावका स्वामी युक्त वा दृष्ट हो तो धनका नाश करनेवाला होता है और जो वह पापग्रह अपने स्थानका हो तो नाश नहीं करता है ॥४३॥ शनैश्चर, मंगल, सूर्य जो द्वितीय स्थानको देखते हों अथवा स्थित हों तो धनका नाश करते हैं और इसी तरह क्षीण चंद्रमाका भी फल जानना चाहिये ॥ ४४ ॥

मन्दस्तु धनस्थाने महर्थयुक्तं बुधेक्षितः कुरुते । रविरपि निधनं जनयति यमेक्षितः शस्यतेऽन्यदृष्टश्च ॥४५॥ सौम्यः कुटुंबराशौ बहुप्रकारं धनदं बुधदृष्टः । त्रिदशगुरुः कुटुंबराशौ च निःस्वां कुरुते सोमम् ॥ ४६ ॥ तनयोऽपि शशिना निरीक्षितो हंति सर्वधनम् । चन्द्रोऽपि धनस्थाने क्षीणो बुधवीक्षितः सदा कुरुते ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर धनस्थानमें स्थित हो और बुधकरके दृष्ट हो तो बहुत धनवान् करे और उसी धनस्थानमें सूर्य स्थित हो उसको शनैश्चर देखता है तो धनहीन करता है, अन्य शुभ ग्रहोंकरके

दृष्ट हो तो शुभ फल देता है ॥४५॥ जो शुभग्रह कुटुंबस्थान अर्थात् दूसरे स्थित हो और बुधकरके दृष्ट हो तो बहुत प्रकार धन प्राप्त कराते हैं और धनभावमें चंद्रसहित बृहस्पति स्थित हो तो भी निरंतर धनवान् करे ॥ ४६ ॥ और बुध पापग्रहसहित कहीं स्थित हो तो सम्पूर्ण धनका नाश करता है और क्षीण चंद्रमा धनस्थानमें स्थित हो बुधकरके दृष्ट हो तो भी धननाश करता है ॥ ४७ ॥

धनस्थानगते जीवे धनी भवति बालकः । बुधे तत्रैव भोगी स्याच्छुक्रे भूमिपतिर्भवेत् ॥४८॥ धनस्थाने यदा चन्द्रः पंचमस्थो यदा रविः । तदा धनक्षयं विद्याद्दशवर्षाणि निश्चितः ॥४९॥ धनभावगतः सूर्यो धननाशमहर्निशम् । करोति निर्धनं चाथ ताम्रवित्तं ददाति च ॥ ५० ॥ वैद्यकांचनयुक्तश्च मणिरत्नधनो भवेत् । कर्पूरचंदनामोदी धने कुमुदबांधवे॥५१॥ कृषको विक्रयी भोगी प्रवासी निर्धनो भवेत् । धातुवादकरो नित्यं धनस्थे धरणीसुते ॥ ५२ ॥

जिसके धनस्थानमें बृहस्पति स्थित हो तो वह बालक धनवान् होता है और उसी धनस्थानमें बुध स्थित हो तो भी वह मनुष्य धनका भोग करनेवाला होता है और जो शुक्र हो तो धरतीका मालिक होता है ॥४८॥ जिसके धनस्थानमें चन्द्रमा स्थित हो और पंचमस्थानमें सूर्य हो तो उस मनुष्यका धन दश वर्षमें नाश होता है॥४९॥ धनस्थानमें जो सूर्य स्थित हो तो उस मनुष्यका धन सर्वदा नाशको प्राप्त होता है और उस मनुष्यको निर्धन करते हैं; तांबेका धन देते हैं॥५०॥जिसके धनस्थानमें चन्द्रमा स्थित हों उसे वैद्य; कांचनकरके युक्त, मणि और रत्नका धनी करते हैं, कर्पूर चंदनादि प्राप्त करते हैं ॥ ५१ ॥ जिसके धनस्थानमें मंगल स्थित हो वह खेतीका करनेवाला; भोगी, परदेशमें विचरनेवाला, धनहीन तथा धातुके वादमें चतुर हो ॥ ५२ ॥

धनं ददाति बहुधा नाशयेच्चंद्रवीक्षितः । त्वग्दोषं कुरुते नित्यं सोमपुत्रः कुटुंबकः ॥५३॥ लक्ष्मीवान् नित्यमुत्साही धनस्थे देवतागुरौ । बुधदृष्टे तु निःस्वः स्यादिति सत्यं प्रभाषते ॥ ५४ ॥ विद्यार्जितधनो नित्यं स्त्रीधनैरथवा धनी । शुभदृष्टः शुभक्षेत्रे बुधदृष्टौ भृगौ धनी ॥ ५५ ॥ काष्ठांगारलोहधनः कुकर्मधनसंचयः । नीचविद्यानुरक्तश्च दानी वा मन्दगे धने ॥ ५६ ॥ शुभा धनस्थिताः कुर्युर्वाग्मिनं प्रियभोजनम् । क्रूराः प्रोक्ता विशेषेण कदापि बहुभाषणम् ॥ ५७ ॥ मत्स्यमांसधनो नित्यं नखचर्मास्थिविक्रयी । जीविका चौरवृत्त्या च राहौ धनगते नरः ॥ ५८ ॥ द्वितीये भवने केतौ धनहानिः प्रजायते । नीचसंज्ञी च दुष्टात्मा सुखसौभाग्यवर्जितः ॥ ५९ ॥

धन बहुत प्रकारका देता है, नाश भी करता है, जो चंद्रमा देखता हो, त्वचामें दोष सदैव करे, जिसके धनस्थानमें चन्द्रमाका पुत्र बुध स्थित हो ॥ ५३ ॥ धनवान् नित्य ही उत्साही होता है, जिसके धनस्थानमें बृहस्पति स्थित हो और बुधकरके दृष्ट हो तो निर्धनी करता है यह सत्य ही कहते हैं ॥५४॥ विद्याकरके पैदा किया धन अथवा स्त्रीके धनकरके धनवान् होता है । शुभ ग्रहकरके दृष्ट शुभस्थानमें बुध करके दृष्ट शुक्र हो तो भी धनवान् हो ॥५५॥ काष्ठ, अंगार, लोह, धन, खोटे कर्मों-करके करा है धन इकट्ठा; नीच विद्यामें तत्पर, दानी जिसके धनस्थानमें शनैश्चर हो ॥५६॥ जो शुभ ग्रह धनस्थानमें स्थित हो तो श्रेष्ठ वाणीका बोलनेवाला, प्रिय भोजन करनेवाला और पापग्रह धनस्थानमें स्थित हो तो विशेषकरके बहुत बोलनेवाला होता है ॥५७॥ मच्छी मांस खानेवाला, नख चमडा हाडको बेचकरके धनसंचय करे और चोरवृत्ति करके धन पैदा करे जिसके धनस्थानमें राहु स्थित हो ॥ ५८ ॥ जिसके दूसरे स्थानमें

केतु स्थित हो तो उस मनुष्यकी धनहानि होती है नीचोंका संग करनेवाला, दुष्टात्मा, सुख और सौभाग्यरहित होता है ॥ ५९ ॥

अथ धनभावविशेषफलम् ।

स्वोच्चे स्वोच्चनवांशे च शुभवर्गेऽथ नीचगे । नीचांशे क्रूरषड्वर्गे मित्रभे सुहृदंशके ॥ ६० ॥ वर्गोत्तमेऽरिभेर्यंशे स्वर्क्षे द्वादशधा क्रमात् । फलं च धनभावेऽल्पं कथ्यते यवनोदितम् ॥ ६१ ॥ चित्तं नृपतिमानोत्थै १ नृपसेवासमुद्भवम् २ । सुलोकदत्तं ३ पापोत्थं ४ स्थूलजं ५ चौर्यसंगमात् ६ ॥ ६२ ॥ कामात् ७ लोभात् ८ परस्त्रीतः ९ स्वल्पं च १० धनसेवया ११ । भृत्यं १२ तु धनभावस्थे भास्करे लभते नरः ॥ ६३ ॥

अपने उच्चमें १, उच्चके नवांशमें २, शुभ ग्रहके वर्गमें ३, नीचमें ४, नीचके नवांशमें ५, पापग्रहोंके वर्गमें ६, अपने मित्रकी राशिमें ७, अपने मित्रके नवांशमें ८॥६०॥ वर्गोत्तममें ९, शत्रुकी राशिमें १०,शत्रुके नवांशमें ११ और अपनी राशिमें १२जो ग्रह स्थित हों उनका बारहप्रकारका क्रमसे यवनाचार्यने फल कहा है ॥ ६१ ॥ राजोंकरके माननीय चित्त १, राजाकी सेवाकरके उत्पन्न हुआ २, अच्छे मनुष्योंकरके दिया हुआ ३, पापकरके उत्पन्न ४, स्थूलज ५, चोरके संगसे ६ ॥६२॥ कामसे ७, लोभसे ८, पराई स्त्रीकरके ९, थोडा धन १०,सेवासे ११ तथा नौकरसे १२ जो पूर्वोक्त प्रकारोंमेंसे जिस प्रकारका सूर्य धनभावमें स्थित हो तो उन बारहप्रकारके फलोंमेंसे क्रमकरके वैसा ही फल जानना चाहिये॥६३॥

व्ययहीनं १ पापभवं २ सुतजं ३ कृषिसंभवम् ४ । सुहृद् ५ दुर्जन ६ स्त्री ७ यज्ञं ८धनहीनं ९ च कर्मजम् १० ॥ ६४ ॥ पूर्वोपार्जितं ११ चन्द्रे धनभावगते धनम् १२ । विततः क्षीण- १ बहुलं २ पूर्वजायं ३ क्षितीशजम् ४ ॥ ६५ ॥ कृपणं ५ पण्यतो लब्धं ६ परदेशजसंगजम् ७ । नृपजं ८ नृपपुत्रोत्थं

९ शत्रुतो १० वरकर्मजम् ११॥६६॥ म्लेच्छपुत्रात्सुजनितं १२ शुक्रे धनगते क्रमात् । रक्तयुक्ते १ हेमयुक्ते २ स्वर्णा ३ द्धर्मात् ४ कुकर्मजम् ५ ॥ ६७ ॥ ऋणी ६ स्वदेशत्यागेन ७ मित्रवर्गेण संभवम् ८॥ सुहृद्वचनतो लब्धि ९ गुरुदेवादिसे- वनात् १० ॥ हीनं ११ स्वजनविद्वेषात् १२ भूमिपुत्रे धनस्थिते ॥ ६८ ॥

व्ययकरके हीन० १, पापकरके उत्पन्न २, सुतकरके उत्पन्न ३, खेती करके पैदा हुआ ४, मित्रोंकरके ५, दुष्ट जनोंसे ६, स्त्रीके द्वारा ७, यज्ञसे ८, धनहीन ९, कर्मसे उत्पन्न १०॥६४॥ पहिलेका पैदा किया हुआ ११, चन्द्रमा धनभावमें जिस प्रकार स्थित हो उसी प्रकारसे क्रमसे धन कहना अथवा अधम धन कहना १२। धनकरके धन १, क्षीण बहुत २, पूर्वजाय ३, राजाकरके ४ ॥ ६५ ॥ कृपण ५, व्यापारकरके ६, पर- देशीके संगसे ७, राजाकरके८, राजपुत्रकरके ९, शत्रुसे १०, श्रेष्ठकर्म- करके उत्पन्न ११ ॥६६॥ म्लेच्छपुत्रकरके पैदा हुआ १२। जिसके शुक्र धनभावमें स्थित हो क्रमकरके रक्तयुक्त १, सुवर्णकरके युक्त २, सुवर्णसे ३, धर्मसे ४, खोटे कर्म करके पैदा किया ५॥ ६७ ॥ कर्जबंद ६ अपना देश त्याग करके ७, मित्रोंकरके पैदा किया ८, सुहृदके वचनसे प्राप्त ९, गुरुदेवताओंकी सेवासे १०, हीन ११ तथा अपने मनुष्योंके वैरसे १२, जो मंगल धनस्थानमें स्थित हो तो क्रमकरके ॥ ६८ ॥

भूमिजं १ सस्य २ पशुजं ३ बहुपापसमुद्भवम् ४ ॥ निकृष्टता- ५ समुद्भूतं ६ निंद्यकर्म ७ रिपूद्भवम् ८ ॥ ६९ ॥ कृषिजं भूरिवाणिज्यं ९ जनसेवासमुद्भवम् १० ॥ शत्रुसेवाभवं ११ स्वल्पं १२ धनस्थानगते बुधे ॥७०॥ वित्त न्यायार्जितं १ विप्रसाधुदत्तं २ क्षितीशजम् ३॥ परदारसमुद्भूतं ४ सत्यजोत्थं

५ च काष्ठजम् ६ ॥ ७१ ॥ गजाश्ववस्त्रसंभूतं ७ कृषिजं च ८ जनार्पितम् ९ । रिपुदास्यं १० दरिद्रत्वं ११ निर्धनं १२ धनगे गुरौ ॥ ७२ ॥ वित्तं कुकर्मजातालपं १ कष्टजं २ व्यसनोद्भवम् ३ । दुःखनिर्घृणताक्लेशा ४ त्सत्यजोत्थं च ५ पापजम् ६ ॥ ७३ ॥ अस्थिजं ७ मृन्मयं चैव ८ जलजं ९ पापमेव च १० । दास्यजं ११ परमोत्थं च १२ शनौ धनगते क्रमात् ॥ ७४ ॥

पृथ्वीकरके उत्पन्न १, अन्नकरके २, पशुकरके ३, बहुत पापकरके ४, निकृष्ट ५, पैदा किया हुआ ६, निंद्य कर्मसे ७, शंत्रु करके ८ ॥ ६९ ॥ खेतीकरके उत्पन्न अथवा बहु वाणिज्यसे ९, मनुष्योंकी सेवासे १०, शत्रुकी सेवासे ११, स्वल्प १२ जो धनस्थानमें बुध स्थित हो ॥ ७० ॥ न्याय करके धन पैदा किया १, ब्राह्मण साधु करके दिया हुआ २, राजाकरके ३, पराई स्त्रीकरके ४, सत्यकर्म करके ५, काष्ठकरके पैदा हुआ ६ ॥ ७१ ॥ हाथी घोडा वस्त्रकरके उत्पन्न ७, खेतीकरके ८, जनोंकरके दिया ९, शत्रु और दासकरके १०, दरिद्री ११, धनहीन १२, जो धन स्थानमें गुरु स्थित हो ॥ ७२ ॥ बुरे कर्मोंसे पैदा किया १, कष्टकरके २, व्यसनकरके पैदा हुआ ३, दुःख निर्घृणता क्लेशकरके ४, सत्यकरके ५,पापकरके पैदा हुआ ६ ॥ ७३ ॥ हाडकरके धन पैदा करे ७, मट्टीकरके ८, जलकरके ९, तैसेही पापकरके १०, दासकरके ११, परमोत्थ १२, जो शनैश्वर धनस्थानमें क्रमसे पूर्वोक्त प्रकारकरके स्थित हो तो ॥ ७४ ॥

सहस्रनाथो दिनपः प्रदिष्टो लक्षाधिपो रात्रिकरः सदैव ।
शताधिपो भूतनयः सदैव कोटीश्वरः सोमसुतः सदैव ॥ ७५ ॥
खर्वाधिनाथः सुरराजमंत्री शक्रोऽस्य शंखः शनिरल्पतुल्यः ।
स्वतुंगगाः स्युर्यदि सर्व एते तयोंऽतराले त्वनुपाततः स्यात् ७६॥

जो धनस्थानमें सूर्य स्थित हो, उच्चराशिमें हो तो वह मनुष्य सहस्राधिपति होता है, चन्द्रमा लक्षाधीश करता है, मंगल हो तो शताधिपति करता है, बुध उच्चका द्वितीयस्थानमें स्थित हो तो कोट्यधिपति करता है ॥ ७५ ॥ बृहस्पति खर्वाधिपति करता है और शुक्र हो तो शंखपति होता है और शनैश्चर हो तो शताधिपति करे, जो पूर्वोक्त ग्रह अपने उच्चमें हों तो ऐसा फल करे और अपने उच्चसे लेकर और अपने नीचस्थानपर्यंत जिन राशियोंमें स्थित हो उसको त्रैराशिक करनेसे सिद्ध होगा ॥ ७६ ॥

अथ धनभावस्थितराशिफलम् ।

मेषे धनस्थे कुरुते मनुष्यो धनं स पुण्यैर्विबुधैः प्रभूतम् । चतुष्पदाढ्यो बहुबांधवाढ्यः प्रयच्छति प्रीतिपरः सदैव ॥ ७७ ॥ वृषे धनस्थे लभते मनुष्यः कृषिप्रयत्नेन धनं सदैव । अन्नाभिधानं च चतुष्पदाख्यं भवेन्मनुष्यो मणिमौक्तिकैर्युक् ॥७८॥

जो मेष राशि धनस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य अच्छे पुण्यों करके अनेक प्रकारका धन करे, चतुष्पादकरके युक्त वह बांधव करके सहित प्रीतिका करनेवाला होता है ॥७७॥ और जो वृषराशि धनस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य खेतीके करनेसे धनवान् होता है, चतुष्पाद और मणि मोतीकरके युक्त सदैव काल मनुष्य होता है ॥ ७८ ॥

तृतीयलग्ने धनगे मनुष्यो धनं भवेत्स्त्रीजनितं च नित्यम् । कर्के तथा चेत् सबलं स्वरूपं न याति तृप्तिं वनितासु नूनम् ॥ ॥ ७९ ॥ सिंहे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं सदारण्यजनोत्थमान्तम् । सर्वोपकारं प्रवणप्रभूतं स्वविक्रमोपार्जितमेव नित्यम् ॥

१ सहस्रं सूर्यो, लक्षं विधुः, शतं कुजः, बुधः कोटिम्, गुरुः खर्वं, शुक्रः शंखं, शनिः शतम् । दद्युरत्युच्चगाः खेठास्ततो न्यूनं क्रमाद्धनम् । निजस्थानानुरूपं च सुदशासु यथोदितम् ॥ अत्रानुपातः स्थानबलोक्तः पादोनं च बलं त्रिकोणं गृहगे क्ष्वक्षर्दलं च त्रयो वस्वांशाधिमित्रमेव वरणो मित्रसमक्षेष्ट इति ॥

॥ ८० ॥ कन्योदये वित्तगते मनुष्यो धनं लभेद्भूमिपतेः सकाशात् । हिरण्यमुक्ताफलविद्रुमं स्याद् गजाश्वनाना-विविधं धनं भवेत् ॥ ८१ ॥

जिसके धनस्थानमें मिथुन लग्न स्थित हो तौ वह मनुष्य स्त्रीजनित द्रव्यवान् हो और जो कर्कराशि धनस्थानमें हो तो वह मनुष्य बलसहित रूपवान् होता है, उसको स्त्रियोंसे तृप्ति नहीं होती है ॥७९॥ जिसके धन स्थानमें सिंहराशि स्थित हो तो वह मनुष्य सदैवकाल वनवासी मनुष्योंकरके सहित वा सिंहके समान सबका उपकार करनेवाला, नम्रतासहित अपने पराक्रमकरके धनका पैदा करनेवाला होता है ॥ ८० ॥ जिसके धन स्थानमें कन्याराशि स्थित हो तो वह मनुष्य राजाओंके सकाशसे धन प्राप्त करता है सुवर्ण मोती मूंगा हाथी घोडे अनेक प्रकारके धनयुक्त होता है ॥८१॥

तुले धनस्थे बहुदेशजातं धनं भवेत्पुत्रजनैरुपेतम् । वित्तं वियुक्तं पुरुषाग्रगण्यं स्वान्याययुक्तं गुरुलब्धशेषम् ॥८२॥ अलौ धनस्थे बहुपण्यजातं धनं मनुष्यो लभते प्रभूतम् । पाषाणजं मृन्मयमापितं च सस्योद्भवं कर्मजमेव नित्यम् ॥ ८३ ॥ धनुर्धरे वित्तगते मनुष्यो धनं लभेद्धैर्ययुतो सदैव । चतुष्पदाढ्यं विविधं यशस्वी रसोद्भवं धर्मविधानलब्धः ॥ ८४ ॥

जो तुलाराशि धनस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य धन और स्त्री-पुत्रसहित होता है, धनयुक्त पुरुषोंमें अग्रणी, न्यायसहित गुरुकरके लब्ध होता है ॥८२॥ वृश्चिकराशि धनस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य बहुत व्यापारकरके युक्त, बहुत धनवान् होता है, पाषाणकरके उत्पन्न मृत्तिकापात्र करके उत्पन्न सस्य जो अन्नकरके उत्पन्न धनवान् होता है ॥८३॥ धन राशि जिसके धनस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य धैर्यकरके धन प्राप्त करता है, चतुष्पदकरके युक्त, अनेक प्रकारके यशसहित रसोंकरके उत्पन्न धर्मविधिकरके धन लब्ध करता है ॥ ८४ ॥

मृगे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रकुर्याद् विविधैः प्रकारैः । सेवासमुत्थं च सदा नृपाणां कृषिक्रियाभिश्च विदेशसंगात् ॥ ॥ ८५ ॥ घटे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतं फलपुष्पजातम् । जनोद्भवं साधुजनस्य भोज्यं महाजनोत्थं च परोपकारैः ॥ ८६ ॥ मत्स्ये धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतैर्नियमोपवासैः । विद्याप्रभावान्निधिसंगमाच्च मातापितृभ्यां समुपार्जितं च ॥ ८७ ॥

जिसके धनभावमें मकर लग्न स्थित हो तो वह मनुष्य बहुत प्रकारके धनकरके युक्त, राजाओंकी सेवामें तत्पर, खेतीकी क्रिया और विदेशसंगसे धनवान् होता है ॥८५॥ जिसके धनभावमें कुंभलग्न स्थित हो तो उस मनुष्यके फलपुष्पकरके उत्पन्न हुए धनकरके युक्त मनुष्यों-करके उत्पन्न किया, साधु मनुष्योंकरके भोज्य, महाजनपुरुषोंकरके धनवान् पराया उपकार करनेवाला होता है ॥८६॥ जिसके मीन लग्नधन भावमें स्थिर हो तो वह मनुष्य नियम और व्रतकरके धनवान् होता है और विद्याके प्रभावकरके धनका संगम होता है, मातापिताकरके उपार्जित किया धनवान् होता है ॥ ८७ ॥

अथ धनभावस्वामिद्वादशभावफलम् ।

द्रव्यपतिर्लग्नगतः कृपाणं व्यवसायिनं सुकर्माणम् । धनिनं श्रीपतिविदितं करोति नरमतुलभोगभुजम् ॥ ८८ ॥ धनपो धनभावस्थो धर्मकर्मनिरतं च । लाभाधिकं सलोभं कुरुते पुरुषं सदा दक्षम् ॥ ८९ ॥ सहजगते तु धनेशे व्यवसायी कलिकरः कलाहीनः । चोरश्चंचलचित्तो नरोऽथ विनयेन रहितश्च ॥९०॥ तुर्यगते द्रविणपतौ पितृलाभश्च परः । सदोदयः पुरुषो दीर्घायुः क्रूरखगेन युते ॥ ९१ ॥

जिसके धनभावस्थानका स्वामी लग्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य

कृपण और व्यवसायी,श्रेष्ठ कर्मों करके धनी,लक्ष्मीवान् करके विदित,अधिक भोगोंका भोगनेवाला होता है ॥ ८८ ॥ जिसके धनपति धनभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य धर्मकर्ममें तत्पर,लोभसहित अधिक लाभ करानेवाला, सदैव चतुर होता है ॥८९॥ जिसके सहजस्थानमें धनभावका स्वामी स्थित हो तो वह पुरुष व्यवसायी, कलहका करनेवाला, कलाहीन, चोर,चंचल-चित्त मनुष्य नम्रतारहित होता है ॥९०॥ जिसके चतुर्थभावमें, धनभावपति स्थित हो तो वह मनुष्य पिताकरके धनलाभ पाता है, सदैव वह पुरुष दीर्घायु हो जो पापग्रहकरके सहित न हो तो ॥ ९१ ॥

तनयगतो धनपतिः कुरुते कमलाविलासमतिर्नरः । कष्टेतरं प्रसिद्धं च कृपाणं दुःखनिधानं कविर्निर्देश्यम् ॥ ९२ ॥ षष्ठ-गतो द्रविणपतिर्धनसंग्रहतत्परं रिपुघ्नं च । भूस्वामिनं च युते पापे धनवर्जितं पुरुषम् ॥ ९३ ॥ धनपे सप्तमगृहगे श्रेष्ठचिंता विलासभोगवंतः । धनसंग्रहणी भार्या क्रूरखेचरे भवति वंध्या ॥ ९४ ॥ धनपतौ चाष्टमभवने स्वल्पकलाश्चात्मघातकः पुरुषः ॥ उत्पन्नभुग्विलासी भवति वेदयुतो नरः ॥ ९५ ॥

जिसके धनस्थानका पति पंचमभावमें स्थित हो तो उसी मनुष्यकी लक्ष्मीके विलास भोगमें मति होती है, कष्टसे इतर अर्थात् सुखी, कृपण, दुःखोंका स्थान, कवि कहना ॥९२॥ जिसके छठे स्थानमें धनपति स्थित हो तो वह मनुष्य धनसंग्रह करनेमें तत्पर; शत्रुओंका नाश करनेवाला, धरतीका स्वामी होता है और जो पापग्रह हो तो धनहीन कहना चाहिये ॥९३॥ जिसके धनपति सप्तमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य अच्छी चिंताके विलासमें भोगवान् होता है और उसकी स्त्री धनका संग्रह करनेवाली और जो धनपति पापग्रह हो तो उसकी स्त्री वंध्या होती है ॥९४॥ अष्टम भवनमें जो धनभावका स्वामी स्थित हो तो वह मनुष्य अल्पकलायुक्त, आत्माका घात करनेवाला, पैदा हुए भोगविलाससहित तथा वेदयुत होता है ॥९५॥

धनपे धर्मगृहगते सौम्ये दानी प्रसिद्धभाग्यवंतः । क्रूरो दरिद्र-भिक्षुकविडंबवृत्तिस्तथा मनुजः ॥ ९६ ॥ दशमगृहस्थे धनपे नरेंद्रमान्यो भवेन्नरः । लक्ष्मीः सौम्यगृहे च मातुः पितुश्च परिपालकः पुरुषः ॥ ९७ ॥ एकादशगः स्वपतिव्यवहारः परश्रियः पतिम् । ख्यातं लोकाद्यप्रतिपालननिरतं कुरुते न जातम् ॥ ७८ ॥ द्वादशगे द्रव्यपतौ अष्टकपाली विदेशऋद्धिश्च । दुष्कर्मा भिक्षुकः क्रूरे सौम्ये च संग्रामी ॥ ९९ ॥

जिस मनुष्यके धनभावपति शुभग्रह नवम स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य दानी, प्रसिद्ध, भाग्यवान् होता है और जो पापग्रह धनभावपति होकर नवमं स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य दुष्ट, दरिद्री, भिक्षुक, विडबी होता है ॥९६॥ जिसके दशमस्थानमें धनभावपति स्थित हो तो वह मनुष्य राजोंकरके मान्य राजा होता है और धनभावपति शुभग्रह दशम घरमें हो तो वह पुरुष लक्ष्मीवान् पिताकी आज्ञा पालन करनेवाला होता है॥९७॥ जिसके ग्यारहवें स्थानमें धनभावपति स्थित हो तो वह मनुष्य अपने पति व्यवहार पराई लक्ष्मीका स्वामी, संसारमें मनुष्योंका पालन करनेवाला होता है ॥९८॥ जिसके बारहवें स्थानमें धनभावपति स्थित हो तो वह मनुष्य अष्टकपाली, दरिद्री, परदेशमें ऋद्ध, खोटे कर्म करनेवाला, भिखारी, पाप सौम्य ग्रह कोई हो तो लडाई करनेवाला होता है ॥ ९९ ॥

अथ संक्षेपतो अष्टमभावो विचारणीयः ।
अथ निर्याणाध्यायस्थमृत्युविचारः ।

नद्युत्तारात्यंतवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः संकटश्चेति सर्वम् ॥
रंध्रस्थाने सर्वदा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ॥१००॥
वीर्यान्वितः पश्यति मृत्युभं यस्तद्धातुकोपान्मृतिमामनंति ।
तद्युक्तकालाख्यनरस्य गात्रं तस्मिन्प्रदेशे बहुभिर्बहूनाम् ॥ १०१ ॥

नदीका उतरना, अत्यंत कठिन जगह किला इत्यादिमें बंधन, शस्त्र,

आयु, सम्पूर्ण प्रकार संकट ये सम्पूर्ण विचार अष्टम स्थानसे हमेशह कल्पना करनी चाहिये ऐसा पुराने आचार्योंने कहा है ॥ १०० ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे आठवें स्थानमें कोई ग्रह न स्थित हो तब उस अष्टम स्थानको बलवान् होकर जो ग्रह देखता हो उस ग्रहके पूर्वोक्त कफवात-पित्तादि जनित धातुके कोपसे उस प्राणीका मरण होता है अथवा उसी आठवें स्थानमें स्थित राशि कालपुरुषके जिस अंगमें स्थित हो उस अंगमें जो ग्रह स्थित हो उसीके कफवातपित्तादि धातुके कोपसे उस मनुष्यका मरण होता है और जो बहुत ग्रह हों तो उनमें जो बली हो तो उसके पूर्वोक्त धातुके प्रकोपसे उस प्राणीका मरण कहना चाहिये और जो बली ग्रह भी बहुत हों तो उन सब ग्रहोंके पूर्वोक्त धातुके प्रकोपंसे उस जीवका मरण होता है ॥ १०१ ॥

सूर्यादिभिर्निधनगैर्निधनं हुताशतोयायुधज्वरजमामयजं क्रमेण ॥ १०२ ॥ क्षुत्तृट्कृतं च चरभे परदेशतस्य तत्स्यात्स्थिरे स्वदेशे पथि तद्विमूर्तौ ॥ १०३ ॥

जो अष्टम स्थानमें सूर्य स्थित हो तो अग्निकरके, चन्द्रमा स्थित हो तो जलकरके, मंगल हो तो हथियारकरके, बुध स्थित हो तो ज्वर-करके, बृहस्पति स्थित हो तो विना मालूम रोगसे ॥ १०२ ॥ शुक्र स्थित हो तो क्षुधादिकरके, शनैश्चर अष्टम स्थानमें स्थित हो तो प्यास-करके मरण कहना चाहिये ॥

अथ मरणदेशज्ञानम् ।

जिसके अष्टम स्थानमें चर राशि हो तो वह प्राणी परदेशमें और स्थिर हो तो स्वदेशमें और द्विस्वभाव राशि अष्टम हो तो वह मनुष्य रास्तेमें मृत होता है ॥ १०३ ॥

अथ लोभान्मृत्युः ।

तनौ रविसुते भौमे ह्यष्टमस्थे शनैश्चरः ।
नवमे चंद्रमा यस्य लोभान्मृत्युर्न संशयः ॥ १०४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यपुत्र—भवनमें मंगल, अष्टम स्थानमें शनैश्चर, नवम स्थानमें चंद्रमा स्थित हो उस प्राणीकी मृत्यु लोभके कारणसे होती है ॥ १०४ ॥

अथ तुरंगान्मृत्युः ।

दशमोऽङ्गारको जीवः सूर्यश्च यदि सप्तमः ।
योगेऽस्मिन् जायते मृत्युस्तुरंगान्मानवस्य च ॥१०५॥

जिसके जन्मकालमें दशम मंगल, बृहस्पति; सातवें सूर्य स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु घोडे करके होती है ॥ १०५ ॥

अथ अग्निकारणान्मृत्युः ।

तनौ शनी रिपौ सूर्यो ह्यस्ते ज्ञो दशमे शशी ।
नवमे भूसुतो नूनं मृत्युर्घर्मेण वाग्निना ॥ १०६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मलग्नमें शनि, छठे सूर्य, सातवें बुध, दशम चंद्रमा और नवम मंगल स्थित हो तो उसकी मृत्यु घाम अथवा अग्नि करके कहनी चाहिये ॥ १०६ ॥

अथ भगंदरान्मृत्युज्ञानम् ।

षष्ठे वा दशमे भौमो धने चंद्रोऽष्टमे शनिः ।
भगंदरेण रोगेण मृत्युरेव न संशयः ॥ १०७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे अथवा दशम मंगल, दूसरे चंद्रमा, अष्टम शनैश्चर स्थित हो तो उस प्राणीकी निःसंदेह भगंदर अथवा कुष्ठ-रोग करके मृत्यु होती है ॥ १०७ ॥

तनौ रविसुतो भौमः सूर्यः सप्तमगो यदि ।
योगेऽस्मिन् जायते मृत्युरूर्ध्वात्पतति निश्चितम् ॥१०८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नमें शनैश्चर, मंगल और सातवें सूर्य स्थित हो तो इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य ऊपरसे गिरकर मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १०८ ॥

अथ गजान्मृत्युज्ञानम् ।

रविरंगारकश्चैव चतुर्थभवने स्थितौ ।
दशमे रविसूनुश्च गजान्मृत्युर्न संशयः ॥ १०९ ॥

जिस मनुष्यके सूर्य, मंगल चतुर्थ भवनमें स्थित हों और दशममें शनैश्चर स्थित हो सो उस प्राणीकी मृत्यु हाथीकरके होती है ॥ १०९ ॥

अथ बंधुकारणान्मृत्युः ।

यदि क्रूरग्रहाक्रांतौ स्थानाच्चाष्टमपंचमौ ।
तस्य बंधुवशान्मृत्युर्निर्दिष्टो मुनिपुंगवैः ॥ ११० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे पांचवां और आठवां स्थान पापग्रहोंकरके आक्रांत हो तो उस प्राणीकी बंधुकरके मृत्यु होती है ऐसा श्रेष्ठ मुनीश्वरोंने कहा है ॥ ११० ॥

अथ शूलिकामृत्युयोगः ।

तनुगो भास्करो यस्य द्वितीयस्थो निशाकरः ।
शूलिकायां भवेत्तस्य मृत्युरेव न संशयः ॥ १११ ॥

जिस मनुष्यके लग्नमें सूर्य और दूसरे स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो तो उस पुरुषकी मृत्यु शूलीमें टँगकर होती है इसमें संशय नहींहै ॥ १११ ॥

अथ परदारार्थमृत्युः ।

यस्य जन्मनि जायास्थाश्चन्द्रभौमशनैश्चराः ।
जायंते परदारार्थं विनाशस्तस्य निश्चितम् ॥ ११२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे सातवें घरमें चंद्रमा, मंगल और शनैश्चर स्थित हो तो उस मनुष्यका पराई स्त्रीके अर्थ विनाश निश्चय होता है ॥ ११२ ॥

अथ जलोदरेण मृत्युः ।

धर्मस्थानगते चंद्रे कर्कराशिधने शनौ ।
जलोदरेण रोगेण मृत्युरेव न संशयः ॥ ११३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवम स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो और कर्कराशिमें द्वितीयस्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु जलोदर रोग करके होती है ॥ ११३ ॥

अथ स्त्रीकारणान्मृत्युः ।

मूर्तौ गतौ तु मंदार्कौ भौमचंद्रौ च सप्तमे ।
द्वितीयो यदि शुक्रस्तु मृत्युः स्त्रीकारणेन तु ॥ ११४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मूर्तिमें शनैश्चर और सूर्य स्थित हों और कुज, चन्द्रमा सप्तम भवनमें स्थित हों तो उस प्राणीकी मृत्यु स्त्रीके द्वारा होती है ॥ ११४ ॥

अथ शत्रुहस्तान्मृत्युः ।

षष्ठे क्रूरग्रहो यत्र नवमो वाष्टमो यदा ।
शत्रुमध्ये न संदोहो मृत्युरेव न संशयः ॥ ११५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे वा आठवें वा नवम अथवा इन तीनों स्थानोंमें पापग्रह स्थित हों तो उस प्राणीकी मृत्यु शत्रुओंके बीचमें अथवा शत्रु करके निश्चय होती है ॥ ११५ ॥

अथ शैलभागान्मृत्युः ।

शैलाग्राभिहतस्य सूर्यकुजयोर्मृत्युः खबंधुस्थयोः
कूपे मंदशशांकभूमितनयैर्बन्ध्वस्तकर्मस्थितैः ।
कन्यायां स्वजनाद्धिमोष्णकरयोः पापग्रहैर्दृष्टयोः
स्यातां यद्युभयोदयेऽर्कशशिनौ तोये तदा जन्मतः॥११६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे चौथे स्थानमें अथवा दशमस्थानमें सूर्य मंगल स्थित हो अथवा दशम स्थानमें सूर्य और चतुर्थ स्थानमें मंगल स्थित हो तो उस मनुष्यकी पत्थरके लगनेसे मृत्यु अथवा पहाडके अग्रभागसे गिरकर मृत्यु होती है ॥

अथ कूपे मृत्युः ।

और चतुर्थ स्थानमें शनैश्चर और सातवें स्थानमें चन्द्रमा, दशम मंगल स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु कुएमें गिरकर होती है ॥

अथ स्वजनान्मृत्युः ।

जिसके सूर्य और चन्द्रमा दोनों कन्याराशिमें स्थित हों और पाप-ग्रहोंकरके दृष्ट हों तो वह प्राणी अपने ही मनुष्योंकरके मारा जाता है ॥

अथ जलेन मृत्युयोगः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्या या धन अथवा मीन इन राशियोंमेंसे कोई भी राशि लग्नमें स्थित हो और उसी राशिमें सूर्य और चन्द्रमा दोनों स्थित हों तो वह प्राणी जलमें डूबकर मरता है॥ ११६॥

अथ जलोदरेण मृत्युयोगः ।

मंदे कर्कटगे जलोदरकृतो मृत्युर्मृगांके मृगे
शास्त्राग्निप्रभवः शशिन्यशुभयोर्मध्ये कुजर्क्षे स्थिते ॥
कन्यायां रुधिरोत्थशोषजनितस्तद्वत्स्थिते शीतगौ
सौरक्ष यदि तद्वदेव हिमगौ रज्ज्वग्निपातैः कृतः ॥ ११७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर कर्कराशिमें और चन्द्रमा मकरराशिमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु जलोदररोग करके होती है॥

अथ शस्त्राग्नितो मृत्युयोगः ।

मेष अथवा वृश्चिकराशिमें स्थित चन्द्रमा दो पापग्रहोंके मध्यमें हो तो उस प्राणीकी मृत्यु जलोदररोग करके होती है ॥

अथ रक्तविकारेण मृत्युः ।

और कन्याराशिमें स्थित चन्द्रमा दो पापग्रहोंके बीचमें हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु रक्तविकार वा शोषरोगसे होती है ।

अथ रज्ज्वग्निपातेन मृत्युः।

मकर या कुम्भराशिमें स्थित चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु रज्जु वा अग्नि अथवा ऊंचेसे गिरकर होती है ११७

अथ कारागारे मृत्युः।

बंधाद्धीनवमस्थयोरशुभयोः सौम्यग्रहादृष्टयोर्द्रेष्काणैश्च ससर्पपाशनिगडैश्छिद्रस्थितैर्बंधनात्। कन्यायामशुभान्वितेऽस्तमयगे चंद्रे सिते मेषगे सूर्ये लग्नगते च विद्धि मरणं स्त्रीहेतुकं मंदरे ११८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचम नवम स्थानमें पापग्रह स्थित हों अर्थात् एक पंचम और एक नवम हो तो उस प्राणीकी मृत्यु बंधन या किले वा हवालात या जेलखानेमें होती है और जिसके अष्टमस्थानमें पाश या निगड सर्पद्रेष्काण हो उसमें पापग्रह स्थित हो तो वह पुरुष द्रेष्काणके समान बंधनसे मरता है अर्थात् पाशद्रेष्काण हो तो फासीसे, निगडद्रेष्काणसे बेडी इत्यादिसे बाध्य करके, सर्पद्रेष्काण हो तो सर्पकरके मृत्यु होती है ॥

अथ स्त्रीद्वारा मृत्युः।

जिसके सप्तमस्थानमें कन्याराशि हो उसमें पापग्रहयुक्त चन्द्रमा और मेषमें शुक्र और जन्मलग्नमें सूर्य स्थित हो तो उस प्राणीकी अपनी स्त्रीके द्वारा मृत्यु होती है ॥ ११८ ॥

अथ कंटकेन मृत्युः।

शूलोद्भिन्नतनुः सुखेऽवनिसुते सूर्येऽपि वा खे यमे-
ऽथोसक्षीणहिमांशुभिश्च युगपत्पापैस्त्रिकोणाद्यगैः।
बंधुस्थे च रवौ विपत्यवनिजे क्षीणेंदुसंवीक्षिते
काष्ठेनाभिहतः प्रयाति मरणं सूर्यात्मजेनेक्षिते ॥ ११९ ॥

जिसके जन्मकालमें लग्नसे चतुर्थस्थानमें मंगल और सूर्य स्थित हों और दशमस्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो वह जीव कांटेसे छिदकर मरता

है और जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चन्द्रमासहित पापग्रह नवम लग्न इन तीनों स्थानोंमें स्थित हो तो वह जीव कांटेमें छिदकर मरता है और जिस मनुष्यके चतुर्थ स्थानमें सूर्य और दशमस्थानमें मंगल स्थित हो और क्षीण चन्द्रमाकरके दृष्ट हो तो वह जीव कांटेसे छिदकर मरता है ॥

अथ काष्ठप्रहारेण मृत्युः ।

और जिस मनुष्यके चतुर्थ सूर्य और दशम मंगल हो, शनैश्चरकरके दृष्ट हो तो वह जीव काष्ठके प्रहारसे मारा जाता है ॥ ११९ ॥

अथ लकुटेन मृत्युः ।

रंध्रास्पदांगहिबुकैर्लकुटे हतांगः प्रक्षीणचन्द्ररुधिरार्किदिनेशयुक्तः।
तैरेव कर्मनवमोदयपुत्रसंस्थैर्धूमाग्निबन्धनशरीरनिकुट्टनांतः १२०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चंद्रमा अष्टमस्थानमें स्थित हो और मंगल दशम स्थानगत और शनैश्चर लग्नमें और सूर्य चतुर्थ स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु लाठियोंके मारनेसे होती है ॥

अथ धूमाग्निबंधनेन मृत्युः ।

और जिस पुरुषके क्षीण चंद्रमा दशम स्थानमें स्थित हो और मंगल नवमस्थानमें और शनैश्चर लग्नमें और सूर्य पंचमस्थानमें स्थित हो वह मनुष्य धुएँमें घुटकर अथवा अग्नि या बंधन वा कुटने इत्यादि किसी भी हेतुसे उस प्राणीका मरण कहना चाहिये ॥ १२० ॥

अथ शस्त्राग्निराजकोपेन मृत्युः ।

बंध्वस्तकर्मसहितैः कुजसूर्यमंदैर्निर्याणमायुधशिखिक्षिति-
पालकोपैः । सौरेंदुभूमितनयैश्च सुखास्पदस्थैर्ज्ञेयः क्षतः
कृमिकृतश्च शरीरपातः ॥ १२१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थस्थानमें मंगल और सप्तम स्थानमें सूर्य और दशमस्थानमें शनैश्चर स्थित हो तो शस्त्र अथवा अग्नि अथवा राजकोपसे उस जीवकी मृत्यु होती है ॥

अथ कृमिविकारेण मृत्युः ।

जिसके द्वितीय स्थानमें शनैश्चर और चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा और दशमस्थानमें मंगल स्थित हो तो वह जीव घावमें कीडे पडनेसे मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १२१ ॥

अथ यानप्रपातान्मृत्युयोगः ।

खेस्थेऽर्केऽवनिजे रसातलगते यानप्रपाताद्वधो
यंत्रोत्पीडनजः कुजेऽस्तसमये क्षीणेंदुनाभ्युद्गमे ।
विण्मध्ये रुधिरार्किशीतकिरणैर्जूकाजसौरर्क्षगै-
र्यातैर्वा गलितेंदुसूर्यरुधिरैर्व्योमास्तबंध्वाह्वयान् ॥ १२२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशम स्थानमें सूर्य और चतुर्थ स्थानमें मंगल स्थित हो तो वह जीव सवारीसे गिरकर मरता है ॥

अथ यंत्रोत्पीडनेन मृत्युः ।

जिस पुरुषके जन्मकालमें सप्तम स्थानमें मंगल और जन्मकालमें शनैश्चर सूर्य चन्द्रमा तीनों स्थित हों तो वह प्राणी किसी यंत्रमें अर्थात् अंजनादिकमें पिचकर मरता है ॥

अथ विण्मध्ये मृत्युः ।

और जिस किसीके तुलाराशिमें मंगल और मेषमें शनैश्चर और कुंभराशिमें चन्द्रमा स्थित हो तो वह जीव विष्ठामें गिरकर मरता है और जिसके दशममें क्षीण चन्द्रमा और सप्तम सूर्य और चतुर्थ मंगल स्थित हो तो वह जीव भी विष्ठामें गिरकर मरता है ॥ १२२ ॥

अथ गुह्यरोगशस्त्रदाहेन मृत्युः ।

वीर्यान्वितवक्रवीक्षिते क्षीणेंदौ निधनस्थितेऽर्कजे ।
गुह्योद्भवरोगपीडया मृत्युः स्यात्कृमिशस्त्रदाहजः ॥१२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चन्द्रमा मंगल करके दृष्ट हो और

अष्टम स्थानमें शनैश्चर स्थित हो उस जीवकी गुदामें रोग उत्पन्न होनेसे अथवा कीडे पडने या हथियारसे अथवा अग्निमें जरनेसे मृत्यु होती है १२३

अथ खगेन मृत्युः ।

अस्ते रवौ सरुधिरे निधनेऽर्कपुत्रे क्षीणे रसातलगते हिमगौ खगांतः । लग्नात्मजाष्टमतपःस्विनभौममंदचंद्रैस्तु शैलशिखराशनिकुडचपातैः ॥ १२४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगलसहित सूर्य सप्तम स्थानमें स्थित हो और अष्टम शनैश्चर और क्षीण चन्द्रमा चतुर्थ स्थानमें स्थित हो तो वह जीव पक्षियोंकरके मारा जाता है ॥

अथाशनिकुडचपातेन मृत्युः ।

जिस मनुष्यके सूर्य जन्मलग्नमें, मंगल पांचवें और शनैश्चर अष्टम और चन्द्रमा नवम स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य पहाडसे दबकर अथवा बिजलीके गिरनेसे या दीवारके गिरनेसे मरता है ॥ १२४ ॥

अथाष्टमभावे विशेषफलम् ।

स्वोच्चे स्वोच्चनवांशे च शुभवर्गेऽथ नीचभे । नीचांशे क्रूरषड्वर्गे मित्रभे सुहृदंशके ॥ २२५ ॥ वर्गोत्तमेऽरिभेर्यंशे स्वर्क्षे द्वादशधा क्रमात् । फलमष्टमभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम् ॥ १२६ ॥ भक्तेरग्निप्रवेशेन जनह्रीतः प्रमादतः । दावाग्निना दंभकृत्यात् दीपनेन विषादनात् ॥ १२७ ॥ बंधनाच्चैव लोहाच्च ततः क्रोधात्तथैव च । क्षयकासादपराधान्मृतिर्मृत्युगते रवौ ॥१२८॥

अपने उच्चमें या उच्चके नवांशमें शुभग्रहके वर्गमें अथवा नीचराशिमें या नीचके नवांशमें अथवा पापग्रहके वर्गमें या मित्रकी राशिमें या अपने मित्रके नवांशमें ॥१२५॥ अथवा अपने वर्गोत्तममें अथवा शत्रुकी राशिमें या शत्रुके नवांशमें वा अपनीही राशिमें स्थित जो ग्रह अष्टमभावमें हों उन करके क्रमसे अष्टमभावका फल कहना चाहिये॥१२६॥ भक्तिकरके अथवा

अग्निमें प्रवेश करके, जनोंके हरण करनेसे, प्रमाद करके, दावाग्नि करके, दंभ करके, दीप करके, विषाद करके ॥१२७॥ बंधन करके, लोह करके, क्रोधसे, क्षय वा कासरोगसे, अपराधसे, क्रम करके सूर्य अष्टम भावमें स्थित हो तो पूर्वोक्त बारह प्रकारमेंसे क्रम करके फल कहना चाहिये ॥ १२८ ॥

जलप्रपाताद्धस्तविधेर्वज्रपातेन वा भवेत् । स्त्रीहस्तात्पित्तकफतो दोषत्रयभवान्मतम् ॥१२९॥ जठराग्निगुदारोगपशुपादाभिघाततः । गुदरोगाच्छृंगघातात्क्षयाच्चंद्रेऽष्टमे मृतिः ॥१३०॥ संग्रामाद्गोग्रहणतः स्वहस्तान्निजशस्त्रतः । द्विजपार्श्वादश्मघातात्कष्टात्कूपप्रपाततः ॥ १३१॥ भुवि पाताद्गुप्तिरोधाद्विषभक्षणतस्तथा । चौरप्रहरणाद्भौमे मृत्युः स्यान्मृत्युभावगे ॥ १३२ ॥

जलके गिरनेसे, हस्तविधिसे, बिजलीके गिरनेसे, स्त्रीके हाथसे, कफपित्त करके, त्रिदोषसे ॥ १२९ ॥ जठराग्नि करके, गुह्यरोगसे, पशुकी लात करके, गुदरोगसे, सींग मारनेसे, क्षय करके जो पूर्वोक्त चन्द्रमा जिस प्रकारसे अष्टम भावमें स्थित हो तो क्रमसे उसी रोगकरके मृत्यु कहना चाहिये ॥ १३० ॥ संग्रामसे, गौके पकडनेसे, अपने हाथसे, अपने हथियारसे, ब्राह्मण करके, लोहा लगनेसे, कष्टसे, कुएमें गिरनेसे ॥१३१॥ धरतीमें गिरनेसे, गुप्त रोगसे, जहर खानेसे, चौरके प्रहारसे जो पूर्वोक्त अष्टम स्थानमें जिस प्रकारसे मंगल अष्टम स्थानमें स्थित हो तो क्रमसे उसी रोगकरके मनुष्यकी मृत्यु कहनी चाहिये ॥ १३२ ॥

ज्वरात्कफविकारेभ्यो वातरोगाद्व्रणेन च । महामायाप्रियजनवियोगाद्वदनामयात् ॥१३३॥ नेत्ररोगादामवाताद्बन्धनेनोदरामयात । पादव्रणाद्बुधे मृत्युर्मृत्युभावगते क्रमात् ॥ ॥ १३४ ॥ नानारोगैः शूलरोगैः कर्णरोगात्तथैव च । स्वजनाद्विषूचिकातीसाराच्चनिजभृत्यतः ॥ १३५ ॥ रक्तकोपात्तु-

रंगाच्च निजेच्छामूर्च्छकोपतः । बहुलक्षणतो मृत्युर्जीवे स्यान्मृत्युभावगे ॥ १३६ ॥

ज्वर करके, कफविकार करके, वातरोगसे, फोडा करके, शीतलाके विकारसे,अपने प्यारेके वियोगसे, वदनरोगसे ॥१३३॥ नेत्ररोगसे, आम-वातरोगसे, बंध करके, उदररोगसे, पैरमें फोडा निकलनेसे मृत्यु होती है जो मृत्युभावमें क्रमसे बुध स्थित हो तो ॥ १३४ ॥ अनेक रोगसे, शूल-रोगसे,कर्णरोगसे, अपने मनुष्योंके हाथसे, विषूचिकारोगसे, अतीसाररोगसे, अपने नौकरके हाथसे ॥१३५॥ रक्तविकार करके, अपनी इच्छा करके, मूर्च्छारोगसे,बहुतसे लक्षणों करके मृत्यु हो । अष्टम भावमें बृहस्पति स्थित हो तो पूर्वोक्त क्रम करके रोगसे मृत्यु कहनी चाहिये ॥ १३६ ॥

तृष्णया मुखरोगाच्च दंतदोषात्रिदोषतः । विषूचिकावमनतो भुजंगाद्विषभक्षणात् ॥१३७॥ लूतया विषकंठेन सुरतोत्थ-प्रकोपतः । बहुदुःखाद्भवेन्मृत्युर्मृत्युभावगते सिते ॥ १३८ ॥ बुभुक्षया लंघनेन तथा च बहुभोजनात् । संग्रहण्याः पांडु-रोगात्प्रमेहात्सन्निपाततः ॥१३९॥ कंटकैर्व्रणकोपेन हस्तपा-दाभिघाततः । हस्तितः खरतो मृत्युर्मन्दे स्यान्मृत्युभावगे१४०

प्यास करके, मुखरोग करके, दंतदोषसे, त्रिदोषसे, विषूचिका रोग करके, कै करनेसे, सर्पके काटनेसे, जहर खानेसे ॥१३७॥ लूतारोगकरके, जहरकंठ अर्थात् सर्पकरके, सुरतप्रकोपसे, बहुतसे दुःखोंकरके मृत्यु होती है, जिसके अष्टम भावमें शुक्र स्थित हो तो क्रम करके कहना॥१३८॥ बहुत भूख करके, उपवास करके, बहुत भोजन करके, संग्रहणी रोगसे, पांडु रोगसे, प्रमेह करके, सन्निपात करके ॥ १३९ ॥ कांटोंकरके, फोडा निकलनेसे, हाथपैरके विघातसे, हाथी करके, गधे करके मृत्यु कहनी । पूर्वोक्त जिस प्रकारसे शनि अष्टम भावमें स्थित हो तो क्रम करके उसी प्रकारसे मृत्यु कहनी ॥ १४० ॥

अथाष्टमभावगतराशिफलम् ।

मेषेऽष्टमस्थे निधनं नराणां भवेद्विदेशे भजनाश्रितानाम् ॥ कथास्मृतिःपार्थिवपूजितानां महाधनानामतिदुःखितानाम्॥ ॥१४१॥ वृषेऽष्टमस्थे च भवेन्नराणां मृत्युर्गृहे श्लेष्मकृताद्विकारात् । स्वजनाद्विरोधाच्चतुष्पदाद्वा रात्रौ तथा दुष्टजनादिसंगात् ॥ १४२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यका मरण परदेशमें भजनके आश्रय करके, कथास्मृतिपार्थिवपूजन करके होती है,वह मनुष्य धनवान् अतिदुःखयुक्त होता है ॥१४१॥ जिस मनुष्यके वृषराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु अपने ही देशमें कफके विकार करके अथवा स्वजनोंके विरोध करके अथवा चतुष्पाद करके वा दुष्ट मनुष्योंके संग करके रात्रिको प्राप्त होती है ॥१४२॥

तृतीयराशौ च भवेन्नराणां मृत्युस्थिते मृत्युरनिष्टसंगात् ॥ स्नेहोद्भवो वा रससंभवो वा गुदप्रकोपादथवा प्रमेहात्॥१४३॥ कर्केऽष्टमस्थे च जलोपसर्गात् कीटात्तथा चैव विभीषणाद्वा । भवेद्विनाशो परहस्ततो वा विदेशसंस्थस्य नरस्य चैव ॥ ॥१४४॥ सिंहेऽष्टमस्थे च सरीसृपाच्च भवेद्विनाशो मनुजस्य नूनम् । व्यालोद्भवो वा स्वजनाश्रितः स्याच्चौरोद्भवो वाथ चतुष्पदोत्थः ॥ १४५ ॥ कन्या यदा चाष्टमगा विलग्नात्तदा स्ववित्तान्मनुजस्य विद्यात् । स्त्रीणां हि हिंसाविषमाशनात् स्यात्स्त्रीणां कृते चास्वगृहाश्रितस्य ॥ १४६ ॥

जिस मनुष्यके अष्टम स्थानमें मिथुनराशि स्थित हो वो अनिष्ट संगसे, स्नेहके पैदा होनेसे अथवा रसोत्पत्तिसे, गुह्यरोगसे अर्थात् अर्श वा प्रमेह करके उसकी मृत्यु कहनी चाहिये ॥१४३॥ जिसके कर्कराशि अष्टम भावमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु जलके उपसर्गसे अथवा कीडे

करके वा सर्प करके, पराये हाथ करके परदेशमें होती है ॥ १४४ ॥ जिसके सिंहराशि अष्टम भावमें स्थित हो तो उस प्राणीकी सरीसृप अर्थात् कीडेकरके अथवा सर्पकरके, अपने मनुष्योंके आश्रयसे अथवा चौपायेसे वा चोरकरके मृत्यु होती है ॥ १४५ ॥ कन्याराशि जिस मनुष्यके अष्टमभावमें स्थित हो तो अपने धनकरके अथवा स्त्रियोंकी हिंसाकरके अथवा अपने घरकी स्त्रीकरके, विषके हेतुसे उसकी मृत्यु कहना चाहिये ॥ १४६ ॥

तुलाधरे चाष्टमभावसंस्थे भवेन्नराणां द्विपदोत्थमृत्युः । निरा-
सनेनाथकृतोपवासात्कष्टेन देहस्य भवेत्प्रपातः ॥ १४७ ॥
स्थानेऽष्टमस्थेऽष्टमराशिसंगे नृणां विनाशो रुधिरोद्भवेन ।
रोगेण वा कीटसमुद्भवश्च मार्गे प्रकुर्याद्वदितं मुनींद्रैः॥१४८॥
चापेऽष्टमस्थे प्रभवेन्नराणां मृत्युः शरीरे शरताडनेन । गुह्यो-
द्भवेनापि गदेन वापि चतुष्पदोत्थस्य जलोद्भवेन ॥ १४९ ॥

जिस मनुष्यके तुलाराशि अष्टमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु द्विपदकरके निरासनसे होती है अथवा व्रत करनेसे कहनी चाहिये ॥१४७॥ जिसके अष्टमभावमें वृश्चिकराशी स्थित हो तो उस मनुष्यका विनाश रुधिरकरके अर्थात् खूनफिसाद करके अथवा कीट करके रास्तेमें मुनीश्वरोंने कहा है ॥१४८॥ चापेऽष्टमस्थे यानी धनराशि जिसके अष्टम भावमें स्थित हो तो उस मनुष्यका शरीर बाणके लगनेसे अथवा कमरके उत्पन्न रोगसे या चौपायोंकरके वा जलमें उत्पन्न हुए जीव ग्राह इत्यादि करके मृत्यु कहनी ॥ १४९ ॥

घटेऽष्टमस्थेऽस्य भवेद्विनाशो वैश्वानरात्सद्मगताच्च जंतोः ।
नानारणैर्वादतया विकारैः श्रमेण वा गेहविहीनमृत्युः ॥१५०॥
मीनेऽष्टमस्थे प्रभवेच्च मृत्युर्नृणामतीसारकृतः सुकष्टात् ।
पित्तज्वराद्वा सलिलाश्रयाद्वा रक्तप्रकोपादथवा च शस्त्रात् १५१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशि अष्टम स्थानमें स्थित हो तो उस प्राणीके घर आग लगनेसे उसका नाश होता है, वैसे मकरराशि अष्टम हो तो श्रम करके अथवा अपने घर विना अर्थात् विदेशमें मृत्यु होती है ॥ १५० ॥ जिसके मीन राशि अष्टम भावमें हो तो अतीसार करके, बडे कष्टसे या पित्तज्वरसे अथवा जलके आश्रयसे वा रक्तकोपसे या शस्त्र करके मृत्यु होती है ॥ १५१ ॥

अथ मरणभूमिज्ञानम् ।

होरानवांशकपयुक्तसमानभूमौ योगेक्षणादिभिरतः परिकल्प्य-मेतत् । मोहस्तु मृत्युसमयेऽनुदितांशतुल्यः स्वेशेक्षिते द्विगु-णतस्त्रिगुणः शुभैश्च ॥ १५२ ॥

जन्मकालमें जिस नवांशका उदय हो और उस नवांशका पति जिस राशिमें स्थित हो उसी राशिके नामसमान जीव जैसे स्थानमें वास करता है। वैसे ही स्थानमें मरण कहना चाहिये, जैसे नवांशपति मेषराशिमें स्थित हो तो मेढे बकरके रहनेके योग्य स्थानमें मृत्यु कहनी चाहिये, वृषराशिमें स्थित हो तो गैया आदि पशुओंके रहनेके स्थानमें मृत्यु कहनी, मिथुनराशिमें स्थित हो तो पुरुषोंके रहनेकी जगहमें, कर्कराशिमें स्थित हो तो कूपमें, सिंहराशिमें स्थित हो तो जंगलमें, कन्याराशिमें स्थित हो तो घरमें वा नाव या जहाजमें, तुलाराशिमें स्थित हो तो बाजारमें, वृश्चिकराशिमें स्थित हो तो गढेमें, कंदरामें, धनराशिमें स्थित हो तो पुरुषोंके रहनेकी जगहमें अश्वशालाके पास कहनी, मकरराशिमें स्थित हो तो जल अथवा रेतमें, कुंभराशिमें स्थित हो तो पुरुषोंके रहनेकी जगहम, मीनराशिमें स्थित हो तो नदी तालाव वा रतली धरतीमें मृत्यु कहनी चाहिये और नवांशपति जिस राशिमें स्थित हो उसी राशिमें कोई अन्य ग्रह भी स्थित हो तो उस ग्रहकी भूमिमें अथवा नवांशापति जिस ग्रहको देखता हो उसकी भूमिमें अथवा नवांशाधिपति जिस राशिमें स्थित हो उस राशिके स्वामीकी भूमिमें मरण कहना चाहिये । ग्रहोंकी भूमि ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायमें कही है उससे जान लेना चाहिये ॥

अथ मरणसमये मोहज्ञानम् ।

जन्मलग्नमें जितने नवांशमें भुक्त हो गये हों उनको छोडकरके जितने भोगनेको बाकी रहे हों उन बाकी दुष्टग्रहयुक्त नवांशोंके समान काल अर्थात् जितने कालमें उन बाकी नवांशोंके लग्न भोगे उतने काल मरणसमयमें प्राणीको मोह होता है और वह लग्नराशि अपने स्वामीकरके दृष्ट हो तो पूर्वोक्त कालसे द्विगुने कालतक मोह रहता है, जो वही राशि शुभग्रहोंकरके दृष्ट हो तो त्रिगुण काल मोह जानना और जो राशिपति और शुभ ग्रह दोनों करके दृष्ट वा युत हों तो उस प्राणीको मरण समय पूर्वोक्तकालसे छः गुने कालतक मूर्च्छा रहती है ॥१५२॥

अथ शवपरिणामज्ञानम् ।

दहनजलविमिश्रैर्भस्मसंक्लेदशोषैर्निधनभवनसंस्थैर्व्यालवर्गैर्वि-
डंतः । इति शवपरिणामश्चिंतनीयो यथोक्तः पृथुविरचि-
तशास्त्राद्गत्यनूकादि चिन्त्यम् ॥ १५३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मलग्नमें अष्टम स्थानमें जो द्रेष्काणका उदय हो उसीके द्वारा मृतक शरीरका परिणाम कहना चाहिये, यदि वही बाईसवां द्रेष्काण अग्निसंज्ञक होता है तो उस प्राणीका शरीर जलाया जाता है और जलसंज्ञक हो तो वह शरीर जलमें प्रवाह किया जाता है और जो मिश्रसंज्ञक हो तो वह शरीर सूख जाता है और जो सर्पसंज्ञक-द्रेष्काण हो तो मृतकशरीर काक गृध्र शृगालादि करके भक्षण किया जाता है । यहां पापग्रहोंका द्रेष्काण हो उसकी अग्निसंज्ञा है और शुभग्रहोंका द्रेष्काण हो उसकी जलसंज्ञा है और मिश्रसंज्ञक द्रेष्काण-उसको कहते हैं कि जो पापग्रहका द्रेष्काण शुभग्रहयुक्त हो और शुभ-ग्रहका द्रेष्काण पापग्रहयुक्त हो तो उसको मिश्रसंज्ञक कहते हैं और कर्कराशिका पहिला और दूसरा वृश्चिकराशिका पहिला दूसरा और मीनराशिका तीसरा द्रेष्काण सर्पसंज्ञक होता है । इस प्रकार मृतकशरीरके परिणामका विचार कहना चाहिये,इन सबका विचार पुराने आचार्योंने आगमन वा गमन करना जाना कहा है ॥ १५३ ॥

अथ त्यक्तलोकज्ञानम् ।

गुरुरुडुपतिशुक्रौ सूर्यभौमौ यमज्ञौ विबुधपितृतिरश्चो नारकीयांश्च कुर्युः ॥ दिनकरशशिवीर्याधिष्ठितात्र्यंशनाथाः प्रवरसमनिकृष्टास्तुंगह्रासादिनूके ॥ १५४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य और चंद्रमा इन दोनोंमेंसे जो ग्रह बली जिस द्रेष्काणमें स्थित हो उस द्रेष्काणका स्वामी जो बृहस्पति हो तो वह प्राणी देवलोकसे आया कहना और जो चन्द्रमा शुक्र इनमेंसे कोई हो तो पितृलोकसे आया कहना और जो सूर्य मंगल इनमेंसे कोई हो तो मनुष्यलोकसे आया हुआ कहना और शनैश्चर बुध हो तो नरकलोकसे आया हुआ प्राणी कहना चाहिये ॥

अथ उक्तलोके श्रेष्ठादिज्ञानम् ।

जो पूर्वोक्त लोकसे आये हुए प्राणियोंके ग्रह अपने उच्चस्थानमें स्थित हों तो उन प्राणियोंमें पूर्वोक्त लोकमें श्रेष्ठ जानना चाहिये और जो वही ग्रह अपने उच्च नीचके बीचम स्थित हों तो उन प्राणियोंका हाल पूर्वजन्ममें मध्यम कहना चाहिये और जो वही ग्रह अपने नीचस्थानमें स्थित हों तो उन प्राणियोंका पूर्वजन्ममें नीच हाल कहना चाहिये ॥ १५४ ॥

अथ मृतकप्राणिगम्यलोकज्ञानम् ।

गतिरपि रिपुरन्ध्र्यंशयोऽस्तस्थितो वा गुरुरथ रिपुकेंद्रच्छिद्रगः स्वोच्चसंस्थः ॥ उदयति भवनेऽन्त्ये सौम्यभागे च मोक्षो भवति यदि बलेन प्रोज्झितास्तत्र शेषाः ॥ १५५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे, सातवें, आठवें ये तीनों स्थान शून्य हों तो छठे आठवें इन दोनों स्थानोंमें जिस द्रेष्काणका उदय हो उन दोनों द्रेष्काणके स्वामियोंमेंसे जो बलवान् हो उसी ग्रहके पूर्वोक्त लोकको प्राणीका गमन होता है । अथवा लग्नसे छठे, सातवें, आठवें इन तीनों

स्थानोंमें वा दो स्थानोंमें अथवा दो ग्रह या दोसे अधिक स्थित हों तो उनमें जो अधिक बली हो उसी ग्रहके लोकको जाता है ॥

अथ मोक्षयोगः ।

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे और केंद्र और आठव स्थानमें उच्च-राशिमें बृहस्पति स्थित हो तो वह प्राणी मुक्तिको प्राप्त होता है और जो मीनलग्नमें जन्म हो और बृहस्पति लग्नमें बली होकर स्थित हो और सम्पूर्ण ग्रह निर्बली हों तो वह प्राणी मुक्तिको प्राप्त होता है ॥ १५५ ॥

अथ मोक्षहेतुज्ञानम् ।

न स्युर्नैर्याणिका योगाः प्रोक्ता मृत्युदृकाणजाः ।
बलिनः केंद्रषष्ठाष्टद्यूने स्युर्मोक्षहेतवः ॥ १५६ ॥

जन्मलग्नसे बाईसवां द्रेष्काण अर्थात् अष्टमभावमें जिस द्रेष्काणका उदय हो वही द्रेष्काण मनुष्यके मरणका कारण है । उस द्रेष्काणका पति बलवान् होकर छठे, आठवें, केंद्रमें स्थित हो तो उस मनुष्यका मरण तीर्थमें होता है अर्थात् मोक्ष होता है ॥ १५६ ॥

अथ तीर्थस्थानज्ञानम् ।

रविर्मोक्षदृकाणेशो रेवापूर्वे तदा स्मृतिः । शोणस्य यमुनायाश्च कूले दक्षिणके तथा ॥१५७॥ चंद्रे मोक्षदृकाणेशस्तदा शोणोत्तरे तटे । अयोध्यायां सरस्वत्यां वेत्रवत्यामथापि वा॥१५८॥ भौमेऽप्येवं च कृष्णायां गोदावर्यां च नार्मदे । तीर्थे मृतिर्भवेत्फल्गुतीर्थे मंदाकिनीतटे ॥१५९॥ बुधे मोक्षदृकाणेशो प्राप्य गंगां च कौशिकीम् । गंभीरां चापि वासिष्ठां संधौ वा लोहिते मृतिः ॥१६०॥

---

१ लग्नाद्यो द्वाविंशो द्रेष्काणो मरणकारणतया निर्दिष्टः तदीयो बली यदि रिपुरंध्रकेंद्रस्थो भवति तदा तीर्थे मरणं संहितास्कंधे ग्रहभक्तिप्रकारेणोपदशा निरूपितास्तेषु यानि तीर्थानि तेषु मृत्युरिति वक्तव्यम् ।

जिस मनुष्यके बाईसवें द्रेष्काणका सूर्य स्वामी होकर छठे, आठवें, केंद्रमें स्थित हो तो उस प्राणीकी मृत्यु नर्मदाके पूर्वभागमें और शोणभद्रमें और यमुनाके दक्षिण भागमें होती है ॥१५७॥ जिसके चन्द्रमा बाईसवें द्रेष्काणका स्वामी हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु शोणभद्रके उत्तर अयोध्यामें वा सरस्वतीके किनारे अथवा वेत्रवतीके पास होती है ॥१५८॥ जिसका मंगल बाईसवें द्रेष्काणका स्वामी होकर छठे आठवें केंद्रमें बैठा हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु कृष्णानदीके किनारे वा गोदावरीके पास अथवा नर्मदा तीर्थमें अथवा फल्गुतीर्थ अर्थात् गयाजीमें अथवा मंदाकिनीके तटपर होती है ॥१५९॥ इसी तरह बुध मोक्षद्रेष्काणका स्वामी होकर पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु कौशिकी गंगाके किनारे अथवा गंभीरा वसिष्ठके संगमके तटपर होती है ॥ १६० ॥

जीवे मोक्षदृकाणेशे सिंधुं वा मथुरापुरीम् । विपाशां प्राप्य मरणं निश्चितं यदि मानवः॥१६१॥ काशी द्वारावती कांची गंगा रामपुरी तथा । गुरौ केंद्रगते स्वोच्चे प्राप्य मृत्युं प्रयच्छति ॥१६२॥ शुक्रः शतद्रूं प्रापय्य चंद्रभागामिरावतीम् । वितस्तामंतिकां वापि मृत्युं यच्छति केंद्रगः॥ १६३ ॥ शनौ प्रभासे मृत्युश्च कुरुक्षेत्रे वटेश्वरे । सरस्वत्यां प्रयागे व कथ्यते पूर्वसूरिभिः ॥ १६४ ॥

जिस मनुष्यके बृहस्पति मोक्षदृकाणस्वामी होके छठे आठवें केंद्रमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य गंगा सागर अथवा मथुरापुरी या व्यासनदीके किनारे मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १६१ ॥ अगर बृहस्पति उच्चराशिमें केंद्रमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु काशी, द्वारका, कांची, गंगातट, हरिद्वारमें या अयोध्यामें होती है ॥१६२॥ जो शुक्र बाईसवें द्रेष्काणका स्वामी होकर पूर्वोक्त स्थानोंमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु सतलजा, चंद्रभागा ऐरावती, जेलम इन नदियोंके किनारे होती है।

ये नदियाँ पंजाब देशमें स्थित हैं ॥ १६३ ॥ जो शनैश्चर बाईसवें द्रेष्काणका स्वामी होकर छठे आठवें केंद्रमें स्थित हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु प्रभासक्षेत्र अथवा कुरुक्षेत्र अथवा वटेश्वरके वा सरस्वतीके तटपर वा प्रयागराजमें होती है। अब विद्वानोंको चाहिये कि विचार कर फल कहे किस तरहसे जो पुरुष पूर्वोक्त तीर्थोंके निकट वास करनेवाले हैं उनकी तो मृत्यु उन तीर्थोंपर बहुधा होती है किन्तु अन्य देशवाशियोंके इन फलोंका विचार करना चाहिये ॥ १६४ ॥

अथ अष्टमभावेशफलम् ।

अष्टमपे लग्नगते बहुविघ्नो दीर्घरोगमृतस्तेन । विद्याविवाद-निरतो लक्ष्मीं लेभे नृपतिवल्लाम् ॥ १६५ ॥ निधनपतौ धनसंस्थेऽल्पजीवी वैरवान्नरश्चौरः । क्रूरे सौम्यं तु शुभं किंतु क्षितिपालतो मरणम् ॥ १६६ ॥ अष्टमपतौ तृतीये बंधुवि-रोधी सुहृद्विरोधी च । दुष्टधीर्दुर्वाक् लोलःसोदररहितो भव-त्यथवा ॥१६७॥ निधनेशे तुर्यगते पृथिवीयुतो लक्ष्मीपितृ-मात्रोश्च । दुःखं भाग्यचिंता च रोगान्वितो भवति ॥१६८॥

जिस मनुष्यके अष्टमभावपति लग्नमें स्थित हो तो बहुत विघ्न सहित बडे रोगकरके मरता है, वियाके वादमें सहित राजाकी आज्ञासे लक्ष्मी-लाभ होता है ॥१६५॥ अष्टमभावपति धनभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य थोडे दिन जीता है, वैरकरके युक्त चोर होता है, पापग्रह करके शुभग्रह करके पर शुभ राजा करके मरण कहना ॥१६६॥ अष्टमपति तृतीयभाव-में स्थित हो तो वह पुरुष भ्राताओंका विरोधी, मित्रोंसे विरोध करनेवाला, दुष्टबुद्धि, दुष्ट वचन बोलनेवाला, कामी, सगे भाई करके रहित होता है ॥१६७॥ अष्टमपति चतुर्थमें स्थित हो तो पृथिवीयुक्त, लक्ष्मी, पिता, माता करके दुःखी, भाग्यकी चिंतासहित रोगयुक्त होता है ॥ १६८ ॥

छिद्रपतौ तनयस्थे क्रूरे सुतविरहितः शुभे ससुतः । जातोऽपि नैव जीवति कर्मयुक्तस्तु बुद्धिमान् ॥१६९॥ छिद्रेशे रिपुसंगते

दिनकरे भूम्या विरोधी गुरावंगे सीदति दृष्टिरोगकलितः शुक्रे सरोगी विधौ । भौमे व्याधियुतो बुधे नृपभयं मित्रात्सुखं वै शनौ षष्ठे राहुविधौ हि तत्र शशिभृतत्सौम्येक्षिते नैव किम् ॥ १७० ॥ मृत्युपतौ सप्तमगे दुष्टस्त्रीप्रियो गुदव्याधिः । क्रूरे भार्याद्वेषी कलत्रदोषान्मृतिं लभते ॥१७१॥
निधनपतौ निधनगते व्यवसायी व्याधिवर्जितो नीरुक् ।
सकलकलाकलितवपुः श्रेष्ठकुले जायते च विदितः ॥ १७२ ॥

अष्टमपति पंचमभावमें स्थित पापग्रह हो तो वह पुरुष पुत्ररहित और शुभग्रह हो तो पुत्ररहित हो; पैदा होनेसे नहीं जिये, कर्मसहित बुद्धिमान् होता है ॥ १६९ ॥ अष्टमपति सूर्य छठे स्थानमें स्थित हो तो पृथिवीसे विरोध करनेवाला हो और बृहस्पति हो तो शरीर गलित, दृष्टिरोगसहित, शुक्र हो तो भी पूर्वोक्त रोग हो, मंगल हो तो व्याधिसहित, बुध हो तो राजभय, शनैश्चरकरके मित्रोंसे सुख हो और जो छठे राहु हो तो भी मित्रसे सुखकारी, चन्द्रमा और शुभ ग्रह करके दृष्ट हो तो क्या पूर्वोक्त फल नहीं करे ॥ १७० ॥ अष्टमपति सप्तमभावमें स्थित हो तो उस मनुष्यको दुष्ट स्त्री प्रिय, गुदरोगव्याधियुक्त हो, पापग्रह हो तो स्त्रीका वैरी; स्त्रीदोषसे मृत्युको प्राप्त हो ॥१७१॥ अष्टमपति अष्टमभावमें स्थित हो तो वह पुरुष व्यवसायी, आधिरहित, रोगरहित हो, सम्पूर्ण कलाकरके शोभायमान शरीर, अच्छे कुलमें उत्पन्न हुआ विदित हो १७२

मृतिनाथे नवमस्थिते निःसंगी जीवघातकः । पापी बन्धुविरोधी पूज्यो विमुखे शुचिः ॥ १७३ ॥ कर्मगते निधनेशे नृपकर्मनीचकर्मनिरतश्च । अलसः क्रूरे तनयधनवान्मातृरहितः ॥ १७४ ॥ लाभस्थे चाष्टमपे बाल्ये दुःखी सुखी भवति । पश्चाद्दीर्घायुः सौम्यखगे पापे अल्पायुर्नरो भवति ॥ १७५ ॥ व्ययसंस्थितेऽष्टमेशे क्रूरे वा तस्करो शठो निकृष्टश्च । आत्मगतिर्व्यंगवपुर्मृतिस्तु बहुरोगादिभिश्च ॥ १७६ ॥

अष्टमभावपति नवम स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य निःसन्देह जीवोंका घात करनेवाला, पापी, भ्राताओंका विरोधी, पूज्य, विमुख तथा पवित्र हो ॥ १७३ ॥ अष्टमभावपति दशमस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य राजकर्म और नीचकर्ममें निरत होता है, पापग्रहकरके आलसी, शुभग्रहकरके धनपुत्रवान् तथा मातारहित होता है॥ १७४॥ अष्टमपति लाभस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य बाल्यावस्थामें दुःखी और पिछली अवस्थामें सुखी, जो शुभग्रह हो तो मनुष्य अल्पायु होता है ॥ १७५॥ अष्टमभवनका स्वामी बारहवें भावमें पापग्रह स्थित हो तो वह मनुष्य दुष्ट, मूर्ख, अधम, आत्मगतियुक्त, बुरा शरीर तथा बहुत रोगोंकरके मृत्युको प्राप्त होता है॥ १७६॥

अथ भाग्यभावविचारः ।

धर्मक्रियायां हि मनः प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम् । तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणे पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥१७७॥ भाग्ये खलाः स्वगृहगाः शुभदृष्टियुता यदि । सौभाग्यसौख्ययुक्तस्य जन्म विद्याच्च भूपतेः ॥ १७८ ॥ क्रूरा नीचारिभांशस्था भाग्येन शुभवीक्षिताः । सर्वदा भाग्यहीनश्च जन्म विद्यान्न संशयः ॥ १७९ ॥ लग्नपेऽल्पतरे राशौ जन्मकालं गते सति । भाग्यपेन विशेषण महाभाग्यो भवेन्नरः ॥ १८० ॥ एकेन मध्यभाग्यः स्यादभावे हीनभाग्यकः । विलग्नात्सप्तमं यावद्राशियोग्यंतराः स्मृताः ॥ १८१ ॥

धर्मके काममें मनकी प्रवृत्ति होनी, भाग्योदय होना, सुंदर स्वभाव, तीर्थयात्रा, पुराणश्रवण ये सम्पूर्ण बातें नवमस्थानसे विचार करना चाहिये ॥१७७॥ जो भाग्यभवनमें पापग्रह अपने स्थानमें होकर शुभग्रहकी दृष्टिसहित स्थित हो तो सौभाग्य और सुखसहित उस मनुष्यका जन्म कहना चाहिये ॥ १७८ ॥ जो पापग्रह नीचराशिमें वा शत्रुक्षेत्र, शत्रुके नवांश, भाग्यभवनमें स्थित हो और शुभग्रहकरके दृष्ट न हो तो वह मनुष्य

सदैव काल भाग्यकरके हीन उसका जन्म कहना चाहिये इसमें संशय नहीं है ॥१७९॥ जो जन्मकालका स्वामी अल्पतरराशिमें जन्मकालम हो और विशेषकरके भाग्यनाथभी इसी प्रकार करके हो तो वह मनुष्य बडा भाग्यशाली होता है ॥१८०॥ एक करके मध्यभाग्यशाली पुरुष होता है और दोनोंमेंसे कोई न हो तो हीनभाग्य होता है, जन्मलग्नसे लेकर सप्तमभावपर्यंत अल्पतरराशि कही है सो इसके अन्तरमें होना चाहिये ॥ १८१ ॥

हंति पुण्यं च भाग्यं च सूर्ये पुण्यगते नृणाम् । तुंगस्वर्क्षे ग्रहे याते पुष्कलं धर्ममादिशेत् ॥ १८२ ॥ भाग्यभागी भवेद्धन्यः पितृयज्ञपरायणः ॥ धर्मे पूर्णनिशानाथो क्षीणः सर्वविनाशकः ॥ १८३ ॥ कुजे रक्तपटानंदी भवेत्पाशुपतव्रती । भाग्यहीनश्च सततं नरः पुण्यगृहं गते ॥ १८४ ॥ मंदभाग्यो बुधे पापे नरो बौद्धमतानुगः । भाग्यवान्धार्मिकश्चापि शुभे सौम्ये तु धर्मगे ॥१८५॥भवतिभाग्ययुतो नृपवल्लभः सुरगुरुं प्रति भक्तिपरायणः। निजभुजार्जितभाग्यमहोत्सवो भवति धर्मगते भृगुनंदने ॥१८६॥

सूर्य नवमस्थानमें स्थित हो तो उस मनुष्यका पुण्य और भाग्य दोनों नाश करता है और जो उच्चराशिमें वा अपनी राशिमें होकर नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य बहुत धर्मका करनेवाला होता है ॥१८२॥ नवम पूर्णचन्द्रमा स्थित हो तो भाग्यवान्, धर्मात्मा, पितृयज्ञ (श्राद्धादिक) करनेमें तत्पर होता है और जो क्षीण चन्द्रमा नवम स्थित हो तो पूर्वोक्त फलको नष्ट करनेवाला होता है ॥ १८३ ॥ जो नवम मंगल स्थित हो तो वह मनुष्य लाल वस्त्रोंका धारण करनेवाला, आनंदयुक्त, पाशुपतव्रतको करनेवाला निरंतर भाग्यहीन होता है ॥१८४॥ जो नवम भवनमें पापग्रहयुक्त बुध स्थित हो तो वह मनुष्य मंदभागी, बौद्धमत या जन किंतु आर्यसमाजी होता है और जो बुध शुभग्रहयुक्त नवम स्थित हो तो वह मनुष्य भाग्यवान् तथा धर्मात्मा होता है ॥१८५॥ जिसके नवम स्थानमें

शुक्र बलवान् होकर स्थित हो तो वह मनुष्य भाग्यसहित राजाओंको प्यारा, देवता और गुरुकी भक्तिमें तत्पर, अपनी भुजाओं करके इकट्ठा किया भाग्य अधिक जिसने ऐसा होता है ॥ १८६ ॥

विविधतीर्थकरः सुकलेवरः सुरगुरौ नवमे सुखवान् गुणी । त्रिदशयज्ञपरः परमार्थवित्प्रचुरकीर्तिकरः कुलवर्धनः ॥ ॥ १८७ ॥ दंभप्रधानसुकृतः पितृदैवतवंचकः । हीनभाग्यः सुधर्मा च नरो नवमगे शनौ ॥१८८॥ स्वर्क्षोच्चगे शनौ भाग्ये वैकुंठादागतो नरः ॥ राज्यं कृत्वा सुधर्मेण पुनर्वैकुंठमेष्यति ॥१८९॥ नीचधर्मानुरक्तः स्यात्सत्यशौचविवर्जितः । भाग्यहीनश्च मंदश्च धर्मगे सिंहिकासुते ॥१९० ॥ नवमस्थानगो केतुर्बालत्वे पितृकष्टकृत् ॥ विपर्यये भाग्यहीनो म्लेच्छाद् भाग्योदयो भवेत् ॥ १९१ ॥

जिसके नवमस्थानमें बृहस्पति हो तो वह मनुष्य बहुत तीर्थोंका करनेवाला,अच्छा शरीर जिसका, सुखसहित, बुद्धिमान्,गुणवान् होता है, परमार्थका जाननेवाला,बडी कीर्ति है जिसकी तथा कुलका बढानेवाला होता है ॥ १८७ ॥ जिस मनुष्यके नवम शनैश्चर स्थित हो वह दंभीपुरुषोंमें नामी अच्छा कर्म करे, पितृदेवताओंका वञ्चक भाग्यहीन तथा सुधर्मी हो १८८॥ जिसके अपनी राशि अथवा अपने उच्चमें शनैश्चर भाग्यभवनमें स्थित हो तो कहना चाहिये कि यह प्राणी वैकुण्ठलोकसे आया है और अच्छे कर्म करके पृथ्वीपर राज्य करके फिर भी वैकुण्ठको ही जायगा ॥१८९॥ जिसके नवम राहु स्थित हो तो वह मनुष्य नीच धर्ममें तत्पर, सच और पवित्रता करके रहित,हीनभाग्य तथा मंदबुद्धि होता है ॥१९०॥ जिसके नवम स्थानमें केतु स्थित हो तो वह मनुष्य बाल अवस्थामें पिताके कष्ट देनेवाला और भाग्यहीन होता है, इसके विपर्यय म्लेच्छोंसे उस मनुष्यका भाग्योदय होता है ॥ १९१ ॥

भाग्यं यदा स्वामियुतेक्षितं च भाग्योदयः स्यान्निजदेशमध्यम्। अन्यग्रहैः पापशुभैर्युतं चेद्भाग्योदयस्तत्परदेशभूमौ ॥ १९२ ॥ भाग्याधिपश्चेद्यदि केंद्रसंस्थ आरौ वयस्ये च सुखोदयं वा ॥ त्रिकोणगः स्वोच्चगतोऽथवा चेन्मध्यं वयस्तस्य फलप्रदं स्यात् ॥ १९३ ॥ भाग्याधिनाथः स्वगृहेऽथ मित्रे गृहेऽथवा स्याद्वय-सोऽन्त्यभागे । भाग्योदयं तस्य वदंति तज्ज्ञाः शुभग्रहैद्रश्च युतेक्षिते च ॥ १९४ ॥

जो भाग्यस्थानपति भाग्यभवनमें स्थित हो अथवा भाग्यस्थानको देखता हो तो उस मनुष्यका भाग्य अपने देशमें ही उदय होता है और किसी पाप वा शुभग्रहयुक्त वा दृष्ट भाग्यभवन हो तो उस मनुष्यका भाग्यो-दय परदेशमें होता है॥ १९२॥जो भाग्यभवनका स्वामी केंद्रमें स्थित हो तो उस मनुष्यका बाल्यअवस्थामें भाग्योदय होता है और भाग्यस्थानपति अपने त्रिकोणस्थानमें स्थित हो वा उच्चका हो तो उस मनुष्यकी जवानीमें उसका भाग्योदय होता है ॥१९३॥ जो भाग्यस्थानपति अपने घरका अथवा अपने मित्रके घरमें स्थित हो तो उस मनुष्यका भाग्योदय बुढापेमें होता है,यह ज्योतिषशास्त्रवेत्ताओंने कहा है परंतु उस भाग्यस्था-नपतिको शुभग्रह देखते हों वा युत हों तो पूर्वोक्त फल बुद्धिमान् विचार करके कहे ॥ १९४ ॥

नीचस्थो वा शत्रुगेहे गतश्चेद्भाग्यस्वामी रिःफरंध्रारिगो वा ॥ पापैः खेटैः संयुतो वाथ दृष्टो भाग्यैर्हीनः स्याद्दरिद्री सदैव ॥ १९५ ॥ नवमभावपतिर्यदि केंद्रगो नवमपंचमगश्च यदा भवेत् ॥ प्रसवलग्नपतिर्यदि तुंगगः सुखसमृद्धियुतो मरणांतकम् ॥ १९६ ॥ नवमभावगतः स्वगृहे शनिर्भवति चेत्स महाशिव-यज्ञकृत् ॥ अतिशिवं कुरुते जपसंयुतं नृपतिवाहनचिह्नसम-न्वितम् ॥ १९७ ॥ नवमभावपतिर्ह्यरिमध्यगो नवमभं रिपु-दृष्टियुतं तथा ॥ यदि तदा परधर्मरतो नरः शुभखगैरथ धर्म-रतः स्वके ॥ १९८ ॥

जो भाग्यभवनका स्वामी अपनी नीचराशिमें अथवा शत्रुकी राशिमें स्थित हो अथवा छठे, आठवें, बारहवें स्थानमें स्थित हो, पापग्रहोंकरके संयुक्त अथवा दृष्ट हो तो वह मनुष्य भाग्यहीन सर्वदा दरिद्री रहता है॥ १९५॥ जो नवमभावका स्वामी केंद्रमें अथवा नवम पंचम स्थित हो और जन्मलग्न पति अपने उच्चमें स्थित हो तो सुखसमृद्धिकरके सहित अपने मरणतक ऐश्वर्यवान् होता है ॥ १९६॥ जिस मनुष्यके नवमभावमें अपनी राशिका शनैश्चर स्थित हो तो वह मनुष्य बडे शिवका यज्ञ करनेवाला, अत्यन्त कल्याणयुक्त, जपको प्राप्त,राजा सवारियोंके चिह्नसहित होता है॥ १९७॥ जो नवमभावका स्वामी शत्रुओंके बीचमें स्थित हो और नवमस्थान शत्रु ग्रहकी दृष्टियुत हो तो वह मनुष्य पराये धर्ममें तत्पर होता है और उस नवमभावका स्वामी शुभग्रहोंके मध्यमें स्थित हो और नवमभावको शुभ-ग्रह देखते हों तो वह मनुष्य अपनेही धर्ममें तत्पर होता है॥ १९८ ॥

क्रूरा धर्मे धर्महीनं कर्कशं चपलं तथा । सौम्याः कुर्वंति धर्माढ्यं दयालुं प्रियभाषणम्॥१९९॥गुरौ भाग्ये भवेन्मंत्री महाभाग्यो-ऽखिलेश्वरः॥अबलेऽपि शुभे खेटे भाग्यस्थे धार्मिकोत्तमः२००॥

जो नवमभावमें पापग्रह स्थित हो तो वह मनुष्य धर्महीन, दुष्ट स्वभाव-वाला, चपल होता है और जो नवमभावमें शुभग्रह स्थित हो तो वह मनु-ष्य धर्मवान्, दयायुक्त, मीठी वाणीका बोलनेवाला होता है ॥ १९९ ॥ जिसके बृहस्पति भाग्यभवनमें बैठा हो तो वह मनुष्य बडा भाग्यवान् पृथ्वीका स्वामी होता है चाहे निर्बलभी शुभग्रह नवमस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य बहुत उत्तम धर्मात्मा होता है ॥ २०० ॥

अथ भाग्यभावस्थे गुरौ रव्यादिदृष्टिफलम् ।

अर्कदृष्टे गुरौ भाग्ये मंत्री नृपसमोऽथवा ॥ कांताभोगी शशां-केन भौमेन धनभाग्भवेत् ॥२०१॥ धर्मे बुधेन शुक्रेण गोवा-

हनधनान्वितः । दृष्टे सूर्यजे महिषचरस्थावरसंयुतः ॥ २०२ ॥ समृद्धः पार्थिवो जातस्तेजोरूपगुणान्वितः । स्यात्समस्तग्रहै-र्दृष्टे भाग्यस्थे सुरमंत्रिणि ॥ २०३ ॥

जो नवमस्थानमें बृहस्पति स्थित हो उसको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य मंत्री राजाके समान होता है और जो चंद्रमा देखता हो तो स्त्रियों-का भोगनेवाला होता है और मंगल देखता हो तो धनवान् हो ॥२०१॥ बुध वा शुक्र करके दृष्ट हो तो गौ सवारी धनसहित होता है और जो शनैश्वर-करके दृष्ट हो तो महिष, चर और स्थावर करके संयुक्त होता है॥२०२॥ नवमस्थानमें बृहस्पति स्थित हो उसको सम्पूर्ण ग्रह देखते हों तो वह मनुष्य सम्पूर्ण ऋद्धियोंसहित तेजवान् स्वरूपवान् गुणवान् होता है ॥ २०३ ॥

सर्वे राज्यप्रदा ज्ञेया भाग्यर्क्षे स्युः शुभग्रहाः । धनस्थाः सर्व-धान्यायुर्धर्मसौभाग्यवृद्धिदाः ॥ २०४ ॥ स्वक्षराशिस्थिता पापा ग्रहा भाग्यर्क्षसंस्थिताः। शुभैर्दृष्टा न कुर्वंति प्रभूतगुण-मुत्तमम् ॥२०५॥ स्वोच्चगः खचरो भाग्ये करोति विभवान्वि-तम् । सर्वे शुभेक्षिता भूपं कुर्वंति रिपुवर्जितम् ॥ २०६ ॥ सकलगगनगेहाः स्वोच्चगा भाग्यराशौ कनकधनसमृद्धं श्रेष्ठमु-त्पादयंति । यदि शुभखगदृष्टा भूपमान्यं करोति विहरिरिपु-समूहं दिव्यकायं सुकांतिम् ॥ २०७ ॥

जो सम्पूर्ण भाग्यभवनमें शुभग्रह स्थित हों तो राज्यको देते हैं और जो धनस्थानमें स्थित हों तो सम्पूर्णप्रकारका अन्न और धर्म, आयु और सौभाग्यकी वृद्धि करते हैं ॥ २०४ ॥ अपनी राशिमें स्थित होकर कोई पापग्रह भाग्यभवनमें स्थित हो और शुभग्रहकरके दृष्ट हो तो बहुत गुण और धन नहीं करता है ॥२०५॥ अपनी उच्च राशिमें स्थित होकर जो ग्रह भाग्यभवनमें स्थित हो तो वह मनुष्य विभवयुक्त होता है और जो सम्पूर्ण शुभग्रह देखते हों तो राजा शत्रुहीन होता है ॥ २०६ ॥ सम्पूर्ण

ग्रहोंमेंसे कोई एक भी ग्रह अपने उच्चका होकर भाग्यभवनमें स्थित हो तो वह मनुष्य सुवर्ण और धनकरकेसमृद्ध श्रेष्ठ उत्पन्न करता है,जो शुभग्रह उसको देखते हों तो वह राजमान्य होता है, शत्रुओंके समूहका नाश करके बहुत अच्छी देह सुंदर कांतिमान् होता है ॥ २०७ ॥

त्रिचतुःपंचखगेंद्रास्तथा षट्सप्तसंस्थिता भाग्ये ॥ प्रत्ययनं बहुधनवंतं कुर्युर्नृपतिं च बुधरहिताः ॥२०८॥ जनयंति भाग्यसंस्था गुरुभौमविवर्जिता ग्रहाः । पुरुषो व्याधियुतो कांताधनहीनो बंधनार्तमतिरहितः ॥ २०९ ॥

भाग्यभवनमें तीन चार पांच ग्रह तैसे ही छः वा सात स्थित हों तो मनुष्यको बहुत धनवान् प्रति अयनमें करते हैं और जो बुधहीन ग्रह नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य राजा होता है ॥२०८ ॥ जो बृहस्पति मंगल करके रहित बाकीके सम्पूर्ण ग्रह नवमभावमें स्थित हों तो वह मनुष्य व्याधिग्रसित, स्त्री और धन करके हीन, बंधन करके दुःखी और मूर्ख होता है ॥ २०९ ॥

अथ धर्मभावविशेषफलम् ।

स्वोच्चे स्वोच्चनवांशे च शुभवर्गेऽथ नीचगे । नीचांशे क्रूरषड्वर्गे मित्रभे सुहृदंशके ॥२१०॥ वर्गोत्तमेऽरिभेंऽशे स्वर्क्षे द्वादशधा क्रमात् । शूलं च धर्मभावोत्थं कथ्यते यवनोदितम् ॥ २११ ॥ तामसो १ दंभजो २ हीनो ३ दुष्टः ४ पुष्टः ५ पराश्रितः ६ । पिशुनाश्रयसंजातः ७ पापी ८ ह्यतिजडस्तथा ९ ॥ २१२ ॥ कृतघ्नभाषित १० श्चौरः संस्थितः ११ पिशुनाश्रयः १२ । धर्मभावगते सूर्ये जन्मनां परिशील्यते ॥ २१३ ॥

अपनी उच्चराशिमें १, उच्चके नवांशमें २, शुभग्रहके वर्गमें ३, अपनी नीचराशिमें ४, अपने नीचके नवांशमें ५, पापग्रहोंके षड्वर्गमें ६, मित्रकी राशिमें ७, यामित्रके नवांशमें ८ ॥ २१० ॥ अपने वर्गोत्तममें ९,

शत्रुकी राशिमें १०, शत्रुके नवांशमें ११, अपनी राशिमें १२ बारहप्रकार करके क्रमसे नवमभावका फल यवनाचार्यकरके कहा गया है ॥ २११ ॥ तामसकरके १, दंभकरके २, हीन ३, दुष्टता करके ४, पुष्ट ५, पराये आश्रयसे ६, पिशुनकर्मके आश्रयसे उत्पन्न ७, पापी ८, अत्यंत जड ९॥ ॥२१२॥ कृतघ्नभाषी १०, चोरके संगसे ११, पिशुनके आश्रयसे १२ जो धर्मभावमें सूर्य जिस प्रकारका स्थित हो उसी प्रकार करके बारह प्रकारोंमेंसे क्रमसे फल देता है ॥ २१३ ॥

नृपसंगात् १बन्धुजनात् २ विश्वासात्३ पितृतर्पणात् ४ ॥ अत्यल्पफलदानाच्च ५निद्रया ६परवंचनात् ७ ॥ २१४ ॥ अन्यदेवमुपासेन ८ लोकसंगान्मदेन च९॥ अन्यसंगात्१० शत्रु ११ जाया १२ धर्मभावगते विधौ ॥२१५॥ रणजः१ परसेवोत्थो २ गुरुपोषणसंभवः३ ॥ वध४बंधन ५ संप्राप्तः परस्त्रीलोकसंभवः ६ ॥ २१६ ॥ जनानुरोधाद्७गृहणी ८ भयजो९बहुभाषकः १०॥ परदर्शनतो ११ भौमे शस्त्रतो१२ धर्मभावगे ॥२१७॥ द्विजदेवार्चने जात १स्तथा दीनदयान्वितः २ ॥ व्रतपूतः३कपटजः ४ पाखंडेन ५ कुकर्मतः ६ ॥ २१८ ॥ गार्हस्थ्यकृ७ज्जाया ८द्रस्त्रदाना ९ दप्रियतोद्भवः १०॥ गुरुभूमा११त्साध्वसाच्च १२ धर्मभावगतेंदुजः॥२१९॥

राजाके संगसे १, बन्धुजनोंसे २, विश्वाससे ३, पितृतर्पणसे ४,अल्पफलदानसे ५ निद्राकरके ६, परवंचनसे ७ ॥२१४॥ अन्य देवताओंकी उपासना करके ८, लोकसंगसे ९ अन्यसंगसे १० शत्रुकरके ११, स्त्रीकरके १२, जो धर्मभावमें चन्द्रमा स्थित हो ॥२१५॥ संग्रामसे १, पराई सेवासे २, गुरुके पालनसे ३, वध ४, बन्धनसे प्राप्त ५, पराई स्त्री और जनों करके उत्पन्न ६ ॥ २१६ ॥ मनुष्योंके विरोधसे ७, स्त्रीकरके ८, भयकरके ९, बहुत बोलनेसे १०; परदर्शनसे ११, शस्त्रकरके १२, जो नवमभावमें

मंगल स्थित हो तो॥२१७॥ब्राह्मण देवताओंके पूजनसे उत्पन्न १,दीनदया-करके २, व्रत करके पवित्र ३, कपट करके४,पाखण्डकरके ५, खोटे कर्मसे ६॥२१८॥ गृहस्थकरके ७, स्त्रीकरके ८, वस्त्रदानकरके९, अप्रियभाष-णसे १०, गुरुभूमसे ११, साधुसे १२ जो धर्मभावमें बुध हो तो ॥२१९॥

प्रचुरो १ गुरुसेवोत्थो २ ऽत्यद्भुतः३कन्यकस्तथा४ । ततो गुरुविरोधोत्थ५ स्तीर्थजो ६धर्मकर्मजः ७ ॥२२०॥ दारा-मते ८ तथा पुत्रानुषंगान् ९ न्यायवर्जितः १० ॥ गुरुवेषेण ११ घृणया १२ धर्मजीवे तपःस्थिते ॥२२१॥ परदानेन १ वस्त्रान्नदानेन २ पितृतर्पणात् ३॥ अत्यल्पफलदो४बुद्धिभ्र-मेण५परवंचनात् ६ ॥२२२॥ अन्यदैवतसंगेन७लोकसंगा-८ त्सुखप्रजात९॥ अन्यसंगा१०च्छत्रुसेवा ११कृषिधर्मे१२ सिते शुभे ॥२२३ ॥तृतीयवयसंजातः १स्वल्पो २भक्तिवि-वर्जितः ३ ॥ नैवा ४ न्यजः ५ कपटजः ६ सगृहोभीति ७ संभवः८ ॥२२४ परसेवासमुद्भूतो ९स्वल्प १० दर्शनसंभ-वम्११॥गुरुलब्धिभवो१२ मन्दे धर्मभावे विधीयते॥२२५॥

प्रचुरतासे १,गुरुकी सेवासे २,अद्भुत ३, सुवर्ण ४,गुरुके विरोधसे ५, तीर्थसे ६,धर्मकर्मसे ७ ॥२२०॥ स्त्रीकी सलाहसे ८, अथवा पुत्रके संगसे ९,ज्ञानरहित १०,गुरुभेषसे ११,घृणाकरके १२ जो बृहस्पति नवम स्थित हों ॥२२१॥ पराये दानकरके १,वस्त्रोंके दानसे २,पितृके तर्पणसे ३,अत्यल्प फलद ४,बुद्धिभ्रमसे ५,परवंचनासे ६॥२२२॥अन्यदैवतसंगसे ७, लोकसंगसे ८, सुखप्रजासे ९, अन्यसंगसे १०, शत्रुकी सेवासे ११ खेती करके १२ जो शुक्र नवम स्थित हों ॥२२३॥ तीसरी अवस्थाके संज्ञानसे १,स्वल्प २, भक्तिविना ३,नैव ४,अन्यज ५,कपटसे ६, भीति-करके ७ संभव ८॥२२४॥ पराई सेवासे उत्पन्न ९,स्वल्प १०,दर्शनसे ११,गुरु करके प्राप्त १२जो शनैश्चर नवमस्थानमें स्थित हो तो॥२२५॥

अथ धर्मभावस्थितराशिफलम् ।

धर्मस्थिते चैव हि मेषराशौ चतुष्पदोत्थं प्रकरोति धर्मम् ॥ तेषां प्रदानेन च पोषणेन दयाविवेकेन सुपालनेन ॥ २२६ ॥ वृषे च धर्मे प्रगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव धनप्रसूतौ ॥ विचित्रदानैर्बहुगोप्रदानैर्विभूषणाच्छादनभोजनैश्च ॥ २२७ ॥ तृतीयराशौ प्रकरोति धर्मं धर्माकृतिं सौम्यकृतं सदैव ॥ अभ्यागतोत्थाद्द्विजभोजनाद्वा दीनानुकंपाश्रयमानतो वा ॥ २२८ ॥ व्रतोपवासैर्विषमैर्विचित्रैर्धर्मं नरः संकुरुते सदैव ॥ धर्माश्रिते चैव चतुर्थराशौ तीर्थाश्रयाद्वा धनसेवया वा ॥ २२९ ॥

जो नवमभावमें मेषराशि स्थित हो तो उस मनुष्यको चौपायों करके उत्पन्न धर्म करनेवाला, उनके दान करके अथवा पोषण करनेसे दया विवेक करके श्रेष्ठ पालनसे॥२२६॥और वृषराशि नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य धर्मका करनेवाला,धनवान्, विचित्र,दानकरके बहुत गोदान करनेसे, वस्त्र भोजनकरके आच्छादित शोभायमान होता है॥२२७॥जिसके मिथुनराशि नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य धर्म करनेवाला अधर्म भी करनेवाला सौम्यप्रकृति सदैव अभ्यागतोंकरके अथवा ब्राह्मणभोजनसे अथवा दीनोंकी दयासे वा मानसे उनके आश्रयसे ॥ २२८ ॥ जिसके कर्क राशि नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य व्रतोपवासकरके सदा विचित्र धर्म करनेवाला,तीर्थाश्रय अथवा धनसेवा करनेवाला होता है ॥ २२९ ॥

तत्र स्थिते चाथ हि सिंहराशौ धर्मं परेषां प्रकरोति मर्त्यः ॥ स्वधर्महीनारिक्रियाभिरेव सुतीर्थरूपं विनयेन हीनम् ॥२३०॥ धर्माश्रिते स्याद्यदि षष्ठराशिः स्त्रीधर्मसेवां कुरुते मनुष्यः ॥ विहीनभक्तिबहुजन्मना च पाखंडमाश्रित्य तथान्यपक्षम् ॥ २३१ ॥ तुलाधरे धर्मगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव सदा प्रसिद्धम् ॥ देवद्विजानां परितोषणेन जनानुरागेण तथाद्भुता-

नाम् ॥ २३२ ॥ धर्माश्रिते चाष्टमगे च राशौ पाखंडधर्मं कुरुते मनुष्यः ॥ पीडाकरं चैव तथा जनानां भक्त्या विहीनं परपोषणेन ॥ २३३ ॥

नवमस्थानमें सिंहराशि स्थित हो तो वह मनुष्य पराये धर्मको करनेवाला, अपने धर्मसे हीन और श्रेष्ठ क्रियाकरके हीन, अच्छे तीर्थका और विनय करके हीन होता है॥२३०॥जो नवम भवनमें कन्याराशि स्थित हो तो वह मनुष्य स्त्रीधर्मकी सेवा करनेवाला, बहुत जन्मोंसे भक्तिहीन और पाखंडी होता है ॥२३१॥ जिसके तुलाराशि नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य धर्म करनेवालोंमें प्रसिद्ध, देवता और ब्राह्मणोंको संतुष्ट करनेवाला अनुरागयुक्त अद्भुत होता है ॥२३२॥ जिसके वृश्चिकराशि नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य पाखंडधर्ममें तत्पर, मनुष्योंको पीडा करनेवाला, भक्ति करके हीन, परायेका पोषण करनेवाला होता है ॥ २३३ ॥

चापे तथा धर्मगते मनुष्यः करोति धर्मं द्विजदेवतर्पणम् ॥ स्वेच्छान्वितं शास्त्रविनिर्मितं च कीर्त्यान्वितं भूमितलेऽपि संस्थः॥२३४॥धर्माश्रिते वै मकरे मनुष्यो पापोत्थधर्मं कुरुते प्रतापम् ॥ पश्चाद्विरक्तो बहुलोकमान्यो तीर्थाटने वेदपुराणभक्तः ॥२३५॥ कुंभे च धर्मे प्रगते सुधर्मं पुंसा विधत्ते सुरसंघजातम् ॥ वृक्षाश्रयोत्थं च तथोषरं च आरामवापीप्रियजं सदैव ॥ २३६ ॥ धर्माश्रिते चैव हि मीनराशौ करोति धर्म विविधं नृलोके ॥ जलाशयप्रीतिरतीवकामी तीर्थाटने नित्यमखैर्विचित्रैः ॥ २३७ ॥

जिस मनुष्यके धनराशि नवमस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य धर्मका करनेवाला, ब्राह्मणका भक्त, देवताओंका तर्पण करनेवाला, अपनी इच्छानुसार शास्त्रोंका बनानेवाला, कीर्तिकरके सहित, पृथिवीके ऊपर स्थित होता है ॥२३४॥ जो मकरलग्न नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य धर्मात्मा, धनुषविद्यामें प्रतापी, पीछेसे विरक्त, बहुत मनुष्योंकरके मान्य,

तीर्थोंका घूमनेवाला, वेदपुराणका भक्त होता है ॥२३५॥ जिसके कुंभराशि नवमभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य अच्छे धर्मका करनेवाला, देवताओंका संघजात, वृक्षोंके आश्रयसे उत्पन्न, तैसे ही तालाव बगीचा बावडीसे प्रीति करनेवाला होता है ॥२३६॥ जिसके नवम स्थानमें मीनराशि स्थित हो तो वह मनुष्य मनुष्यलोकमें विविध धर्मोंका करनेवाला, जलाशयोंमें प्रीति करनेवाला, अधिकतर कामी,तीर्थाटन करनेवाला तथा सदैव काल विचित्र यज्ञोंको करनेवाला होता है ॥ २३७ ॥

अथ नवमभावेशफलम् ।

लग्नगते नवमपतौ देवगुरुविनयवान् शूरः॥ कृपणः क्षितिकर्मा स्वल्पग्रामी भवति धीमान् ॥ २३८ ॥ नवमाधिपे तु धनगे वृषले विदितः सुशीलवात्सल्यः ॥ सुकृती वदनव्यंगश्चतुष्पदोत्पन्नपीडितः ॥ २३९ ॥ सहजगते सुकृतयुतौ रूपस्त्रीबन्धुवत्सलः पुरुषः ॥ बधुस्त्रीरक्षणकृद्यदि जीवितं बंधुभिः सहितः ॥ २४० ॥ सुकृतेशे हिबुकस्थे पितृभक्तो नृपकृतासुपात्रविदितः ॥ सुकृती मित्रकर्मरतिर्भवति भूमिवान् ॥ २४१ ॥

जो नवभावपति लग्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य देवता और गुरुसे विनयसहित, शूर, कृपण, पृथ्वीकर्म करनेवाला, स्वल्पग्रामी और बुद्धिमान् होता है ॥ २३८ ॥ नवमपति धनभावमें स्थित हो तो वह मनुष्य व्यभिचारिणी स्त्रीका पति, सुशीलवान्, सुकृती, वदनमें व्यंग, चौपायोंकरके पीडित ॥ २३९ ॥ जो नवमभावपति तीसरे स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य सुकृतकरके संयुक्त,स्वरूपवान् स्त्री, भाईपर वत्सतालयुक्त,भाई और स्त्रीकरके रक्षण किया हुआ भ्रातासहित जीता है ॥२४०॥ जो नवमभावपति चतुर्थस्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य पिताका भक्त, राजाकरके सुपात्र, विदित, सुकृती, मित्रोंसे प्रीतियुक्त, भूमिमान् होता है ॥२४१॥

सुकृतगृहपे सुतस्थे सुकृती गुरुदेवपूजने निरतः ॥ वपुषा सुंदरमूर्तिः सुकृतिसमेतो भवति सुतः ॥२४२॥ शत्रुप्रहरार्तिराक्षसीधर्मकलितं कलाविकलदेहम्॥दर्शति निद्रानिरतं सुकृतपतौ षष्ठगे कुरुते॥ २४३ ॥ नवमपतौ सप्तमगे सत्ययुता सुवचना सुरूपा च ॥ शीलश्रीयुक्तदयिता सुकृतयुता जायते नित्यम् ॥२४४॥ दुष्टजंतुविघाती च गृहबंधनवर्जितः॥ नवमेशे मृत्युगते क्रूरः षंढस्तु विज्ञेयः ॥ २४५ ॥

जो नवमभावका स्वामी पंचमभवनमें स्थित हो तो वह मनुष्य सुकृती, गुरु और ब्राह्मणोंके पूजन करनेमें तत्पर, सुंदर शरीर, शोभायमान स्वरूप, सुकृतसहित पुत्र होता है॥२४२॥शत्रुके प्रहारसे दुःखित, . राक्षसी धर्मकरके शोभित, कलाओंकरके विकल देह; नींदमें तत्पर जो नवमभावपति छठें स्थित हो ॥२४३॥ नवमभावपति सप्तम स्थित हो तो वह मनुष्य सत्ययुत, सुंदरवाणी बोलनेवाला,स्वरूप शीलवान्, लक्ष्मीसहित स्त्री सुकृतवाली प्राप्त होती है ॥२४४॥ जो नवमभावपति अष्टमपति हो तो वह मनुष्य दुष्ट जीव अर्थात् सिंहादिकोंका मारनेवाला घरके बंधनसे रहित दुष्ट नपुंसक होता है ॥ २४५ ॥

सुकृतपतिः सुकृतगतः सुबंधुभिः प्रीतिमतुलसत्त्वम् ॥ दातारं देवगुरुस्वजनकलत्रादिषु च भक्तम् ॥२४६॥ नृपकार्यनृपलाभं सुकर्मनिरतं मातृभक्तम् ॥ धर्मख्यातं कुरुते सुकृतपतिर्दशमगृहलीनः ॥ २४७ ॥ दीर्घायुधर्मयुतो धरापती रत्नादिवस्त्रसहितः ॥ धनाचितः सुकृतख्यातः सततं सुकृतपतौ लाभभवनस्थे ॥२४८॥ द्वादशगे सुकृतेशे मानी देशांतरी सुरूपश्च ॥ विद्याचारी शुभखेटे क्रूरे च भवने नृपतिधूर्तः ॥ २४९ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिपंडितश्यामलालकृते ज्योतिषश्यामसंग्रहे भावनिर्याणवर्णनं नाम पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

जो नवमभावपति नवमस्थानमें ही स्थित हो तो वह मनुष्य अपने भाइयोंसे प्रीति करनेवाला, अतिबलवान्, दाता, देवता और गुरु, अपने जन और स्त्री इत्यादिका भक्त होता है ॥२४६॥ राजकार्य करनेवाला, नृपसे लाभ; अच्छे कर्ममें तत्पर, माताका भक्त, धर्मवान् होता है ॥२४७॥ दीर्घायु, धर्मसहित पृथ्वीका पति, रत्नादिक वस्त्र आभूषणधनसहित, निरंतर सुकृती होता है जिसके नवमभावपति लाभभवनमें स्थित हो ॥२४८॥ जो नवमभावपति व्ययभवनमे स्थित हो तो वह मनुष्य मानी, विदेशी, रूपवान्, विद्याचारसहित शुभग्रहके होनेसे होता है और जो पापग्रह व्ययभवनमें हो तो धूर्त नृपति होता है ॥ २४९ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषि पं० श्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां ज्योतिषश्यामसंग्रहे भावनिर्याणवर्णनं नाम पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ वंशाध्यायप्रारम्भः ।

आसीद्गौडकुले नितांतविमले वंशाबरेल्यां पुरा
श्रीगोविंदपदारविंदनिरतो गोविंदरामः सुधीः ।
ज्योतिश्शास्त्रमहोदधेः परतरं पारं गतो योऽञ्जसा
प्रख्यातःस्वयशोभरेण भुवने मान्योऽपि सद्भूभृताम् ॥ १ ॥

अत्यंत निर्मल गौडकुलमें बांसबरेली नगरमें पहिले श्रीगोविंदके चरणारविंदमें है रति जिनकी ऐसे गोविंदराम नामक पंडित हुए, वे ज्योतिषशास्त्ररूपी जो समुद्र है उसको शीघ्र पार जानेवाले अपने यशरूपी भास्कर द्वारा संसारविख्यात श्रेष्ठ राजाओंकरके माननीय हुए हैं ॥ १ ॥

घनश्यामदासस्तु तत्सूनुरासीत्पितुः पादपद्मद्वये सानुरागः ।
य ईडचो गुणौघैर्निजैर्लब्धवर्णः कृती तंत्रविद्याब्धिपारं जगाम२॥

पिताके चरणारविंदमें है अनुराग जिनका, अपने गुणोंके समूहो-

करके ईड्य अर्थात् स्तुति योग्य, तंत्र विद्यारूपी समुद्रके पार जानेवाले घनश्यामदास नामक पंडित उन गोविंदरामके पुत्र हुए ॥ २ ॥

राधापतिध्याननिविष्टचेताः सर्वेंद्रियाणां सुदृढं हि जेता ॥
अनन्यभक्तः शुभकर्मरक्तस्तदंगजोऽभूद्बलदेवनामा ॥ ३ ॥

श्रीराधापति श्रीकृष्णचंद्रके चरणोंमें है चित्त जिनका, सम्पूर्ण इंद्रियोंको अच्छी तरहसे जीतनेवाले, श्रीकृष्णके अनन्यभक्त, श्रेष्ठ कर्मोंमें तत्पर बलदेवप्रसाद नाम तिन घनश्यामदासके पुत्र होते हुए ॥ ३ ॥

तस्यात्मजोऽहं पितृपादपद्मद्वयार्चने प्रीतिरतो विपश्चित् ॥
वंशाबरेल्यां निवसामि नूनं श्रीश्यामलालो व्रजराजभक्तः ॥४॥
श्रीलालजीरामगुरोः सकाशादधीत्य विद्यां महतः प्रयत्नात् ॥
गत्वा विदेशेषु महीपतिभ्यः प्राप्ता प्रतिष्ठा परमा गरिष्ठा॥५॥

उन बलदेवप्रसादका पुत्र मैं हूं कि पिताके दोनों चरणारविंदमें प्रीति करनेवाला, श्रीव्रजराजका भक्त श्यामलाल नाम पंडित निश्चय बांसबरेलीमें वास करता हूं ॥४॥ श्रीलालजीराम गुरुके सकाशसे बहुत परिश्रमकरके इस ज्योतिषविद्याका अध्ययन किया और परदेशमें जाकर राजाओंकरके बहुत भारी जो प्रतिष्ठा है उसको प्राप्त किया ॥ ५ ॥

श्रीमन्महाराजसवाइपूर्वमहेंद्रवर्यो हि प्रतापसिंहः ।
टीकंगढाधीश इति प्रसिद्धो बुंदेलखंडे नितरां विभाति ॥ ६ ॥
आदरेण समाहूय तेन भूपालमौलिना ।
नियुक्तो मानतः पूर्वं राजज्योतिर्विदासने ॥ ७ ॥

श्रीमन्महाराज सवाई है पूर्वमें पद जिनके, महेंद्रोंमें श्रेष्ठ अर्थात् सवाई महेंद्र श्रीमद्भूप अष्टोत्तर शत १०८ श्रियालंकृत सरामदराजहाय बुंदेलखंड श्रीप्रतापसिंहजू देव टीकंगढाधीशकरके संसारमें प्रसिद्ध बुंदेलखण्डमें निरंतर शोभायमान है ॥ ६ ॥ उन भूपालशिरोमणिने आदरसे बुलाकर मानसहित राजज्योतिषीकी जगहपर मुझको नियुक्त किया ॥ ७ ॥